मालूसाही

(मालूशाही)

(कुमाऊंनी लोक साहित्य की बहुचर्चित प्रेम गाथा प्रथम बार लोक रंजक रूप में प्रकाशित)

•

डॉ० उर्वादत्त उपाध्याय : डॉ० रमेशचन्द्र पन्त

•

राज्यश्री प्रकाशन

मथुरा

पिन–२८१००१

त्वदेव वस्तु गोविन्द
तुभ्यमेव समर्पये ।

●

कुमाऊँ के लोक गायकों के स्वर
उन्हीं को सादर समर्पित हैं

निवेदन

कुमाऊँ के अंचल में संचरित 'मालूसाही' या 'मालूशाही' नामक प्रेमाख्यान यहाँ के लोक-जीवन के गले का हार है। कुमाऊँनी बोली के प्रवृति के अनुरूप ही 'साही' या 'शाही' दोनों शब्द एक ही अर्थ के लिए समान रूप से प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि कुमाऊँनी बोली में श, स, ष का भेद नहीं माना जाता है। इसीलिये हमने दोनों प्रकार के 'शाही' और 'साही' शब्दों का प्रयोग किया है और आवरण पृष्ठ पर 'शाही' के स्थान पर 'साही' को लिया है। इस गाथा की विभिन्न अंचलों में कई श्रुतियां प्राप्त होती है जिनमें कई अंशों में पर्याप्त विविधता भी है। कुछ साहित्य प्रेमियों, शोधार्थियों, समालोचकों और लोकसाहित्य के अनुशीलन कर्ताओं ने इस गाथा को कई रूपों में लिपिबद्ध किया है उनका प्रयास सराहनीय तो है किन्तु इसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इससे लोक साहित्य के अध्येताओं को इस गाथा का सांगोपांग एवं परिपुष्ट रूप नहीं मिल पाता है। कई संकलनों में लोक-साहित्य की आत्मा को करारी चोट पहुंचाई गयी है, कहीं उसे पहचाना ही नहीं गया है और कहीं अपने पूर्वाग्रहों से युक्त होकर उसके सही रूप को विकृत कर दिया है। हमारे दृष्टिकोण में 'मालूशाही' नाम से प्रकाशित अभी तक सभी रचनाओं में इस गाथा के मूल स्वरूप एवं कुमाऊँनी लोक-साहित्य एवं संस्कृति के लोक-तत्व को बड़ी सीमा तक आहत किया गया है। इसी कारण हमें मालूशाही को प्रस्तुत रूप में संकलित और सम्पादित करने की तीव्र आवश्यकता प्रतीत हुई।

आज विद्यालयों तथा अन्य शोध-संस्थाओं में लोक साहित्य के अनुशीलन को अधिक महत्व दिया जा रहा है, जो एक शुभ लक्षण है। 'कुमायूँ विश्वविद्याय' के तत्वावधान में भी कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं संस्कृति पर कार्य करने को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अतः इस दिशा में यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। पूर्व-पीठिका के अन्तर्गत इसमें लोक साहित्य, संस्कृति के वैचारिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला है। कुमाऊँ के इतिहास दुर्लभ तन्तुओं को जोड़कर उसमें विवेच्य गाथा की ऐतिहासिकता पर भी विचार किया गया है। गाथा की विविध श्रुतियों को संकलित करके

उन्हें इस प्रकार एक गाथा के रूप में संयोजित करने का प्रयास किया गया है कि लोक-तन्तु को किसी भी प्रकार की क्षति न हो और विवेच्य गाथा का एक सांगोपांग और लोक-सम्मत संकलन लोक साहित्य के अध्येताओं को सुलभ हो सके। सभी श्रुतियों के बीच लोक-सम्मत और समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखा गया है। मूल पाठ के साथ उसके पहले और बाद के पृष्ठों में तत्सम्बन्धी कुछ विशिष्ट एवं गहन पक्षों की ओर भी संकेत किया गया है जो उसके अनुशीलन कर्ताओं को सन्दर्भों का काम देने में सहायक सिद्ध होगा। ग्यारह वर्षों से भी अधिक समय से लोक साहित्य के अनुशीलन में निरन्तर लगे रहने के बाद जो अनुभव सुलभ हुए उनका उपयोग इस रचना में करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत रचना में सर्व श्री यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' डॉ. पुत्तूलाल शुक्ल, डॉ. गोविन्द चातक, डॉ. त्रिलोचन पाण्डे, डॉ. भवानीदत्त उप्रेती, चिन्तामणि पालीवाल, बागगिरी गोस्वामी इत्यादि और ऐतिहासिक प्रसंगों के लिए कूर्मांचल केशरी स्व० बद्रीदत्त पाण्डे, महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन, श्री अशोक, डॉ. प्रयाग जोशी, अठकिन्सन एवं गैरौला इत्यादि की पुस्तकों और गजेटियरों की सहायता ली गयी है अतः हम उनके भी ऋणी है।

इसके आवरण पृष्ठ के चित्रण के लिए श्री नरीराम, कला-शिक्षक के. वि. पिथौरागढ़ के प्रति भी कृतज्ञता-ज्ञापन करते हैं। राज्य श्री प्रकाशन, मथुरा के संचालक श्री प्रमोद बिहारी सक्सेना को भी हम कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं जिन्होंने हमारी इस पुस्तक को प्रकाशित करने का गुरुतर भार उठाया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जिस उद्देश्य से लिखी गई है उसे पूरा करने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

विनीत—

उर्वादत्त उपाध्याय : रमेशचन्द्र पन्त,

पूर्व-पीठिका

पूर्व-पीठिका

लोक गाथा के पहले ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देने की क्या आवश्यकता है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो सामान्य स्तर के पाठकों के मानस पर टकराता है। यद्यपि ऊपर से तो यह अटपटा सा लगता है किन्तु थोड़ी सी गहराई से विचार करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि कोई भी साहित्य अपने युग की परिस्थितियों एवं चेतना से प्रभावित होता है और इतिहास को भी बहुत अंश तक प्रभावित करता है। कहीं-कहीं तो तत्कालीन या परवर्ती साहित्यिक सामग्री ही इतिहास-निर्माण में बहुमूल्य योग देती है। वैदिक कालीन और पौराणिक कालीन इतिहास की पूर्ति तो तत्कालीन एवं तत्सम्बन्धी साहित्य द्वारा ही की जाती है। कोई भी साहित्य क्यों न हो, वह अप्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने समय की युग-चेतना से अवश्य ही प्रभावित होता है, इतना ही नहीं वह अपने पूर्ववर्ती समय के इतिहास से संस्कारगत रूप में अनुभव लेता है, समसामयिक वातावरण से चेतना लेकर और प्रभावित होता हुआ भविष्य के लिए एक नई दृष्टि रखता है। इतिहास में जिस तत्व का अभाव हो वह प्रयत्न करने पर उस युग के साहित्य में मिल सकता है। इतिहास और साहित्य का यह पारस्परिक आदान-प्रदान एक तरफ न होकर अन्योन्याश्रित है और चिरयुगीन है। साहित्य भी अपनी रचना के लिए वस्तु, अनुभव, संस्कार, प्रेरणा, प्रभाव सर्वोपरि चेतना इतिहास (समसामयिक तथा पूर्वकालीन से ही ग्रहण करता है। कुछ लोग यह मानते हैं कि वह सच्चा साहित्य ही नहीं, जिसमें युग-चेतना या युगबोध न हो, किन्तु हम इससे भी आगे बढ़कर कह सकते हैं कि बिना युग-चेतना या युग-बोध अथवा प्रेरणा के साहित्य सर्जन सम्भव ही नहीं है। हृदय की भावस्थिति या रस स्थिति में या मन के चिन्तन या विचार के क्षणों में अथवा कल्पना के स्वर्णिम एवं मधुर क्षणों में इतिहास का रङ्ग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रचनाकार के मन तथा हृदय में संस्कारगत, स्वतः ही निस्यूत होकर उसकी रचना में आ जाता है, चाहे रचनाकार को इसकी अपेक्षा हो या न हो और वह उसकी कामना करे या न करे यह प्रक्रिया स्वभावगत अपरिहार्य एवं अवश्यम्भावी है।

जहाँ हम लोक-साहित्य पर दृष्टिपात कर उसका अनुशीलन करें तब तो यह ऐतिहासिक तत्व और भी गहनतर हो जाता है और हम उक्त नारे

को पूर्ण ध्वनन के साथ सिंह नाद के रूप व्यक्त कर सकते हैं। लोक साहित्य में लोक गाथा के अनुशीलन में तो यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और उसकी पूर्वपीठिका बहुत ही गहनतम हो जाती है।

अस्तु, विवेच्य गाथा मालूशाही के प्रारम्भ में हमने सुलभ सामग्री के आधार पर 'ऐतिहासिक' पृष्ठभूमि' शीर्षक में बहुत विस्तार एवं यथोचित गहराई में जाने का प्रयत्न किया है। 'हीर-राँझा' और 'ढोला-मारू' में तो प्रेमी तथा प्रेमिका दोनों का नाम मिलता है. किन्तु 'मालूशाही' में केवल नायक के नाम पर ही नामकरण क्यों किया गया है ? पूरी गाथा और उसके तन्तुओं पर विचार करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि केवल नायक के आधार पर ही गाथा का नामकरण क्यों हुआ, जबकि प्रेम-मार्ग में प्रेमिका अधिक क्रियाशील एवं स्पन्दनशील है। इसी शीर्षक से हम तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा का भी पता लगा सकते हैं।

'मालूशाही' गाथा ऐतिहासिक नायक की गाथा है, किन्तु यह गाथा स्वयं इतिहास नहीं बन सकती है। कई अध्येताओं ने इस गाथा को लेकर उसे हठात् इतिहास से असंगत रूप से जोड़ने का प्रयास करके नये अध्येताओं को दिक् भ्रमित करने का प्रयत्न किया हैं। यही कारण हैं कि हमने प्रकाशित सुलभ सामग्री को लेकर उसका समीक्षात्मक एवं गवेषणात्मक विवेचन देने का प्रयास किया है।

(अ) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ० त्रिलोचन पाण्डे ने अपने 'शोध-प्रबन्ध'[1] में श्री राहुलसंस्कृत्यायन श्री बद्रीदत्त पाण्डे, जे० सी० पावेल प्राइस, श्री गङ्गादत्त उप्रेती, अठकिसन इत्यादि के उल्लेखों के आधार पर कुमाऊँ की ऐतिहासिक स्थिति पर इस प्रकार प्रकाश डाला है—

'प्राचीन समय में इस भू भाग का सम्बन्ध कुरु जनपद से था क्योंकि अर्जुन की दिग्विजय में इस प्रदेश की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। पाँचाल जनपद से भी इस भाग का सम्बन्ध रहा क्योंकि गंगा के उत्तरी भाग पाँचाल की राजधानी अहिछत्र (वर्तमान बरेली के समीप) थी। कत्यूर वंश का सम्बन्ध अयोध्या के सूर्यवंशियों के साथ रहा है। अतः उत्तर कौशल से भी इस भू-भाग का सम्बन्ध रहा है। बहुत पहले से यहां खश शासन करते

---

१. कुमाऊँ का लोक साहित्य डा० त्रिलोचन पाण्डे, पृ० ५० से ५२

थे। ईसा की प्रथम या दूसरी सदी में यहाँ 'कुविन्दों' का शासन था, जो खशों की एक शाखा थी। इनका साम्राज्य गुप्तकाल तक रहा।

यहां का प्रथम राजवंश कत्यूरी था, जिनका दो सौ वर्षों का राज्य-काल राहुल ने लगभग ८५० ई० से १०५० ई० तक माना है। इनका सम्बन्ध काबुल के कटौर वंश तथा बंगाल के पालवंश से माना जाता है। 'कत्यूर' शब्द की व्युत्पत्ति कार्तिकेयपुर से मानें तो इनका सम्बन्ध शक एवं कुषाणों से जाता है क्योंकि इनके सिक्कों में कार्तिकेय की मूर्ति रहती थी। प्रारम्भ में कत्यूरों का केन्द्र गढ़वाल के जोशीमठ में था बाद में वे अल्मोड़े की कत्यूर घाटी में आ गए। इनके ताम्रपत्र व शिलालेख मगध व बंगाल के पालों के ताम्र-पत्रों एवं शिलालेखों से शैली में समानता रखते हैं। ग्यारहवीं सदी बाद इनका प्रभुत्व कम हो गया और ये विभिन्न शाखाओं में बँटकर छः स्थानों—काली कुमाऊँ, डोटी, अस्कोट, बारामण्डल, कत्यूर और द्वाराहाट लखनपुर में रहते थे। बिखरी हुई स्थिति में भी कत्यूरों का शासन १५ वीं सदी तक रहा। यों तो १४ वीं सदी तक कुमाऊँ में कोई एक सशक्त राज्य नहीं था। छोटे-छोटे राज्य थे, जिनके बीच कभी-कभी खश राजा भी सिर उठाते थे।

चन्द्रवंश का प्रथम राजपुरुष सोमचन्द्र का समय ९५३ ई० माना जाता है। उसने चम्पावत में अपना किला बनाकर धीरे-धीरे राज्य का विस्तार किया। चन्द राजाओं की क्रमिक परम्परा थोहर चन्द' (१२६१ई०) से महेन्द्र चन्द (१७९० ई०) तक मिलती हैं। इस बीच चन्द राजाओं ने छोटे-छोटे राजाओं को हराकर अपना राज्य सारे कुमाऊँ में फैलाया। इन राजाओं में प्रमुख गरुड़ ज्ञानचन्द, उद्यानचन्द, विक्रमचंद भारतीचन्द, रुद्रचन्द, लक्ष्मीचन्द, बाज बहादुरचन्द उद्योतचन्द, देवीचन्द कल्याणचन्द, दीपचन्द और मोहचन्द मुख्य हैं, जिन्होंने अपने राज्य के उत्कर्ष या अपकर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चन्द साम्राज्य का उत्कर्ष काल रुद्रचन्द (१५६५-९७) है जिसके राज्य की सीमा में सम्पूर्ण कुमाऊँ आ गया। लक्ष्मीचंद और उद्योतचंद के समय गढ़वाल और डोटी के शासकों से युद्ध हुए। कल्याणचन्द के समय रुहेला आक्रमण हुए और मोहनचंद (१७६७-७९) के बाद इस राज्य का शीघ्रता से पतन होने लगा। चंद राजा दिल्ली मुगल दरबार से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रहे, जिसका उल्लेख हमें 'जहांगीर

नामा' व 'शाहजहां नामा' से मिलता है। १७९० ई० में गोरखा आक्रमण के कारण चन्द साम्राज्य नष्ट हो गया।

सन् १७९० से सन् १८१५ तक कुमाऊँ में गोरखा शासन रहा, जिसका विस्तार नैपाल से लेकर, गढ़वाल, देहरादून, कांगड़ा और शिमला तक रहा। गोरखों ने प्रजा पर अमानुसिक अत्याचार किए। १८११ ई० में गोरखा अंग्रेज युद्ध के बाद यह प्रदेश अंग्रेजों के हाथ में आ गया। अंग्रेज कमिश्नरों में मि० ट्रेल, बैटन, हैनरी रामजे कमिश्नरों ने यहां कई सुधार किए। भूमि की नाप कराके लगान निर्धारित की, तथा आय की नवीन व्याख्या की। यहां कांग्रेस की स्थापना हुई। १९११ ई० में अल्मोड़ा अखबार के प्रकाशन से देशभक्ति विषयक विचारों के प्रकाशन के साथ-साथ राजनीतिक संस्थाओं का जन्म हुआ। १९२१ ई० में 'कुली-प्रथा' के विरुद्ध यहां सत्याग्रह हुआ। १९३०-३१ ई० में 'नमक-कानून' तोड़ने पर कई लोग जेल गये।

कत्यूरों की राजधानी कत्यूर थी। चन्दों की राजधानी पहले चम्पावत और फिर अल्मोड़ा हुई। मुगल काल में भी दिल्ली से सम्पर्क रहने पर भी यह भाग मुगल साम्राज्य में नहीं आया और यहां का विकास अपने ही ढंग से होता रहा। अन्य सारे देश में इस्लाम के आगमन से जो परिवर्तन हुए, वह परिवर्तन इस पर्वतीय भू-भाग में नहीं हुआ। (केवल इस्लाम के प्रसार के कारण धर्म-भीरु जनता मैदान के विभिन्न अञ्चलों से यहां आकर बसने लगी)। अतः कहा जा सकता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में ही इस भू-भाग का सीधा सम्बन्ध देश के साम्राज्य के एक अंग के रूप में हुआ। इस सबकी प्रत्यक्ष छाप यहां के लोक-जीवन, परम्पराओं और लोक साहित्य, विशेष रूपेण लोग गाथाओं पर पड़ा है।'[1]

डॉ० पाण्डे ने अपने 'शोध-प्रबन्ध' में बताया है कि गाथा में वर्णित स्थान या जातियां ऐतिहासिक रही है। उनका क्रम किसी न किसी रूप में अभी तक भी मिलता हैं। मालूशाही कत्यूरी वंश का था। स्थानीय इतिहास कत्यूरी वंश का केवल संकेत मात्र करता है जिसकी स्थिति चन्द साम्राज्य से पहले की थी। कत्यूर वंश का अधिक वर्णन हमें लोक गाथाओं द्वारा मिलता है। कत्यूर वंश की पहले राजधानी जोशीमठ थी, बाद में साम्राज्य विस्तार होने पर उनकी राजधानी अल्मोड़ा की कत्यूर घाटी में हुई। गाथाओं

---

१. कुमाऊँ का लोक साहित्य—डा० त्रिलोचन पांडे, पृ० १६४-१६५

में धामदेव व ब्रह्मदेव का नाम आता है। ब्रह्मदेव ने थोरचन्द-भागचन्द की सेनाओं को हराया था। चम्पावत के राजा निर्मलचन्द ने अपने पुत्र के विवाह का प्रस्ताव जिस दोतीगढ़ की खसिया राजकुमारी 'बिरिया दोत्याली' से किया था, उसी के साथ ब्रह्मदेव का सम्बन्ध भी हुआ था। थोरचन्द का समय १२६१ ई० से १२७५ ई० तक माना जाता है। अतः ब्रह्मदेव का समय भी तेरहवीं शताब्दी में माना जा सकता है। कत्यूरों की अस्कोट बशावली में अन्तिम पांच नाम—प्रीतम देव, धामदेव, ब्रह्मदेव, त्रिलोकी पाल तथा अभयपाल हैं। अभयपाल सन् १२७९ में कत्यूर छोड़कर असकोट चला गया। अभयपाल ने अपनी उपाधि 'देव' से पाल कर दी थी। प्रत्येक राजा के लिए बीस वर्ष के समय का अन्तराल छोड़ा जाय तो भी ब्रह्मदेव का समय तेरहवी सदी का मध्य भाग ठहरता है। ब्रह्मदेव के समय कत्यूरी वंश का अवसान समझना चाहिए। मालूशाही को धामदेव व ब्रह्मदेव का समकालीन समझने पर उसका समय भी तेरहवीं सदी के लगभग ही अनिश्चित होता है। जियाराणी जागर में जियाराणी को धामदेव या ब्रह्मदेव की पत्नी माना है। गाथा के अनुसार शिव की कृपा से उनका पुत्र दुलशायी हुआ। ["मायापुरी नायो जिया ले, दुलासायी पायो, तब दियो गुरु ले आधार"] यदि यह दुलसाही तथा मालू का पिता दुलसाही एक ही व्यक्ति थे, तब तो मालूशाही का समय और ली बाद का ठहरता है। इसका आधार द्वाराहाट और डोटी की वंशावलियां हैं। मालूशाही की स्थिति कत्यूर वंश के अवसान की स्थिति हैं।

दूसरी ओर राजुली की माता गाङुली का प्रसङ्ग भी कल्पना प्रसूत नहीं है। कहा जाता है गांऊली बड़ी दानी थी, अल्मोड़े से मिलम तक प्रत्येक पड़ाव में उसके नाम की धर्मशालाएँ बनी हैं। 'सुनपति सौक भी ऐतिहासिक व्यक्ति माना गया है, क्योंकि सुनपति ने मन्दाकिनी का तटवर्ती प्रान्त बसाया और व्यापारिक मार्ग खुलवाये। इसका उल्लेख बद्रीदत्त पाण्डे जी ने अपने इतिहास में किया है।'

लोकसाहित्य में सूर्यवंशी परम्परा—कुमाऊँनी लोक-गाथा परम्परा के अनुसार मालूशाही कत्यूर का राजकुमार था। ये कत्यूरवंशी सूर्यवंशी राजपूत थे, जो स्थान विशेष में निवास करने के कारण कत्यूरी कहलाये। इसी वंश में पहले रामचन्द्र जी भी उत्पन्न हुए। लोक गायक आज भी जागरवासीओं में, नवरात्रियों में, या लोकउत्सवों में कत्यूरी वंश के राजाओं की वंशावली

का संकीर्त्तन करता है। 'कुमाऊँनी साहित्य सदन' दिल्ली द्वारा प्रकाशित और चिन्तामणी पालीवाल कृत 'कुगाऊँ के सम्राट' (चारों भाग) में जिस वंशावली का बखान किया हैं, उसका सम्बन्ध मूलतः आदि पुरुष मनु से लिया गया है। यह सम्भव है कि अपनी जाति एवं वंश की महत्ता को बनाए रखने के लिए प्रत्येक वंश ने ऐसा ही किया हो। प्रस्तुत वंशावली इतिहास में सुलभ वंशावली से कहीं मेल खाती है, कहीं क्रम विपर्यय है और कहीं एकदम दिशान्तरण है। चूँकि लोक-जीवन लोक-साहित्य की एक परम्परागत एवं चिरकालिक धारा से अनुप्राणित होता आया है, अस्तु इतिहास या उदात्त साहित्य से साम्य न रखने के कारण लोक साहित्य में सुलभ इस वंशानुक्रम को एकदम नकारते हुए उपेक्षित समझना भी ठीक नहीं। हमें इस क्रम विपर्यय, दिशान्तरण, नामान्तरण, के कारण तथा परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए। इस नम्बन्ध में यह भी द्रष्टव्य है कि इस लोक साहित्य की निर्मल धारा को परम्परागत रूप से मौखिक या श्रुतिरूप में आगे बढ़ाने वाला लोक-गायक प्रायः निरक्षर किन्तु प्रतिभासम्पन्न बृहस्पति होता है। श्रुति परम्परा के कारण बहुत कुछ क्रम विपर्यय होना स्वाभाविक है। पुनश्च, अपने आराध्य राजवंश के नामों का संकीर्त्तन करना उसका प्रथम लक्ष्य है, कालक्रम तो उसके लिए गौण है। अतीत के परतों में दस-बीस या पचास-साठ वर्षों का अन्तर लोक-गायक के लिए नगण्य सा हो जाता है।

श्री चिन्तामणी पालीवाल के अनुसार यह वंशावली इस प्रकार है - 'सृष्टि के मूल में मनु और सतरूप का निर्माण ब्रह्मा ने किया। मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद हुए और उनके पुत्र ध्रुव हुए। चौथी अवस्था में मनु सन्यासी हो गये और दूसरे जन्म में वे राजा दशरथ के रूप में अवतरित हुए। इसी वंश में फिर राजा सगर हुए, जिनके साठ हजार पुत्र जलकर मर गये थे। सगर के दूसरे पुत्र अंशुमान हुए, जिन्होंने राजा दिलीप को जन्म दिया। राजा दिलीप के पुत्र-पौत्र इस प्रकार हुए— भगीरथ, कुकस्थान, राजा रघु, अज, दशरथ, श्रीराम, (भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्न सहित) लव-कुश (भरत आदि तीनों भाइयों के भी दो-दो पुत्र हुए)। एक बार खिन्न होकर अयोध्या नगरी कुश के पास गयी और उसने बताया कि वह रघु-वंशियों की वैभवशालिनी राजधानी अयोध्या है, जो आज उदासीन होकर पुनः वैभवार्जन हेतु प्रार्थना करने आयी है। कुश ने उनकी प्रार्थना मान ली

और अयोध्या नगरी को खूब सजाया गया और प्रजा को खूब दान दिया गया। कुश ने नाग राजा कुमुद को जीतकर उसकी पुत्री कुमुदिनी के साथ अग्नि की साक्ष्य रखकर गान्धर्व विवाह किया। इसी कुमुदिनी की गोद से राजा अतिथि पैदा हुए, जिसका राज्य बड़ा सम्पन्न था। अतिथि का विवाह निशोथ राजा की कन्या निशीथिनी से हुआ जिनसे निशिधि नाम का पुत्र हुआ। निशिध से नल हुए और फिर वंशानुक्रम इस प्रकार आगे बढ़ा— नल-नभ पुण्डरीक-क्षेम धन्वा-देवनीक-आदि नग-परियान्त, शीलवान, उन्नाम, व्रिजघोष, शंखणाव, विशान्त, विम्बाखट्ट हुर्षायम, वैश्वम, ब्रह्मरिष्ट, पुत्ररथ, पुष्य, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण हुए। अग्निवर्ण विलासी एवं कामुक राजा हुए जो वृद्धावस्था में क्षयरोग से पीड़ित होकर मर गये। मरते समय तक राजा निःसन्तान थे, केवल एक रानी तब तीन माह से गर्भवती थी। प्रजा की आशा उसी गर्भ में टिकी थी। यथा समय रानी ने सिन्धु नाम के राजकुमार को जन्म दिया। प्रजा में अपार प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी। तिरोहित होता हुआ रघुवंश फिर एक बार वृद्धिश्री पाने लगा। राजा सिन्धु बड़े योग्य एवं ज्ञानी राजा हुए। फिर वंशानुक्रम इस प्रकार आगे बढ़ा—

सिन्धु, श्रीमख, श्रीप्रसुभुत, सेधि, अमरहण, सदसवान, विश्ववाहु, प्रसेनजित, तक्षक, विट्ठल, विहर्दण, विश्वविद्ध, प्रतिव्योम, राजाभान, दिवाकर, सहदेव, बृहदश्वदेव, मनुभान, प्रतिकर्षवान, सुप्रतीक, भरवदेव, सुनखतर, पुष्कर, अन्तरिक्षनर, अविभाजन, वृद्धाजमित्र, बद्री, कृतज्या, रणज्या, संजया, शाक्य, सुहृदयदेव, देगल, प्रसेनजित, शुद्धक, कनक, सूर्याख्य, सुनाम इत्यादि हुए। द्वापर के अन्त में सूर्यवंशियों की जातियां अयोध्या से अन्यत्र स्थानों में जाकर रहने लगी। इसी सूर्यवंश में से शालिवाहन नामक एक राजकुमार उत्तराखण्ड पर्यटन के लिए गया। जोशीमठ (बद्रीनाथ के समीप) नामक स्थान के पास नृसिंह भगवान का प्राचीन मन्दिर था। उस स्थान की प्राकृतिक शोभा और शीतल जलवायु ने शालिवाहन का मन लुभा दिया और वह वहीं निवास कर राज्य स्थापित करने लगा। शीतकाल में उसकी राजधानी तराई भावर में खैरागढ़ धामपुर, ढिकुली, कालाढूंगी, सीतावनी इत्यादि स्थानों में शिविर लगाकर रहती थी। सात पीढ़ी तक जोशीमठ में राजधानी रही, फिर कार्तिकेयपुर-कत्यूर नामक स्थान में राजधानी बदली, तभी से ये कत्यूरिया कहलाये।

सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी जोशीमठ से कत्यूर बदलने का भी

एक कारण है। जोशीमठ में वासुदेव नामक राजा बड़ा पराक्रमी और पुण्यात्मा था। उसकी महारानी भी तद्नुकूल धर्मपरायणा और पतिव्रता थीं। एक दिन जब राजा आखेट को जगल गये थे तो भगवान नृसिंह ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। भगवान नृसिंह तापस वेश में महारानी के पास गये। महारानी ने मोती और मणियों की भिक्षा सन्यासी को देनी चाही, किन्तु तापस ने कहा कि वह इन बहुमूल्य वस्तुओं की भिक्षा का अभिलाषी नहीं है, वह रानी के हाथ का बना भोजन करना चाहता हैं। महारानी ने बताया कि इस दोपहर के समय में न घर में दही, दूध, घी है और न पानी। योगी ने अपनी योगमाया रचते हुए कहा कि जाओ तुम्हारे घर में दही, दूध, घी भरपूर मात्रा में है। योगी ने अपना चिमटा पृथ्वी में रोपा तो युगल जल धाराएँ आकाश को चूमने के लिए उछल पड़ी। प्रसन्नता एवं श्रद्धावनत होकर महारानी ने मधुर भोजन बनाया और तापस ने प्रेम-पूर्वक भोजन किया। सन्यासी ने कुछ देर विश्राम करने की इच्छा व्यक्त की तो महारानी ने पलंग को सजा दिया और योगी विश्राम करने लगे। इसी बीच महाराज वासुदेव आखेट से लौटे, महारानी अन्तःपुर के कार्यों में व्यस्त थीं। राजा ने पलंग पर परपुरुष को सोये हुए देखकर बिना पूछे और विचारे ही सुप्त पुरुष पर तलवार का प्रहार कर दिया। तापस का हाथ कटा और उससे रक्त के स्थान पर दुग्धधारा प्रवाहित होने लगी। आश्चर्यचकित होकर राजा ने रानी से पूछताछ की और रानी ने सारा वृतान्त कह सुनाया। राजा को नृसिंह भगवान का स्मरण हो आया, उसने हाथ जोड़कर नृसिंह से क्षमा याचना की, और आत्मकृत अपराध के प्रायश्चित के लिए शाप पाने के लिए प्रार्थना की। भगवान नृसिंह ने अपना परिचय देते हुए कहा कि तुम्हारे घर के दया-दाक्षिण भाव के कारण तुम्हारे वंश में अभी कई प्रतापी एवं यशस्वी राजा होंगे। किन्तु तुमने बिना जाने पूछे मुझपर प्रहार किया है अतः तुम्हें एक शाप भी देता हूँ। तुम्हारे प्रहार के कारण मन्दिर में मेरी मूर्ति में घाव हो चुका है, अतः अब तुम्हें इस स्थान पर रहना उचित नहीं। तुम्हें अपनी राजधानी कहीं अन्यत्र बनानी चाहिए। इसी में तुम्हारा कल्याण है। किन्तु ध्यान रखो जिस दिन इस मूर्ति का यह घाव वाला साथ टूट जायगा उसी दिन तुम्हारा राज्य एवं राजवंश दोनों छिन्न-भिन्न होकर विनाश को प्राप्त होंगे। राजा ने बड़े शान्त भाव से नृसिंह का शाप एवं आदेश शिरोधार्य किया। तभी से सूर्यवंशियों ने अपनी राजधानी जोशीमठ से कत्यूर बनायी।

इस वंश में बड़े-बड़े पराक्रमी एवं तेजस्वी राजा हुए जिन्होंने चक्रवर्ती गिरिराज, चूड़ामणि, और महाराज आदि अनेक उपाधियां धारण की, जो उनके सर्वथा योग्य थी। उनका राज्य दिल्ली, रुहेलखण्ड, कामरूप की पर्वतीय सीमा तक और पश्चिम में अफगानिस्तान के सीमावर्ती पर्वतीय भागों तक फैला हुआ था। कत्यूरी राजा जहाँ पर जो प्रमुख कार्य सम्पन्न करते थे वहाँ पर बृहद्स्तम्भ गाड़ देते थे। इन कत्यूरी राजाओं ने कुमाऊँ और गढ़वाल में कई मन्दिर, स्तम्भ, द्वार (खोला) एवं बावड़ियां बनायीं, इन मन्दिरों में द्रोणागिरि मन्दिर, बागेश्वर मन्दिर, द्वाराहाट के मन्दिर और नौले (बावड़ियां) विभांडेश्वर, पट्टी बल्ला नया में कमराड़ मानिला के मन्दिर तल्ला दोरा के बारह बृहद स्तम्भ इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इन राजाओं ने मन्दिरों के नाम कई गांव जागीर (गूँठ) में दिये। काठगोदाम के पास 'गौला' नदी के किनारे रानीबाग कत्यूरी रानी द्वारा ही बसाया हुआ है, जहाँ एक समय सुन्दर बगीचा था। रानी क्षेत्र (रानीखेत) भी रानी ने ही बसाया था वहां सुन्दर छायादार वृक्ष लगाये और रानी कभी-कभी वहां घूमने के लिए जाया करती थीं।

बासुदेव के पुत्र कनकदेव हुए, जो काबुल के पास युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। फिर वंशानुक्रम इस प्रकार आगे बढ़ा—कनकदेव, बसन्तदेव, कल्याणदेव, त्रिभुवनदेव, निंबलदेव, ललितसूरदेव, भूदेव हुए। फिर राजा और रानी युग्म से वंशानुक्रम आगे बढ़ा—निवृतनाथ-देवरानी, इष्टदेव-दिशामहारानी, ललितमोहनदेव-श्यामामहारानी, नलोनादित्य-सिंहावलीरानी, इच्छटदेव-सिन्धुदेवी, देसट सम्राट-पदमलदेवी, पदमलदेव-इसालदेवरानी और फिर सुभिक्षण नामक राजा बड़े गुणी और ज्ञानी हुए। ललितसूरदेव के पुत्र भूदेव बड़े ज्ञानी, धर्मात्मा, पराक्रमी राजा हुए। वे भूत-पूजा, पशुबलिदान एवं अप्राकृतिक शक्तियों (परी, आंचरी, खिचरी, बयाल इत्यादि) की पूजा भी नहीं करते थे। सनातन एवं वैदिक धर्म के कट्टर पोषक थे। वे बौद्ध धर्म के कट्टर विरोधी थे। भूदेव से पहले कुमाऊँ में बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था। भूदेव ने बौद्ध धर्म को कुमाऊँ से हटाया। उस समय स्त्रियों में कोई पर्दा प्रथा नहीं थी। सब लोग सदाचारी थे। इनका साम्राज्य काफी वितृत था। कुछ समय तक दिल्ली में भी इनका राज्य था।

दसवीं शताब्दी के बाद कत्यूरी वंश का ह्रास सा हो गया। ये कई

शाखाओं में विभक्त होकर कई स्थानों को गये और वहां उनके वंश पल्लवित एवं पुष्पित हुए। एक शाखा गंगोलीहाट (मणाकोरी) गयी तो दूसरी डोठी (नैपाल) गयी। एक अस्कोट (पालरजबार वंश) को गई तो दूसरी पाली पछों (द्वाराहाट, बैराठ, लखनपुर) और तीसरी गढ़वाल को गयी। कत्यूर में एक ही शाखा रही। दसवीं सदी के बाद कत्यूरियों के छोटे-छोटे माण्डलिक (आंचलिक) राज्य हुए। इन माण्डलिक राज्यों में न कोई महान कार्य हुए और न इनमें परस्पर प्रेम-सहयोग एवं एकता ही रही। विस्तृत राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और केवल कुमाऊँ के अञ्चल में इनके छोटे-छोटे राज्य सीमित हो गये। कत्यूरियों की एक शाखा के अन्तिम राजा धामदेव और दूसरी शाखा के अन्तिम राजा ब्रह्मदेव थे।

कत्यूरी वंश की पाली पछाऊँ वाली शाखा पश्चिमी रामगंगा के तट पर लखनपुर (जहाँ आज भी प्राचीन खण्डहर विद्यमान हैं) में जाकर बस गयी। भीम और पामा नामक दो कठायत इसी दरबार में थे। स्यूँरा और प्यूँरा नामक दो मल्ल भी वहां थे। मंगल पठान नामक पहलवान जो कत्यूरों से युद्ध में हार गया था इनसे सन्धि करके इन्हीं के दरबार में रहने लगा था। बहूसेजपाल इनका राजज्योतिषी था। खगेदास तथा भेकदास भी इनके बड़े ज्ञानी गुरु थे। धामदेव का राज्य तराई में धामपुर और बिजनौर तक फैला हुआ था। धर्मपुर, धामपुर को धर्मदेव, धामदेव ने ही बसाया। अन्त में कत्यूरियों ने बड़े अत्याचार और अनाचार किये, जिससे प्रजा खिन्न व त्रस्त हो उठी। चंद वंशी राजाओं के हमले हुए प्रजा ने राजा का साथ नहीं दिया, जिससे कत्यूरी वंश नष्ट हो गया और चन्द वंश गद्दी पर बैठा। लोकगायक कत्युरियों की पिंडाई का वाचन तथा पाठ करता है। इन औजी (लोक गायकों का मन्तव्य है कि रानी धर्मा से धामदेव (धर्मदेव तथा रानी दुदा से दुलशाही पैदा हुए। इनकी दूसरी शाखा में सिद्दमा-विरमा-ब्रह्मदेव और तीसरी शाखा में भीकमा-पितमा हुए। आलसाई, पालसाई, लंगड़ा लाड़म साई इत्यादि साई, शाही परम्परा में मालूशाही अतीव प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने भोट की राजुला कन्या से विवाह किया।

'कत्यूरों की जतरा' के अनुसार पहले राजा छोट थे, छोट के अछोट, उसके अरया और फिर बरया हुए। बरया की पुत्री अदेलमती बड़ी रूपवती, शीलवती और धर्मनिष्ठा थी। उससे आसन्तीदेव और फिर बासन्तीदेव, नारङ्गदेव, सारङ्गदेव, सुजान मणिपाल के पृथ्वीपाल हुए। पृथ्वीपाल की

रानी जिया थी। जियारानी से धामदेव पैदा हुए। दूसरी शाखा के राजा बीरमा-ब्रह्मदेव हुए, जिसके वंश में बत्तीस पीढी तक प्रसिद्ध लोग होने रहे, जिसमें भीकमसाई, पीतमसाई, डूना न्याड़मसाई राजा मालूसाई हुए। धामदेव ने बेलाणी का नकुवा मसाण साधा और ब्रह्मदेव ने नौकुचियावाल का पठाण साधा। तीसरी शाखा के राजा मालूसाई ने भोट से राजुली को लाकर उससे शादी की। लखनपुर में उसकी राजधानी के बड़े ठाट-बाट थे–' आसन बाँका, बासन बाँका, बांधा सिंहासन बांका।"

कत्यूरों की वंशावली की एक शाखा इस प्रकार से भी वर्णित है — शालिवाहनदेव- संजयदेव- कुमारदेव- हरिदेव- ब्रह्मशंखदेव- त्रिजदेव- वाणज्यदेव बिक्रमदेव- सारंगदेव- किलायदेव- भोजदेव- विजयपालदेव- भुजेन्द्रदेव- समसिदेव- असालदेव- असोकदेव- नागजादेव- कामज्यदेव- शलिनकुलदेव- गणपति- पृथ्वीधर- जयसिंहदेव- शंखचर- शंखेश्वर- सोमेश्वरदेव- शिवदेव- सत्यदेव- सिन्धुदेव- विनयकिलाड़ादेव- रणफीनदेव- नीरजदेव बज्रबाहुदेव- सिद्धदेव- गौरांगदेव- शाण्डिल्यदेव- ह्रुपीनरदेव- तिलकराजदेव- उदगशीलदेव- प्रीत्तमदेव- धामदेव- ब्रह्मदेव। इनमें अन्तिम राजा त्रिलोकपाल थे। अभयराज अस्कोट जाकर वहीं अपनी राजधानी बनाकर रहने लगे। त्रिलोकपाल के पुत्र अपने को मल कहलाने लगे। उसी में एक नागमल वंश भी हुआ। नागमल के दो पुत्र अर्जुनशाही और रामसेरमल हुए। 'शाही' और 'मल' से पहले 'पाल' संज्ञक कितने ही राजा हुए। निर्भयपाल- भारती-पाल- भूपाल-भैरवपाल- रतनशेरपाल- श्यामपाल- शाहपाल- साईपाल- सुरजन भोजपाल- भर्तृपाल- सुरजन अच्छपाल त्रिलोकपाल- सूहजजगतपाल- प्रजापाल रायपाल महेन्द्रपाल- जयनपाल- बीरबलपाल- अमरसिंहपाल- अभयपाल- उच्छपाल- बिजयपाल- रुद्रपाल- महेन्द्रपाल- बहादुरपाल- पुष्करपाल- कुंवर गोविन्दसिंह और गजेपाल, भूपेन्द्रपाल हुए।

कत्यूरों की डोटी को गई हुए वंशावली के नाम इस प्रकार है शालिह्म शक्तिवाहन- ब्रह्मदेव- ब्रह्मध्रजदेव- विक्रमदेव- धर्मपाल- नीलपाल- पूरजारजदेव, भोजराज, अगरदेव, असालदेव, सारंगनकुलदेव, जयसिंहदेव, अनिजाल विद्याराज पृथ्वीश्वरदेव, कनपालदेव, आसन्ती, वासन्ती, कटारमल, सिंहमल, निर्मलराज, नीलराज, बज्रबाहुदेव, गौरावमल, सीयामल, इन्तराज देव, नीलदेव, फटकशिलादेव, पृथ्वीदेव, धामदेव, ब्रह्मदेव, त्रियसीकदेव निरंजन, नागमल अर्जुनसाई, भूपतिशाही, हरिशाही, रामप्रवरशाही,

रुद्रशाही, विक्रमशाही, मान्धाताशाही, रघुनाथहरशाही, कृष्णसाई, दीपसाई, विष्णुसाई, प्रदीपसाई और अन्तिम हुए हंस साई'।

श्री चिन्तामणि पालीवाल ने जो उक्त वंशावलियां दी हैं, उनमें श्रुति परम्परा से प्रचलित कत्यूरियों के जागर एवं पिड़ाई में सुलभ सामग्री, श्री बद्रीदत्त पाण्डे जी द्वारा लिखित इतिहास, श्री रुद्रदत्त पन्त, अठकिन्सन; कनिंघम इत्यादि के तथ्यों को मिश्रित रूप में लिया है। अत: उसमें यत्र-तत्र क्रम विपर्यय, पुनरुक्ति इत्यादि आना स्वाभाविक है। उन्होंने कई नामों को आंचलिक लोक भाषा के रूप में लिखा है, अत: शुद्ध नामों की जानकारी कठिनता से होती है। तथापि श्री पालीवाल का प्रयास अपनी लोकसाहित्य सेवा की दृष्टि से स्तुत्य है।

कुमाऊँ का प्रदेश अति प्राचीन समय से ही देवताओं की लीलाभूमि, अवतारों की विहार भूमि और ऋषि-मुनियों के चिन्तन एवं साधना का पवित्र स्थल रहा है। 'मानस खण्ड' में हिमालय तथा इस भूमि की प्राचीनता महत्ता, एवं पवित्रता का संकेत मिलता है। यह मानसखण्ड 'स्कन्दपुराण' का एक छोटा खण्ड है जो राजा जनमेजय तथा सूतपौराणिक के बीच वार्तालाप से प्रारम्भ होता है। सती के भस्म होने के बाद शिवजी उदासीन एवं विरक्त भावना से झांकरसैम (जागेश्वर) पर्वतमाला में स्थित के वन में नग्नावस्था में समाधिस्थ थे। सप्तर्षियों (मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ) की पत्नियां समिधा एकत्रित करने जंगल गयीं थीं। शिव के शरीर के सौन्दर्य को देखकर वे शिव के चारों ओर घिर गयीं और दूसरे दिन तक वहीं पड़ी रहीं। जब सप्तर्षि गण दूसरे दिन अपनी पत्नियों को ढूंढ़ते वहां पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनकी पत्नियां शिव के चारों ओर बेहोश पड़ी थीं। आवेश में आकर शिव को उन्होंने शाप दिया कि जिस लिंग या इन्द्रिय के कारण तुमने यह अनाचार किया वह जमीन में टूटकर गिर जाय। शिवजी ने भी प्रत्युत्तर में कहा कि तुम लोगों ने अकारण ही मुझे शाप दिया है, तुमने मुझे शंकित दशा में देखा तभी शाप दिया। अत: मैं अपने शाप का प्रतिकार नहीं करूंगा। शिवजी ने कहा कि तुम सातों आकाश में चमकोगे। शिवलिंग के जमीन में गिरने और पृथ्वी में कई स्थानों पर लिंग के प्रकट होने के कारण देवताओं ने शिवलिंग की स्तुति 'यागीश' के रूप में की। इस प्रकार वह स्थान आज भी जागेश्वर नाम से जाना जाता है। कई ज्योतिर्लिंग वहां पर विद्यमान हैं।

महाभारत में ऋषि पत्नियों के साथ इस रमण को यज्ञ के रूपक से बांधा है जहां शिव, अग्नि और ऋषि पत्नियों स्वाहा की प्रतीक हैं। शिव के वीर्य को एक स्वर्णघट में एकत्रित किया जिससे स्कन्द उत्पन्न हुए। कैलाश में रहने वाले कृतिकों (किरातों) के द्वारा कुमार का पालन-पोषण हुआ तभी वे कार्तिकेय कहलाये। उनके छः शिर व बारह हाथ थे। चूँकि वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती ने शिव के साथ रमण में भाग नहीं लिया, इसलिए कुमार के छः ही शिर हुए। इसके बाद शिव ने कामदेव को भस्म किया और वे सजधज के साथ पार्वती के साथ विवाह करने चल पड़े। कत्यूर में गरुड़ गंगा और गोमती नदी के संगम पर शिवजी ने विश्राम किया तो वहां की सम्पूर्ण वनस्पतियां औषधि रूप में परिवर्तित हो गयी तब से वह स्थान बैद्यनाथ (बैजनाथ) कहलाया। वस्तुतः कुमारसम्भव में वर्णित पौराणिक आख्यान इससे कुछ भिन्न है, जिसमें तारकासुर के वध के लिए शिवजी के वीर्य से उत्पन्न पुत्र (कुमार) के सम्भव (उत्पत्ति) के लिए ही कामदेव भस्म और पार्वती का विवाह रचा गया।

श्री बद्रीदत्त पाण्डे ने अपने इतिहास में सभी सुलभ प्राचीन एवं अर्वाचीन सामग्री का प्रयोग किया है। उन्होंने अठकिन्सन इत्यादि अंग्रेज कमिश्नर (लेखक) के मतों के साथ-साथ रुद्रदत्त पन्त एवं पं० मनोरथ इत्यादि कूर्माञ्चलीय विद्वानों के मतों को भी लेकर उसकी समीक्षा की है।

'एक समय कुमाऊँ और उसके चारों ओर समीपवर्ती भू-भाग पर कत्यूरियों का एकछत्र राज्य था। बाद में कालक्रम के कारण यह छिन्न-भिन्न हो गया और चन्द राजाओं के प्रयास से फिर इसमें राजनीतिक एकता आयी। महाभारत के सभापर्व के २७-२९ अध्यायों के उल्लेखों से स्पष्ट है कि जब युधिष्टिर ने अपने चारों भाइयों को दिग्विजय के लिए भेजा तो उन्हें इस पर्वतीय अञ्चल के कई क्षत्रिय राजाओं से युद्ध करना पड़ा। ये राजा पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में कर तथा उपहार लेकर उपस्थित हुए। कुछ ऐतिहासिक तथ्यों से इस बात का भी संकेत मिलता है कि लगभग २५०० ई० पू० से ही ये सूर्यवंशी राजा कुमाऊँ में राज्य करते थे। अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं का राज्य-विस्तार यहां तक था, जो परवर्ती युग में एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। यह तो स्पष्ट है कि प्राचीन काल में कत्यूरी लोगों का यहाँ बड़ा शक्तिशाली राज्य था। किन्तु खसों के बाद कत्यूरी आये या दोनों लगभग साथ-साथ सत्ता में आये, यह स्पष्ट नहीं है। सूर्यवंशी (कत्यूर

वंशी) राजाओं के बाद भी चन्द शासन काल में दो-ढाई वर्षों तक खश राज्य पुनः यहां पनपा। फिर भी यह कहा जा सकता है कि खश यहां के मूल निवासी थे और कत्यूरी इत्यादि बाहर से आने वाले राजवंश बाद में ही आये। डा० लक्ष्मीदत्त जोशी के खस फैमिली लॉ [पृष्ठ २६, २७, पाण्डे जी द्वारा उद्धृत] में यह लिखा है कि 'खश आर्यों से पहले यहाँ आए, उनके रूप, रंग, भाषा, सूरत आर्यों से मेल खाते थे, अतः खश वैदिक संहिताओं के रचनाकाल से पहले यहां आकर सुव्यवस्थित रूप में रहने लगे थे।

कत्यूरी शासन में यहाँ शक और हूणों का भी राज्य रहा, किन्तु वह अलग-अलग कालांशों में, अल्प समय के लिए और कुछ सीमित क्षेत्रों में ही रहा। कनिष्क युग में शक और मिहिर कुल तथा तोरमाण हूणों ने कुछ समय तक कत्यूरी शासन का कुछ भाग छीना। लगता है खश राजाओं में कोई भी इतना बड़ा चक्रवर्ती नहीं हुआ जिसने सारे पर्वतीय भाग पर राज-नीतिक एकता एवं स्थिरता स्थापित की हो। सभी राजा छोटे-मोटे भू-भाग में रहते थे और प्रत्येक का अपना किला था, जिसे कोट कहा जाता था। यद्यपि इतनी दीर्घावधि, राजनीतिक धार्मिक विप्लवों और परिवर्तनों के बाद आज उन किलों का भौतिक अस्तित्व नहीं रहा है, फिर भी उनके नाम पर 'कोट', संज्ञक स्थान आज भी सैकड़ों हैं। प्रत्येक आठ या दस वर्गमील के क्षेत्र में कोई न कोई 'कोट' संज्ञक स्थान आज भी मिल जायेगा। इन किलों को 'कोट', गढ़ी या बुङ्गा भी कहा जाता है। कुछ पुरातत्वविद रानीखेत, रामनगर मोटर मार्ग में स्थित रामगंगा के पास 'ढिकुली' को इस क्षेत्र की सबसे बड़ी प्राचीन बस्ती मानते हैं, जिसकी सामग्री से आधुनिक रामनगर बसा है। यहाँ कत्यूरियों से पहले कोई कुरुवंशी राजा रहता था, जहां पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास बिताया था। यदि उसे पाण्डवों के अज्ञातवास वाला विराट नगर मानें तो अधिक सन्देह उत्पन्न होता है, क्योंकि विराट नगर नाम के शहर कई रहे हैं—नैपाल में, देहरादून की घाटी के समीप जौनसार भावर में, या जयपुर के पास राजस्थान में।

यह माना जाता है कि इस पर्वतीय भू-भाग में अयोध्या से आने वाले मूल सूर्यवंशी राजा शालिवाहन थे। उन्होंने पहले अपनी राजधानी जोशीमठ में बनायी और छः-सात पीढ़ी बाद राजधानी कत्यूर घाटी में बनायी गयी। श्री बद्रीदत्त जी जोशीमठ को प्रारम्भिक राजधानी के रूप में नहीं मानते। फारसी इतिहास में फरिश्ते ने संकेत दिया है कि कुमाऊँ के राजा पुरु ने

दिल्ली के राजा दिल्लू को हराया और इसी पुरु से सिकन्दर की लडाई हुई थी। कुछ लोग स्यूँरा-प्यूँरा दो पहलवानों को सिकन्दर तथा पोरस मानते हैं। कुछ उनको दो खश वंशीय सुभट मानते हैं। कोई इनका सम्बन्ध वैराठ लखनपुर के कत्यूरी दरबार के सुभटों से जोड़ते हैं। हरु तथा सैम गाथा में वे दोनों पहलवान छिपुलाकोट के राजा के अंगरक्षक माने गये हैं। जो भी हो वे सिकन्दर और पोरस किसी प्रकार से भी नहीं है।

सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वान-चुवांग भारत आया। वह ब्रह्मपुर लखनपुर गया, जहाँ ब्राह्मण धर्म एवं बौद्ध धर्म दोनों के विद्वान रहते थे। ऐसा भी अनुमान है कि वैदिक धर्म से पहले यहां बौद्ध धर्म का प्रसार हो चुका था। प्रारम्भ में कत्यूरी राजा भी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे और आठवीं शती में शंकर की दिग्विजय के बाद यहां से बौद्ध धर्म उठने लगा और यहां सनातन धर्म का बोलबाला होने लगा। ब्रह्मपुर का राज्य छठी सदी के पूर्व कुमाऊँ में आ गया था और लखनपुर उसकी राजधानी थी। लोक गायक कहता है—'आसन बीका, बासन बीका, सिंहासन बीका, बीका ब्रह्मपुर, बीका लखनपुर।'' आसन्तीदेव, बासन्तीदेव कत्यूरियों की डोटी अस्कोट तथा पाली पछाऊँ वाली तीनों शाखाओं में सुलभ हैं। इसमें आसन-बासन का अर्थ सुख-समृद्धि के साधनों एवं ऐश्वर्य तथा वैभव के उपकरणों के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है।

ऐसा कहा जाता है कि जोशीमठ से कत्यूर आते हुए सूर्यवंशी राजाओं ने बैजनाथ के पास स्वामी कार्तिकेय के नाम से कार्तिकेयपुर बसाया जो बाद में एक समय करवीरपुर भी कहा गया। इस स्थान विशेष में बसने के कारण ही ये लोग कत्युरिये कहलाये या उन्होंने इस घाटी का नाम ही अपने वंश से सम्बन्ध कार्तिकेयपुर के आधार पर कत्यूर रखा, यह विवादास्पद है। परन्तु हमारी मान्यता है कि स्थान विशेष के कारण ही वे कत्यूर वंशी कहलाये। पाण्डे जी ने अठकिन्सन की यह मान्यता लेकर समीक्षा की है, जिसमें कत्यूरियों को काश्मीर के कटूरी, कटौर से जोड़ा है और काश्मीर के वासुदेव तथा जोशीमठ से राजधानी बदलने वाले वासुदेव को एक व्यक्ति बताने की चेष्टा की है। कत्यूरियों के राज्य में दूर-दूर राजदूत रहते थे। उन्होने कई निर्माण एवं स्थापत्य कला के कार्य किये। उनके इतिहास को विस्तृत रूप से जानने की हमारे पास कोई सामग्री नहीं है, केवल कुछ शिलालेख, ताम्रपत्र तथा परवर्ती सिक्के ही थोड़ा सा संकेत देते हैं। पर्वतीय

भाग में पाया जाने वाला सबसे पुराना शिलालेख तालेश्वर का माना जाता है। श्री यमुनादत्त वैष्णव ने उसकी चर्चा अपने इतिहास में (पृष्ठ १५३-५४) करते हुए बताया है कि 'इस लेख की प्राचीनता एवं तौलिकता संदिग्ध है। कत्यूरी वंश के बारे में प्रकाश देने वाले चार ताम्रपत्र बद्रीनाथ में सुरक्षित है जिन्हें पाण्डुकेश्वर प्लेट भी कहा जाता।

कुमाऊँ वाले ताम्रपत्र से विजयेश्वर महादेव के लिए गांव को गूँठ (देवताओं के लिए अर्पित भूमि) के रूप में चढ़ाने का प्रमाण है। इसमें राजा सलोनादिनदेव, इच्छटदेव और देशटदेव तीन पीढ़ी के राजाओं के नाम हैं। श्री वैष्णव जी ने इन राजाओं के नाम और काश्मीर के राजाओं के नामों में एक रूपता ढूँढ़कर उन्हें एक बताने का हठात प्रयत्न किया है। इस ताम्रपत्र मे देशटदेव के गद्दी पर बैठने का जो समय उत्कीर्ण है, वह विक्रम सम्वत् से पहले का है। इसी ताम्रपत्र को ११४५ शाके में फिर क्राचल्लदेव (डोटी वंशी कत्यूरी राजा) ने पुनः विमोचित किया और फिर शाके १३४५ में राजा विक्रमचन्द ने इसे बहाल कर दिया।

बागीश्वर (व्याघ्रेश्वर) वाले श्री भूदेव के शिलालेख में भूदेव के सात पूर्वजों के नाम इस क्रम में मिलते हैं। १. बसन्तदेव २. खर्परदेव ३, कल्याणराजदेव (आधिधजदेव) ४. त्रिभुवनराजदेव ५. निम्बर्त्तदेव ६. ईशतारणदेव ७. ललितेश्वरदेव ८. भूदेवदेव। इन आठों ने गिरिराज चक्रचूड़ामणि की उपाधि धारण की। ईशतारण की पत्नी धरादेवी थी जिसने ललितसूरदेव को जन्म दिया। ललितसूर का पुत्र भूदेव बौद्धों का कट्टर शत्रु ब्राह्मण धर्म का उपासक और शैव था।

पाण्डुकेश्वर की प्लेटों (ताम्रपत्र) में तीस पंक्तियां हैं, यह बच्चों के तख्ती के आकार का बना है और हत्थे में राजचिन्ह नन्दी (सांड़) अंकित है। नदी के चित्र के नीचे तीन पंक्तियों में—"श्री निम्बर, उनके चरणों के अनुयायी, श्रीमान् ईष्टगणदेव और उनके चरणानुयायी श्रीमत ललितसूर देव" नाम अंकित हैं। इस लेख में कार्तिकेयपुर का स्पष्ट उल्लेख है और ललितशूर को 'कुशवंशायतंश' कहा है। जिससे यह ज्ञात होता है कि वह राम के पुत्र कुश का ही वंशज रहा हो। इस लेख में नन्दादेवी को भी कत्यूरियों को कुलदेवी के रूप में स्वीकार किया गया है।

ललितशूर के इस ताम्रपत्र में उसे कत्यूरी वंश का नहीं कहा गया है क्योंकि कत्यूरी वंश तो रूढ़ रूप में तब प्रयुक्त हुआ होगा जब इस वंश

की कई शाखायें तथा उपशाखायें विविध स्थानों में जाकर पुष्पित होने लगीं होंगी। ललितशूर के राज्य में ठाट-बाट और सुव्यवस्थित शासन प्रणाली से कई इतिहासकार चकित हो जाते हैं क्योंकि उनके शासन तन्त्र की व्यवस्था कौटिल्य के अनुरूप मिलती है। दूसरी पाण्डुकेसर प्लेट (ताम्रपत्र) भी ललितसूरदेव का ही है, जिसे कार्तिकेयपुर से ही प्रसारित किया गया है। इसमें पनसारी गाँव की भूमि को नारायण मन्दिर के उपनोग के लिए विषवत् संक्रान्ति के दिन गूंठ में देने की घोषणा की है। तीसरा ताम्रपत्र पद्मभटदेव द्वारा कार्तिकेयपुर से ही प्रसारित किया गया जिसमें कुछ गाँवों को बद्रिकाश्रम को समर्पित करने का उल्लेख है। चतुर्थ ताम्रपत्र सुभिक्षराज ने सुभिक्षपुर से प्रसारित किया। इसमें कई कई गांवों को विष्णुगंगा के तटपर स्थित श्री नारायण के मन्दिर को अर्पित करने की घोषणा है। पाँचवा ताम्रपत्र आज दुर्लभ है क्योंकि पण्डित तारादत्त गैरोला ने उन्हें जर्मनी भेजा था, जिसमें से केवल चार ही वापस प्राप्त हुए।

कत्यूरी राजाओं के शिलालेखों से साम्य करते हुए कई लेख बिहार के भागलपुर एवं मुंगेर जिलों में भी मिलते हैं। इन लेखों में राज्य के विविध विभागों के अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों की सूची तथा संख्या दी है जो प्राय: राज्याभिषेक या विशेष अवसरों एकत्रित होते थे जहाँ उन्हें जागीर उच्चपद, प्रशास्तिपत्र, आदि दिये जाते थे। कत्यूरियों के मुंगेर तथा भागलपुर के ताम्रपत्रों में बहुत समानता है। प्रवचन, उपदेश तथा नीतिपरक एवं आशीर्वादी तथा महात्म्य वाले श्लोक भी बहुत कुछ समान हैं। सभी ताम्रपत्र समास बहुल क्लिष्ट संस्कृत भाषा में है।

कुमाऊँ, भागलपुर मुंगेर तथा बंगाल के ताम्रपत्रों की समानता से स्पष्ट है कि या तो कत्यूरी वंश का राज्य वहाँ कभी था या कत्यूरियों ने उन्हें कभी जीता होगा। अथवा बंगाल के पाल या सेन राजाओं ने कभी बद्रीनाथ या कैलाश तीर्थ के बहाने कत्यूरियों की भूमि को जीता हो। अठकिन्सन दूसरे मत के हिमायती हैं जिसमें अधिक वजन नहीं है। यद्यपि कत्यूरी वंश के राजा (अभयपाल १२९७ ई० में) अपने नाम के अन्त में 'पाल' लगाते थे, यह गहन चिन्तन एवं अन्वेषण का विषय है। श्रीबद्रीदत्त पाण्डे का तर्क है— 'चूँकि कत्यूरियों के सारे ताम्रपत्र कार्तिकेयपुर से ही प्रसारित हुए हैं, जोशीमठ से कोई भी नहीं हुआ है, अतः कत्यूरियों का जोशीमठ से कत्यूर

आगमन असत्य है।' हम इसे निरर्थक एवं प्रमाणहीन मानते हैं। श्री वैष्णव काश्मीर के राजाओं में तथा कुमाऊँ के राजाओं में अभेद मानते हैं। केवल व्यक्ति वाचक संज्ञाओं के नाम साम्य एवं नामों के सर्वसाम्य के आधार पर पूरे इतिहास की धारा को दूसरी दिशा में मोड़ देना ठीक नहीं है। वैष्णव जी ने कस-खस इत्यादि शब्द जहां भी मेल खाते देखे, वहीं उन जातियों एवं राजवंशों में हठात् अभेद कर देने का प्रयास किया है। इसी पूर्वाग्रह के कारण उन्होंने हमारे स्कन्दपुराण के समानान्तर काश्मीर का नीलमत पुराण माना है, जिसे कल्हण की राजतरंगिणी का आधार भी माना है। काश्मीर के नागराजाओं के नाम भी कुमाऊँ के नागदेवताओं से मेल कराके (बेनीनाग, अनन्तनाग, नागदेव, इत्यादि) अपने कथ्य की पुष्टि करनी चाही है। श्री अशोक जी ने देशठदेव, इच्छटदेव, निम्बरदेव इत्यादि कत्यूरी राजाओं के नाम की समानता कश्मीरी राजाओं से की है और काश्मीर के मुक्तापीठ (७१५-७५२ ई०) की उपाधि ललितादित्ये बताते हुए कत्यूर तथा काश्मीर राजाओं में साम्य करना चाहा है, जो उचित नहीं है। इतना तो मान्य है कि एक समय था जब कि कत्यूरों का शासन काश्मीर तक था, किन्तु यह आठवीं सदी के लगभग की बात है।

यद्यपि हमारे पास कत्यूरी वंश का कोई लिखित इतिहास नहीं है, फिर भी जनश्रुतियों, ताम्रपत्रों एवं शिलालेखों से जो तथ्य प्राप्त हैं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि उनमें से दस-बारह राजा बड़े यशस्वी और पराक्रमी हुए जिनका साम्राज्य भारत के उत्तरी पर्वतीय भाग के साथ तराई और मैदानी क्षेत्र के उत्तर-पश्चिमी भाग तक फैला था। उनकी शासन व्यवस्था सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित थी। ये कत्यूरी राजा पहले बौद्ध थे किन्तु आठवीं सदी में शंकर के उत्तरांचल यात्रा के बाद वे सनातन धर्म में दीक्षित हो गये और शैवों तथा वैष्णवों के रूप में सामने आए। कुछ राजा वैसे भी उदार थे जो बौद्ध धर्म एवं ब्राह्मण धर्म दोनों का समान आदर करते थे। इन राजाओं ने मन्दिर, धर्मशालायें, सड़कें, बाजार, तालाब, बावड़ियां इत्यादि बनावायीं और पुजारियों, पुरोहितों विद्वानों, मन्दिरों आदि के नाम जागीरें दान दी। किन्तु कालक्रम में इस वैभवशाली राजवंश का अन्त हो गया। अन्तिम कत्यूरी शासक बड़े विलासी, कामुक, विवेकहीन अत्याचारी तथा अनाचारी हुए। राज्य छोटे-छोटे भागों में विभक्त हो गया और माण्डलिक राजा छोटे-छोटे अंचलों में राज्य करने लगे। लगता है कि धामदेव

तथा ब्रह्मदेव नामक प्रतापी राजाओं से ही इस वैभवशाली राजवंश का पतन प्रारम्भ होने लगा। ये धामदेव तथा ब्रह्मदेव कौन थे, यह भी बड़ा विवादस्पद है। कौसानी के पास 'हथछीना' के नोले में धामदेव तथा ब्रह्मदव नामक राजाओं के नाम समान रुप से मिलते हैं। एक यह भी तर्क दिया जाता है कि ने दोनों राजा कत्यूरियों को दो अलग-अलग शाखाओं के अन्तिम राजा रहे हों। कुमाऊँनी लोक-गाथाओं एंव कत्यूरियों की वशावलियों में धामदेव और बृहमदेव का नाम वहुतायत से आया है। कुछ लोग इन्हें कत्यूरियों की कत्यूर वाली शाखा के राजा मानते हैं,जो परस्पर भाई रहे हों। यह हो सकता है कि ये राजा कत्यूरियों पूर्वज थे, और वे बड़े यशस्वी रहे हों और परवर्ती राजा अपने नाम के स्थान पर उपाधि रुप में धामदेव एवं ब्रह्मदेव का नाम लगाते रहे हों। क्योंकि कत्यूरियों के जागर में जियारानी एक उपाधि या उपमा मूलक विशेषण सा बन गया था। अत: किसी भी सुन्दर, वीर और शीलवती कत्युरी रानी के नाम के साथ जिया जोड़ दिया जाता है। जैसे जिया धर्मावती या जिया धर्मारानी।

अन्तिम कत्यूरी राजाओं के अत्याचारों के संकेत देनेवाले लोकगीत एंव लोकश्रुतियाँ अभी भी प्रचलित हैं। गंजाहाठ की भाग उद्यौनी...... कणक वतैं लीनी''। राजा वीरदेव ने अपनी मामी तिलोत्तमा के साथ हठात् विवाह किया। एन दिन दो पालकी वालों ने एक चट्टान से पालकी सहित कूदकर इस अत्याचारी राजा का भी अन्त कर दिया। इसके बाद कत्यूरियो की शाखऐं कत्यूर, डोटी, अस्कोट,लखनपुर, पाली पछाँऊ बारामण्डल इत्यादि कई स्थानों में विभक्त होकर आगे बढ़ी। कहा जाता है कि धामपुर कत्यूरी राजा धामदेव का बसाया था। धामदेव ने अपनी पुत्री का विवाह सोमचन्द के साथ किया, जो इस कुमाऊं प्रदेश में चन्द्रवंश का मूल संस्थापक माना जाता है। कत्यूरों का राज्य रुद्रचन्द (१५६८-१५९७ई०) के समय केवल कत्यूर तक ही सीमित रह गया था, वह भी राजा चन्द ने जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। इसी रुद्रचन्द ने सीराकोट के रैकाल्ल या रैकामल्ल राजा हरिमल्ल को हराकर उसे अपने राज्य में मिलालिया। तब चन्दों की राजधानी चम्पावत से अल्मोड़ा आ चुकी थी। यद्यपि बालोकल्याण चन्द के पिता भीष्मचन्द ने १५५५-६०ई०

के बीच अल्मोड़े की नींव डाल दी थी, किन्तु स्थापना का कार्य बालोकल्याणचन्द ने १५६४ ई० में किया।

सीरा के रैका-मल्ल राजाओं की ज्ञात वंशावली में पहले तीन नाम अधिरावत, भीष्मरावत, भक्तिरावत थे, फिर चौथे ज्ञात नाम से धीरमल्ल जगतिमल्ल इत्यादि नाम आते हैं और सत्तहरवां नाम बलिनारायणमल्ल मिलता है। जिसको एक खश राजा बसेड़ा ने हराकर सीरा कोट में तीन पीढ़ी तक राज्य किया। डुंगरा बरोड़ा, मदनसिंह बसेड़ा, रायसिंह बसेड़ा। पुन: शोभामल्ल ने बसेड़ा राजा को हराकर पुनः सीराकोट में मल्ल वंश की स्थापना की किन्तु यह विजय अधिक नहीं टिक पाई। उसके उत्तराधिकारी हरिमल्ल को रुद्रचन्द ने हराकर डोटी से खदेड़ दिया और सीराकोट में चन्द्रवंशी ध्वजा फहराई। रुद्रचन्द ने अस्कोट के राजवंश को भी जीता, किन्तु उनके साथ अपनी रिश्तेदारी करली और अस्कोट का क्षेत्र उसे जमींदारी या जागीदारी के रुप में दे दिया। इस प्रकार अस्कोट के रजवाणों का रिश्ता चन्दों के साथ होता रहा।

कत्यूरियों की वंशवली कालक्रम के आधार पर शुद्ध तो नहीं मिलती है, फिर भी जो इनके वंशजों के पास सुलभ है उसमें मूलपुरुष शालिवाहन देव, दूसरे संजय देव से लेकर पच्चीसवीं संख्या में अभयपाल (१२७९ ई०) हुए जो अस्कोट जाकर वहीं राज्य करने लगे। इसी वंशावली में इकतीसवें तथा बत्तीसवें क्रम में आसन्तीदेव तथा बासन्तीदेवी के नाम हैं जिनका संकेत यहां की लोक गाथाओं में भी मिलता है। इसी क्रम में प्रीतम देव हुए जिनके बाद धामदेव तथा ब्रह्मदेव के नाम आते हैं। ब्रह्मदेव को कत्यूरीवंश का अन्तिम सम्राट माना जा सकता है। उसके बाद त्रिलोकपाल का नाम आता है जिसका पुत्र अभयपाल था। अब तक कत्यूरी शासक देव उपाधि छोड़कर 'पाल' उपाधि धारण करने लगे। लगता है इस बीच उनके मूलराज्य कत्यूरपुर में या तो कोई आन्तरिक क्रान्ति हुई या फिर कोई बाहरी हमला हुआ। अवश्यमेव कोई न कोई हलचल हुई होगी जिस कारण उनकी एक शाखा अस्कोट गई।

त्रिलोकचन्द के दो पुत्र हुए अभयपाल और निरजंनमल्ल देव। निरजंनमल्लदेव के भी दो पुत्र हुए -शमशेर मल्ल -जिसके वंशज मल्ल कहलाए तथा दुसरे अर्जुनशाही -जिसके वंशज 'साही' कहलाए। ऐसा

प्रतीत होता है कि १२५०-१० ई० के लगभग कत्यूरी वंश के राज्य में एक साथ आन्तरिक, वाह्य, सामाजिक और धार्मिक विप्लव हुए होंगे, जिनकी मिली-जुली प्रतिक्रिया हुई होगी, जिस कारण कत्यूर से एक शाखा का अस्कोट जाना, 'देव' से 'पाल' उपाधि धारण करना, ऐसी घटनाएं हैं जो बिना गम्भीर परिवर्तन के सम्भव नही है। यह भी एक आश्चर्य की बात है कि कत्यूरी वंशावली में देव उपाधि धारण करने वाले मूल पुरुष शालिवान से ४६ वें पीढ़ी तक जो वंशावली मिली है उसमें उन राजाओं के नाम नहीं मिलते हैं जो बागेश्वर वाले भूदेव के शिलालेख में आठ पीढ़ी पूर्व बसन्तदेव तक के और नाम हैं। इस वंशावली में वे तीन नाम (सलोनादित्य देव, इच्छदेव, देशटदेव) भी नहीं हैं जो कत्यूरीयों के कुमाऊं वाले ताम्रपत्र में अंकित है। अतः हम यह सोचने को विवश हो जाते है कि या तो शिलालेख या ताम्रपत्र वाले नाम कत्यूरियों के परिवर्ती माण्डलिक राजाओ के है, जो किसी शाखा विशेष मे थे, या इस वंशावली से पूर्व के रहे होंगे। श्री बद्रीदत्तपाण्डे जी ने अभयपाल के पुत्र निर्भयपाल, भारतीपाल इत्यादि की सूची में विक्रम बहादुरपाल तक के नाम सम्मिलित किए हैं। उन्हीं के द्वारा प० रुद्रदत्त द्वारा लिखित हस्त-पुस्तक के नामों की सूची भी संकलित की गयी है। उन दोनों सूचियों में नामों एवं क्रम में थोड़ा अन्तर है। वस्तुतः एक ही सूची के दो रूप है। ऐसा प्रतीत होता है कि पाल उपाधि धारण करने वाले ये राजे माण्डलिक थे।

उत्तर-भारत की राजनीतिक परिस्थिति को गहन रूप से देखने पर भी स्पष्ट है कि यह युग परिवर्तन का युग था। सन् ११६२ ई० में पृथ्वीराज चौहान की पराजय और मुहम्मदगोरी की विजय ने भारत के इतिहास को बड़ी गम्भीरता से प्रभावित किया। इस प्रभाव से कुमाऊँ का भू-भाग भी अछूता नहीं रह सका। हर्षवर्द्धन के बाद भारतीय इतिहास में एक अन्धकार का युग आता है, जबकि देश में छोटे-छोटे राजा पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, फूट एवं संघर्ष में निरत होकर देश में राज्य करते रहे। इसी बीच यह सम्भव है कि कत्यूरवंश का शासन दिल्ली तक फैला हो क्योंकि तब इसके लिए अनुकूल अवसर तथा परिस्थितियाँ थी। हिन्दू धर्म के ह्रास के कारण इस्लाम धर्म का प्रसार एवं दिल्ली में गुलामवंश की स्थापना इत्यादि राजनीतिक एवं धार्मिक घटनाएँ लगभग एक ही

समय घटित हुई। एक ओर इस बीच धार्मिक आन्दोलन की लहर दौड़ रही थी तो दूसरी ओर हिन्दू धर्म में बौद्ध धर्म से प्रभावित नाना प्रकार के मत-मतान्तरों, आडम्बरों और पाखण्डों का बहुलता से प्रचार हो रहा था। स्पष्ट है कि कुमाऊँ का कत्यूरी राजवंश भी इस हलचल से प्रभावित हुआ।

कत्यूरी वंश की डोटी वंशावली में भी शालिवाहन से लेकर हंस-ध्वजशाही तक ५३ नाम श्री पाण्डे जी ने अंकित किए हैं। अस्कोटवाली वंशावली एवं उसमें साम्य करने पर ज्ञात होता है कि कई नाम एक रूप में हैं, किन्तु उनका क्रम अलग हैं। कई नामों में अन्तर है, अस्कोट वाली वंशावली में आसन्तिदेव तथा बासन्तिदेव के नाम ३१ वें ३२ वें क्रम में है जबकि डोटीवाली में ये नाम २० तथा २१ वें क्रम में हैं। इसी प्रकार अस्कोट की सूची में धामदेव तथा ब्रह्मदेव ४७वें तथा ४८वें क्रम में है तो डोटी वंशावली में इनका नाम ३४ वें तथा ३५ वें क्रम में हैं। पाली पछाऊं वाली कत्यूरीशाखा में आसन्तीदेव तथा बासन्तीदेव के नाम प्रारम्भ में ही है। इस पछाऊं वाली वंशावली में पाँचवी पीढ़ी में श्यामलदेव के बाद फेणराई - केशवराई नाम मिलते हैं। देवे से 'राई' उपाधि बदलने का भी कोई न कोई कारण अवश्य रहा होगा। कुमाऊँ के सुप्रसिद्ध लोकदेवता गोल्ल के पूर्वजों का सम्बन्ध भी झल्लाराइ सल्लाराई से जोड़ा जाता है। बहुत सम्भव है कि इसी 'राई' संज्ञक कत्यूरी शाखा में गोल्ल का जन्म हुआ हो।

डोटीवाली वंशावली से लगता है कि अभयपाल (१२७९ ई०) के पिता त्रिलोकपाल का दूसरा पुत्र निरजंन अपनी मल्ल उपाधि धारण कर डोटी गया, तथा उसने वहीं राज्य प्रारम्भ कर दिया। किन्तु विभाजन की यह क्रिया चलती रही और उसी के वंशज नागमल के दो पुत्र हुए - शमशेर-मल्ल - जिसके बंश ने मल्ल उपाधि बनाये रखी और दूसरा-अर्जुन शाही था, जिसके बंशज शाही कहलाए। अर्जुनशाही को रतनचन्द का समकालीन माना जाता है, रतनचन्द का शासनकाल १४५० से प्रारम्भ होता हैं। रतनचन्द भारतीचन्द के योग्य पुत्र थे, उन्होंने अढ़तीस वर्ष तक राज्य किया, इस समय तक डोटी में कत्यूरी शाखा के रैका या रणिका राज्य करते थे। जिनके राकुमार मल्लशाही कहे जाते थे। काली कमाऊँ के सार्वभौम राजा यही माने जाते थे। पिथौरागढ़ में राजवंश बमशाही के नाम से शासन करता

था। वीर भारतीचन्द यह सहन नहीं कर सका। उसने डोटी नरेश को कर देना बन्द कर दिया और उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया। बारह वर्षों तक युद्ध होता रहा। भारतीचन्द के वीर पुत्र रतनचन्द ने भी छोटे-छोटे माण्डलिक राजाओं की सहायता से सेना एकत्रित की और पिता की मदद की। फलतः डोटी नरेश हार गया और भाग गया। चन्दों ने डोटी ही नहीं जुमला और बजांग तक के सुदूर एवं सीमावर्ती राजाओं को अपने प्रभाव में रखा। डोटी सूर्यवंशी तख्त के गिरने पर शोर आदि के बम राजाओं ने स्वयं ही चंदों की अधीनता स्वीकार कर ली।

नागमल्लदेव ने सन् १४३२ ई० में 'मल्ल' संज्ञक खानदान के नाम से फिर राज्य आरम्भ कर दिया। किन्तु रतनचन्द ने पुनः डोटी पर हमला करके नागमल्ल को युद्ध में हराकर मार डाला और साही वंश डोटी की गद्दी पर बैठाया। ऐसा प्रतीत होता है कि १४७० ई० के आसपास डोटी में नागमल्ल जब रतनचन्द के हाथों मारा गया तो मल्ल वंश के बचे-खुचे लोग सीराकोट की ओर निकल गये होंगे। सीराकोट के राजखानदान में मल्ल संज्ञक राजा बहुत हुए हैं। यह भी सम्भव हो सकता कि यही नागमल्ल बलि नारायण मल्ल का पिता हो, जिस बलिनारायणमल्ल को डुंगरा बसेड़ा (एक खश राजा) ने जीतकर सीराकोट में तीन पीढ़ी तक राज्य किया हो। बाद में रुद्रचन्द एवं पुरुख पन्त ने सीराकोट की मल्लशाखा का अन्त कर वहाँ चन्द राज्य स्थापित किया।

अर्जुनसाही से, जो रतनचन्द (१४५०-८८ ई०) का समकालीन था पन्द्रह पीढ़ी तक इन साही राजाओं के नाम मिलते हैं। ऐसा लगता है हमारे प्रस्तुत विवेच्य लोक प्रबन्ध काव्य का नायक मालूशाही कत्यूरों की इसी डोटी शाखा के साही वंश का कोई राजा या राजकुमार रहा हो। पारस्परिक वैमनस्यता या स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की दृष्टि से कोई शाखा द्वाराहाट गिवाड़ एवं गढ़वाल के सीमावर्ती क्षेत्र में जाकर बस गयी हो। मालूशाही के पिता का नाम दुलशाही मिलता है। इतिहास की दृष्टि में कत्यूरी वंशावली या किसी शाखा में दुलशाही तथा मालूशाही का नाम नहीं मिलता है।

मालूशाही के समान दूसरी एक प्रेम गाथा गङ्गनाथ की भी गाथा कुमाऊँ में प्रचलित है और अतीव प्रसिद्ध है। यद्यपि इस गाथा को आज देवगाथा के रूप में गाया जाता हैं। क्योंकि गङ्गनाथ कुमाऊँ का सुप्रसिद्ध

लोक-देवता है। गङ्गनाथ डोटी के राजा भवानीचन्द या भवैचन्द का पुत्र था। वह भाना नामक परकीया ब्राह्मणी के साथ प्रेमालाप करते योगीवेश में अल्मोड़ा के जोशी खोले में पाया गया और उसकी हत्या प्रेमिका भाना सहित विश्वनाथ श्मशान के पास करदी गयी। डोटी में चन्द वंश की ध्वजा स्थायी रूप से १४६४ ई० मे रतनचन्द ने फहराई। अत: गङ्गनाथ का समय इसके बाद का ही रहा होगा। गङ्गनाथ अल्मोड़ा में मारा गया, अत: लगता है कि चन्द राजकुमार की हत्या करने का साहस अल्मोड़ा वालों ने तभी किया होगा, जब वे चन्द के शासन से असन्तुष्ट रहे होंगे अथवा चन्दों की राजधानी से बहुत दुर रहने के कारण भी उन्होंने इतना साहस किया होगा। राजा भीष्मचन्द ने १५५५-६० ई० के मध्य अल्मोड़े शहर की नीव डाली। सम्भव है कि गङ्गनाथ की हत्या के बाद ही चन्दों का ध्यान अल्मोडा मे राजधानी बदलने के लिये गया होगा। अत: गङ्गनाथ का समय १४६५ ई० से १५४५ ई० तक की शताब्दी के मध्य माना जा सकता है। एक अन्य प्रमाण के आधार पर भी गङ्गनाथ का समय यही ठहरता है।

गङ्गनाथ के कथानक में यह उल्लेख है कि वह डोटी से अल्मोड़ा जाते हुए 'शोर' (पिथौरागढ़) में कुछ दिन नायक स्त्रियों के साथ रम गया था। नायकों की उत्पत्ति भारतीचन्द व उसके पुत्र रतनचन्द के डोटी हमले के समय १४४०-५० ई० के लगभग हुई थी। जब भारतीचन्द व रतनचन्द की सेना ने बारह वर्ष तक डोटी का राज्य घेरा तो, कई सैनिक अफसरों ने पास-पड़ौस के गाँव की अविवाहित कन्याएँ अपने साथ वर्षों तक रखी, जो बाद में 'कटकाली' कहलाई और उनकी उत्पन्न सन्तान 'नायक' कहलाई, जो सभ्रान्त हिन्दू समाज में खशों से भी हीन गिने जाने लगे। इसी हीन भावना के शिकार होकर वे प्राय: स्वतन्त्र यौन-सम्बन्ध करने से भी नहीं हिचकते थे। गङ्गनाथ का इसके साथ रम जाने की घटना भी यह प्रमाणित करती है कि गङ्गनाथ का समय १४५० ई० के बाद रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भीष्मचन्द (१५५५-६० ई०) नि:सन्तान थे और उन्होंने बालो-कल्याणचन्द नामक बालक जो ताराचन्द का पुत्र था, गोद लिया। सम्भव है कि गङ्गनाथ इसी भीष्मचन्द भीमचन्द भवैचन्द का पुत्र हो जो सन्यासी बेश में भाना प्रेमिका के लिए अल्मोड़े में मारा गया हो, तभी भीष्मचन्द ने अल्मोड़ा शहर की राजधानी के रूप में नींव रखी हो। किन्तु इस कल्पना को पुष्ट करने हेतु हमें बहुत ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करने होंगे।

गङ्नाथ की लोकगाथा में उसकी प्रेमिका का नाम भाना है जो कृष्णानन्द जोशी की पत्नी कही गई है। जब भाना और गङ्गनाथ का प्रेमालाप चल रहा था, तब कृष्णानन्द तीर्थ स्नान हेतु काशी और गया गये हुए थे। बद्रीदत्त पाण्डे ने रुद्र चन्द्र की सनद मे (१५९६) ई० गन्नी के कृष्णानन्द जोशी का उल्लेख किया है, सम्भव है कि ये कृष्णानन्द वही व्यक्ति रहे हों। चूंकि राजकुमार गङ्नाथ के कारण उनका घर बरबाद हुआ था, अतः रुद्र-चन्द्र ने उसको मुआवजा स्वरूप राजकीय संरक्षण प्रदान किया हो। परन्तु यह सम्भावना है, इसे बिना पर्याप्त प्रमाणों के ऐतिहासिक नहीं माना जा सकता है।

इतना निश्चित है कि गङ्नाथ का समय १४५० ई० से १५५० ई० के मध्य रहा है। मालूशाही के समय १६०० ई० से पूर्व ही माना जायेगा, क्योंकि (१५६०–६८ ई०) तक अलमोड़ा में चन्द राजधानी की स्थापना हो चुकी थी और बारामण्डल और कत्यूरघाटी के राजाओं को चन्दराज्य में मिला लिया गया था। राजुली जब अपने प्रेमी से मिलने गई तो मार्ग में उसे कहेडीकोट आदि स्थानों में कत्यूरी वंश के लोग ही मिले, जो छोटे-छोटे मांडलिक राजाओं के अधीन थे। इन माण्डलिक राजाओं के राज्य में अनुशासन-हीनता बहुत फैली हुई थी। अतः मालूशाही का समय गङ्नाथ से थोड़ा पहले का है। मालू की माता भी उसे भोट जाने से रोकते हुए कीचक और रावण के उद्धरण देती हुई उनके दुःखद अन्त का संकेत करती है। यदि गङ्नाथ की घटना मालूशाही से पहले की होती तो वह गङ्नाथ के दुःखद अन्त का उदाहरण देना नहीं भूलती।

कत्यूरों की पाली पछाऊँ वाली वंशावली में गजवराई के दो पुत्र सुजानदेव तथा पीतमदेव हैं, जिनसे दो अलग वंश आगे बढ़े। प्रीतमदेव के पुत्र धामदेव ने दक्षिणी गढ़वाल में राज्य किया। सुजानदेव की तीसरी पीढ़ी में वीरमदेव तथा धामदेव दो भाई हुए। वीरमदेव से ही वंश आगे बढ़ा। सम्भव है कि यही धामदेव के समय का ब्रह्मदेव या वीरदेव हो। चौकोट में जसपुर के रजवार, सौमानुर के मनराल, कहैड के मनराल, तामढौन के मनराल इन्हीं कत्यूरी शाखाओं के वंशज बताये जाते है जिनकी एक शाखा ने देव से 'गुंसाई" उपाधि धारण करली। आज कत्यूरियों की मूल शाखा का पता नहीं है, किन्तु उनकी शाखाओं एवं उपशाखाओं के वंशज पाल, साही,

मनराल, आदि जातियां विद्यमान है। चन्दों ने इन राजवंशी शाखाओं से अपने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। चन्दों के आगमन के समय भी इन शाखाओं के छोटे-छोटे आंचलिक राज्य थे। स्पष्ट है मालूशाही कत्यूरीवंश की किसी शाखा-प्रशाखा के माण्डलिक राज्य का राजकुमार था।

कत्यूरीवंश के शासन के बाद लगभग एक हजार वर्ष तक कुमाऊँ में चन्दों का शासन रहा। अन्तिम चन्द राजा महेन्द्रचन्द (१७८८-९० ई०) को गोरखों ने हराकर कुमाऊँ में चन्दवंश का अन्त करके गोरखा वंश का राज्य स्थापित किया। १८१५ ई० में अंग्रेजों ने कुमाऊँ को अपने कब्जे में ले लिया। चन्दवंश के संस्थापक के नाम थोहरचन्द तथा सोमचन्द मिलते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान सोमदेव को ही यहां के चन्द्रवंश का संस्थापक मानते हैं। एक मत के अनुसार सोमचन्द इलाहाबाद के पास झूसी ग्राम से कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए यहां आये थे। तभी कत्यूरी राजा ने उनके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया और चम्पावत के पास जागीर देकर बसाया। दूसरे मत के अनुसार अन्तिम कत्यूरियों के अत्याचारों से खिन्न होकर सामन्त व दीवान कन्नौज के चन्द राजा के पास संरक्षण पाने के लिए गए और तब सोमचन्द ने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर कुमाऊं में आकर चन्द वंश की नींव डाली। अधिकांश लोग सोमचन्द को चन्द्रवंशी चन्देल राजपूत मानते हैं।

सोमचन्द के कुमाऊं में आने के समय में भी बड़ा मतभेद है। श्री पाण्डे जी ने सन १४९८ ई० में उद्धृत किया हैं। पं० रामदत्त त्रिपाठी जी के मतानुसार यह सम्वत् १२६५ (१२०८ ई०) है, अटकिंसन ने सम्वत् ९५३ ई. (८९६ ई०) माना है। श्री रुद्रदत्त जी ने बड़े शोध एवं अन्वेषण के बाद यह सम्वत् सन् तथा शाके तीनों में दिया है। जो सम्वत ७५७ विक्रमीय, ६२२ शालिवाहन तथा ७०० ई० है। कत्यूरी राजा ब्रह्मदेव-वीरदेव की पुत्री का विवाह सोमचन्द से हुआ, जिनसे आत्मचन्द उत्पन्न हुए, जिन्होंने सोमचन्द के बाद १९ वर्ष तक राज्य किया। सोमचन्द बड़े कुशल, योग्य, वीर तथा धार्मिक राजा थे, उन्हें चम्पावत की जागीर दहेज में मिली थी। उन्होंने वहां एक छोटा सा किला राजबुंगा बनवाया तथा अपने ही पौरुष से एक छोटा-सा राज्य स्थापित किया। जिसके शासन को चार फौजदार—कार्की बोरा, तड़ागी तथा चौधरी रखे जो तत्कालीन वीर जातियों के प्रतिनिधि भी थे। सोमचन्द

डोटी के राजा को कर देते थे। सोमचन्द महर एवं फड़त्याल नामक दो वीर जातियों में एकता स्थापित की और उन्हें राजदरबार में सम्मान दिया। गल्ली के जोशी, सिमालिया-देवलिया तथा मण्डलिया पाण्डे और बिष्ट ब्राह्मणों को 'चौथानी' संज्ञा देकर राजकार्य में उनकी सहायता ली। पंचायती राज्य चलाकर एक सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित शासन प्रणाली चलाई। स्थानीय खश रावत राजा को हराकर उसका राज्य भी अपने राज्य में मिलाया। उनकी चौथी पीढ़ी के राजा इन्द्रचन्द्र ने चीन से रेशम के कीड़े मंगाकर चम्पावत में रेशम का उद्योग स्थापित किया जो गोरखा शासन काल में उन के अत्याचारों से समाप्त हुआ। चन्दों की आठवी पीढ़ी का राजा वीणाचन्द (८५६-६६ई.) बड़ा भोगी एवं विलासी था। इसके सम्पूर्ण राज-काज को इसके कर्मचारी ही देखते थे। अनुकूल अवसर पाकर खशों ने फिर विद्रोह कर चन्द्रवंश से सत्ता हथिया ली। भयभीत राजपरिवार के चन्द तराई में छिपकर रहने लगे। खशों की १५ पीढ़ियों ने लगभग २०० वर्षों तक चम्पावत मे राज्य किया। इनमें कुछ खश बौद्ध थे। इनके शासन का विस्तृत विवरण अज्ञात है। खशों के अत्याचारों से दुखी प्रजा ने विद्रोह कर दिया। राजा इनि मारा गया। प्रजा ने नेपाल से बुलाकर चन्द्रवन्शी वीरचन्द को १०६५ ई० में फिर चम्पावत की गद्दी पर बैठाया, तब से चन्दवंश कुमाऊँ में लगातार शासन करता रहा। सबसे लम्बे समय ४५ वर्ष तक गरुड़ ज्ञानचन्द (१३७४-१४१६ ई.) में राज्य किया। एक बाण से गरुण को मारने के कारण मुहम्मद तुगलक ने उन्हें 'गरुड़' की उपाधि दी तथा तराई भावर का इलाका पुरस्कार स्वरूप दिया। गरुड़ ज्ञानचन्द ने दरबारियों के कान भरने के कारण अपने विश्वास पात्र नीलू कठायत की निर्मम हत्या का जघन्य कार्य किया।

डा० प्रयाग जोशी ने 'कुमाऊँनी लोक-गाथायें' (दो भागों)में लिखकर कुमाऊँनी लोकसाहित्य की बड़ी सेवा की है। लेखक ने अपने संकलन, सम्पादन एवं हिन्दी रूपान्तर को सर्वथा निर्मल रखने के लिए पूरी निष्ठा का परिचय दिया है। उन्होंने प्रस्तावना भागों में लोक साहित्य एवं तत्सम्बन्धी अवयवों तथा आयामों का समीक्षात्मक रूप प्रस्तुत किया। दोनों पुस्तकों में कत्यूरी वंशावली राजाओं, राजकुमारों एवं सुभटों की कई गाथायें हैं। उनके कुछ अंशों को लेते हुए हम यहां कत्यूरी वंश परम्परा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अधिक स्पष्टरूपेण समझ पायेंगे।

डा० जोशी ने लिखा है कत्यूरियों की वंशावली प्रस्तुत करने का लोक जीवन में एक परम्परागत एवं विशिष्ट ढंग है। संध्याकाल आँगन में कालीन बिछाकर कत्यूरी राजाओं के हथियार आदि सजाकर रखे जाते हैं। पान, इलाइची की थालियाँ सुनने वालों के स्वागत हेतु रखी जाती हैं। पंचमुखी दीपक पानस में जला दिया जाता है। जब आंगन में बैठक की तैयारी (खली जोतना) हो जाती है तो दाईं तथा बाईं ओर राजा धामदेव एवं ब्रह्मदेव के नाम के दो दल आमने सामने बैठते हैं। कहा जाता है कि धामदेव रणचूली हाट (वर्तमान सल्ट पट्टी) और ब्रह्मदेव पाली पछाऊँ का राजा था। लोक गायक सर्वप्रथम कत्यूरियों के राज की सीमा को बताता है कि पूर्व में सचनी नागती और पश्चिम में मालिनी नदी उनके राज्य की सीमा थी। कटेहर राज्य इसका पड़ौसी राज्य था। एक लोक गाथा में राजा ब्रह्मदेव की एक रानी को कटेहर की राजकुमारी बताया है।

यहाँ पर धामदेव और ब्रह्मदेव का पुनः नाम आया है और उनकी विरुदावली में भी उन दोनों को दो अलग-अलग शाखाओं का शासक माना है, जो सम-सामयिक थे। जिनके छोटे-छोटे साम्राज्य पास-पास ही स्थित थे। इससे हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि धामदेव तथा ब्रह्मदेव-कत्यूरी राजवंश के अवसानकालीन माण्डलिक राजा थे। तामाढौन में देवी के मन्दिर में कत्यूरी राजा सारंगदेव का नाम खुदा है और उसमें सम्वत् १३४२ (सन् १२८५ ई०) अंकित है।

कत्यूरियों की वंशावलियों में सारंगदेव नाम के कई व्यक्ति अलगअलग क्रम में मिलते है। अस्कोटवाली वंशावली में सारंगदेव १९ वें क्रम में हैं जो अशोकदेव का उत्तराधिकारी और नगजाबीसदेव का पूर्वाधिकारी रहा है। डोटी वाली वंशावली में सारंगदेव का नाम तेरहवें क्रम में है और पहले अशा-लदेव और बाद में नकुलदेव का नाम दिया है। पाली पछाउँ वाली शाखा में ९ वें क्रम में गजवराई के दो पुत्र माने है-सुजानदेव तथा प्रीतमदेव। सुजानदेव के पुत्र सारंगदेव माने गये हैं। और प्रीतमदेव के धामदेव। इस धामदेव ने दक्षिण गढ़वाल में राज्य किया। सारंगदेव के भी दो पुत्र हुए वीरमदेव व बागदेव, जो पछाऊँ के ही क्षेत्र में रहे। वीरमदेव से ही वंश परम्परा आगे बढ़ी। लोक-गाथा में सारंगदेव के पुत्र वीरमदेव तथा उत्तमदेव कहे गये हैं। इससे स्पस्ट है कि गाथा तथा इतिहास दोनों यह बताते हैं कि यह

वीरमदेव सारंगदेव के पुत्र थे। इससे और भी स्पष्ट संकेत मिलता है कि धामदेव ब्रह्मदेव चचेरे भाई या चाचा भतीजे थे, जो दो अलग-अलग शाखाओं के नेता थे।

परम्परागत रूप में धामदेव का रणचलीहाट का होना और वंशावली से भी इस बात का संकेत मिलना दोनों प्रकार से स्पष्ट है। लोक गाथाओं में यह भी संकेत है कि इसी वीरमदेव के भाई उत्तमदेव के पुत्र हथियाकुंवर ने पृथ्वीपाल की पत्नी जिया को तुर्कों की कैद से मुक्त किया था। डा० जोशी ने स्पष्ट किया है कि वीरमदेव तथा चम्पावत का राजा गरुड़ ज्ञानचन्द समकालीन थे। श्रीपाण्डे जी के इतिहास में है कि गरुड़ ज्ञानचन्द दिल्ली से मुहम्मद तुगलक से मिला। वस्तुत: दिल्ली की गद्दी में तब फिरोज तुगलक (१३५१-८८ ई०) था। अत: ज्ञानचन्द फिरोज तुगलक से मिला होगा। डा० जोशी ने बताया है कि ज्ञानचन्द के राज्यकाल में दो तीन वर्ष बाद ही विक्रमचन्द ने कत्यूरियों के साथ युद्ध कर दिया जो समीचीन जान पड़ता है। क्योंकि राजा विक्रमचन्द का शासन काल (१४२३-३७ ई०) ज्ञानचन्द की मृत्यु के चौथे वर्ष बाद प्रारम्भ होता है। श्री बद्रीदत्त पाण्डे जी ने विक्रमचन्द के एक ताम्रपत्र का उल्लेख किया है जिसमें शाके १३४५ (सन् १४२३ ई०) अंकित है। उसके आधार पर भी यह बात युक्त संगत लगती है।

पृथ्वीपाल की पत्नी जिया को रानी बाग में तुर्कों ने घेर कर बन्दी बना लिया था। जिया की एक बहिन हरु सैम की माता (कामीनर) थी और दूसरी बहिन छिपुलाकोट के राजा को ब्याही गयी थी। इस प्रकार हरु-सैंम गाथा का सम्बन्ध कत्यूरियों के साथ मिलता है। हरु तथा सैंम गाथा से यह बात मिलती है कि सैंम अपनी किसी भाभी की चुनौती स्वीकार करके छिपुला की रानी का अपहृण करने छिपुलाकोट गये, पर बन्दी बना लिये गये। बाद में हरु कूट उपायों द्वारा सैंम को मुक्त करने में सफल हो जाते हैं। फिर यह असंगत लगता है कि हरु या सैंम अपनी ताई या मौसी के अपहरण के लिए छिपुलाकोट गये होंगे ? इसे एकदम नकारा भी नहीं जा सकता है। जब किसी राजवंश का पतन होता है तो उसके उत्तराधिकारियों में इस प्रकार की कामान्धता, मूढ़ता एवं अनैतिकता के उद्धरण मिलते रहते हैं। कत्यूरियों में वीरदेव-

ब्रह्मदेव का अपनी मामी तिलोत्तमा (दुलापशाही) के साथ यौन सम्बन्ध करना कत्यूरियों के अस्तकाल की अनैतिक प्रवृतियाँ है । सम्भव है हरु सैंम भी इसी भावना के शिकार हुए हों ? पर इतना करने पर हरु तथा सैंम कुमाऊँ के इतने लोक प्रसिद्ध देवता के रूप में कैसे प्रतिष्ठित हुए ? उत्तर दे सकते हैं, जिस प्रकार गङ्गनाथ प्रतिष्ठित हुए। फिर और इन मिथकों एव अवदानों में ऐसे छिपे हुए रहस्य हैं, जो बड़ी गहनता तथा सावधानी से अपने विश्लेषण और विवेचन की अपेक्षा रखते हैं ।

प्रश्न है कि यह पृथ्वीपाल कौन था ? जिसकी रानी जिया को तुर्कों ने घेर कर बन्दी बनाया । जो जिया तुर्कों के बन्दी गृह में रहने पर भी बड़ी पवित्र मानी गयी और उसे कुमाऊँ में कत्यूरीवंश की देवी की सी प्रतिष्ठा मिली है । कत्यूरियों की आदर्श रानी के लिए जो सुन्दर, शीलवती तथा धर्मनिष्ठा हो 'जिया' उपाधिमूलक विशेषण उसके नाम के आगे प्रयुक्त होता रहा है । कत्यूरों की छोटी वंशावली में धामदेव के पहले 'पृथ्वीराजदेव' का नाम आता है सम्भव है जिया इसी पृथ्वीराजदेव की पत्नी हो, क्योंकि वीरदेव के भतीजे का काल लगभग वही ठहरता है, जिसने जिया के कैद से मुक्त कराया था इस प्रकार तुर्कों द्वारा जिया को घेरकर बन्दी बनाने की घटना लगभग १४०० ई० के आस-पास घटित हुई होगी ।

जब हम अपने विवेच्य लोक-प्रबन्ध मालुशाही के नायक का समय स्थिर करने के लिए विविध प्रकार के साधनों एवं उपकरणों द्वारा प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं तो कुछ नये आयाम सम्मुख आते हैं । डा० प्रयागजोशी ने कत्यूरी वंश की जो वंशावली दी है उसमें "रूपधारी तप-धारी, बेताल राजा दुलासा, राजा बिरमा की दिए आल बैठ गयी ।" पंक्ति अंकित की है । इसका स्पष्ट अर्थ है कि धामदेव व दुलासाही एक ही व्यक्ति थे । ब्रह्मदेव तथा दुलाशाही (धामदेव) दो अलग-अलग शाखाओं के प्रतिनिधि थे । इन कंथापुरियों (कत्यूरियों) की वंशावली में आँगन के पश्चिमी भाग में बैठने के लिए जिन राजाओं का आवहन किया जाता है उनमें राजा आसन्दी का नाम पहले आता है । उस आसन्दी ने मानचवाणी घराट (बैराठ के पास इस नाम की पनचक्की का स्मारक अभी भी है । कहा जाता है कि वह कत्यूरी राजाओं के रसोई के चावलों

के धोवन के पानी तथा भाँड़ से चलता था) बनाया। खीमासारी हाट में चौड़ा मैदान बनाया, और द्वाराहट में द्वारिका मण्डप बनाया तथा रथचुनीहाट (वर्तमान सल्टक्षेत्र) में राजधानी बनायी।

यह आसन्ती कौन था ? गाथा के अनुसार आसन्ती का पुत्र बसन्ती था। कत्यूरों की अस्कोट वाली वंशावली में मूल पुरुष शालिवाहन देव के बाद ३१ वें क्रम में आसन्तिदेव तथा ३२ वें क्रम वासन्तिदेव का नाम आता है। वासन्तिदेव का उत्तराधिकारी कटारमल्ल देव बताया है। डोटी वंशावली में आसन्तिदेव तथा वासन्तिदेव का नाम २० वें तथा २१ वेंक्रम में आया है। पाली पछाऊँ वाली वंशावली में आसन्तिदेव तथा वासन्तिदेव का नाम प्रारम्भ में ही आया है और फिर गौरंगदेव का नाम आया है। गाथा में वासन्तिदेव के बाद अजोपीथा तथा गजोपीथा के नाम आये हैं। पाली पछाऊँ वाली वंशावली में आठवें तथा नवें क्रम में आजबराई तथा गजबराई के नाम आए हैं। बहुत सम्भव है गाथा के अजोपीथा तथा गजोपीथा नाम इन्हीं के लिए आए हों, क्योंकि गजबराई के दो पुत्र सुजानदेव तथा प्रीतमदेव से दो अलग-अलग शाखाओं का प्रस्फुटन हुआ जिसकी एक शाखा में वीरमदेव (ब्रह्मदेव) तथा दूसरी में धामदेव पैदा हुए। धामदेव प्रीतम देव का पुत्र था। गाथा के अनुसार पृथ्वीपाल की हुई रानियाँ थीं। सबसे बड़ी रानी मानसिंह की पुत्री गाऊँली देवी थी। गाऊँलीदेवी की शाखा में राजसिंह, राजाधिंग, सिरासावला, खुश बावला, राजा बगिया और राजा धामसाही थे। पृथ्वीपाल की मँझली रानी धर्मा देवी थी, उसकी शाखा में राजा एतोमल, गौतीमल, सैंत चोरिया, बाम गुसाई. लूलालाड़ग साही और रंगीला मालूसाही हुए। रंगीले मालूशाही ने रंगीली बैराठ में राज्य किया और बड़े वैभवशाली ढंग से स्वयं को और प्रजा को प्रसन्न रखा। गाथाकार के अनुसार मालू के सैनिक गैंडे के खाल की बनी ढाल का प्रयोग करते थे। उसके दरबारी आमात्य तथा सामन्त बड़े शक्तिशाली थे, वे दुलसाही को श्रद्धापूर्वक नमन करते थे। वे राजा नीलकंठकी भूमि (सम्भवतया नालबा) से रानी जिया की पालकी लाए। ऐसा लगता है पृथ्वीपाल ने अपने नाम की उपाधि देव से पाल कर दी थी और उसी का अनुकरण करके या किसी आन्तरिक या बाह्य विप्लव के कारण उसकी सन्तानों ने मल्ल, बम, शाही इत्यादि अलग-अलग नाम की उपाधियाँ धारण करली हों, तथा सोरा, डोटी तथा सीर के माण्डलिक राजाओं के साथ

अपना पक्ष प्रबल कर लिया हो।

पृथ्वीपाल की छोटी रानी मालवा की राजकुमारी 'जिया' थी। पिता मालवा के नरेश थे और माता इसी पर्वतीय अंचल की खाती वंश की पुत्री हो। एक जनश्रुति के आधार पर जिया खाती (स्थानीय माण्डलिक राजा) की पुत्री थी। जिया का दूसरा नाम प्यौंला तथा पिंगला भी मिलता है। गाथाकार के अनुसार इसी जिया के तीर्थव्रतों एवं दान-पुण्य के आधार पर उसने संतजी या धामदेव या दुलशाही नामक पुत्र प्राप्त किया। यही दुलशाही मालूशाही का पिता था। सम्भावना है कि गजबराई के दूसरे पुत्र प्रीतमदेव का दूसरा नाम ही पृथ्वीपाल भी हो, जिसका पुत्र धामदेव जो दक्षिणी गढ़वाल में पातलीदून की ओर किला बनाकर रहता था।

कत्यूरियों की दूसरी शाखा पाली पछाऊँ की थी, जिसमें कई पीढ़ी-बाद सारंगदेव के दो पुत्र उत्तमदेव तथा विरमदेव थे। ब्रह्मदेव अनाचारी, कामुक, विलासी था। इतिहास में सुलभ इस वंशावली में सुजानदेव--सारंग-देव--वीरमदेव तीन पीढ़ी के नाम तो गाथा से मिलते है, किन्तु इलणदेव से नारंगदेव नाम नहीं मिलते हैं। इतिहास में वीरमदेव के भाई का नाम वाग-देव है जबकि गाथा में उत्तमदेव। पाण्डे जी द्वारा प्रदत्त वंशावली में इलण-देव तथा तिलणदेव से मिलते जुलते नाम इलराजदेव तथा तिलराजदेव १०वें तथा ३१वें क्रम में मिलते हैं, किन्तु बाद के नाम गाथा से भिन्न हैं। नीम-देव की रानी कटरिया--कटेहर की राजकुमारी थी और उसके सात सुन्दर कन्याएँ थी, जिनमें कामसैंक तथा दूदकेला बड़ी रुपवती बतायी गयी हैं। मालूशाही गाथा की अनेक श्रुतियों मे मालूशाही के कई विवाह बताये गये है। राजुली लाने से पूर्व मालूशाही विवाहित था और उसकी सुन्दरतम् स्त्री का नाम कामरैंण (कामशयनी) था, जिसे वीजन नामक संगीतज्ञ ने मालूशाही से पुरस्कार स्वरूप माँग लिया था। दूदकेला नाम बफौलों की माला(अजुवा बफौल गाथा के अनुसार) का माना गया है। सम्भवत: इसी दूदकेला का विवाह ' बफौली-कोट ' कर दिया हो। बफौल गाथा में दूदकेला को महरों की पुत्री माना है।

गाथाकार ने वीरमदेव के भाई उत्तमदेव की पत्नी का नाम रानी कुंजावती बताया है। इस रानी की शाखा में हथिया कुँवर ने कौसानी के पास हथछीना का नौला बनाया और जियारानी को तुर्कों की कैद से मुक्त किया तथा धौमासारीहाट में राजधानी बनायी। राजा उत्तमदेव के दीवानों

में भीमा कठायत सबसे प्रिय था। उसने गिवांड़ में राजधानी बनायी और प्रजा पर अत्याचार किये। थापा तथा परिहार जातियाँ उसके पक्ष में थीं। उत्तमदेव की तीसरी-चौथी पीढ़ी में छिपलिया पीर था जो साधु वेष बनाकर रहता था, किन्तु चरित्र से भ्रष्ट था। उसने छिपुलकोट में अपनी राजधानी बनायी।

डा० प्रयाग जोशी ने रतनचन्द की गाथा दी है जिसके अनुसार वे भारतीचन्द के पुत्र थे। रतनचन्द के शत्रु मल्ल (सम्भवतया कत्यूरी शाखा के डोटी व सीरा के राजा मल्ल) हो गये। रतनचन्द ने त्राण पाने के लिए चौकोट आगर के मैंदुवा सौन सुभट से प्रार्थना की किन्तु वह नहीं आया। फिर खिमासारी हाट में कत्यूरी राजा से सहायता की प्रार्थना की गई। राजकुमार हंसकुंवर बड़ा पराक्रमी था और वह रतनचन्द की सहायता के लिए चम्पावत पहुंचा। रतनचन्द की एक रूपवती कन्या सरुगङ्गा थी जिसे रतनचन्द ने तहखाने में छिपा दिया, किन्तु सरु ने हंसकुंवर के पास एक गुप्त सन्देश भेजकर उसे सलाह दी कि मल्लों को पराजित करके वह उसे इनाम में मांग ले। हंसकुंवर ने वैसा ही किया। सरु बैराठ गयी।

इस कथानक में आयी सरुगंगा का प्रसंग एक दूसरी लोक गाथा 'सम्पावहीत' में भी आया है, जहाँ उसे राजुली की माता गाऊंली (सुनपति की पत्नी) माना है, किन्तु मालूशाही गाथा में इसका उल्लेख नहीं है। गाथा में राजा उत्तमदेव के सात कुंवरों के नाम हैं—जिसमें हंसकुंवर तथा हथिया कुंवर दोनों का नाम आया है। रतनचन्द ऐतिहासिक व्यक्ति हैं जिसने चम्पावत में १४५० से १४८८ तक ३८ वर्ष राज्य किया, उसके पिता का नाम भारतीचन्द ही मिलता है। रतनचन्द ने डोटी के कत्यूरों को हराकर चन्दवंश की विजय पताका फहराई और शोर के बम राजाओं को हराकर उनका राज्य भी अपने राज्य में मिलाया। रतनचन्द ने सोराड़ी, देउपा, पुरचुड़ा, पड़ेर तथा चिराल पाँच प्रकार के राजपूतों को कालीपार से लाकर यहां बसाया ताकि राजभक्ति का परिचय दे सकें। गाथा में वर्णित मल्लों की शत्रुता इतिहास सम्मत है। रतनचन्द की गाथा का ऐतिहासिक महत्व है। किन्तु सरुगंगा तथा राजुली की माता गांउली को एक नहीं माना जा सकता है।

डा० जोशी जी ने अपने पुस्तक के दूसरे भाग में 'सम्पावहीत' की गाथा दी है, जिसमें सरुगंगा को चम्पावत के राजा धौवीचन्द ध्रुवचन्द की पुत्री माना

है, यद्यपि चन्द वंशावली में किसी का यह नाम भी नहीं मिलता है। इस कथानक के अनुसार सुनपति व्यापार करते हुए जब चम्पावत पहुंचा तो वह पांचवर्षीय सरुगङ्गा से विवाह करने हेतु धोबीचन्द की सलाह पर चांदी की चूड़ी पहना गया और स्वयं व्यापार करने चला गया और कई वर्षों तक लौटकर नहीं आया। सुनपति के न आने पर धूपचन्द बड़े चिन्तित हुए। सरुगङ्गा की राय पर पुत्री के विवाह के लिए उन्होंने डुगडुगी पिटवा दी कि जो धूपचन्द के मकान के पीछे बने अन्धकूप को भर देगा, उसी के साथ सरुगङ्गा का विवाह होगा। उस समय जुनौली कोट में सम्याव हीत रहता था जिसने चतुर-बुद्धि का उपयोग करके कुएं को पानी से भर दिया। अतः ध्रुवचन्द ने उससे कन्या का विवाह कर दिया। उसी समय नरसिंह धौनी की विवाह वाली हिर्वा-हेमा का साथ हुआ था। नरसिंह की वीरता से राजा विक्रमचन्द घबराता था अतः उसने राजभक्त नरसिंह धौनी की हत्या करा दी। विवाह के बाद सम्याऊहीत नवपरिणीता सरुगगा को छोड़कर कार्यवश तराई भावर चला गया। वर्षों बाद सुनपति जब चम्पावत पहुंचा और उसने सरुगंगा मांगी तो ध्रुवचन्द ने भाई की बीमारी के बहाने सरु को सम्याऊ-हीत के घर से मायके बुलाया और हठात् अर्द्धरात्रि में ही सुनपति के साथ भोट भेज दिया।

दुःखी एवं विवश सरु भोट चली गयी किन्तु उसका मन सम्यावहीत के प्रति लगा रहता था। भोट से सरु ने कौए को अपना दूत बनाकर तराई भाबर अपने पति के पास भेजकर सारा वृतान्त कहलाया। क्रुद्ध हीत धूपचन्द के पास गया और उसने अपनी पत्नी सरुगगा की पूछताछ की। धूपचन्द ने छल से विष देकर उसे मारने की चेष्टा करनी चाही। परन्तु हीत के साले श्रीखण्ड ने उसे सचेत किया कि वह विष का भोजन न खावे जो उसकी हत्या के निमित्त बनाया गया है। क्रुद्ध होकर हीत ने अपने श्वसुर का शिर काट दिया और अपने साले श्रीखण्ड के साथ सरुगगा की खोज में भोट प्रदेश चला गया। हीत और सुनपति में घोर युद्ध हुआ, अन्त में हीत ने सरुगगा को छीन लिया।

उक्त गाथा से कई प्रसङ्गों का रहस्योद्घाटन होता है। राजुली के पिता सुनपति नामक भोटिया व्यापारी की ऐतिहासिकता सिद्ध करने में हमें मदद मिलती है। यद्यपि सरुगङ्गा तथा राजुली की माता गाऊँली का एक होना स्वीकार नहीं किया जा सकता है। मालूसाही गाथा में बागेश्वर

बाघनाथ को राजुली मामाकोट (ननीहाल) का गेवना बताया है जब कि सरगङ्गा चम्पावत के चन्द राजा की पुत्री थी। दूसरा नरसिंह धौनी की बारात एवं सम्यावहेत की बारात का एक ही लग्न एवं मुहूर्त में होने की बात से कालक्रम के कुछ और रहस्य खुलते हैं। राजा विक्रमचन्द का समय इतिहास के अनुसार १४२३-१४३७ ई० है।

इतिहास में विक्रमचन्द्र को शिव का भक्त बताया है। उसके बालेश्वर मन्दिर के ताम्रपत्र में शाके ११४५ अंकित है। इससे लगता है कि उसने गद्दी पर बैठते ही सन् १४२३ ई० में शिव मन्दिर का जीर्णोद्धार करके दानहेतु यह ताम्रपत्र जारी किया। इतिहास पुष्टि करता है कि विक्रमचन्द पहले धार्मिक व्यक्ति थे, बाद में वे बड़े विलासी हो गये। इसी कारण उसके पुत्र भारतीचन्द ने खश सरदारों से मिलकर विद्रोह किया और १४ वर्ष तक शासन करने के बाद विक्रमचन्द को भागना पड़ा। इतिहास तथा लोकगाथा के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि विक्रमचन्द ऐतिहासिक है जिसका समय नरसिंह धौनी एवं सम्माऊ हीत (खश सरदार) एवं सुनपति के साथ ही पन्द्रहवीं शदी के पूर्वार्द्ध में माना जा सकता है और यही समय मालूशाही का भी माना जा सकता है। अत: हम मालूशाही के समय को १४०० ई० से १४५० ई० के बीच मान सकते हैं। यह हो सकता है कि मालूशाही द्वारा अन्तर्जातीय कन्या राजुली से विवाह करने और योगी वेश में उसे प्राप्त करने की सफलता की घटना ने आगे चलकर गङ्गनाथ को भाना-जोशी (अन्तर्जातीय परकीया स्त्री) को सन्यासी बेश में पाने के लिए प्रेरित किया है।

डा०जोशी ने अपने संग्रह के दूसरे भाग में जोशीमठ वाले आसन्दी राजा की गाथा को संकलित किया है। उसी गाथा में नृसिंह भगवान द्वारा आसन्दी की स्त्री की परीक्षा लिये जाने, और नृसिंह द्वारा आसन्ती को शाप देने की घटनायें हैं। इतिहास में आसन्तीदेव एवं वासन्तीदेव नाम कई मिलते हैं, अलग वंशाव वंशावलियों में उनके नाम अलग क्रम में हैं। केवल पाली पछाऊँ की एक शाखा के नामों में आसन्तीदेव तथा वासन्तीदेव का नाम प्रारम्भ में ही मिलता है। सम्भव है यही आसन्ती देव जोशीमठ से कत्यूर आया हो, ऐसी मान्यता हम तभी कर सकते हैं जब गाथा एवं इतिहास के मध्य साम्य ढूँढ़ने का प्रयास करें।

राजा वीरमदेव-ब्रह्मदेव द्वारा अपनी मामी के साथ यौन सम्बन्ध

स्थापित करने का प्रसङ्ग इतिहास में अंकित है। डा० जोशी ने वीरमदेव की एक गाथा संकलित की है जिसमें बताया है कि वीरमदेव ने अपने खेतों में रोपाई हेतु अपने मामा से सपरिवार मदद माँगी। जब मामा सपरिवार उसे मदद करने आया तो वीरमदेव ने अपनी मामी के साथ व्यभिचार किया। पर यह बीरमदेव कौन था, इस सम्बन्ध में पर्याप्त खोजबीन एवं प्रमाण प्रस्तुत किये जाने हैं। हो सकता है कि यह बीरमदेब परवर्ती काल का कोई छोटा माण्डलिक राजा हो।

निष्कर्ष—हमे इतिहास, गाथाओं, जन-श्रुतियों, एवं अवशेष रूप में बची हुई सांस्कृतिक परम्पराओं इत्यादि को समन्वित रूप से देखने से विवेच्य गाथा मालूशाही के मुख्य पात्र मालूशाही एवं उसकी वंश परम्परा को समझने में निश्चित रूप से सहायता मिलती है। इससे हम यह स्थिर कर सकते हैं चन्दों से पहले कत्यूरी वंश का साम्राज्य इस पर्वतीय अंचल में था। उनमें से कई राजा बड़े दानी, धर्मात्मा प्रजा-पालक थे। यह भी सत्य है कि पहले कत्यूरों की राजधानी जोशीमठ थी जो साम्राज्य विस्तार या किसी अन्य कारण से कत्यूर घाटी को स्थानान्तरित कर गई। इस राजवंश के बाद चन्दवंश का आगमन हुआ। पराजित होकर इन कत्यूरियों ने चन्दों के साथ अपने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये और मिल जुलकर रहने लगे। अपने राज्य में किसी प्रकार के विद्रोह की आशंका न रहे यह समझकर चन्दों ने भी कत्यूरियों के वैवाहिक सम्बन्धों को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मालूशाही एक ऐतिहासिक व्यक्ति था। मालूशाही का समय पन्द्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्थिर किया जा सकता है, वह कत्यूरी वंश का कोई माण्डलिक राजा था। सुनपति को भी बहुत से लोग ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हैं, और तर्क देते हैं कि उसने गढ़वाल के सीमावर्ती क्षेत्रों तक व्यापार को बढ़ाया। सुनपति की पत्नी गाऊँली को बड़ी दानी बताया गया है और कहा गया है कि उसने रानी बाग (चित्रशिला) से कैलाश मार्ग तक हर पड़ाव में धर्मशालाऐं बनायी थीं। आज भी एक रूप एवं आकार की बहुत सी धर्मशालाऐं इस मार्ग में जीर्ण अवस्था में मौजूद हैं, जिन्हें भोटियानी की धर्मशालाऐं कहा जाता है। किन्तु बिना ऐतिहासिक तथ्यों के हम उन्हें गाऊँली द्वारा ही निर्मित होने का दावा कर सकते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि मालूशाही की गाथा का नायक एक ऐतिहासिक राजा है जो किसी छोटे अंचल में राज्य करता था। गाथा में उसके राज्य

के वैभव का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना तो चारण सुलभ अतिशयोक्ति का ही फल है। चन्दशासन की स्थापना मालूशाही के समय चम्पावत में हो चुकी थी। मालूशाही के समय की प्रजा में बड़ी अनुशासनहीनता एवं अव्यवस्था थी और राजदरबारों में सामन्तों एवं राजगुरुओं का प्रभाव था।

(आ) प्रकाशित वस्तु की समीक्षा

साहित्य रचना में सृजन कार्य जितना महत्वपूर्ण है, साहित्य अनुशीलन में समीक्षा या समालोचना कार्य भी अपना उतना ही महत्व रखता है। वस्तुतः तब तक साहित्य उपयोगी नहीं बन सकता है, जब तक कि उसका अनुशीलन न किया जाय। अनुशीलन से साहित्य का बहुजन हिताय वाला पक्ष उभरता है। कोई भी साहित्यकार तभी अपना प्रयास सार्थक मानता है, जब उसकी कृति का उपयोग अधिक लोग करें। यद्यपि स्वान्तः सुखाय रचनाकार भी अपना दावा करते हैं, किन्तु उनकी संख्या है भी तो बहुत कम। पुनश्च, स्वान्तः सुखाय तो भक्ति, मनन, चिन्तन, तप, साधना, समाधि इत्यादि कार्य होते हैं। अभिव्यक्ति पक्ष से युक्त होकर, वर्ण, शब्द, वाक्य या पदों का आश्रय पाकर जो व्यक्तिगत अभिव्यंजना होती है वह पाठक या श्रोता सापेक्ष होती है। उसमें अकेले ही स्वान्तः की तुष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है।

सम्यक् अनुशीलन ही एक प्रकार की समीक्षा या समालोचना है। अनुशीलन के भी दो पक्ष हैं—प्रथम—स्वान्तः सुखाय और द्वितीय—अभिव्यंजनापरक। यदि हम पढ़कर, सुनकर, समझकर या तर्क-वितर्क आदि के बाद या रस ग्रहण कर अपनी मानसिक क्रिया में दूसरे को भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भागीदार बनाने का प्रयत्न करें तो यहीं पर से समीक्षा के द्वार खुल जाते हैं। समीक्षा से रचनाकार तथा उसकी कृति का सम्यक रूप हमारे सामने आता है। रचनाकार को उचित महत्व मिलता है और उसकी कृति के अनुशीलन में अधिकाधिक लोग प्रवृत्त होते हैं। रचनाकार तथा उसकी कृति को उचित प्रसिद्धि दिलाना और उसका उचित मूल्यांकन करना समीक्षा के द्वारा सम्भव है। समीक्षा से किसी रचनाकार की प्रसिद्धि कम नहीं होती है। परवर्ती युग के लिये किसी भी ऐतिहासिक व्यक्ति, घटना, या रचनाकार की जानकारी इतिहासकार या समालोचक द्वारा ही प्राप्त होती है। परन्तु इतिहासकार या समालोचक का कार्य इतना सरल नहीं है। निष्पक्षता, सहिष्णुता

और रचनात्मक दृष्टिकोण ये तीनों नेत्र उसके लिए आवश्यक हैं। तीसरी आँख संहार के लिए न होकर भविष्य द्रष्टा के कार्य के लिए होनी चाहिए।

इस अध्याय में 'मालूशाही' प्रेम गाथा के सम्बन्ध में प्रकाशित सुलभ सामग्री लेकर उसकी समीक्षा करने का प्रयत्न किया गया है। हमने इस गाथा को एक सुसमायोजित एवं सुसंकलित रूप दिया है, अतः हम शुद्ध समीक्षक या समालोचक कदापि नहीं हैं। कुछ विद्वानों, लोक साहित्यकारों आदि ने इस गाथा से सामग्री लेकर कुछ रचनाएं प्रकाशित की हैं। इन प्रकाशित रचनाओं की विविधता, विचित्रता, असंगतियों तथा अनर्गलताओं से ही प्रेरित होकर हम इस रचना के संकलन के लिए प्रयत्नशील हुए। इस गाथा के अन्य रचनाकारों के साथ हमारा जो दृष्टि-भेद है, वह पूर्व पृष्ठों पर स्पष्ट कर दिया है। अपना प्रयास रहा है कि स्वाभाविक दृष्टि से ही इन प्रकाशित रचनाओं पर दृष्टिपात किया जाय। आगे रचनाकारों को पृथक रूप में लेकर उनके विचारों मान्यताओं को समीक्षार्थ लिया गया है।

श्री यमुनादत्त वैष्णव द्वारा लिखित उपन्यास 'राजुली मालूशाही' के कथानक का प्रारम्भ इस प्रकार है—प्रारम्भ में मिलम ग्लेशियर के पास सुनपति का खेमा लगा है, जहाँ पर राजुली अपनी माता से बिराट नगर के मालूशाह की प्रशंसा सुनती है और राजुली मालूशाही के प्रति अपने प्रेम-भाव को माता गाऊंली से व्यक्त करती है। उधर सुनपति राजुली के विवाह की बात हुणदेश के ऋषिपाल से करने को कहता है, जिसको सुनकर गांगुली दुखी हो जाती है।

सुनपति का व्यापारी खेमा आगे बढ़ता हुआ जब जौलजीबी के मेले में पहुँचता है तो वहां एक सिद्ध पुरुष के मुख से महाभारत की कथा सुनते समय राजुली को पता चलता है कि द्वाराहाट ही बिराट नगरी है, अतः मालू को देखने की कामना से वह वहाँ जाने का निश्चय करती है। बागेश्वर उत्तरायणी के मेले में राजुली 'दुग' की चोचरी सुनकर मुग्ध होती है। जब खेमा तराई भावर की ओर प्रस्थान करता है तो राजुली सुनपति से बिराट नगर होकर चलने का आग्रह करती है जिससे वह गांङली के कहने पर स्वीकार कर लेता है। कत्यूरी घाटी में होकर काफिला बैराट की ओर चलता है, मार्ग में मालू के विषय में अनेक चर्चाएँ राजुली सुनती है। रङप नदी के किनारे सैंम मन्दिर के पास सुनपति अपना पड़ाव डालता है। प्रत्येक

मंगल को दर्शनार्थी मन्दिर में दर्शन हेतु आते हैं, वे राजुली के अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर अवाक् रह जाते हैं। राजुली को वहाँ पास के एक शिला-खण्ड के विषय में पता चलता है कि प्रायः शिकार से लौटते समय वहाँ राजकुमार मालू चौपड़ खेलने बैठ जाता है। निदान राजुली वहीं मालू की प्रतीक्षा करती हैं। अगले दिन वह पास बने अग्नियारी देवी के मन्दिर में बैठी होती है तभी मालू वहां पहुंचता है और उसे देवी समझकर अर्चना करने लगता है। परिचय होने पर दोनों प्रेम करने लगते हैं। मालू अपने अंगरक्षकों से राजुली का परिचय कराता है। चोरी-छिपे उन दोनों की मुलाकातें होती रहती हैं। वसन्तोत्सव में जब राजुली सम्मिलित होती है तो सुनपति को उसके प्रेमालाप का पता चलता है और वह तुरन्त अपना खेमा बैराट से उठाकर आगे चल देता है। इससे राजुली मन ही मन घुटने लगती है। मालू बियोग में पागल सा हो जाता है। उसकी माँ धर्मा उसे समझाने की चेष्टा करती है।

एक रात मौका पाकर राजुली पुरुष वेश धारण करके अपने खेमे से भाग जाती है और दिन रात यात्रा करके आधी रात को बैराट नगर में प्रवेश करती है। राजुली के गले में पड़े अनेकों तावीजों में से एक स्वतः खुल जाता है और उसमें से एक मोहक सुगन्ध फैलने लगती है जिसके कारण सभी पहरेदार मूर्छित हो जाते हैं। जब वह मालू के शयनकक्ष में पहुंचती है तो वह भी बेहोश हो जाता है। तब राजुली अपनी अंगूठी के साथ एक पत्र मालू के सिरहाने रखकर वापिस लौट जाती है। उस पत्र में वह स्पष्ट कर देती है कि उसका पिता उसे हुणदेश ले जाकर शादी करने वाला है, यदि उससे पहले कुछ कर सको तो उत्तम है। प्रातः चेत होने पर जब मालू प्रियतमा की अंगूठी और पत्र को देखता है तो बहुत दुःखी होता है। वह पत्र पढ़ने के उपरान्त द्रोणागिरि पर जाकर योगविद्या सीखता है। तत्पश्चात् वह योगी वेश धारण करके राजुली को लाने की इच्छा से हुणदेश की ओर प्रस्थान करता है। माता धर्मा के समझाने पर भी वह नहीं रुकता।

राजुली हुणदेश के प्रस्तावित विवाह का विरोध करती रही। मालू राजुली की खोज में निरन्तर उत्तर दिशा की ओर बढ़ता रहा। जब सुनपति को मालू के आने की बात मालूम हुई तो उसने अपने गुप्तचरों को मालू के पकड़ने का आदेश दिया। दार्शनिक उपदेश देता हुआ, अपने कुल के इष्ट-देवताओं की कृपा से भोट की सीमा में स्थित शिव मन्दिर तक पहुंचा। साधुवेश में मालू के आगमन की बात सुनकर राजुली प्रसन्न हो गई।

विषवत संक्रान्ति के दिन भोट प्रदेश में बर्फ गिरने से ठण्ड बढ़ जाती है। सुनपति के कर्मचारी सिद्दू-बिद्दु नामक दो व्यक्तियों को मालू के भ्रम में बन्दी बनाते हैं। सुनपति उनकी सुनवाई करने हिण्डी देवी के मन्दिर में जाता है। सिद्दू-बिद्दू अपने को छुड़ाकर सुनपति को भुलावे में लाकर नीचे गिरकर उसके शस्त्र छीन लेते हैं। भयत्रस्त सुनपति वापस लौट जाता है। वे दोनों ऐन्द्रजालिक जड़ी-बूटी से सुनपति के प्रहरियों को अचेत कर अन्य बन्दियों को मुक्त करके विषवत का उत्सव मनाने की तैयारी करते हैं। मालू साधुवेश में सौकाणा में एक शिव मन्दिर में रहता है, जहाँ ऐक लंगड़ा उसका शिष्य बन जाता है। लंगड़ा मन्दिर में रखी पुरानी पोथियों की प्रतिलिपियाँ तैयार करता था। विषवत् के दिन मन्दिर में सभी नवदम्पति एवं बालाएं दर्शनार्थ आयीं। मालू भी राजुली की प्रतीक्षा करता रहा, लम्बी प्रतीक्षा के बाद राजुली वहां आयी। योगी मालू तथा राजुली हाथ में हाथ मिलाकर नृत्य करने लगे। इस प्रकार रोज राजुली समय निकालकर मालू से मिलती रही। उधर मालू संगीत विद्या मे प्रसिद्धि पाता गया। लोग उससे संगीत सीखने आने लगे। राजुली भी अपनी सखियों सहित संगीत सीखने के निमित्त अपने पिता सुनपति से उसे अपनी अतिथिशाला में टिकाने को कहती है। सुनपति राजुली की बात मान लेता है। योगी मालू राजुली तथा उसकी सखियों को संगीत सिखाता है। कुछ दिनों बाद सुनपति को राजुली एवं मालू के अभिसार का पता लग जाता है। वह सोचने लगा कि बल-प्रयोग से तो कत्यूरियों को नहीं जीता जा सकता अतः मालू को कूट उपायों से मारने की योजना बनायी जाय।

राजुली स्वयं मालु को भोजन देने जाती और वे दोनों एक ही थाली में खाना खाते। लूले शिष्य ने इसकी खबर सुनपति को दे दी। राजुली का प्रणय भेद जानकर सुनपति ने राजुली को मालू के पास जाने पर रोक लगा दी। मालू राजुली की प्रतीक्षा करता रहा। एक दिन खीर में विष डालकर सुनपति ने मालू को अपनी अतिथिशाला में निष्प्राण कर दिया।

सिद्दू-बिद्दू ने बैराठ लौटने पर मालू की माता को भोट के कटु अनुभव बताये। चिन्तित होकर धर्मा ने अपने छोटे भाई मिरतुसिंह को, जो गढ़वाल का राजा था, बुलाया और मालू की रक्षा हेतु भोट प्रदेश पर हमला करने को सुसंगठित सेना तैयार करवाई। उधर रात को सुनपति ने अपने नौकर चामू से मालू को दूरस्थ हिमनदी के तट पर बर्फ की गुफा में डलवा

दिया आषाढ़ के महिने में ऋषिपाल हूँण की बारात सज धज कर आयी। मालू के अचानक गायब हो जाने के रहस्य से अनभिज्ञ राजुला मालू के आने की प्रतीक्षा करती रही। विवाह होने पर निष्प्राण, उदासमना राजुला हूँण देश चली गयी। झूना शिष्य अपने किये हुए पर पछताता हुआ दुखी हो गया।

बर्फीली गुफा में, मालू की चेतना लौटी तो उसने स्वयं को बर्फ शिला से जकड़ा पाया। उसके अंग-प्रत्यंग निष्प्राण होगये थे। वह गुफा से बाहर निकलने के लिए चेष्टा करने लगा। बैराठ की सेना सज धज कर जौलजिवी नामक स्थान पर पहुंची। सुनपति ने भी भाड़े की सेना तैयार कर ली। बैराठ के राजमंत्रियों ने मंत्रणा की कि पहले हम किसी प्रकार मालू को रिहा करें। एक दूत सुनपति के पास गया, सुनपति ने बताया कि मालू की मृत्यु हो चुकी है।

विवाह के बाद राजुली मालू के मर जाने की खबर पाकर असहनीय दुख से व्यथित होगयी। वह अपने शरीर को अभी भी मालू की धरोहर मानकर ऋषिपाल के संसर्ग से बचने के लिए स्वयं को अविकसित यौवना और अल्पवयस्का बताकर बचती रही। उधर बैराठ और भोटिया सैनिकों में घनघोर युद्ध हुआ। बैराठ की सेना के समक्ष भोटिया सैनिक टिक नहीं पाये। सिद्दू बिद्दू साधु वेश में मालू की खोज में सुनपति के महल, कोषागारों को ढूँढने लगे। उनकी मुलाकात भयभीत झूना से हुयी जिसने मालू की हत्या तथा उसको एक कन्दरा में डालने का वृतान्त बताया। सिद्दू-बिद्दू के साथ नगाड़ा भी निकल पड़ा और वे हिमकन्दराओं में मालू की खोज करने लगे।

हूणदेश में ऋषिपाल राजुली को अपने प्रति आसक्त न देखकर उसे मनाने के लिए अनेक युक्तियाँ कुटनियों द्वारा कराने लगा। राजुली उन कुटनियों से अपनी धर्मपरायणता के बारे में कहने लगी कि मैंने 'देवमातृक' पूजा के समय बारह वर्ष तक कुँवारे रहने का प्रण लिया है, अस्तु, इस अवधि तक राजा मुझे अछूता रखें। पहले तो ऋषिपाल राजुली की धर्मपरायणता पर विश्वास करता रहा किन्तु बाद में मालू जन्य विरहावस्था का आभास होने पर उसने राजुली को सात कमरों के मध्य घोर कारावास में डालकर कठोर यातनाएँ देनी प्रारम्भ कर दी।

झूना सहित सिद्दू-बिद्दू ने हिम-कन्दराओं से मालू के अचेत शरीर को निकालकर उसे सचेत किया। एक धावक के साथ एक मोनाल पक्षी के जोड़े को हूँणदेश भेजा। धावक ने बौद्धभिक्षु का रूप धारण कर मोनाल-युग्म

को एक पत्र सहित राजुली के बन्दीगृह मे भेजा। राजुली अतीव प्रसन्न होकर मालू द्वारा अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा करने लगी। गोगल द्वारा दिये गये पत्र से राजुली दूसरे दिन अत्यन्त प्रसन्न दिखायी दी, जिसकी सूचना कुटनियों ने ऋषिपाल तक पहुँच यी।

मालू के संकेत होने पर डूना ने एक समारोह का आयोजन किया जिसमें नाना प्रकार के जन्तुओ के मुखौटे लगाकर प्रेत, ताण्डव एवं अन्य नृत्य किये। मालू ने अपने मामा मिरतू से अनुरोध किया कि वे सेना सहित हूणदेश पर आक्रमण करें और राजुली को बन्दीगृह से मुक्त कराये। मिरतू ने शरद-काल में हूणदेश की यात्रा को कठिन बताते हुए उससे कहा कि तुम जीवित होगये हो और हमने मुनपति को हरा दिया है, जीत हमारी है अतः हमें वापस लौटना चाहिए। मालू राजुली के बिना लौटना नही चाहता था, उसने अकेले ही साधु वेश में हूंण देश का तैयारी को और उसके साथ सिद्दू बिद्दू भी हो लिए। जगह-जगह मिरतू ने रक्षक नियुक्त कर दिये। धावन भोनाल पक्षी युगल को लेकर पहले ही पहुँच गया था। कुछ दिन यात्रा करते पर सिद्दू-बिद्दू ने बन्दरों का रूप धारण किया और मालू को चक्रांग पक्षी का रूप धारण कर ऋषिपाल के बन्दीगृह में प्रवेश कराया। उन्होंने तांत्रिक उपकरणों एवं विद्या से राजुली को भी पक्षी रूप में प्रातःकाल होते ही वहा से उड़ा लिया।

कुमाऊँनी सैनिक इधर विश्राम एवं मनोरंजन करते हुए राजुली मालू की प्रतीक्षा में थे। डूना पण्डित मिरतू के पास जाकर राजुली और मालू के विवाह को वैदिक विधान से सम्पन्न करने के लिये स्वयं को राज-पुरोहित नियुक्त करने की याचना करता है। इतने मे टिटहरी पक्षी ने राजुली मालू के शीघ्र आने की सूचना दी। जिस गृह मे मालू नृत्य सिखाया करता था उसमें डूना कन्यादान की तैयारी करने लगा। गाँगुली अपने वैधव्य वेश में राजुली के आने की प्रतीक्षा में थी। किसी ने कहा कि गांगुली वैधव्य रूप में कैसे कन्यादान करेगी? डूना पण्डित ने चतुरता के साथ गांगुली का हाथ मिरतू के हाथ में रख दिया।

प्रातःकाल होने पर ऋषिपाल को जब ज्ञात हुआ कि कुमय्याँ बाजीगर राजुली को पक्षी बनाकर उड़ा ले गये हैं तो उसने सभी हूंणदेश के पक्षी पालकों, ऐन्द्रिजालिकों, बाजीगरों से असंख्य पक्षियों को आसमान में छुड़वा दिया। सारे हूणदेश के आकाश में अगणित पक्षियों का पारस्परिक युद्ध होने

लगा। मालू राजुली को साथ लेकर मार्ग में भयंकर तूफान, हिमपात के कारण निर्धारित विवाह की बेला मे नही पहुँच सका। वह तीसरे प्रहर वहाँ पहुँचा। दिन रात चलने के कारण माल्‌ थक चुका था। वह विश्राम के लिए चला गया। राजुली चौथे प्रहर अपने माँ से मिलने चली गयी। राजुली-मालू के विवाह के लिए तैयार मण्डप पर उस दिन उनकी शादी नही हो पायी। उस दिन उस मण्डप मे गागुली और मिरतू का विवाह सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल डूना ने विधिवत विवाह का अनुरोध किया तो माल्‌ ने कहा कि जो बर्फीला तूफान हूंणदेश मे आया है, उसके कारण यहाँ भी कही हिमपात न हो जाय, अतः दल को शीघ्र बैराठ चलना चाहिए। राजुली से उसका विवाह तो बैराठ के मन्दिर मे पहले ही हो चुका है। मालू के प्रस्ताव को मानते हुये बैराठ जाने की तैयारियां होने लगी। डूना को बताया गया कि उसे राज्याभिषेक के समय राजपुरोहित बनाया जायेगा। वह अपने चलने के लिए घोड़े या पालकी की व्यवस्था कर ले। डूना प्रसन्न होकर देवताओ की स्तुति करता हुआ राजा मालू की जय-जयकार करता हुआ गीत गाने लगा

श्री यमुनादत्त वैष्णव ने उपन्यास के "निवेदन" में कत्यूरी राजा के शक बताते हुए कनिष्क का वंशज माना है।[१] एक ओर तो ये शक से शौक मानते हैं, दूसरी ओर कत्यूरियों को भी शक मानते हुए विरोधाभास वाली बात कहते है। उन्होंने मान्यता दी है कि सुनपति हूंण[२] था, जबकि वह शौक (भोटिया) था। सीमान्तवासी इन व्यापारियों को शूद्र बताना उचित नहीं है। शौक की व्युत्पत्ति सीमा पर शुल्क वसूल करने वाले शौल्क, शौक[३] भी निराधार है। लेखक ने 'माल' का अर्थ वाह्य आवरण या अन्तरंग का विलोम माना है। यह अर्थ कुमाऊँनी में नहीं है। कभी-कभी मधुरता, मनोहरता सुस्वादु एवं सुन्दरता के लिए 'माल' शब्द का प्रयोग किया जाता है। बैलों के मुख पर लगायी जाने वाली जाली को लेखक ने 'माल' कहा है। वस्तुतः वह 'मुवाल' या 'म्वाव' है जो मुखार मुखाल शब्द से बना प्रतीत होता है। वैष्णव जी ने कालिदास के मेघदूत एवं मल्लिनाथ टीकाकार का सन्दर्भ देते हुए माल का अर्थ शैल माना है। वस्तुतः माल (तराई-भाबर) जाने के लिए आरोहण न कर अवरोहण करना पड़ता है। क्योंकि माल पर्वत प्रदेश का

---

१. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक'—पृ० ३

२. वही, पृष्ठ ३–४, ३. वही, पृ०

चरण स्थल है, जो समतल है। अस्तु, 'रुह्' धातु में ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग करके माल जाने को आरोहण नहीं करना पड़ता, अपितु अवरोहण करना पड़ता है। कुमाऊँ में 'माल' शब्द (माल-ताल) का प्रयोग व्यापारिक वस्तुओं से लिया जाता है। यह शब्द विदेशी भाषा के प्रभाव से यहाँ प्रचलित है। कुमाऊँ की व्यापारिक मण्डियाँ तराई भाबर में थीं, अतः माल शब्द तराई-भाबर के लिए प्रचलित होगया। 'माल' से मिलते कई शब्द यहाँ प्रचलित हैं उन सबको तराइ भाबर के लिए प्रयोग में लाना उचित नहीं है।[1] लेखक ने मालूशाही को हीर-राँझा से एक हजार वर्ष पुराना माना है,[2] जो युक्ति संगत नहीं है। मालूशाही का समय गोरखपन्थ से भी बाद का है, क्योंकि इस प्रकार की प्रेम गाथाऐं सूफी आन्दोलन के बाद की है। अतः मालूशाही का समय १४ वीं सदी के बाद का है। लेखक ने माना है कुमाऊँनी साहित्य में कतिपय अर्थहीन पद तुकबन्दी के लिए प्रयुक्त हुए बताए हैं,[3] जो सत्य है, किन्तु उसकी तुलना उपनिषदों के 'निपातों' से करना सर्वथा असंगत है।

उपन्यास के प्रारम्भ में मिलम हिमनद के पास तम्बू लगाने का चित्रण असंगत है। मिलम इत्यादि स्थल तो भोटिया लोगों के स्थायी निवास रहे हैं, फिर उस बर्फीली प्रदेश मे तम्बू लगाने वाली बात कहाँ तक सत्य कही जा सकती है? सुनपति का व्यापार दमिश्क एवं भूमध्यसागर तक बताकर इतिहास एवं भूगोल की उपेक्षा की है। वस्तुतः ये भोटिया सीमावर्ती ज्ञानिम एवं तकलाकोर की मण्डियों से तराई भावर तक जाकर व्यापार करते थे। उत्तर में ल्हासा और दक्षिण में मुरादाबाद, लखनऊ और दिल्ली तक कोई विरले ही जाते थे। भोटिया, हूंण मूची, शक, मंगोल इत्यादि कबीले अलग-अलग हैं, उन्हें एक ही मानना उचित नहीं है। राजुली की माता कल्पना करती है कि मेरी बेटी आर्य (दर्शन) या असुर्य (आसिरिया) या हूणदेश जायेगी।[4] वस्तुतः यह कल्पना सर्वथा असंगत है, क्योंकि इतनी दूर में वैवाहिक सम्बन्ध रखना कभी नहीं हुआ। बीतराग से बिराट[5] मानने की कल्पना भी असंगत है। सुनपति द्वारा गांगुली के सामने अपनी पुत्री राजुली के अनिश्च

---

१. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' पृष्ठ ५।
२. से ४. वही—पृष्ठ ७, ७-८ व ५।
५. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव अशोक पृ० १०

सौन्दर्य का वर्णन[१] कुमाऊंनी, भोटिया और भारतीय मर्यादा के सर्वथा विपरीत है। द्वाराहाट की नदी स्वर्णपा से गोरी नदी की तुलना करने पर गोरी नदी को गंदला बताया है,[२] जबकि गोरी नदी का जल मिलम हिमनद से निकलकर अपनी शुभ्रता, निर्मलता एवं स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध है।

लेखक ने पृष्ठ ८ में सुनपति के जिस व्यापारिक मार्ग का वर्णन किया है वह गलत है क्योंकि लेखक ने पृष्ठ १५, १६, में सुनपति का काफिला काली और गोरी नदी के संगम जौलजीबी पर पहुंचाया है। जौलजीबी के मन्दिर में नागा बाबा द्वारा भागवत के पाठ के साथ गीता के भी पाठ का उल्लेख है,[३] जबकि उत्तराखण्ड के मन्दिरों में, सामूहिक एवं सार्वजनिक रूपेण गीता का न सामूहिक पाठ ही होता है और न प्रवचन। राजा विराट[४] के महाभारत कालीन विराट नगर का उल्लेख इतिहास सम्मत नहीं है। लेखक का यह वर्णन कि माल खतम होने पर भेड़ें कौड़ियों के भाव सोर घाटी में बेच दी जाती थी[५] एक अनर्गल तथ्य है। भोटिया अपनी भेड़ों को बूढ़ा और रुग्ण होने पर ही बेचते थे। मासी फूल का अर्थ 'मानस' (दुर्लभ) किया है।[६] वस्तुतः सुगन्धितकाय यह वनस्पति नैर, सम्यो, गुग्गुल इत्यादि के समान है, जो उच्च हिम-पर्वतों में उत्पन्न होती है, जहाँ ग्रीष्म में बर्फ पिघल जाती है। सुनपति के काफिले को नासिक में पहुँचाया गया है,[७] जबकि काफिला व्यांस चौदास की ओर मुड़ा था। दो विभिन्न दिशाओं का एक ही सीध में आना कैसे सम्भव हुआ? लेखक ने केले के लिए 'माणा' का अर्थ एक सेर से लिया है[८] वस्तुतः 'माण' के बर्तन की मोटाई के बराबर मोटे केले थे। 'माण' एक पात्र का प्रमाण माना जाता है। पहले आठ मुट्ठी का एक माण और आठ माणा की एक नाली मानी जाती थी। व्यापारिक दृष्टि से यह माण छः मुट्ठी की होगयी और छः माण की एक नाली मानी जाती है।

बागेश्वर मेले में सात सिलिङ से च्यूर (महुए) के फल बिकने आते थे[८] जो एक अनर्गल कल्पना है। च्यूरे के फल कुमाऊँ में कभी नहीं बेचे जाते है। च्यूर का फल आषाढ़ और श्रावण में पकता है, उसे अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता है जब कि उत्तरायणी का मेला माघ संक्रान्ति को बागेश्वर

---

१. से ३. वही—पृष्ठ ११, १४, १७ व १८

४. राजुली-मालूशाही-यमुनादत्त वैष्णव, पृ० २१।

५. से ६. वही, पृ० २३, २६, २८ व २८।

में होता है। पुनश्च, मात शिलिंग स्थान पिथौरागढ़ से चार मील दूरी पर स्थित है, जिसकी ऊँचाई लगभग पांच हजार फिट है, वहाँ म्यूरे का होना असम्भव है। शिलिंग का वन्य-वृक्ष, जो सघन, शीतल एवं स्वच्छ हवा प्रसरित करता है, प्रायः ऊँचे पर्वत शिखरों में होता है। अतः म्यूर और शिलङ का एक स्थान पर विकसित होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

उत्तरायनी के मेले मे राजुली दुगवालों की छपेली में मग्न होगयी।[1] विषवत् संक्रान्ति को सुनपति का काफिला जौलजीवी से उत्तर की ओर चला था, फिर वह माघ संक्रान्ति को बागेश्वर कैसे पहुँचा? प्रगट है कि पूर्वापर की घटनाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया है। यह भी बताया है कि छपेलीगीत मालू सम्बन्धी था, जबकि अभी तक मालू प्रेमी के रूप में इतना उभरा हुआ नहीं था कि वह गीतों का विषय बन जाता। राजुली अपने पिता से कहती है कि मैं भी आप साथ तल्ला देश बिराट को चलूंगी, यात्रा में मैं आपकी सहायिका बनूँगी।[2] उस समय सुनपति बागेश्वर में था। बागेश्वर से माल तराई जाने के मार्ग दो ही थे, या तो अल्मोड़ा-भवाली होते हुए हल्द्वानी या फिर रानीखेत–द्वाराहाट (बैराठ) भिकियासैंन मासी होते हुए रामनगर होकर दोनों मार्गों से बैराठ पास ही था, अतः राजुली का इतना हट करना कहाँ तक समीचीन है?[3] मानषी शब्द का अर्थ लेखक ने तत्कालीन प्रचलित भाषा कहा है।[4] वस्तुतः मनेसि या मानसी शिक्षित वर्ग की भाषा के लिए प्रयुक्त होता था। आज भी हिन्दी, अंग्रेजी बोलने को कुमाऊँ अंचल के लोग 'मनेसी ढालण' कहते हैं। यह 'मनेसी' शब्द 'मनस्वी' या 'मनीषी' शब्दों से बना है जो शिष्ट व्यक्तियों की भाषा के लिए प्रयोग किया जाता है।

बन-कुटी में राजुली का खेल में बैठना और मालू का उससे साक्षात्कार होना,[5] अस्वाभाविक लगता है। भला, वह कन्या कड़ाके की सर्दी में उस वन कुटी में क्यों बैठी? जब कि उसे मालूम था कि वहां के अचारे, कुमय्यां नारियों का हठात् हरण करते हैं। रहप नदी में राजुली का बिम्ब देखकर, उससे साक्षात्कार होना अधिक स्वाभाविक लगता है। मालूशाह राजुली से कहता है कि मुझे ऐसा लगता है कि जैसे तालाब में पड़े तुम्हारे प्रतिबिम्ब से बातें कर रहा हूं।[6] स्पष्ट साक्षात्कार में जल बिम्ब का प्रसंग कैसे आया?

---

१. राजुली मालूशाही–यमुनादत्त वैष्णव–पृ० ३० ।

२. से ५ वही—पृ० ३३, ३४, ४१ व ४७।

६. राजुली मालूशाही– यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' पृ० ५३

लेखक ने बताया है कि मालू वस्त्राभूषणों को उतारकर देवी के दर्शन करने गया था।[1] जबकि कत्यूरिये मन्दिर मे वस्त्राभूषणों एवं आयुधों से सुसज्जित होकर जाते थे। नंगे सिर मन्दिर में जाना अपशकुन माना जाता था। मालू कहता है कि मैंने अपने अंगरक्षकों से तुम्हारी रूपराशि और 'ज्ञान गरिमा' की बात सुनी है।[2] रूपराशि का बखान तो उचित है परन्तु अशिक्षित राजुली की ज्ञान-गरिमा का बखान कैसे सम्भव है? इसी प्रसग में कि मालू एवं राजुला निर्जन में मिलन का सुख पा रहे थे, किन्तु घर से दूर दुराचारी, कत्यूरों के क्षेत्र में राजुली का सुनपति ने घर से बाहर इतना देर तक रहना कैसे सहन किया होगा? माल का स्वयं को सुनपति से कम धनवान मानना,[3] उचित नहीं लगता है। एक भोटिया व्यापारी चाहे कितना भी धनी हो, तत्कालीन किसी राजा से कम ही धनी होगा।

महाभारत की गाँधारी को राजुली की प्रमातामही बताया है,[4] जो असंगत है। मालू अपने अंग रक्षकों परिचय राजुली से कराता है,[5] जो स्वाभाविक नही लगता।

श्री पचमी—वसंत पंचमी के बाद युवराज के घर मे होली के आगामी उत्सव समारोह का उल्लेख मिलता है,[6] जबकि कुमाऊंनी परम्परा में माता या पिता की मृत्यु के एक वर्ष तक होली, बसन्तोत्सव, या रंग खेलने की परम्परा वर्जित है। लेखक ने बताया है कि राजुली बैराठ में चॅवर गायों के पीठ पर बठकर भेड़ों का पहरा देती थी,[7] वस्तुतः चंवर गायें इतनी स्थूलकाय होती है कि वे इन पहाड़ी मार्गों में आ-जा नहीं सकती है और न वे तिब्बत के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में जीवित ही रह सकती है। अतः बैराठ में चॅवर गाय का आना असंगत है। इसी प्रकार 'मोनल' पक्षी जो केवल हिमवत् पर्वतो मे ही होता है, उपन्यासकार ने उसे भी निचली भूमि में उतारने का दुराग्रह किया है।

बसंतपचमी को फूल देहली[8] का त्यौहार मानना असंगति है। लेखक ने नीले रग के 'बुरुस' के फूल की चर्चा की है, जबकि वह लाल होता है। 'सम्यो' नामक एक सुगन्धित पौधा जो उच्छ हिम शिखरों के पास होता है,

---

१. से ५. वही पृ० ५४, ५५, ५६, ५७ व ५७।
६. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' पृष्ठ ६०।
७ व ८. वही - पृष्ठ ६१, ६३,।

वह द्वाराहाट में कैसे पैदा होगया ? लेखक ने न जाने किस वनस्पति शास्त्र से कई फूलों की नाम-परिगणना मात्र की है। ये फूल न तो इस स्थान की जलवायु में होते हैं और न एक मौसम में ही खिलते हैं। उनका विकास क्रम बसन्त से शरद तक चलता है। अतः पाठकों को भ्रमित करने का प्रयास किया गया है। उपन्यासकार ने विरही मालू को चित्रित करते हुए कहा है कि वह अपनी माता से कहता है कि वह राजुला को उसकी पत्नी बनाने हेतु बुला दे। यह असंगत है, क्योंकि कोई भी पुत्र अपनी माता के सामने अपनी प्रेमिका के सौन्दर्य का वर्णन नहीं करेगा।

उत्तरायनी के मेले में जब गाँगुली व धर्मा मिली थीं तो वे दोनों गर्भवती थी और पुंसवन संस्कार के बाद ही उन्होंने बागनाथ में एक साथ पूजा की।[1] अधिकांश स्थानकों में यही है कि दोनों जब मनौती के लिए आयी तो वे निःसन्तानी थीं। अतः लेखक की यह बात असंगत लगती है। लेखक ने महाभारत कालीन गांधारी को राजुली की प्रमातामही बताया है। कहाँ अतीत के गर्भ में समाया हुआ हजारों वर्ष पूर्व की गान्धारी, कहां अल्ठनी गावों के आस-पास की राजुली इतनी असंगति रखना[2] उचित नहीं लगता है। बिना वनपाल की अनुमति से जंगल में शिकार खेलने के आरोप में मालू दो बाघकों को बन्दी बनाता है तथा वनपाल की लापरवाही के लिए उसे दण्डित करने की बात करता है।[3] आज के युग की भाँति जंगल व्यवस्था की तुलना मालू के समय से करना उचित नहीं लगता। उस समय तो जंगल अधिक थे बस्ती कम। मालू को शंका है कि वह सुनपति से कम धनी है, अतः राजुली उसे निर्धन समझकर वर्णन करे।[4] राजुली भी यह समझती है कि राजकुमार *ऊँचो जाति के हैं मैं भोटिया कन्या हूँ, कहीं राजकुमार मुझे निम्न समझकर मेरे प्रेम को ठुकरा न दे।* वस्तुतः प्रेम में ऊँच-नीच का भेद नहीं होता, फिर प्रेमी-प्रेमिका के मनों में इस प्रकार की भेद-बुद्धि की शंका उठना असम्भव है,

श्री अशोक जी ने "जब गेई.......धुरा बाटा, गाड़ छिड़ा हुक बर्फैंऊ जानी।"[5] पद का अर्थ करते समय राजुला की यौवन एवं सुन्दरता को निर्झरणी बताया है। परन्तु "धुरा—जानी" पद का स्पष्ट अर्थ है कि राजुला

---

१. राजुली मालशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' पृष्ठ ७०।
२. से ५. वही—६९, ७३, ७५ व ७७।

को देखने वाले सभी दर्शक चाहे वे उच्च पर्वत शिखर (धुरा) में हों या मार्ग में (बाट) चल रहे हों, नदी नाले (गाड़) के किनारे हों या निर्झर (छीड़) के पास कार्यरत हों, वे सभी विस्मय, विमुग्ध रह जाते थे।

राजुली को पाने के लिए सात गणराज्यों के प्रमुखों के मल्लयुद्ध का उल्लेख है।[1] वस्तुत: वे सात गणराज्य के राजा न होकर गल-घण्टक के रोग वाले सात भाई 'गर्रा' थे। द्वाराहाट और बागेश्वर के बीच दूरी ही क्या है कि उसमें सात गणराज्यों का विस्तार हो? मालूशाह के समय में कोई गणराज्य कुमाऊँ में नहीं था। सात गणराज्य प्रमुख न होकर वस्तुत: सात कठ ग्रन्थधारी थे, और वे राजुली को तब मिले जब राजुली अकेले ही भोट प्रदेश से मालूशाह से मिलने जा रही थी। लेखक ने मल्ल युद्ध की सारी शब्दावली का प्रयोग कर अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है[2] परन्तु वर्णन में तारतम्यता न आने से कथानक का प्रवाह टूट सा गया है।

राजुला को बूढ़े थोकदार का प्रणय प्रस्ताव मिलता है।[3] वस्तुत: यह भी तब मिलता है, जब राजुली अकेले ही भोट से बैराठ जा रही थी। लेखक ने थोकदार शब्द की व्युत्पत्ति का सम्बन्ध हठात ४०० ई० पू० के 'सीथियनों' से जोड़ा है। तथ्य यह है कि अंग्रेजों ने इन थोकदारों को जन्म दिया। ये थोकदार अंग्रेजों के पिट्ठ भक्त होते थे। जो धन वसूल कर अंग्रेजों को देते थे तथा स्वयं भी खाते थे। "झुकामुक·········द्वारहाट"[4] का जो मूल गाथा का पद है वह प्रसंगानुकूल नहीं है। उक्त पद में राजुला के अकेले द्वाराहाट जाने का वर्णन है जो पृष्ठ ८० के तीसरे परिच्छेद के बाद आना चाहिए।

जाड़ों की ऋतु में सुनपति का काफिला द्वाराहाट से वापस लौटा था। अत: शीत ऋतु में तो द्वार बन्द कर मालू सोया होगा। राजुला के लिए कुण्डियां किसने खोली होंगी? पृष्ठ ८३ में बताया है कि मालू के शयन कक्ष में स्फटिक मणि के प्रकाश से दीप्त था, पृष्ठ ८४ में राजुला द्वारा चकमक से मालू के कक्ष में दीपक जलने की बात कही। जब कमरा स्वयं प्रकाशित था तो फिर दूसरे प्रकाश की क्या आवश्यकता पड़ी? मालू के न जागने पर राजुली सोचती है कि प्रात: होने पर राजकुमार स्वत: ही जाग जायेंगे, तभी उनसे साक्षात्कार करूँगी। अत: कुछ ही क्षणों के लिए क्यों उतावली करूँ?[5]

---

१. से ५. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' ७८, पृष्ठ ७९, ८१ व ८४।

परन्तु उसी क्षण क्या हुआ कि राजुला प्रातः होने से पहले ही बिना दर्शन के केवल एक पत्र लिखकर ही वापस होगयी ? यह पूर्वापर के तारतम्य का व्यवधान कथानक को शिथिल कर देता है। उल्लिखित प्रेम पत्र में "आकाश में उड़ते हुए पक्षी अपने पद चिह्न नहीं छोड़ जाते, और न जलचर ही समुद्र में विचरण करते हुए अपने चरण चिन्ह छोड़ते हैं इसी प्रकार देव, आप भी दृश्यमान होते हुए भी मेरे लिए अगोचर ही बने रहे।"[१] यह उपमा उचित नहीं लगती। इसी प्रसंग में बताया है कि राजुला प्रेमपत्र को समुद्रित करना चाहती थी,[२] एक व्यापारी की पुत्री के पास अपनी कैसी मुद्रा होगी ? मुद्रा तो केवल राजा की होती थी जो विशेष फरमानों एवं पत्रों पर ही लगायी जाती थी। राजकर्मचारियों तथा मालू के अचेत होने का कारण लेखक ने राजुली के गले का खुला ताबीज माना है जिससे राजुली भी परिचित थी, फिर उसने वह तावीज बन्द क्यों नहीं किया ? मालू द्वारा उसकी प्रेमिका राजुला के पिछली रात, उससे मिलने के लिए आयी हुई घटना का जो वर्णन है उसमें साधु का संश्लिष्ट अर्थ में आध्यात्मवाद की ओर ले जाकर अर्थ करना,[३] अस्वाभाविक लगता है। इससे कथानक की सहज गति नष्ट होती है। साधु जब योग-दीक्षा देता है तो लेखक ने साधु द्वारा मालू की जो प्रश्नावली प्रस्तुत की है वह नितान्त अप्रसांगिक है। अर्थात–मालू ....रहे हो ? किलै .. ... फोकि ख्वारा।[४]

लेखक ने बताया है कि सुनपति का काफिला उत्तर की ओर बढ़ रहा था, साथ में राजुली भी थी।[५] इससे पहले (पृष्ठ ८७) राजुली प्रातः होने से पहले मालू के सिरहाने प्रेम-पत्र रखकर लौट आयी थी। उसके लौटने का कोई भी वर्णन उपन्यास में नहीं है। न यह ही स्पष्ट है कि इतने दिनों तक गायब रहने पर उसके पिता सुनपति ने उसके प्रति क्या व्यवहार किया ? इस प्रकार की असंगति कथानक को नीरस बना देती है। 'कफुवा' का अर्थ कौआ बताया है,[६] जबकि 'कफुवा' पक्षी कुमाऊँ अंचल का विशेष पक्षी है जो बसन्त से ग्रीष्म काल तक 'काफल' पकने की सूचना देता है। उसकी बोली काफी मीठी एवं विरहोद्दीपक होती है।

---

१. से ६. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव, पृष्ठ ८६, ८७, ९०, ९५, ९७, व ९८।

सुनपति के वचनों से मक्त किए हुए सिदुवा द्वारा—"निकार सनान '''' हवा बाँकै"[१] पद जो गीता के 'नैनं छिन्दति शस्त्राणि ''''' न शोष्यति मारुत:' का कुमाऊँनी अनुवाद है, का पाठ करना उचित नहीं है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि शौक्याण के शिव मन्दिर में विषवत् संक्रान्ति को प्रथम मिलन के अवसर पर मालू एवं राजुली परस्पर नाचने लगे थे,[२] तो क्या पशु शिष्य को बुरा नहीं लगा होगा? क्या तब मन्दिर में और कोई नहीं था। क्या सुनपति तक किसी ने बात नहीं पहुँचाई होगी? लेखक ने बताया है कि योगी तब नृत्य एवं संगीत सम्राट के रूप में वहाँ प्रसिद्ध हो गया था, और राजुली रोज उससे मिलती थी। क्या सुनपति को यह सब पता नहीं हुआ होगा? तो उसने राजुली को जाने से रोका नहीं होगा? अस्तु, लेखक का यह कथानकीय अस्वाभाविक लगता है।

मन्दिर की अतिथिशाला से मालू के शव को उठाने उस दिन कोई नहीं आया और शव के ऊपर बर्फ की बौछारें रात को पड़ने लगीं।[३] क्या मालू भोजन कक्ष या शयन कक्ष में भोजन करता हुआ मारा गया? उसका शरीर खुले प्रांगण में किस प्रकार आ गया? इसी प्रसंग में बताया है कि केवल हूना ही मालू के शरीर को देख रहा था, तो क्या हूना को भोजन देने उस दिन कोई नहीं आया? यह असंगति कैसी? फिर उस रात हूना ने देखा कि कोई जंगली जानवर सी काली आकृति, जो बाद में दो व्यक्तियों के रूप में स्पष्ट हुई, मालू के शरीर को उठा रही थी। जबकि बर्फीली रात में, तो वस्तुएँ चमकते बर्फ के प्रकाश से स्पष्ट दिखायी देती हैं। अतः काली अस्पष्ट छाया को देखने का प्रश्न कैसे? लेखक ने ऋषिपाल हूंण की बारात में प्रत्येक वहां की कंटियों के ऊपर हरी पालक की गड्डियाँ रखवाई[४] हैं। बारात आषाढ़ के महिने में है, पहाड़ों में पालक तो जाड़ों में पैदा होता है। बरसात में तो उसके पौधे ही गल जाते हैं तो फिर यह पालक कहाँ पैदा हुआ होगा?

पुनश्च, यवन एवं तुर्क देश से लाई हुई दासियों को भी बारात में शामिल किया है।[५] १४ वीं सदी के बाद तिब्बत के हूंण राजा के यहाँ क्यों कर यूनान एवं तुर्की से दासियाँ आने लगीं। हूंण क्यों तुर्क दासियों को अपनी

---

१. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' पृष्ठ ११४।
२. वही, पृष्ठ १२२–१२८ ३. वही, पृष्ठ १३७।
४. वही, पृष्ठ–१४०। ५. वही, पृष्ठ १४१।

परिचारिकाऐं बनाऐंगे ? यूनान देश तो पहले से ही सभ्य एव विकसित था, वहाँ की दासियाँ हूंण राजा की सेवा में क्यों जायेंगी ? जब सुनपति एव चामू मालू की लाश को हिमनदी की ओर ले जा रहे थे, तो हूना मन्दिर के कलश के नीचे छज्जों पर चढ़कर सारा दृश्य छिपकर देख रहा था।[१] जो हूना बिल्कुल भी नही चल पाता, वह मन्दिर के शिखर तक कैसे चढ़ा ? यह बहुत बड़ी असंगति है।

सिद्दू-बिद्दू बिना मालू का पता लगाये लौटकर बैराठ में धर्मावती रानी को भोट प्रदेश की गाथा सुनाने लगे।[२] पहले लेखक ने बताया है कि बिषवत् संक्रान्ति के दिन मालू साधुवेश में शौक्याण के शिव मन्दिर में था और सिद्दू-बिद्दू हिण्डी देवी के मन्दिर में थे। दोनों मन्दिर सुनपति के घर के पास ही थे। सिद्दू बिद्दू बड़े पराक्रमी थे, उन्होने सुनपति तथा उसके प्रहरियों को भयभीत कर दिया। तो क्यों वे दोनो मालू का पता लगाने नही गये ? बर्फीली गुफा में अचेत मृत मालू जब कुछ चेतना पाता है तो वह बर्फ से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करता है।[३] वस्तुत: यह संघर्ष एकदम कृत्रिम, असत्य, अस्वाभाविक, और अविश्वसनीय है। मृत शरीर जीवित होना ही सम्भव नहीं है। बर्फ के बीच भी पसीना हो जाय, जिससे कि बर्फ पिघलने लगे और तत्काल फिर पसीना सूख जाय तो बर्फ भी उसी साँचे में जमने लगे यह निराधार है। इतनी बर्फ के बीच मानव जीवन की कल्पना ही ठीक नहीं, फिर मालू कैसे सचेत हुआ ? मालू पुनरुज्जीवित होने पर सिद्दू-बिद्दू तांत्रिकों के साथ, हूंणदेश रथ में बैठकर प्रयाण करता है,[४] जो एक अनर्गल तथ्य है। पहाड़ों पर रथ की कल्पना हास्यास्पद है। सुनपति के नौकर चामू को मालू के विषय में गलत सूचना देने के अपराध में जीभ काटकर बन्दीगृह मे डाल दिया गया था[५]। किन्तु जब हूना बन्दीगृहों की सफाई करा रहा था तो उसे चामू मिला उससे हूना की बात चीत हुई है। चामू—"भाई आँखें तो""""" """"पहिचानूं भी तो कैसे ?"[६] लेखक ने बताया है सुनपति ने चामू की आँखे फोड़ दी थी, पूर्वापर, कथन कथ्य, घटनाक्रम में ही लेखक ने बड़ी असंगति एवं विरोधाभास रखा है। लेखक ने बताया है कि गिरतूसिंह ने हूना

---

१. से ३. राजुली मालूशाही, पृष्ठ १४३, १३६, १४६ से १५६।
४. राजुली मालूशाही—यमुनादत्त वैष्णव अशोक, पृष्ठ १६३।
५. व ६. वही, पृष्ठ १६६ एवं १६६, व २०६

के अनुरोध पर गाँगुली से विवाह कर लिया।[1] कथानक के इस अंश को डॉ. पुत्तूलाल शुक्ल ने भी अपनी 'मालूशाही' में जोड़ा है। यह उचित नहीं जान पड़ता। धार्मिक गाँगुली भला इतनी शीघ्र अपने वैधव्य को छोड़कर मिरतूसिंह से विवाह करेगी? यह प्रक्षेपण अनर्गल, तथ्यहीन तथा संस्कृति के विपरीत है।

लेखक ने अपना बुद्धि कौशल दिखाने के लिए कुमाऊँ के सीमावर्ती स्थानों का सम्बन्ध सुदूरस्थ, दुर्गम स्थानों से जोड़कर उन्हें हठात् दुरूह बना दिया है। घटनाओं का सम्बन्ध इतिहास के प्रारम्भिक एवं अज्ञात तथ्यों में स्थापित किया है। वर्णन शैली में पाठकों को भरमाने के लिए तत्सम्बन्धी शब्द कोषों से कठिन शब्द पारिभाषिक शब्दों को खूब ठूँस-ठूँस कर रख दिया गया है। यदि हम लोक-जीवन में व्याप्त मालूशाही की गाथा के सामने इसका रूप देखें तो त्रुटियों, मिथ्यावादिता और असंगतियों के ऊपर आवरण चढ़ाकर पाठक को दिग्भ्रमित किया गया है।

इस लोक कथा पर आधारित डॉ. पुत्तूलाल शुक्ल के आञ्चलिक प्रबन्ध काव्य[2] में लेखक ने प्रारम्भ में हिमालय का सुन्दर वर्णन किया है। मकर संक्रान्ति पर बागेश्वर मेले में शौक देश का व्यापारी सुनपति अपनी पत्नी गाँगुली सहित सन्तान प्राप्ति की मनौती के लिए मन्दिर में आता है। वहाँ बैराठ की रानी धर्मावती भी सन्तान की कामना से आयी थी। धर्मा तथा गाँगुली में परस्पर भावी अपत्य सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय होता है। कालान्तर में धर्मा ने मालूशाह नामक पुत्र तथा गाँगुली ने राजुली नामक कन्या को जन्म दिया। राजुली यौवनावस्था को प्राप्त होने पर एक दिन अपनी माता से पूछती है कि फूलों में श्रेष्ठ फूल कौन है? देवों में सबसे बड़ा देवता कौन है? गाँव में सबसे बड़ा गाँव कौन है? और राजाओं में सबसे बड़ा राजा कौन है? गाऊँली बताती है कि फूलों में कमल, देवों में महादेव, गाँवों में द्वाराहाट तथा राजाओं में मालूशाही श्रेष्ठ है। मालूशाही की चर्चा सुनकर राजुली के मन में मालू के प्रति अनुराग उत्पन्न होने लगता है।

एक बार सुनपति अपने व्यापारिक काफिले के साथ द्वाराहाट पहुँचा। सुनपति भेड़-बकरियों की रखवाली के कार्य को राजुली को सौंपकर स्वयं बैराठ नगरी में व्यापार करने चला गया। राजुली रहप नदी के किनारे, देवा

---

१. वही, पृष्ठ २२९ एवं २३०।

२. मालूशाही—पुत्तूलाल शुक्ल 'चन्द्राकर', विवेक प्रकाशन, लखनऊ.

के मन्दिर के पास एक अट्टालिका में बैठ गयी। मालू जब देवी दर्शन करने के बाद एक जगह बैठकर रहप नदी के प्रवाह को देख रहा था तब उसकी दृष्टि जल में पड़े राजुली के बिम्ब पर पड़ी। वह उस बिम्ब को साक्षात देवी समझकर स्तुति करने लगा। राजुली नीचे उतरी और उसने मालू से साक्षात्कार किया। यह उनका प्रथम मिलन था। दोनों ने मन्दिर में जाकर परस्पर समर्पण का संकल्प किया। किसी न किसी बहाने रोज वे आपस में मिलने लगे। यह बात सुनपति तक पहुँची। सुनपति ने 'फूल देली' बसन्तोत्सव (चैत्र की संक्रान्ति का पर्व) को निकट बताकर अपना खेमा वहाँ से उठाकर भोट प्रदेश को चल पड़ा। सुनपति ने निश्चय किया कि वह राजुली का विवाह मालू से नहीं, हूंणदेश के ऋषिपाल से करेगा जो उसे धन देकर उसके व्यापार को भी बढ़ायेगा।

राजुली के चले जाने के बाद मालू बड़ा दुखी रहने लगा। उधर राजुली भी मालू के विरह में दुखी रहने लगी। राजुली ने अपनी मां से अपना विवाह मालू से करने को कहा। माता गाऊँली ने राजुली को बताया कि मालू की माता धर्मा उसकी सहेली है, अत: उसका विवाह मालू के साथ सहज हो जायेगा। राजुली कुछ दिनों तक मालू के आने की प्रतीक्षा करती रही, किन्तु जब वह नहीं आया तो वह मालू से मिलने द्वाराहाट को चल पड़ी। मार्ग में सान गनाँ और एक बूढ़े थोकदार ने राजुली को भरमाने की चेष्टा की परन्तु राजुली उन्हें चकमा देती हुई आगे बढ़ी। रात्रि को मर्दाने वेश में बैराठ के महल में पहुँची, जहाँ मालू सोया हुआ था। राजुली ने मालू को जगाने का भरसक प्रयास किया परन्तु वह उठा नहीं। उसने मालू के पैरों के नीचे एक पत्र लिखकर रखा और उसके गले में माला डालकर वह वापस लौट गयी। मालू होश में आने पर इस घटना से विरह से व्यथित होने लगा। मालू योगी का रूप धारण कर, माता के मना करने पर भी, वह राजुली की खोज में चल दिया। वह शौक देश के एक शिव मन्दिर में पहुँचा, अन्य दर्शनार्थियों के साथ आयी राजुली को उसने और राजुली ने मालू को पहचान लिया।

राजुली के अनुरोध पर सुनपति ने जोगी रूपी मालू को अपने महल में टिका दिया। एक दिन जब सुनपति ने जोगी को राजुली के साथ प्रेमाचार करते देखा तो सुनपति ने विषमिली खीर मालू को खिलायी, जिसको खाते ही योगी मालू अचेत होगया। उसको तब हिम शिला के नीचे डाल दिया गया। हूंण राजा राजुली को व्याहने जब बारात लाया तो राजुली

और उसकी माता बहुत दुःखी हुयी शादी के बाद राजुली शौक देश से विदा हो गयी। हूँण देश को जाते समय राजुली को मोनल पक्षी ने सूचना दी कि मालू अभी जीवित है, अतः वह (मोनल) मालू को राजुली से मिलाने का प्रयत्न करेगा। हूंण राजा जब राजुली के अभिसार कक्ष में पहुँचा तो उसने बड़ी चतुरता से यह वचन ले लिया कि वह बारह वर्ष तक उसे अपनी कन्या के समान समझें। हूँण ने वचन तो दे दिया परन्तु उसमें छल प्रपंच की शंका करते हुए उसने राजुली को कैद कर दिया। धर्मा ने स्वप्न में देखा कि मालू संकट में पड़ा है। धर्मा ने अपने भाई मृत्युसिंह को सन्देश भेजकर मालू का कुशल लाने को कहा। मृत्युसिंह फौज लेकर भोट को चल पड़ा। मृत्युसिंह सन्यासी वेश में शौक देश में घूमने लगा। राजुली की सखी बिजुली ने मृत्युसिंह को मालू को जहर देकर मारने तथा शव को अमुक स्थान में दफनाये जाने की बात बतायी। युक्ति पूर्वक मृत्युसिंह ने उस शव को बाहर निकाला और सिद्‌दू बिद्‌दू तांत्रिकों द्वारा शव में तंत्र बल से प्राण संचार करवाये। इसी बीच मोनल ने आकर सन्देश दिया कि 'राजुली हूंण ऋषिपाल की कैद में बन्दी है, तुम उसे जाकर छुड़ाओ, मैंने उसे मालू के जीवित रहने का समाचार दिया है।'

उन लोगों ने मंत्रणा की कि यदि हूंण देश पर हमला किया जाये तो ऋषिपाल राजुली को पहले ही मार देगा अतः मालू को तंत्र विद्या से एक तोता बनाकर उड़ाया गया, उसके पास एक दूसरा जंतर था जिसको राजुली के गले में बाँधकर वह भी तोता बन जायेगी, जंतर खोलकर दोनों अपने वास्तविक रूप में आ सकते थे। तोता रूपी मालू उड़ता हुआ हूंणदेश पहुँचा जहां राजुली बड़ी दुखी अवस्था में थी, तोता उड़ते हुए राजुली की गोद में जा बैठा। राजुली ने उसके गले में बांधे जन्तर को खोला तो मालू वास्तविक रूप में आ गया, जिससे वह प्रसन्न हुई। दोनों ने तब अपने गले में जन्तर बाँधे और दोनों तोतों तोता बनकर आकाश में उड़ चले। पहरेदारों ने खबर दी कि मालू और राजुली तोता बनकर उड़ गये हैं। तब क्रोधित ऋषिपाल ने एक तांत्रिक लामा को अपनी सहायता करने बुलाया। मालू और राजुली को पकड़ने की इच्छा से वह लामा ऋषिपाल को प्रसन्न करने हेतु बाज बन कर उस दिशा में उड़ने लगा जिधर वे तोता-तोती रूप में गये थे। शीघ्र ही बाज ने तोता-तोती को पकड़ लिया और उनको वापिस हूंण देश

चलने को बाध्य करने हेतु अपनी चोंच एवं पंजों से प्रहार करने लगा। इस प्रकार आपस में लड़ते-झगड़ते तोता-तोती और बाज भारत की सीमा के अन्दर आ पहुँचे। मिरतू सिंह अपने साथियों के साथ वहां मालू और राजुली के लौटने का इन्तजार कर रहा था। जैसे ही एक कत्यूरी तांत्रिक ने तोता-तोती रूपी मालू और राजुली को बाज के हमले से त्रस्त देखा उसने उनकी सहायता हेतु एक तीर छोड़ दिया। निदान उस तीर के लगते ही बाज मर कर पृथ्वी पर आ गिरा। घायल अवस्था में तोता-तोती भी अपनी सेना के बीच आकर उतर गये। शीघ्र ही वे अपने असली रूप में आगये, तब सभी प्रसन्न हुये।

कुछ ही समय बाद ऋषिपाल अपनी सेना के साथ वहां आ पहुंचा। कत्यूर सेना ने हूण सेना को चारों ओर से घेर लिया और मारकाट प्रारम्भ कर दी। राजा ऋषिपाल मिरतू सिंह के हाथों मारा गया और पराजित हूण सेना अपने देश को लौट गयी। सुनपति ने जब ऋषिपाल की मौत का समाचार सुना तो वह अपनी सेना लेकर कत्यूरों से आ भिड़ा। मगर कत्यूरी सेना के सामने उसकी एक न चली और अन्त में वह भी मारा गया। विजयी कत्यूरों की सेना मालू और राजुली के विवाह की तैयरी करने लगी। पति की मृत्यु से दुखी गांऊली ने बेटी का कन्यादान किया। मिरतू सिंह ने गांऊली को दुखी देख उसकी मांग अपने हाथ से भर दी (यह प्रसंग डा० शुक्ल ने स्वयं जोड़ा है)। इस प्रकार राजुली और मालू खुशियां मनाते बैराठ पहुँच कर राजसुख भोगने लगे।

श्री चिन्तामणि पालीवाल की पुस्तक–कुमांऊ के सम्राट में लेखक ने प्रारम्भ में ही मालू शाही के राज्याभिषेक का विषद वर्णन किया है। उसमें श्रेष्ठ गायक, वादक तथा नर्तक बुलाये गये थे जिनमें गायक बिजुवा और नर्तकी छगना भी थे। राजा मालू शाही अपनी रानी कमसैंण (कामश्यनी) के साथ सिंहासन पर विराजमान थे। संगीत को सुनते ही कमसैंण बिजुवा पर मोहित होगयी और उसने राजा की आज्ञा पाकर बिजुवा के गीतों पर नृत्य करना प्रारम्भ कर दिया। उसी समय मौका पाकर उसने बिजुवा से कहा कि तुम्हारे संगीत पर प्रसन्न होकर जब राजा इनाम मांगने को कहें तब तुम इनाम में मुझे मांग लेना। निदान बिजुवा से राजा ने जब पुरस्कार मांगने को कहा तो उसने रानी कमसैंण को ही

मांग लिया। राजा को यह बात चुभी, प्रत्यक्ष में कहा कि मेरा आधा राज्य ले लो, रानी न मांगो। पर विवश हो विजवा को रानी सौंपनी पड़ी। दिखावटी विलाप करते हुये रानी चली गयी। इससे दुःखी राजा मानसिक रोगग्रस्त हो गया। धर्मा चिन्तित हो गुरू गयाली के पास गयी। उसने धर्मा को बभूत मालू के सिर पर लगाने को बताया। मन्त्रित बभूत लगाने से मालू ने गहरी निद्रा में प्रातः स्वप्न में जंगल में भटकने पर अनिंद्य सुन्दरी राजुली को देखा, प्रेमपाश में आबद्ध उत्तरायनी के मेले में पुनर्मिलन की बात तय हुयी।

राजुली व मोती भोटिया व्यापारी सुनपति की सुन्दर पत्नी से उत्पन्न हुयीं। एक बार सुनपति राजुली के साथ रंगीली बैराठ रुका। वहां मालू राजुली से मिला और आकृष्ट हुआ, राजुली भी। पिता से राजुली ने मालू के साथ विवाह की इच्छा बतायी। बारह वर्षीया राजुली का उधर से ध्यान हटा कर सुनपति ने आगे यात्रा प्रारम्भ की। युवती होने पर भी राजुली ने मालू से विवाह की इच्छा माता-पिता पर व्यक्त की। सुनपति बैराठ की बुराईयां बताता, पर वह दृढ़ थी। वह मालू से मिलने का उपाय सोचती। एक दिन मां से, स्वप्न में बागनाथ देखने और सन्तान प्राप्ति के बाद माता पिता द्वारा भेंट आदि चढ़ाने की बात बताती है। और अकेले मन्दिर में पूजा करने जाने को कहती है—कि बागनाथ का आदेश है। अनुमति प्राप्त कर उत्तरायनी मेले पहुंचती है। मेले में कुरूप बाईस भाई को चकमा देती हुयी मालू को ढूंढती है। न मिलने पर, शिव से, यात्रा मंगलमय हो, प्रार्थना कर बैराठ को चलती है। प्रतिकूल आकाशवाणी की भी परवाह नहीं करती।

मार्ग में कलुवा, फतुवा, व लच्छी-गुच्छी से अपने को बचाती हुयी, स्त्रियों से मार्ग पूछ कर राजमहल में, तन्त्र से स्वय को बिल्ली बनाकर, प्रवेश कर जाती है। महल में सबको बेहोश कर मालू के शयनागार में पहुँचने पर उसे सोता देख, भोजन बनाती है। उसके लिये परोस, स्वयं खाकर एक पत्र में यात्रा का वर्णन लिख उसे चुनौती देती है कि यदि वह सूर्यवंशी होगा तो अवश्य सौक्याण आयेगा। पत्र सिरहाने रख चल देती है।

यहां शंका है कि मार्ग में मुसीबत में राजुली ने तान्त्रिक उपकरण प्रयुक्त क्यों नहीं किये?

मालू पत्र पढ़ वचन निभाने की प्रतिज्ञा कर योगी वेश में, सैकड़ों कत्यूर तथा गयालीनाथ व खाकनाथ तान्त्रिकों के साथ भोट के लिये चल देता है। मार्ग में राजुली पर अत्याचार करने वालों को परास्त करता है। तब तक राजुली किसी अन्य की हो चुकी थी। हिलमोती, खिलमोती के

विवाह के प्रस्ताव को ठुकराने पर वह मालू व साथियों को विषाक्त भोजन से अचेत कर देती है। ज्ञानीदास मन्त्रों द्वारा सचेत करता है और पक्षी रूप में उड़ा देता है।

अन्त में योगी वेश में मालू का राजुली से मिलन हुआ। पक्षी रूप में दोनो गुरू के पास आये और पक्षी रूप छोड़ फिर बैराठ जाने को तैयार हुये। कालू शौक पुत्री सहित शिकार से लौटने पर राजुली को न पाकर सेना सहित युद्ध के लिये चल दिया। सात दिनों तक चले ऐन्द्रजालिक युद्ध का फैसला न हुआ। सुनपति ने फैसला पंचों पर छोड़ दिया। तब मन्त्र द्वारा गुरुओं ने राजुली के दो रूप बनाये। वास्तविक राजुली मालू को मिली। जब कि प्रथम चयन आक्षपाल ने किया।

भोटियों ने बरात की दावत में विषाक्त भोजन दिया। राजुली के पहले ही सचेत कर देने से अनिष्ट न हुआ। इससे भोटी आश्चर्य चकित हुये। तब दहेज दे बरात बिदा की। पंचायत के फैसले से असन्तुष्ट हूंण सुनपति पर क्रोधित हुये। सुनपति के अनुरोध पर उसकी छोटी पुत्री रेणुका मोती से विवाह कर वापिस लौट गये।

कत्यूरों ने विजय प्राप्ति की खुशी में बागेश्वर में पूजा आदि का आयोजन किया और बैराठ पहुंचे खुशीयां मनायी गयीं। गौने के लिये आये मालू का सुनपति ने स्वागत किया और सुनपति भी बैराठ आया। तब से भोट व कत्यूरियों में मित्रता हो गयी। तभी से वे भोटियों को 'मितुर' कहकर पुकारते हैं।

श्री चिन्तामणि पालीवाल ने 'कुमाऊँ के सम्राट' (पृष्ठ १५०) में इस मत को स्पष्ट किया है कि विवाह में कत्यूरियों सहित कूट उपायों द्वारा मालू मारा गया, किन्तु लेखक ने अपना मंतव्य व्यक्त नहीं किया है।

बागगिरी गोस्वामी की 'राजा मालसाई विनोद' पुस्तक के अनुसार— हरिद्वार में कुम्भ स्नान पर्व पर स्नानार्थ आये हुये सुनपति व पत्नी गाऊँली का साक्षात्कार शिवाड़ के राजा धर्मदेव व रानी से हुआ। दोनों निसंतान थे। भावी संतान प्राप्ति पर परस्पर अपत्य-सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय दोनों पक्षों ने किया। ईश्वर की कृपा से बैराठ में पुत्र और सुनपति के कन्या ने जन्म लिया। पुत्री के विवाह योग्य हो जाने पर सुनपति नजदीक विवाह करना चाहता था। कुरूप रुदुवा हूँण ने अपने पुत्र से राजुली के विवाह की स्वीकृति दे दी।

स्वप्न में मालू राजुली मिलते हैं। मालू माता-पिता द्वारा हरिद्वार में दोनो के विवाह कर देने वाला वचन बताते हुये उसे अपनी परिणीता पत्नी बताता है। प्रातः दोनों स्वप्न की बात माता-पिता से कहते हैं किन्तु स्वीकृति नहीं मिलती। हठ करने पर मालू को महल में बंद कर दिया। उसकी आत्मा छुछुत पक्षी बन राजुली के समीप पहुँची। उस सुन्दर पक्षी को देख, राजुली की प्रार्थना पर बागनाथ की कृपा से दोनों पक्षी रूप से उन्मुक्त हो घूमने लगे। बागेश्वर मेले में पुर्नमिलन की बात तय कर अलग हो गये।

मेले में जाने का उपाय सोचकर राजुली पेट दर्द का बहाना कर, माता पिता से स्वप्न में बागनाथ देखने और उनके द्वारा संतान प्राप्ति के बाद उन्हें भुला देने की बात कहती है। कहती है उनका मेरे लिये आदेश है कि मैं अकेले उनके दर्शन को जाऊं। स्वीकृति मिल जाती है। मेले में जब उसे मालू नहीं मिलता तब शिव के सामने आर्त्तनाद करती है। आवेश में शिव की एक आँख फोड़ देती है। बागनाथ शाप देते हैं। रास्ते में, अपनी सुन्दरता के कारण आकृष्ट हुये लोगों से अपने को बचाते हुये मालू के महल पहुँचती है। सोता देखकर मालू के सिरहाने पत्र रख लौट जाती है। मालू सम्पूर्ण तैयारी के साथ सन्यासी वेश में भोट आता है। भोट जाने से पूर्व संगीत उत्सव में बीजन द्वारा पुरस्कार में कमसैंण को मांगने वाली घटना वर्णित है। मार्ग में मालू राजुली को सताने वालों को परास्त कर सुनपति की फौज से भिड़ता है। दोनों ओर से घोर ऐन्द्रजालिक युद्ध हुआ। तब योगी वेश में वह राजुली से मिलता है। भिक्षा रूप में राजुली द्वारा बनाया भोजन खाने का अनुरोध करता है और राजुली से पैर धुलाने की हठ करता है। ऐसा न करने पर शाप की धमकी देता है। पैर धोते समय राजुली पहचान लेती है, तब साथ भोजन कर अवसर पाकर छिनौड़ी खेत से निकल आते हैं। राजुली के अपहरण पर युद्ध होता है, जिसमें भोटिये हारे। तब विवाह के समय कुछ पूरीयों में विष मिलाया। परीक्षण के तौर पर एक पूड़ी कुत्ते को खिलायी। भाग्यवश वह विषयुक्त नहीं थी। राजुली सहित सभी कत्यूरियों ने पूड़ीयां खाईं, अचेत हो गिर पड़े और सभी का प्राणान्त होगया। भोटिये सफलता पर खुश हुये।

डॉ० गोविन्द चातक की 'गढ़वाली लोक गाथा' पुस्तक में मालूशाही का कथानक इस प्रकार है—बैराठ के राजा दोलासाह की अस्सी वर्षीय रानी पँवारी को गर्भ रहा। पुत्र जन्म पर ज्योतिषियों ने बताया कि पाँच दिनों में

इसका विवाह तय कर दो अन्यथा पाप लगेगा। उनकी राय पर शौक्याण देश के सोनूशाह की पुत्री राजुली से मंगनी पक्की की। मालू के लिये राजुली के ग्रहों का नाड़ी-वेद था, फलतः राजा स्वर्ग वासी हो गये। मन्त्रियों ने सोचा ऐसी अभागिन को बहू न बनायेंगे। विवाह योग्य होने पर बैराठ से कोई खबर नही आयी। राजुली की सुन्दरता पर मुग्ध जलन्धर राजा विजयपाल ने चेतावनी दी कि राजुली से विवाह करें या वह उठा ले जायेगा।

चाची छमुना से बात चीत में राजुली को बचपन में तय हुयी शादी की बात विदित हुयी। तब राजुली बैराठ को चली जबकि सोनूशाह के इष्ट भैरव ने मना किया। तब उसने मालू को निद्रा सम्मोहित किया। मालू को निद्रा मे देखकर एक पत्र लिखा कि उसने इतने समय तक सुधि नहीं ली। और जलंधर देश आने को लिखा, और अँगूठी पहनाकर वापिस होगयी।

मालू योगी वेश में जलंधर पहुँच राजुली से मिला। मालू यक्ष शिष्य था, उसने यक्षिणी बुलाई जिसने कैई भैरव उत्पन्न हो विघ्नी लोगों के कलेजे खाने लगे। मालू राजुली को ले बैराठ लौटा, मालू की जय-जयकार हुयी।

डॉ० भिवानी दत्त उप्रेती की 'कुमाऊँनी लोक साहित्य तथा गीतकार' पुस्तक में हरिद्वार में राउँली की सुन्दरता पर धर्मदेव का मूछित होना, सन्तान होने पर दोनों का विवाह करने का निश्चय राजुली और मालू का स्वप्न मे मिलना, राजुली का भाग कर मालू से मिलना, सोता देखकर पत्र रखना, संयासी वेश में मालू का लौट आना और विजय प्राप्त कर राजुली से विवाह कर दावत में जहर मिला खाना खाने से कत्यूरियों के मरने की घटना वर्णित है।

डॉ० त्रिलोचन पाण्डे का 'कुमाऊँ का लोक साहित्य' में मालूशाही की गाथा को रमौल गाथा के साथ परम्परागत गाथाओं में रखा है। मालूशाही को बेजोड़ रचना मानते हुये कहा है कि इसमें हूंण देश से लेकर काठगोदाम तक सम्पूर्ण भू-भाग का कलेवर समाया हुआ है। इसमें सामन्ती व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। लोक प्रियता के कारण इसके कैई मध्यकालीन स्थानीय रूपान्तर मिलते हैं, पर मूल इतिवृत समान ही है।

काफी पूजा-पाठ तथा अनुष्ठानों के बाद भी जब बैराठ के राजा दुलसायी और शौक्याण देश के सुनपति को सन्तान प्राप्त न हुयी तो बागनाथ दर्शन को भी पहुंचे वहाँ सोने की बालियाँ, भेंट आदि चढ़ाई। तब बागनाथ

ने आदेश दिया माघ संक्रान्ति को त्रिवेणी स्नान का, त्रिजुगी पीपल में पानी चढ़ाने तथा जौ तिलों का होम करने का। कहा—जो पहले आयेगा उसे पुत्र, बाद में आने वाले को पुत्री प्राप्त होगी। तब बैराठ में मालूशाह और सौक्याण मे राजुली उत्पन्न हुयी। राजुली के ग्यारह साल की होने पर उसके विवाह की चर्चा होने लगी।

मां से मालूशाह के बारे में सुन राजुली उससे अपना विवाह कर देने को कहती है। मां विखेपाल से उसकी शादी तय होने की बात बताती है। पिता से जिद कर वह उसके साथ चलने को तैयार हो जाती है, जो व्यापार करने जा रहा था। द्वाराहाट में पड़ाव पड़ता है। वहां मालूशाही से राजुली की भेंट होती है जो प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। विवाह का संकल्प भी ले लेते हैं। किन्तु कुछ समय बाद राजुली का विवाह विखेपाल से हो जाता है। तब राजुली भाग कर रास्ते में कष्ट झेलती हुयी सोये हुये मालू के पास पहुंचती है। वहां सौकाण आने की चुनौती भरा पत्र लिख मालू के पास छोड़ आती है। तब मालू सब कुछ छोड़ योगी बनकर सौक्याण पहुचता है। राजुली पहचान उसे अपने पास छिपा रखती है। कुछ दिनो बाद मालू को दामाद रूप में कृत्रिम स्वीकृति मिल गयी। एक दिन मौका मिलते ही विष की खीर खिला मालू की हत्या कर दी गयी। और विखैपाल को राजुली को ले जाने के लिये सूचित कर दिया।

बैराठ राजमाता को स्वप्न से घटना का आभास मिलता है। अपने भाई को सेना सहित भेजती है। तान्त्रिक मालू मे प्राण संचार करते हैं। तोते रूप में मालू राजुली से मिला। विखैपाल की सेना को हरा राजुली को मालू बैराठ लाया। तथा कई वर्षों सुख पूर्वक राज्य करा। (पाण्डे जी अनुसार यह कथानक बारामण्डल क्षेत्र का है)

डॉ० त्रिलोचन पाण्डे जी ने इस गाथा के प्रमुख पाँच रूप माने हैं। बारामण्डल में उपलब्ध, पाली पछाऊँ में प्रचलित जोहार की ओर प्रचलित, सोर-सीरा में प्रचलित, भीमताल के आस-पास का क्षेत्र। इन रूपान्तरणों में साधारण अन्तर है। पाली पछाऊँ वाला रूप सारी घटनाओं का केन्द्र बैराठ मानता है, जोहार वाले रूप में जादू टोने की प्रथा अधिक है तो भीमताल के समीपस्थ क्षेत्र का कथानक घटनाओं का केन्द्र स्थल भावर की ओर बताता है। श्री पाण्डे जी ने कथानकों के विविध रूपों की समानताऐं इस प्रकार दिखाई हैं—

१. सभी कथानकों में मालूशाही नाम समान है। जबकि राजुली का नाम रंजुला, राजुला, राजुली इत्यादि मिलते हैं।
२. हूंण राजाओं के कुरूप आकृति का वर्णन समान है जबकि उसका नाम कहीं चंद विखैपाल है तो कहीं उदैपाल है।
३. देव कृपा से सन्तान होने तथा गर्भ-गंधाक्षत करने की बात समान है।
४. राजुली का सौक्याण देश से भाग कर बैराठ पहुंचने का वर्णन और स्थानों के नाम एक से हैं।
५. मालू के सिराहने पत्र रखने, उसे शौक्याण जाने के लिए माता की शपथ दिलाने और उसके सोते रहने की चर्चा समान रूप में मिलती है।
६. मालू की सात रानियाँ तथा उसका राजपाट छोड़कर सौकाण देश जाकर राजुला से मिलने का उल्लेख समान है।
७. राजुली की अनुपस्थिति में मालू को विष दिया जाना और उस घटना की जानकारी बैराठ में स्वप्न द्वारा होना समान रूप से उल्लिखित है।
८. मालूशाही का पुन: जीवित होकर युद्ध के पश्चात राजुली के साथ आनन्द पूर्वक लौटना सब में है।
९. मंत्र-तंत्र, युद्ध वर्णन, पूर्वानुराग, सौन्दर्य वर्णन तथा सुनपति की समृद्धि का वर्णन समान है।

मुख्य अन्तर इस प्रकार हैं–

1. भीमताल वाले रूप में सुनपति शौक व हूंण देश के राजा चन्द पृथ्वीपाल का नि:सन्तान होना तथा रानीबाग के चित्रशिला मन्दिर में एकत्र होकर वरदान प्राप्त करना कहा गया है। दोनों की भेंट एकाएक मन्दिर में होती है, बैराठ की चर्चा अभी नहीं होती है।
२. जोहार के रूपान्तर में गाँऊली सौक्याण हूंणदेश के प्रलोभन में पड़कर अपना वचन बदल देती है, जबकि भीमताल वाले रूप में पूर्व वचनानुसार ही राजुली का विवाह हूंण देश में कराया है।
३. बारामण्डल वाले रूप में सुनपति राजुली का अनुरोध मानकर उसे अपने साथ ले जाता है, जोहार वाले रूप में नहीं ले जाता है।
४. हूंण देश में विवाह कराए जाने के पूर्व भीमताल वाले रूपान्तर में मालूशाही योगी बनकर राजुली के निकट जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है, पाली पछाऊँ वाले रूप में राजुली स्वयं ससुराल से दुखी होकर भागती हुई बैराठ पहुँचती है।

५. पाली पछाऊँ वाले रूप में राजुली का मालूशाही के घर कुछ दिन रहने का उल्लेख है। वह मार्ग के कठिनाइयों के अतिरिक्त, कँड़ा, दोराल आदि व्यक्तियों के दुर्व्यवहार की चर्चा करती है, जिन्हें मालूशाही तुरन्त मार देने की आज्ञा देता है, राजुली भोजन बनाते समय एक दिन जान-बूझ कर अत्यधिक नमक मिर्च मिला देती है, जिस कारण मालू रुष्ट होकर उसे निकाल देता है। यह प्रसंग अन्यत्र नहीं मिलता है।

६. बैराठ की रानी अपने भाई मिरतुआ को भेजती है, जो स्वयं बड़ा जादूगर था। यहाँ गुरु का वर्णन नहीं आता है।

७. भीमताल वाले रूप में राजुली के सौन्दर्य पर स्वयं शिवजी मुग्ध हो जाते हैं। राजुली क्रुद्ध होकर उन्हें मूक हो जाने का शाप देती है। यह प्रसंग और जगह नहीं है।

८. राजुली का स्वयं मंत्र-तंत्र शक्तियों में निपुण होना सभी रूपान्तरों मे वर्णित नहीं है। वह अपने मंत्र बल से मालूशाही को जीवित करती है लेकिन अन्य रूपों मे यह श्रेय गुरु या मिरतुआ भाई को दिया जाता है।

(इ) गाथा में श्रुति-गत वैविध्य-

लोक साहित्य की परम्परा प्राचीनकाल से ही अखण्ड व अजस्र रूप से लोक जीवन में प्रवाहित होती आयी है। लोक-साहित्य लोक का साहित्य है, अतः उसका जन्म लोक के साथ ही माना जा सकता है। यद्यपि प्रत्येक युग में मानव समाज की अतिशिष्ट कही जाने वाली सभ्यता विकसित होती गयी और इस प्रकार लोक साहित्य की व्याप्ति उसके प्रारम्भिक तट तक होती रही। मानव सभ्यता के विकास के अतीत में जो ग्राह्य अवशेष अथवा स्मारक थे वे सब लोक जीवन की विकासशील परम्परा में विगलित होते हुए, लोक जीवन के एक निश्चित रंग से रंजित होते हुए हमारे सामने परम्परागत रूप से दृष्टिगोचर होते हैं, अस्तु, लोक-जीवन की व्याप्ति बड़ी दीर्घ और समृद्ध रही है। इसी लोक-जीवन की सार्थक एवं परम्परागत अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य है।

लोक साहित्य की मौखिक व श्रुति परम्परा लोक-जीवन के प्रारम्भ से ही अव्याहत एवं अविरल धारा के रूप में सुलभ होती है। वह वेदों की ही तरह श्रुति परम्परा द्वारा संचरित होती आयी है, यद्यपि आज के युग में शिक्षित व बुद्धि-जीवी लोग, लोक साहित्य के संकलन, सम्पादन, अनुशीलन

व अनुसंधान के निमित्त लोक साहित्य को लिखित रूप में सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु यह लोक साहित्य की कोमल, विकासशील आत्मा के साथ अधिक न्यायोचित कदम नहीं कहा जायेगा। यद्यपि यह कार्य अपने में कष्ट-साध्य, महत्वपूर्ण, उपयोगी और आवश्यक सा भी होगया है। लोक जीवन की संस्कृति व उच्छ्वास निःश्वास से अनुप्राणित लोक साहित्य की सहज व उन्मुक्त व्याप्ति को मसि और कागज से बाँधा नहीं जा सकता है। गतिशीलता ही इसका प्राण है, यही कारण है कि कुमाऊँ का लोक गायक अपनी विद्या को 'दन्त-वेद' या 'दन्त-भारत' कहता है।

लोक साहित्य में अभिजात साहित्य की भाँति व्यक्ति विशेष उसका रचनाकार नहीं होता है, वह तो सम्पूर्ण लोक-जीवन की कृति मानी जाती है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि समूचे लोक-जीवन ने किसी समय में एक स्थान में बैठकर किसी सभा समिति, गोष्ठी या अधिवेशन के रूप में विचार-विनिमय अथवा भावाभिव्यक्ति द्वारा लोक-साहित्य का प्रणयन किया हो। वस्तुतः मूल में तो कोई न कोई व्यक्ति विशेष अवश्य ही रहा होगा जिसने कि लोक साहित्य के किसी मूल रूप का सृजन किया हो, जिसने लोक-जीवन की समष्टिगत अनुभूति को अपनी प्रतिभा का रंग देकर लोक-जीवन के अनुमोदनार्थ उसके सम्मुख प्रस्तुत किया हो। लोक ने उस व्यक्ति की अनुभूति में अपनी समष्टिगत अनुभूति के दर्शन पाकर उस व्यक्ति का प्रयास सराहा हो और उसे इस प्रकार की रचना व अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया हो। उस व्यक्ति की निजी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में जो कुछ ग्राह्य व लोकप्रिय था उसे लोक-जीवन ने स्वीकारा हो और जिसके स्मारक चिह्न परवर्ती काल के लोक साहित्य में परम्परागत रूप से पाये जाते रहे। इस रचना प्रक्रिया में व्यक्ति विशेष की निजी चहक लोक-जीवन के समष्टिगत जीवन में तिरोहित होगयी। यही कारण है कि लोक-साहित्य में किसी व्यक्ति विशेष का व्यक्तित्व और कृतित्व स्पष्ट नहीं हो पाता, समूचा लोक-जीवन उसे अपनी कृति मानता है। मनुष्य की व्यक्तिगत चेतना और अनुभूति का लोक-जीवन की समष्टिगत चेतना और अनुभूति के सम्मुख समर्पण का लोक-साहित्य एक ज्वलन्त उदाहरण है। लोक गाथाओं में तो यह बात और भी अधिक स्पष्ट होती है।

सारा लोक-जीवन लोक साहित्य की रचना नहीं करता, न उसकी परम्परा को आगे बढ़ाता है। लोक-जीवन में कुछ विशिष्ट वर्ग होता है, जो

पीढ़ी-दर-पीढ़ी परम्परागत रूप से इस दायित्व का निर्वाह करते हुए इसे अपनी आजीविका का साधन बनाता है और लोक रंजन भी करता रहता है। ऐसा वर्ग समाज में 'लोक गायक' नाम से जाना जाता है जिसे कभी भ्रमवश लोक साहित्य का प्रणेता भी समझ लिया जाता है वस्तुतः यह बात नहीं है वह तो एक ऐसा वर्ग है जो किसी निश्चित उद्देश्य व परम्परा के कारण लोक-साहित्य के संचरण की प्रणाली को अग्रसारित करता रहता है, उस पर कर्ता का आरोप करना दिग्भ्रमित होना है। प्रत्यक्ष रूप से सहृदय एवं रसिक का कार्य लोक गायक करता है। अतः किसी भी लोक साहित्य में उस लोक-जीवन के समष्टिगत व्यक्तित्व की छाप झलकती है। लोकगाथाएं इस कथन के समृद्ध उदाहरण हैं।

लोक-जीवन की सांस्कृतिक मान्यताऐं, धारणाऐं, जीवन मूल्य और लोक तत्व की वल्लरी इत्यादि परम्परागत रूप से पल्लवित तथा पुष्पित होते हैं। किसी रूढ़िगत धार्मिक और सामाजिक मान्यता, परम्परा के कारण उसके मूल कलेवर को बदलने का साहस किसी भी युग के लोक गायक नहीं कर सकते हैं। यदि परिवर्तन आता भी है तो उसके बाह्य आवरण तथा पर्यावरण में ही अर्थात् शरीर व आत्मा वही रहती है केवल परिधान व प्रसाधन में अन्तर आता है। श्रुतिगत वैविध्य का प्रभाव लोक साहित्य के छन्द-विधान, भाषा, गेयतत्व, शैली-कल्पनातत्व, घटनाक्रम, नामकरण इत्यादि पर पड़ता है।

इस श्रुति परम्परा में वैविध्य के कारणों को इस प्रकार नामांकित किया जा सकता है-क्षेत्रीयता, लोक गायक की समसामयिक चेतना, स्थानीय प्रकृति का बिम्ब, स्थानीय रंग का पुट, लोकगायक तथा रचनाकार का पीढ़ी परिवर्तन, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन, लोक गायक की निजी प्रतिभा, शिक्षा व अनुभव, समसामयिक लोक विज्ञान की अनुकूलता के अनुरूप लोकरंजन की भावना, और लोकगायक की स्वच्छन्दता इत्यादि। इस श्रुति-वैविध्य के कई प्रत्यक्ष और परोक्ष परिणाम होते हैं, जिन्हें हम अध्ययन की सुविधा के लिए कुपरिणामों व सुपरिणामों की संज्ञा दे सकते हैं। इनमें से सुपरिणाम ही अधिक आते हैं। जो मुख्य इस प्रकार हैं—लोक साहित्य का सतत विकास, (जो परिवर्तन और परिवर्द्धन प्रक्रिया से युक्त होता है।) गेयतत्व एवं लय की श्रीवृद्धि, भाषा के विविध रूपों का परिचय, विभिन्न अंचलों व क्षेत्रों की और युगों की लोक भावनाओं, मान्यताओं एवं धारणाओं का दिग्दर्शन, लोक साहित्य की विकास-परम्परा, व्यक्तिगत परम्परा

एवं रुचि को महत्वपूर्ण स्थान मिलना इत्यादि। अभिजात साहित्य में मिले पाठभेद को कुपरिणाम ही कहा जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्रुति वैविध्य से लोक साहित्य को तथाकथित हानि की अपेक्षा लाभ ही अधिक पहुँचा है।

इन विचारों के परिप्रेक्ष्य में विवेच्य गाथा में भी श्रुति वैविध्य की कमी नहीं है जिससे इसकी लोकप्रियता स्वतः सिद्ध हो जाती है। मुख्य रूप से इस गाथा की अग्रलिखित श्रुतियाँ प्रमुख हैं—दानपुर एवं जोहार क्षेत्र, कत्यूर तथा बेरेरी क्षेत्र, चौगर्खा व रीठागाड़ क्षेत्र, द्वाराहाट क्षेत्र, गंगोली क्षेत्र, सोर-चम्पावत क्षेत्र। इन क्षेत्रीय श्रुतियों में कहीं नायक के चरित्र को अधिक पक्षपात दृष्टि से उभारा है तो नायिका राजुली के सौन्दर्य एवं चरित्र के प्रति अत्यधिक उदारता दिखाई गयी है। कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहाँ पर दोनों पक्षों को समदृष्टि से देखते हुए उनके बीच सन्तुलन रखा गया है। हमने मालूशाही लोक गाथा के इस श्रुति वैविध्य के अन्तर को कथावस्तु के विकास और घटनाक्रम के साथ-साथ अलग-अलग सोपानों और संख्याओं के माध्यम से अग्रलिखित प्रकार से स्पष्ट किया है—

१. गाथा के प्रारम्भ में किन्हीं श्रुतियों में दुलशायी के राज्य वैभव का सुन्दर वर्णन तथा पुत्र-प्राप्ति के लिए दुलशायी द्वारा, दान, पुन्य, व्रत, उपासना आदि का उल्लेख विस्तार से हुआ है तो किन्हीं श्रुतियों में इसका संकेत मात्र उपलब्ध होता है। दुलशायी का नाम कहीं धर्मदेव भी आया है और इनकी रानी को बिलौर के राजा खाती की पुत्री भी माना है। धर्मा के नाम के आगे 'जिया' विशेषण कहीं-कहीं उपलब्ध होता है।

२. राजा दुलसायी तथा सुनपति का अपनी पत्नियों सहित तीर्थ स्नान का वर्णन सर्वत्र मिलता है, परन्तु कुछ लोक-गाथा मानते हैं कि ये हरिद्वार गये, कुछ कहते है—बागेश्वर बागनाथ में उत्तरायनी के समय गये, कोई गायक मानते हैं कि अल्मोड़ा नन्दादेवी के मन्दिर में गये तो कुछ गायकों की मान्यता है कि ये लोग गाथापुरी (रानीबाग) काठगोदाम के समीप गये। यह भी मान्यता है कि जब सम्पूर्ण तीर्थों में इन्होंने पूजा-अर्चना इत्यादि उपासनाएँ सन्तान प्राप्ति के लिए कर लिए तो उपर्युक्त तीर्थ स्थानों के (अपनी-अपनी मान्यतानुसार) देवताओं ने स्वप्न द्वारा अपने यहाँ बुलाकर-पुत्र-वर का आश्वासन दिया।

अस्तु सौंकाण (भोट प्रदेश) से सुनपति तथा बैराठ से दुलासाही अपनी पत्नियों सहित वहाँ गये, जहाँ पूजा अर्चनादि के बाद धर्मा तथा गाँगुली ने सन्तान की प्राप्ति पर भविष्य में अपत्य सम्बन्ध स्थापित करने का संकल्प किया।

३. अनेक श्रुतियों में मालूशाह के नौ विवाहों का उल्लेख हुआ है, जिसमें उसकी अन्तिम दो रानियों का नाम छेबुला तथा भैसुला भी मिलता है। कुछ श्रुतियों में मालूशाह की केवल एक रानी कमसैण का उल्लेख मिलता है जिसको बीजन नामक संगीतज्ञ कमसैण की गुप्त मंत्रणा पर ही पुरस्कार स्वरूप माँग लेता है। कमसैण को बीजन द्वारा मांगे जाने की दो मान्यताएं हैं—प्रथम तो मालूशाह के राज्याभिषेक के समय बीजन के संगीत से प्रभावित कमसैण उस बीजन से गुप्त मंत्रणा करती है कि जब राजा पुरस्कार माँगने को कहे तो वह उसे पुरस्कार स्वरूप माँग ले। राजा के बीजन को पुरस्कार स्वरूप माँगने को कहने पर बीजन द्वारा कमसैण को माँग लेना। द्वितीय मान्यता है कि जब राजा मालूशाह राजुली को लाने सौंकाण जा रहे थे तो उस समय एक नृत्य का आयोजन किया जाता है। उधर कमसैण सोचती है कि राजा भोट से लौटे या नहीं, या लौट भी जाय तो उसकी नवेली राजुली उसके सामने होगी। अतः बीजन से कूट मंत्रणा करके वह बीजन के साथ चली जाती है।

४. राजुली मालूशाह के यौवनावस्था में प्रवेश होने के बाद उनके प्रेमोदय की घटना को लोक गायक अनेक रूपों में लेते हैं—

(अ) कहीं तो राजुली यौवनावस्था में प्रवेश होने पर अपने माँ से पूछती है कि माँ देशों में देश, दिशाओं में दिशा, वृक्षों में वृक्ष राजाओं में राजा कौन श्रेष्ठ है? उसकी माता गाऊँली द्वारा बैराठ के राजा मालूशाह को वैभव तथा समृद्धशाली तथा सर्वगुण-सम्पन्न बताने पर राजुली के मन में मालूशाही के प्रति प्रमोदय हो जाता है, जो मालूशाह से मिलने की उत्कष्ट अभिलाषा और उसके प्रेम में एकनिष्ठ होकर रात दिन सोच में पड़ जाती है।

(आ) माता के द्वारा मालूशाह के गुणों की चर्चा सुनने के पश्चात् राजुली व्यापार को जाते हुए अपने पिता सुनपति से अनुरोध करती है कि वह भी उसके साथ जायेगी, व्यापार को जाते हुए सुनपति का पड़ाव

बैराठ में पड़ता है। जहाँ राजुली तथा मालूशाही का प्रथम मिलन अगियारी देवी के मन्दिर के समीप मालूशाह के स्नानागार के पास होता है, दोनों प्रेमी एक दूसरे से कई दिनों तक मिलते रहते हैं। सुनपति को जब यह गुप्त भेद मालूम होता है तो वह इसे अपनी प्रतिष्ठा पर धब्बा लगने का कारण समझ कर वहाँ से दोनों प्रेमियों को अलग कर देता है।

(इ) किन्हीं श्रुतियों में यह मिलता है कि मालूशाह एवं राजुली ने एक दूसरे को स्वप्नावस्था में देखा। स्वप्न में ही यह बात होती है कि हम-दोनों के माता-पिता ने मकर पर्व पर अपत्य सम्बन्ध स्थापित किया था। अतः हम एक दूसरे के हैं। स्वप्नावस्था से जागने के पश्चात् दोनों अपने माता-पिता से स्वप्न की बात बताते हुए आपस में विवाह कर देने को कहते हैं। उनके माता-पिता उनकी बातों को टाल देते हैं। मालूशाह अपनी बात पर हठ करता है तो धर्मा उसे समझाती है, और बगौरी सोमनाथ के मेले का आयोजन करवाती है--जहाँ अनेक स्थानों से सुन्दर युवतियाँ आयीं रहतीं हैं। धर्मा कहती है कि जो युवती उसे पसन्द आये वह उसका वरण करे, परन्तु मालूशाही वहाँ पर राजुली के समान सुन्दर कन्या को जैसी किसी को नहीं देखता है। वापस घर आने पर वह राजुली के वियोग से अत्यधिक व्यथित हो जाता है। धर्मा उसको कठोर कारावास में बन्द कर देती है।

(ई) कहीं पर यह देखने को मिलता है स्वप्नावस्था में मालूशाह छुछुत नामक पक्षी बनकर सौकाण राजुली के पास पहुंचता है। राजुली भी छुछुनी बन जाती है, इस प्रकार दोनों प्रेमी पक्षी रूप में स्वच्छन्द आसमान में विचरण करते हुए प्रेमालाप करते हैं। अन्त में मालूशाह राजुली से कहता है कि वह आगामी उत्तरायनी के मेले में अकेले ही आये, जहाँ दोनों का पुर्नमिलन होगा।

(उ) कहीं पर केवल स्वप्नावस्था में एक दूसरे के मिलन के पश्चात् प्रेमोदय की बात व्यक्त है।

५. सुनपति राजुली के विवाह के लिए हूंणदेश जाता है जिसमें कहीं तो सुनपति नगरकोट रुदुवा हूणियाँ के पुत्र अक्षिपाल से राजुली की मँगनी करता है तो कहीं कालू शौक के पुत्र से तथा कहीं हूंणदेश अजीतपाल के पुत्र चनरी विखेपाल से मँगनी कर आता है।

६. राजुली के बैराठ गमन के प्रसंग में भी दो प्रकार की बातें सामने आती हैं-जिसमें कुछ लोक-गायक तो यह मानते हैं कि राजुली मालूशाह के स्वप्न की मंत्रणा के अनुसार ही पेट दर्द का बहाना बनाकर बागेश्वर उत्तरायनी के मेले में जाती है। मेले में मालूशाह को न पाकर वह बैराठ चली जाती है।

कुछ लोक गायक मानते हैं कि राजुली आषाढ़ के महिने में बैराठ जाती है। पिता की अनुपस्थिति में (वह अपनी पुत्री की मँगनी के लिए गया हुआ था) अपनी माँ से आग्रह करती है वह उसे बैराठ जाने की अनुमति दे दे पिता के लौटने से पूर्व ही वापस आ जायगी। इकलौती पुत्री की जिद्द पर गाँगुली उसे अनुमति दे देती है। किन्हीं श्रुतियों में यह मिलता है कि राजुली माँ से कहती है कि हे माँ। मेरा विवाह मेरे पिता हूणदेश करने वाले हैं, जब मेरा विवाह हो जायेगा तो मैं नैनीहाल (माकोट) नहीं जा पाऊँगी। अतः मैं नैनीहाल हो आती हूँ। इस बहाने वह बराठ को चली जाती है।

७. बैराठ जाती राजुली को किन्हीं श्रुतियों में रिङूणिया धार में परियाँ तथा पाङुली उड्यार में दो भाई रमौल सिदुवा-विदुवा मिलते हैं, जो राजुली को बहिन के रूप में मानते हुए उसे अकेले बैराठ जाने से रोकते हैं। किन्हीं श्रुतियों में रमौलीकोट के सिदुवा नामक रमौल को राजुली के प्रति आसक्त होता हुआ दिखाया है।

८. उत्तरायनी के समय, जाती हुई राजुली को मार्ग में उसके मामा की दो पुत्रियाँ हिलमोती और खिलमोती, जो राजुली से नृत्य करने का अनुरोध करती हैं, का भी उल्लेख आया है। किन्ही श्रुतियों में हिलमोती और खिलमोती का प्रसंग उस समय आया है जब मालूशाह राजुली को पाने सौकाण पहुंचता है। उस समय ये दोनों मालूशाही को सन्देश देती है कि राजुली अन्यत्र ब्याही जा चुकी है। वे मालुशाही से विवाह का प्रस्ताव भी रखती हैं।

९. कोई तो मानते हैं कि कमस्यार में बाइस भाई कमस्यार राजुली को अपनाने का प्रयास करते हैं, जहाँ से राजुली बड़ी चतुरता से निकलने में समर्थ हो जाती है। कुछ श्रुतियों में, राजुली तेजम, भैंसयाल, तल्ला-मल्ला दानपुर, धरमघर, काण्डा कालसिण होते हुये बागेश्वर पहुंची।

१०. उत्तरायणी के अवसर पर राजुली के बागेश्वर पहुँचने पर मेले की

चहल-पहल, का सुन्दर चित्रण हुआ है। जहाँ विभिन्न स्थानों के व्यक्तियों के आने का उल्लेख मिलता है। मेलों में गाये जाने वाले गीतों की रंगीनता में राजुला का मुग्ध होना, विभिन्न स्थानों से आये हुए व्यक्तियों द्वारा राजुली के रूप-सौन्दर्य की चर्चा करना तथा बाईस भाई गनाओं, कण्ठग्रन्थिधारी तथा क्रमस्यारों का राजुली को पाने के लिए परस्पर होड़ आदि का भी सुन्दर चित्रण उपलब्ध होता है। आषाढ़ के महिने में बैराठ को जाती हुई राजुली जब बागेश्वर पहुँचती है तो सरयू नदी के अथाह जल प्रवाह का चित्रण, राजुली तथा सरयू नदी का आपसी वार्तालाप, सरयू द्वारा राजुली को अकेले बैराठ जाने से रोकना, राजुली के अनुरोध पर सरयू नदी द्वारा राजुली को मार्ग देना आदि का सुन्दर चित्रण भी मिलता है।

११. बागनाथ के मन्दिर में पहुँचने पर राजुली द्वारा पूजा अर्चना का उल्लेख तथा बागनाथ के शाप का वर्णन प्रायः सभी श्रुतियों में मिलता है, परन्तु किन्हीं श्रुतियों में राजुली के अनिद्य सौन्दर्य को देखकर बागनाथ को भी कामासक्त दिखाया है।

१२. बागेश्वर से आगे जाने पर राजुली के मार्ग भूल जाने का भी उल्लेख हुआ है। जब वह कत्यूर होते हुए जा रही थी तो उसे खोली नामक स्थान पर बाइस भाई पटियार मिलते हैं जो राजली को अपनाना चाहते हैं, परन्तु राजुली वहाँ से छुरड़ रूप में निकलने में समर्थ हो जाती है। किन्हीं श्रुतियों में पटियारों का कोई उल्लेख नहीं हुआ है।

१३. आगे मार्ग में राजुली को मनस्यारों (बेरेरौं) के नौ भाई गनों मिलते हैं, जो राजुली को अपनाना चाहते हैं। किन्ही श्रुतियों में ये गनाँ उसे तब मिलते हैं जब वह उत्तरायनी के मेले में मालूशाही को खोज रही थी।

१४. सोमेश्वर के चार भाई बोरों की रपाई का वर्णन, उनका राजुलो के प्रति आसक्त होना, राजुली द्वारा रूप परिवर्तन द्वारा झुपुल चौर पहुँचने का उल्लेख किन्हीं श्रुतियों में हुआ है किन्हीं श्रुतियों में नहीं हुआ है।

१५. जिन श्रुतियों में राजुली जब कत्यूर-कौसानी होते हुए जा रही थी तो उसे प्रथम हरुवा कहैड़ (कहीं पर कलुवा कहैड़ भी मिलता है) मिलता है जो अपने हलवाहे से राजुली के सौन्दर्य की चर्चा सुन उसे

एक गुफा में ले जाता है। उसके सात पुत्र (कहीं पर नौ पुत्रों का उल्लेख है) राजुली को स्वयं अपनाना चाहते हैं, अतः वे अपने पिता को अपने मार्ग का रोड़ा समझकर मार देते हैं। पिता को श्मशान ले जाने पर मौका पाकर राजुली वहाँ से आगे चली जाती है। कहीं पर यह मिलता है कि जब हरुवा राजुली को अपने महल में लाता है तो उसके लड़के पिता के दुष्कर्म पर नाराज होते है, वह एक गुफा में राजुली को ले जाता है, राजुली द्वारा यूकान्वेषण करने पर हरुवा को नींद आ जाती है, और राजुली वहाँ से आगे चली जाती है। कहीं यह मिलता है कि जब हरुवा अपने पुत्रों से शादी की बात कहता है तो उसके पुत्र जब उसको डोली में बिठाकर ले जा रहे थे तो उसकी बहुऐं जंगल गयीं हुई थीं, जो यह सोचती हैं कि उनके ससुर का देहान्त होगया है और वे मृत समझे हुए ससुर के कपड़ों को जलाकर, नहा धोकर रोने लगती हैं। परन्तु हरुवा के पुत्रों के वापस घर आने तथा वस्तुस्थिति से अवगत होने पर वे पश्चाताप करने लगती हैं। उधर हरुवा राजुलो को पकड़ता है तो राजुली द्वारा हाथ छुड़ाने के प्रयास में हरुवा गिर कर मर जाता है। कहीं, राजुली को जब हरुवा कहैड़ घर लाता है तो उसके पुत्र और बहुएँ जंगल गये थे, हरुवा के पौत्र अपने माता-पिता को घर आने के लिए आवाज देते हैं। वे समझते है कि वृद्ध पिता स्वर्गवासी होगये हैं ऐसा जानकर पुत्र सिर मुड़ाकर बहुएँ बाल फैलाकर घर को आती हैं तो पिता को राजुली के सम्मुख बैठा देखकर लज्जित होते हैं। हरुवा राजुली को लेकर जंगल चला जाता है जहाँ से राजुली बड़ी चतुरता से अपने को हरुवा के पंजे से मुक्त करती है।

१६. फचुवा, फथुवा दूँराव राजुली को दुनागिरी (कहीं-कहीं उखोलेख की चढ़ाई मे मिलने का भी प्रसंग आता है) में मिलता है। कहीं तो यह मिलता है कि जब वह राजुली को अपनी साली मानकर अपने यहाँ चलने को कहता तो राजुली प्यास का बहाना बनाकर उससे पानी की माँग करती है और पानी लाने को गये फचुवा की अनुपस्थिति में वहाँ से निकल भागती है। कहीं यह तब उपलब्ध होता है जबकि राजुली फथुवा से शिर के बल नाच करवाती है और अपनी धोती को एक ठूँठ में डालकर चकमा देकर नाचते हुए फथुवा को छोड़कर चली

जाती है। किन्हीं श्रुतियों में यह मिलता है कि उस दिन फथुवा के घर में उसके पिता का श्राद्ध था वह दही दूध की महड़ी (कावरी) लगाकर घर जा रहा था तो मार्ग में उसे राजुली मिल गयी। पिता के श्राद्ध होने के कारण घुटे सिर वाला फथुवा श्राद्ध को ही भूल गया, राजुली के रूप का लोभी फथुवा घुटे सिर से उल्टा नाच करता रहा, उसे यह ज्ञात नहीं हुआ कि राजुली एक ठूँठ में एक वस्त्र डालकर वहाँ से कूच कर गई। जिसे वह राजुली समझ बैठा था वह राजुली का चमत्कार था। फथुवा पश्चाताप करता हुआ वापस गाय-भैंसों के साथ जंगल को चला गया।

१७. आगे महरूड़ी कोट में राजुली को महर मिलते हैं। किन्हीं श्रुतियों में दो भाई महर लच्छी गच्छी का नाम आया है तो कहीं सात भाइयों और कहीं छः भाइयों का प्रसंग आया है, आषाढ़ के महिने में जाती राजुली जगह-जगह रोपाई का कार्य देखती है, जब महरूड़ी कोट पहुंची तो सात भाई महरों की भी उस दिन चाँदी खेत में रोपाई का कार्य बड़ी धूम-धाम से हो रहा था। राजुली के रहप नदी में नहाते समय एक बड़ा पत्थर पैर से नीचे गिर गया जिससे खेत में जाती हुई गूल का पानी बन्द हो गया। महरों के बहुरे हलवाहे वहाँ आकर राजुली को देख उसके सौन्दर्य की चर्चा करते हैं। महर राजुली को डोली में बिठाकर अपने महल में ले जाते हैं। राजुली उनको अपना भाई कहकर पुकारती है। महर क्रोधित हो उसे वस्त्र हीन करके केले के बगीचे में फेंक देते हैं, राजुली केले के पत्तों के वस्त्र बनाकर मालूशाह के महल में जाती है। कुछ श्रुतियों में यह घटना इस प्रकार मिलती है कि सात भाई महर जंगल शिकार खेलने को गये हुए थे तो उन्हें राजुली मिल गयी। राजुली को अपने महल में लाकर वे शादी की तैयारी करते हैं। राजुली पण्डित से अनुनय करती है कि वह किसी भी प्रकार उसकी यह प्रस्तावित शादी रुकवा दे। वह पण्डित को अपने हाथ की अँगूठी देकर अपने वश में कर लेती है। पण्डित महरों से कहता है कि इसके साथ यदि शादी करोगे तो तुम अपनी मौत को बुलावा दोगे। क्रोधित महर राजुली को वस्त्रहीन करके नदी में बहा देते हैं। कत्यूरों की कुल देवी की कृपा से राजुली किनारे लग जाती है और उसी की कृपा से उसको

वस्त्र मिलते हैं जिन्हें पहनकर वह मालूशाही के महल को जाती है।

१८ कुछ लोक गायक मानते हैं कि बागनाथ के शाप के कारण राजुली द्वारा मालूशाही को अनेक उपायों द्वारा जगाने पर भी वह निद्रा से जागा नहीं। किन्हीं श्रुतियों में मिलता है कि जब वह महल के पास पहुँची तो मालू के महल के पहरेदार कुत्ते भौंकने लगे, अतः उसने अपने मंत्र बल से सारी बैराठ में निद्रा का सम्मोहन फैला दिया जिसके प्रभाव से मालूशाही भी वंचित नहीं रहा। महल में जाने के लिए राजुली द्वार पर बँधे हाथी से अनुरोध करती है, हाथी उसे अपने सूँड में रखकर महल में रख देता है। किन्हीं श्रुतियों में हाथी का कोई प्रसंग नहीं आया है। कहीं पर राजुली उसे सोया जानकर उठाना उचित नहीं समझती है। मालूशाही को एक पत्र लिखकर सौकाण आने की चुनौती देकर वापस लौट जाती है।

१९. प्रातःकाल पत्र को पढ़कर मालूशाही विरह से व्यथित हो माता धर्मा के काफी समझाने के बाद भी वह मानता नहीं है और सम्पूर्ण कत्यूरों के साथ योगी वेश में सौकाण जाता है। कुछ श्रुतियों में योगी वेश में अकेले ही जाता है। उसके गुरु रिणी-फिणीदास जिनका नाम कहीं पर गयालीनाथ और खाकनाथ भी आया है, फथुवा, सात भाई महर तथा हरुवा कहेड़ के पुत्र भी साथ जाते हैं। किन्हीं श्रुतियों में मालूशाही महरों तथा फथुवा को मार देता है।

२०. कत्यूरी सेना, तथा भोटियों की सेना में घनघोर तांत्रिक युद्ध होता है। इस युद्ध के ढंग, छल प्रपंच और कूटनीति विषयक कई श्रुतियाँ उपलब्ध हैं। संक्षेप में ये इस प्रकार हैं—

(अ) कत्यूरी सेना के जब हूंमधुर पहुँचती है तो वह विष के प्रभाव से अचेत हो जाती है। कुछ मानते हैं कि कत्यूरी सेना गुरुओं के तंत्र-मंत्र के प्रभाव से पक्षी रूप में सौकाण को उड़ती है, दूसरी ओर का दल बाज पक्षी। इसी प्रकार एक पक्ष साँप बनकर युद्ध करता है तो दूसरा दल नेवला।

(आ) कुछ श्रुतियों में जब हूंमधुर में नौ लाख कत्यूरों को विष लग जाता है तो मालूशाह अपने गुरुओं के साथ अकेला रह जाता है। गुरु उसे बताते हैं कि राजुली चतरी विखेपाल के लोहे के महल में बन्द है। मालूशाह को पंचरंगी शुक बनाकर भेजते हैं। मालूशाह बड़ी कठिनाई

से सारङ्गी रूप में राजुली को लोहे के महल से मुक्त कराता है। चनरी विखेपाल बाज पक्षी बनकर सुवा-सारंगी का पीछा करता है परन्तु असफल होता है।

(इ) जब मालूशाह योगी वेश में अलख लगाता हुआ सुनपति के महल के पास पहुंचता है, राजुली पिता से अनुरोध कर महल में टिका लेती है। राजुली का अधिक आना जाना देख सुनपति के मन में शंका उत्पन्न होती है कि वह मालूशाही है। क्रोध से जलता हुआ सुनपति कहता है कि मैं अब तुम दोनों का विवाह कर देता हूं। राजुली जब नदी तट पर गयी, सुनपति खीर में विष मिलाकर मालूशाह को अचेत कर देता है। उसको वर्फ शिलाओं में डाल देता है। राजुली मालू को न पाकर विलाप करती है। सुनपति राजुली को हूंणदेश चनरी विखेपाल को सौंप देता है। मालूशाह की आत्मा स्वप्न में सम्पूर्ण व्यथा को अपनी माता से कहती है। धर्मा अपने भाई मृत्युसिंह गढ़वाली को सन्देश भेजती है। मृत्युसिंह सिदुवा रमौत तथा सेना के साथ सौकाण जाता है, जहाँ मृत मालू के शरीर को तंत्र-मंत्रों से पुनरुज्जिवित करते हैं। मालू को तोता पक्षी बनाकर हूंणदेश भेजा जाता है। राजुली को मालू तोता रूप में ही लौटा लाता है। मार्ग में चनरीविखेपाल बाज पक्षी के रूप में मालू व राजुला के शरीर को क्षत-विक्षत करता है। वे दोनों एक जंगल में गिरते हैं, मृत्युसिंह भी सेना सहित वहाँ पहुंच जाता है, जो मंत्रों से मालू व राजुला को जीवित करता है। हूंण तथा कत्यूरों का युद्ध होता है। हूंण हार जाते हैं।

(ई) कुछ श्रुतियों में यह भी मिलता है मालू को पिंजरे का छुछुत पक्षी, जो राजुली को उसके बैराठ आने समय से ही पहचानता था, उस छुछुत को सन्देश वाहक के रूप में राजुली के पास भेजा जाता है। वापस लौटते हुए छुछुत को बिरली मार देती है। मृत छुछुत को राजुली एक पिंजड़े में रख देती है। मृत छुछुत की आत्मा स्वप्न में कत्यूरी गुरुओं से अपने मारे जाने का सन्देश देती है। पुनः एक कत्यूर को बाज पक्षी बनाकर उस पिंजड़े को लाने के लिए भेजा जाता है तथा फिर छुछुत को जीवित बनाया जाता है। पुनः मालूशाह छुछुत के मार्ग-निर्देशन में योगी वेश में राजुला को अक्षीपाल के महाँ से

मुक्त कराकर वापस आकर अपनी सेना सहित घर लौट आता है।

(उ) कहीं यह भी उपलब्ध होता है कि मालूशाह राजुली से मिलने के लिए स्वयं छुछुत पक्षी बनकर जाता है। राजुली के महल में एक बिल्ली उसको मार देती है। राजुली उस मृत छुछुत को एक पिंजरे में रखकर पूजा करती है, मृत छुछुत की आत्मा अपना सन्देश कत्यूरी गुरुओं से कहती है। कत्यूरी गुरु एक कत्यूर को बाज पक्षी बनाकर भेजते हैं, जो पिंजड़े सहित छुछुत को वापस लाता है। मालू को जीवित किया जाता है। पुनः मालू योगी वेश में राजुली के पास जाता है और राजुली सहित कत्यूरों के पास लौट आता है।

(ऊ) एक श्रुति है कि भोटियों तथा हूणों ने कत्यूरों से दुरभि सन्धि का प्रस्ताव रखा। राजुली किसकी हो इस मामले पर पंच-फैसला दें। तंत्र विद्या से राजुली का एक अन्य कृत्रिम-प्रतिच्छायात्मक रूप बनाया गया। भाग्यवशात् प्रतिच्छाया रूप अक्षीपाल को मिला। बाद में राजुली से विवाह करके लौटते हुए कत्यूरी सेना के सामने हूंण राजुली को वापस लौटाने को कहते हैं। कत्यूरियों द्वारा मना करने तथा सुनपति द्वारा भी राजुली को मालू की परिणीता बताये जाने पर हूंण फिर सुनपति के पास जाते है। सुनपति अपनी छोटी पुत्री रेणुका को अक्षीपाल हूँण के साथ विवाह करके विदा कर देता है।

(ए) कुछ श्रुतियों में मिलता है कि सुनपति की सेना तथा हूंणों की सेना संयुक्त रूप में भी जब किसी भी प्रकार कत्यूरी सेना के साथ युद्ध में विजयी नहीं हुई तो उन्होंने कूट उपायों द्वारा यह तय किया कि 'वे अब राजुली को मालूशाह को देने को तैयार है अतः ये विवाह करके, विधि विधान द्वारा राजुली को ले जाए।' विवाहोपरान्त भोजन के समय भोजन में अनेक विषों को डाल दिया गया, कुछ लोक गायक तो मानते हैं कि भोजन करने से पूर्व राजुली के द्वारा विष डालने का संकेत उनको मिल गया था। उन्होंने एक ऐसी जड़ी मुँह में डाल ली थी कि विष का भोजन का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

(ऐ) कुछ गायक मानते हैं कि राजुली को मालूशाह द्वारा हूंणदेश से वापस लाने के पश्चात फगुवा द्वं राव तथा सुनपति में मल्ल युद्ध होता है। फगुवा सुनपति को मारने को तैयार होता है तो राजुली के अनुरोध

पर उसके शिर के बाल आधे घुटवा और मुँह में कालिख पोत कर उसको छोड़ दिया जाता है। तब सुनपति क्षमा माँगता है। कत्यूर लोग राजुली को ले बैराठ चले जाते हैं।

(ई) शिल्पगत विशेषताएँ

साहित्यकार अपनी रचना का स्वयं ही अभियन्ता, अधिदर्शक, श्रमजीवी, शिल्पी और सर्वोपरि नियन्ता है। लोक साहित्यकार के लिए तो यह उक्ति शत-प्रतिशत चरितार्थ होती है' क्योंकि लोक गायक व्यष्टि में समष्टि होता है, एक होकर, अनेक होता है, व्यक्तिगत अस्तित्व से युक्त होते भी सामूहिक लोक-चेतना से युक्त होता है। लोक-गायक लोक-जीवन का सच्चा प्रतिनिधि होता है। वह लोक की संस्कृति, विचारधाराओं मान्यताओं परम्पराओं, मर्यादाओं का प्रतिनिधित्व करने वाला, पूर्वदिशा में चहकने वाले उषाकालीन विहग की भाँति है जो लोक-चेतना से आविर्भूत होकर एक नये और स्वर्णिम दिन की घोषणा करने का संकल्प करता है। साहित्य में शिल्प विधान के प्रश्न पर कहा जा सकता है कि शिल्प वैशिष्ट्य हर शिल्पी की अपनी विशेषता है। इसलिए तो कहा है कि 'शैली मनुष्य की अपनी होती है जिसमें उसका निजत्व और व्यक्तित्व सहजरूप से संस्कारगत होकर समाविष्ट होता है।' शैली के विषय में अंग्रेजी की 'स्टाइल इज दि मैन हिमसेल्फ' उक्ति बहुत प्रचलित है।

लोक साहित्य कंठ परम्परा द्वारा सैकड़ों वर्षों से पीढ़ी-दर पीढ़ी लोक जीवन में संचरित होता आया है, जिसके द्वारा लोक-जीवन के जीवन्त तत्वों का वहन होता आया है। लोकगायक जो किसी समूह का प्रतिनिधित्व करता है यदि कहीं उसका निजत्व झलकता है तो गाथाओं की शैली या शिल्पगत विशेषता में, जिसके लिए प्रत्येक लोक गायक अपने निजी प्रयोग करता है। ये प्रयोग सफल और प्रिय होने के बाद ही लोक में ग्राह्य हो जाते हैं, किन्तु उस गायक के तुरन्त बाद ही उसके परोक्ष में यह शैलीगत विशेषता भी जो कभी लोक-गायक का निजी प्रयोग था, लोक जीवन की सामूहिक भावना में विगलित हो जाता है और आने वाली पीढ़ी उसे लोक की बहुमुखी और विविध प्रतिभा का फल समझती है। काल क्रम और अंचलों के भेद के कारण विषय वस्तु में अन्तर पाया जाता है, इसी प्रकार शैलीगत विविधता एवं विशिष्टता भी प्रत्येक लोकगायक की अपनी क्रीड़ा का विलास है। यही

कारण है कि कोई भी लोक-गीत, लोकगाथा मूल में एक ही होने पर भी अनेक तर्जों में कई प्रकार के लय और तालों में गायी जाती है। ये विभिन्न लय और ताल किसी नियम से बँधे नहीं हैं, ये तो लोक-जीवन की उन्मुक्त लोक संगीतात्मक, एवं विविध अभिव्यंजनागत विलासों का परिणाम है, जिसकी चहक वहाँ की मानव तथा मानवेत्तर प्रकृति में भी ढूँढ़ी जा सकती है। इसी कारण एक ही लोक गायक भी एक ही लोक-गीत या गाथा को समय-समय पर अनेक प्रकार की शैलियों द्वारा अभिव्यक्त करता है।

सच्चा लोक गायक निरक्षर भट्टाचार्य होता है और कबीरदास की तरह फक्कड़ होता है। वह संगीत और साहित्य के नियमों में नहीं बँधता है। उसका अपना निजी शास्त्र है जो वेद और विज्ञान में नहीं मिलता बल्कि लोक में मिलता है। उसे रस, छन्द, अलंकार, भाषा की शब्द शक्ति, और गुण, धर्म इत्यादि उपादानों एवं उपकरणों से कोई मतलब नहीं। उसके मानस पटल पर जैसी अनुभूति अंकित होती है उसको अविकल्प रूपेण वह लोक के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है। सहज रूप से मार्ग में जो रस-छन्द उसे मिल जाते हैं, उन्हें ही वह ग्रहण करता है। यही कारण है कि लोकसाहित्य का अन्तःपक्ष बहुत ही तीव्र प्रखर और अत्यधिक समृद्धशाली होता है। सहज रूप से प्राप्त होने के कारण कलापक्ष के जो अवयव लोकसाहित्य में आते हैं, वे बड़े सहज, स्वाभाविक, लोकप्रिय होते हैं और मणि कांचन की तरह स्वतः ही एक दूसरे से संयोजन करने की क्षमता रखते हैं। लोक गाथाओं में पाये जाने वाले अलंकार चाहे संख्या में कम हों किन्तु वे इतने तराशे हुए लगते हैं कि मानो लोक साहित्य कार इनका मर्मज्ञ रहा हो।

निरक्षर होते हुए भी लोक गायक अपनी प्रतिभा का बहुत अधिक धनी होता है, वह अपने लोक साहित्य की मण्डली में बृहस्पति के समान बुद्धिमान और अत्रि व वशिष्ठ की तरह अन्तर्द्रष्टा माना जाता है। यद्यपि कुछ आज अर्द्ध शिक्षित लोग भी लोकसाहित्य की श्री वृद्धि में लगे हैं। चूँकि उनकी दृष्टि स्वार्थपरक एवं संकीर्ण है, अतःउन्होंने लोकसाहित्य के उपकार के बदले उसका अपकार किया है। इसी कारण सुशिक्षित वर्ग में लोकसाहित्य के प्रति उपेक्षा, हीनता और विगर्हण की भावना घर कर रही है। आगे यह कुहासा जल्दी फट जायेगा और व्यक्ति अपना सही प्रतिबिम्ब लोकसाहित्य के निर्मल जल में देख सकेगा। इस भौंडे और सस्ते लोकसाहित्य के रूप से लोक-साहित्य के विकास की गति में भी मर्मान्तिक प्रहार एवं व्याघात हुआ है।

इसके अतिरिक्त एक ऐसा शिक्षित वर्ग भी है जो यश और धनार्जन की तीव्र अभिलाषा से, तथा दाम्भिक वृत्ति की पूर्ति के लिए शोध, परिशोध और संकलन के नाम पर रचनाऐं प्रस्तुत कर रहा है। इन दो पाटों के बीच में लोकसाहित्य के सेवक एवं सच्चे अनुशीलन कर्ताओं को पिसते हुए लोकसाहित्य के सही रूप और अपने अस्तित्व के लिए निरन्तर संघर्ष करना पड़ रहा है। यदि शासन, स्वयं सेवी संस्थाऐं, सुधी विद्वान, विश्वविद्यालय और शोध संस्थाऐं समय रहते हुए इन ग्रन्थियों को नहीं सुलझायेंगे तो यह संघर्ष और भी जटिल हो जायेगा।

विवेच्य गाथा मालूशाही के शिल्पगत विशेषताओं को हम निम्न सूत्रों व संकेतों के द्वारा संक्षेप रूप में समझ सकते हैं—

विवेच्य गाथा 'मालूशाही' एक प्रेम गाथा है, जिसमें प्रधान रस शृंगार है। शृंगार के उभय पक्ष के सुन्दर चित्रण के साथ कहीं-कहीं वियोग पक्ष इतना प्रखर है कि वियोग तथा करुण में अन्तर कर पाना कठिन है। गाथा में प्रेमी-प्रेमिका के मध्य प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मिलन की छटपटाहट बनी रहती है। उनके मध्य मिलन के बहुत कम ऐसे क्षण हैं जिनमें उन्मुक्त केलि-क्रीड़ा का वर्णन मिलता हो। प्रेमी-प्रेमिका के मध्य पूर्वराग की स्थिति का सुन्दर चित्रण उपलब्ध होता है। इनके मध्य इस प्रेम का अभ्युदय गुण-कथन तथा स्वप्न दर्शन द्वारा हुआ है। प्रेम के उदय होने पर प्रेमियों की स्थिति अत्यन्त करुणा जनक हो जाती है। उदाहरण द्रष्टव्य है—'जब मालूशाह राजुली को स्वप्न में देखने के पश्चात् एकाएक हड़बड़ा कर उठता है तो अपना शिर, तथा छाती पीटने लगता है। उसके आँखों मे निरन्तर अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है और वह अपने इस दुख को उदासी मुरली बजाकर व्यक्त करने लगा'—

'भटक चारी छाती मारणो,
मटक चारी रव्वर फोड़णो
मण-मण नेतर छोड़णो,
आज गाढ़ण भैगो बैरागों को बाज
बज्यूण भै गोछ उदासी मुरली।'

इसी प्रकार राजुली के हृदय में मालूशाह के प्रति प्रेम होने पर अत्यन्त करुणाजनक है, वह अपने संग की सहेलियों को छोड़कर रात दिन मालूशाह के प्रेम में निमग्न रहती है। ऐसे ही अनेक स्थल गाथा में मिलते हैं जो प्रेमी-

प्रेमिका के मध्य वियोग की सुन्दर अभिव्यञ्जना प्रस्तुत करते हैं।

संयोग पक्ष में प्रेमी-प्रेमिका के मध्य आद्यान्त संयम की भावना बनी हुई है, कहीं भी आलिंगन, चुम्बन, दन्तकर्म, नखक्षत, सीत्कार आदि संयोग के उपांगों का चित्रण भी नहीं हुआ है। कहीं भी इस संयोग में 'पिया अंग-अंग से लपटाय स्याम-घन' का चित्रण नहीं हुआ है। संयोग के समय में भी विरह की सम्भावना बनी रहती है जिस कारण नोक-झोंक का तो वहाँ समय ही नहीं है। संयोग में भी कितनी शालीनता उस प्रेम में है इसके लिए द्रष्टव्य है एक उदाहरण--'जब मालूशाह एवं राजुली का मिलन होता है तो वे एक दूसरे को उसी प्रकार देखे रह जाते हैं मानो सूर्य, चन्द्रमा, हँस-हँसिना, कृष्ण राधिका, तोता मैना मोहित हुए हों'--

> 'माला चैरो राजुली कणी राजुली चैरे माला,
> हियैं झणी एक दुसार कणी चाइयैं रै गया।
> इजा जाणी हँसा हँसिणी छन, गैना तोता छन,
> चन्द्रमा सूर्य छन, कृष्ण राधिका छन।
> सूर्य चनरमा इजा मोहित पड़ी गया।''

यद्यपि गाथा में हास, परिहास, अन्तरलाप तथा मनोविनोद के बहुत ऐसे स्थल थे परन्तु कहीं भी सुख एवं सुखांत का चित्रण नहीं हुआ है। जहाँ कहीं भी ऐसे स्थल आये हैं भी, तो वे भी केवल सूक्ति रूप में। अस्तु, इस शृंगार में आद्यान्त शालीनता बनी हुई है, कहीं भी यह प्रेम सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण नहीं करने पाया है।

शृंगार रस के अतिरिक्त अन्य रस इसके सहायक रूप में यत्र-तत्र अपनी विशिष्टताओं से युक्त हैं। प्रधानतः वात्सल्य रस तो अपने चरमोत्कर्ष पर है। माता पिता का पुत्र के अभाव में दुखी रहना। पुत्र प्राप्ति पर सुखी होना तथा पुत्र से बिछुड़ने पर असह्य वेदना का भी चित्रण मिलता है। इसी प्रकार करुण भयानक, हास्य, अद्भुत, वीर आदि रसों का भी सुन्दर परिपाक गाथा में उपलब्ध है।

लोक साहित्य लोक जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। लोक-जीवन की विभिन्न धाराओं ने उसके कलेवर को अत्यन्त समृद्ध बनाया है। लोक साहित्य अभिजात साहित्य की तरह किसी कवि का तराशा हुआ अलंकृत काव्य नहीं है। उसमें लोक जीवन की सहज उक्तियाँ बिना प्रयास के दिन-प्रतिदिन अभिव्यक्त होती रहती हैं। अतः जहाँ भी अलंकारों का प्रयोग हुआ

है, उत्तम रूप में हुआ है। 'इसमें अलंकार नहीं केवल रस है', रामनरेश त्रिपाठी जी का यह कथन सत्य है। मालूशाही गाथा में गायकों ने जिन उपमानों का चयन किया है वे ग्रामीण वातावरण से पूर्ण तथा लोक जीवन से सम्बद्ध है, इन नवीन, मौलिक व आंचलिक उपमानों या प्रतीकों में लोक जीवन की आत्मा बोलती है। गाथा में अधिकांश रूप से सादृश्य मूलक अलंकारों का प्रयोग अधिक हुआ है। उपमा, रूपक, व्यतिरेक, प्रतीप, उदाहरण, दृष्टान्त, अनन्वय इत्यादि अलंकार गाथा में स्वतः प्रवाहित होकर निखर गये हैं। शब्दालंकारों में अनुप्रास की छटा तो यत्र-तत्र देखने को मिलती ही है, साथ ही श्लेष और यमक की भी शोभा अपने निराले रूप में विद्यमान है। सादृश्यमूलक अलंकार में जिन उपमानों को उसने लिया है वे भावानुकूलता के साथ-साथ आकृति साम्य के द्योतक है। मुख्यतया मुख के लिए पौर्णमासी का चन्द्रमा, नाक के लिए राजा की तलवार (खाण) दाँतों के लिए आश्विन माह का दाड़िम, आँखों के लिए दो भरे हुए नौले (जलाशय) उरोजों के लिए कार्तिक माह के नीबू, कमर के लिए कुरमाली की कमर, जंघाओं के लिए केले के पेड़, टखनों के लिए धोबी की मुंगरी (लकड़ी से बना हुआ एक उपकरण जिसका ऊपर का भाग तो मोटा तथा नीचे को पतला होता है, जो कपड़ों को धोने के काम में लाया जाता है।) बालों की लट के लिए पर्वत शिखर की नागिन, बदन की कोमलता के लिए पूष की पालक उभरते यौवन तथा कोमलता के लिए चैत की कैरुवा, यौवन की मादकता के लिए भाङ का पेड़, आदि असंख्य उपमान गाथा में चमत्कार की श्री वृद्धि करते हैं। जहाँ पर उपमेय और उपमान की अभेदता दिखायी है वहाँ पर रूपकालंकार की छटा भी अद्भुत है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है जहाँ पर मालूशाही को घौंसले के कफुवे की तरह, नवनीत के ढेर की तरह, सोने के छड़ की तरह, केले के पेड़ की तरह, रिङाल के कोमल पेड़ की भाँति और उसे कार्तिक का नीबू बताकर रूपकालंकार की सुन्दर छटा विकीर्ण की है।

घोल कस कफुवा हैरो, नौंणी को विनैंग,
सुनूँ कस गेल हैरो, क्यावा कस गाब,
कार्तिक निमुवाँ जस निङाऊ कस खाम।

इसी प्रकार गाथा में दृष्टान्त, व्यतिरेक, प्रतीप, अनन्वय, आदि अलंकारों के अनेकों उदाहरण देखने को मिल जायेंगे। अतिशयोक्ति तो अलंकारों में ऐसा लगता है कि जो लोकगायक का उत्तराधिकार रूप में मिला

अलंकार है। एक उदाहरण जहाँ वह नायिका के सौन्दर्य को दिन के पहरों के परिवर्तन होने की तरह उसके सौन्दर्य के परिवर्तन की बात कहता है—रूपकातिशयोक्ति देखते ही बनती है—

जदु दिन का पहर तदु रूप छन'
उस राणी को दूजा ध्याक लागी रय,

इसी प्रकार अन्य अनेक अलंकारों की छटा भी स्वाभावोक्तियों द्वारा कला प्रदर्शन से दूर लोक-जीवन की रागात्मक भावनाओं से युक्त है।

लोक साहित्य गेयात्मक काव्य है जिसमें लोक संगीत का अभिन्न पुट रहता है। मालूशाही गाथा भी इसका अपवाद नहीं है। नाद, गेयता सर्वोपरि संगीतात्मकता इसका प्राण है। भावों की सम्प्रेषणीयता तथा छन्दों की दृष्टि से भी इस संगीत तत्व का महत्व अन्यतम है। लोक गायक स्थानीय वाद्ययंत्र हुड़के के माध्यम से अपने कथन को व्यक्त करता है। गायक के कंठ-लय के साथ स्वर मिलाने वाले दो व्यक्ति होते हैं वे भगार हिवार कहलाते हैं। कहीं-कहीं लोक गायक का दीर्घ आलाप ही छन्द पूर्ति में सहायक होता है तो कहीं पर भगारों के कंठ से निकलने वाले लयात्मक आरोह तथा अवरोहात्मक स्वर छन्दों की पूर्ति में सहायक होता है और कहीं पर वाद्य यंत्र भी छन्द पूर्ति में सहायक बन जाता है। मालूशाही गाथा अधिकांश रूप में अतुकान्त छन्दों में मिलती है जहाँ कहीं तुक बन्धन मिलता भी है तो वह स्वाभाविक तथा बिना प्रयास के मानना चाहिए, प्रथम पद जब खाली अप्रसांगिक रूप से पूरणार्थक होकर आता है तो वहाँ तुक अवश्य रहता है, गाथा में लोक-गायक ने किसी विशेष तथा भावनापूर्ण स्थलों में अन्य फुटकल लोक गीतों की तर्जों को लिया है वहाँ तुक-बन्धन अवश्य मिलता है। लोक-गीतों की तर्ज में कहीं-कहीं पर प्रथम पद अप्रसांगिक भी है। परन्तु प्रथम पद की निरर्थकता लोक गायक की प्रतिभा पर आधारित है। लोक गीतों की तर्ज में गाये जाने वाले प्रसंगों के छन्दों में कहीं-कहीं मात्रिक छन्द भी शिथिल रूप में उपलब्ध होता है।

लोक गायक इन छन्दों में एक या दो वर्णों को तो कुछ भी नहीं समझता है। वह उसके स्वरों के ह्रस्व-दीर्घ या प्लुत उच्चारण द्वारा इस प्रकार घटा बढ़ा लेता है कि मानों उसका स्वयं कण्ठ ही पिंगल शास्त्र की कसौटी में कसा हो। जहाँ पर स्वरों के उच्चारण द्वारा छन्द की पूर्ति होते नहीं देखता है तो अवशेष वर्णों को वाद्य यंत्र द्वारा ही पूर्ण कर लेता है। गाथा में टेक

पदों की पुनरावृत्ति बहुलता से है। छन्द के चरण के अन्तिम भाग की आवृत्ति जिसमें संगीत तत्व तथा गेयता द्वारा रमणीयता लायी जाती है, उसी पद में दूसरे चरण को उठाकर कथन को श्रुति-मधुर तथा रमणीय बनाया जाता है। विशिष्ट वातावरण, विशिष्ट भाव स्थलों में टेक पदों की पुनरावृत्ति अधिक पायी जाती है। पदों में लघु-गुरु का रूप अत्यन्त शिथिल है। स्तोभ प्रणाली में मात्रा स्तोभ, पदस्तोभ, तथा वर्ण स्तोभ भी देखने को मिलता है। मालूशाही गाथा में आठ वर्णों से लेकर बाइस वर्णों तक के अतुकान्त मुक्तक वार्णिक छन्द मिलते हैं। जिनमें सम वर्णों तथा बारह वर्णों के छन्दों की प्रधानता है जिसका उदाहरण द्रष्टव्य है—

राजा दुलसायी खामासारी हाट,
रङीली बैराठ महलड़ा कोट
जिया वे धर्मी गर्भव्याली है रैछ,
राणी लागी रय हुण जाण मास,
धन तेरी रूपसी बैराइठ ।

उपर्युक्त छन्द में चार चरणों में तो बारह वर्ण हैं केवल अन्तिम चरण में दस वर्ण हैं। इस अन्तिम चरण को बैराठ शब्द बैराइठ प्लुत उच्चरित होकर छन्द पूर्ति होगी। कभी कभी गायक 'धन-धन तेरी रूपसी बैराठ' के बारह वर्णों का स्पष्ट प्रयोग भी कर देता है।

कुमाऊँनी भाषा की मूल संरचनात्मक प्रवृति संस्कृत-बहुल है। संस्कृत के अनेक शब्द थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ कुमाऊँनी में प्रयुक्त हुए हैं। कुमाऊँनी बोली में विविधता अधिकांश रूप में क्रिया रूपों में देखने को मिलती है। दैनिक व्यवहार की बोली तथा साहित्यिक भाषा में काफी है। लोक-साहित्यिक भाषा में गेयता रहती है। विवेच्य गाथा मालूशाही में भी गेयता है—जिस कारण शब्दों के तोड़ मरोड़ की प्रवृति बहुधा देखने को मिलती है। गाथा में भाषा का झुकाव सर्वत्र सरलीकरण की ओर अधिक है। शब्दशक्तियाँ अपने निराले रूप में विद्यमान रहकर भाषा को अधिक सम्प्रेषणीय बनाती है। वर्णन प्रधान स्थलों, महल, प्रकृति इत्यादि में अभिधा शब्द शक्ति का उपयोग विशेष रूप से मिलता है। लोकोक्तियों मुहावरों के प्रयोग के कारण भाषा में लाक्षणिकता की अपूर्व झलक है। जैसे, अकल लितुरि, मन मन जगी गेछ मड्वा फाम जसी, अघिल कै उणियाँ, पछिल कै जाणियाँ, खोई कस खाम, खोरि रुखी गेछ, कोरवी कँकाल-मडुवा अकाल, हाड़ को हड़याठ जुग को

मधुर, आदि। रूपवर्णन, मनोभावों के चित्रण मे, शृंगार के उभयपक्षी चित्रण मे, सम्वादों में, व्यजना शब्द शक्ति का भी प्रभाव देखा जा सकता है। ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग भी यत्र-तत्र देखने को मिलता है। जैसे रैछम-तैछम, मण-मण, छपुक छपुक, घत-घत, तुड़क, खुल-खुल, इत्यादि अनेक ध्वन्यात्मक शब्द जो अर्थ को भी शक्ति, तथा प्रभावशाली बनाते है। शब्दों की पुनरावृत्ति भी है। इसी प्रकार रणन-क्वणन की प्रवृति मे पूर्ण तथा सूक्ष्म मे सूक्ष्म मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द भी उपलब्ध हैं। बहुत से शब्दों मे पुल्लिंग को स्त्रीलिंग तथा स्त्रीलिंग को पुलिंग में प्रयोग हुआ है। जैसे पथा-पोथी, दूजा-दूजृ, लाटा-लाटी आदि। कुछ शब्दों तथा सम्बोधनों का जिनका सम्बन्धित अर्थ कुछ भी नही होता है कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। कभी-कभी ये शब्द टेक पद का भी काम करते है। जैसे हजा, हरी, नारायण, सिपी, भगवान आदि।

भाषा के तीन गुण प्रसाद, ओज तथा माधुर्य की छटा भी देखने को मिलती है। वर्णन प्रधान स्थलों में भाषा का प्रसाद गुण देखा जा सकता है। युद्ध आदि स्थलों में ओज गुण तथा मनोभावों के चित्रण मे माधुर्य गुण मिलता है। उदाहरणार्थ—

यो हो मायो मर्दो च्याला,
तैं बखत फथुवा कमर अड़ावहान्नो,
द रे मरदो, पूरब जानी पश्चिम जानी,
लड़नै-लड़नैं धरती हिलण भैगे हो,
यारो, धन-धन पैंगा ज्यू हो,

स्वरागम तथा स्वरालोप की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। अनुनासिकता तथा अनुस्वार प्रचुरता के कारण भाषा अत्यन्त मधुर है। श, ष, स तथा संयुक्ताक्षरों की शिथिलता एवं अभेदता सर्वत्र विद्यमान है। अन्य भाषाओं के भी शब्द यत्र-तत्र प्रयुक्त हुए हैं। स्थानीय प्रकृति का आलम्बन एवं उद्दीपन दोनों रूपों में चित्रण हुआ है। भावों की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता दोनों रूपों में प्रकृति चित्रण अधिक हुआ है। जहाँ वह संयोग के समय सुख संवर्द्धन का कारण है तो वियोग के समय द्विगुणित करने वाली भी है। उदाहरणार्थ—

तू उदासी झन लगै दियै,
मेरो मालू काँछ तू बतै दियै।

काटी खाँछ भागी गाड को मुसाट
छेड़ी खाँछ भागी तेरी बाणी

गाथा में अनेक स्थलो पर प्रकृति मे चेतना आरोपित कर उसे मानवीय भावनाओ से युक्त माना है, उसका प्रयोग सन्देश रूप में भी हुआ है। आकृति एवं भाव साम्य के लिए उपमानों द्वारा कथन को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए लोक गायक ने अलकार रूप मे भी प्रकृति का चित्रण किया है। हृदय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव एव मनोविकार भी प्रकृति प्रतीक द्वारा रसाभिव्यक्ति मे सहायक हुए है। गाथा में प्रकृति तत्व उदात्त भावनाओ के द्योतक है जो अन्तः साक्ष्य के कारण प्रतीक रूप में आए हैं। अस्तु जिस प्रकृति की उन्मुक्त गोद में बाल क्रीड़ाएँ करके वह लोक साहित्यकार बड़ा हुआ है, उसके प्रति उसका आकर्षण सहज एव स्वाभाविक है। लोकगायक प्रमुख भाव की उत्कर्षता दिखाकर उसको लोक-जीवन की पृष्ठ भूमि मे यथातथ्य रूप में रखता है। मालूशाही का मुख्य प्रतिपाद्य प्रेम है, गायक कथानक संयोजन को इस प्रकार संघटित करता है कि अन्त तक उसका परिणाम प्रेम ही रहता है। लोक गायक कथानक सयोजन, उपमानों, भावना चित्रण आदि में अपनी कल्पना का अद्भुत चमत्कार दिखाता है। अनेक प्रासांगिक कथाओं को मुख्य कथानक के साथ जोड़ता है जिससे लोक-जीवन उसके कथन से प्रभावित हो जाता है। इस प्रकार लोक गायक की कल्पना शक्ति का विलाप नायक तथा नायिका के व्यक्तित्व से लेकर, स्थान, घटना विशेष, मानवीय संवेदना, सौन्दर्य चित्रण, मानसिक भावनाओं एवं अवस्थाओं इत्यादि तक देखा जा सकता है।

गाथा मे शिल्पगत विशेषताओ का अत्यन्त समृद्ध रूप देखने को मिलता है। लोक-जीवन के समस्त भाव, देशकाल व परिस्थितियों के अनुरूप यथार्थ धरातल में अवतरित होकर, खेलते मचलते, नये छन्दों, नये शब्दों की तोड़-मरोड़ तथा संगीत और गेय तत्व के अभिन्न पुट के साथ फूलों के सुवास की तरह सुवासित हैं। शैलीगत तत्वों के इस अतिसूक्ष्म परिचय से आने वाले अध्येताओं, लोकसाहित्य प्रेमियों, शोधार्थियों, अनुशीलकर्ताओं तथा सहृदयों में इनके गहन अध्ययन के प्रति रुचि जागृत होगी और वे आनन्द का अनुभव करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

(उ) गाथा का कथानक-सार

मालूशाही के कथानक के सम्बन्ध में लिखित अलिखित, श्रुति-परम्परागत कथानकों और क्षेत्रीयता के आधार पर द्वार हाट से लेकर मुन्स्यारी

तक, गढ़वाल की सीमा से लेकर चम्पावत तक लोक गायकों बुजुर्गों तथा कई मेलों से गाथा के विभिन्न रूपों का संकलन करके उसे यहाँ एक निश्चित मार्ग देने का प्रयास किया है, जिसमें लोक साहित्य में पायी जाने वाली मान्यताओं, परम्पराओं धारणाओं, रूढ़ियों तथा लोकतत्व की भावना को कहीं भी तोड़ा या मरोड़ा नहीं गया है। हम यह नहीं कह सकते कि यह संकलन इस गाथा का अन्तिम पूर्ण रूप होगा, फिर भी पूर्ण आशा है कि यह संकलन इस आख्यान को और अधिक रूपों में बिखरने से बचायेगा। हमारा यह प्रस्तुत कथानक मानदण्ड न बन पाये परन्तु लोक जीवन की मान्यता स्पष्ट करने का आधार बन सके और अध्येताओं को इससे प्रेरणा मिले तो हमें सन्तुष्टि होगी।

यह प्रेमविषयक लोकाख्यान एक लोकगाथा है, जो श्रुति परम्परा से विकसित होता आया, विकास इसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है, सम्बर्द्धन इसका स्वाभाविक गुण है, जिससे पाठ-भेद, श्रुति-भेद, विषय-वस्तु भेद, शिल्प भेद, स्थान भेद यहाँ तक कि दृष्टि-भेद भी सम्भाव्य है, जो एक विकसनशील लोक-प्रबन्ध के लिए अपरिहार्य है। इस प्रक्रिया में परिवर्तन परिवर्द्धन संशोधन आदि स्वाभाविक है, अतः इन्हें लोक प्रबन्ध परम्परा में विकृति न कहकर लोक प्रबन्ध के विकास की प्रक्रिया या संस्कृति परम्परा का एक अंग मानेंगे। कोई शोधार्थी, विद्वान या समीक्षक, लोक गायक या लोक-मीमांसक हमारे इस कथानक के प्रति कतिपय आशंकाएं उठाना चाहें तो हम यह दावा तो नहीं करेंगे कि उनकी शंकाओं या आपत्तियों का निराकरण हम अधिकाधिक रूप में कर पायेंगे, क्योंकि लोकसाहित्य में किसी काव्य शास्त्र, तर्कशास्त्र, मीमांसा, विधिशास्त्र या विज्ञान के नियम या उपबन्ध लागू नहीं होते हैं। लोक साहित्य की अपनी मर्यादा है यह अपनी परम्पराओं तथा उपस्थापनाओं के अनुसार विकसित होता है। कोई भी लोकसाहित्य का मर्मज्ञ या सुधी विद्वान, विवेकशील समालोचक, उदार मीमांसक और सहृदय लोकसाहित्य प्रेमी इस प्रकार की शंका उठाये अथवा सुझाव दे तो हम उस पर विचार करने के लिए उनके सुझावों का हृदय से स्वागत करेंगे। प्रस्तुत संकलन में हमने सम्पादन का कार्य पूर्ण निष्ठा से किया है, हमारी दृष्टि और प्रयास दोनों ही समन्वयात्मक रहे हैं। इसमें कुमाऊँ के अंचल की लोक संस्कृति, लोक साहित्य, लोक-तत्व और परम्पराओं धारणाओं सर्वोपरि लोक मनोविज्ञान के तत्वों व अवयवों को अविकृत और यथातथ्य रूप में सुरक्षित रखने के लिए पूरी निष्ठा और ईमानदारी रखी गयी है। विविधताएं बहुत हैं परन्तु उनमें

हमें कुछ न कुछ समन्वयात्मक तत्वों को देखना ही होगा, नहीं तो हमारे साधन पारद कणों और परागकणों की तरह बिखर जायेंगे। उन्हें एकत्रित करने में अनावश्यक समय व श्रम का व्यय होगा और लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति की अस्मिता पर ठेस पहुँचेगी। भारतीय दर्शन में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' को एक रूप में प्रतिष्ठित किया है। समन्वय की यह अन्तर्दृष्टि लोक जीवन ने ही हमारे अन्तर्द्रष्टा मुनियों, महर्षियों, और चिन्तकों को प्रदान की है। यही हमारे लोक-जीवन का भी एक स्वर है।

मालूशाही प्रेमाख्यान या प्रेम-गाथा के हमारे निजी पाठ या श्रुति के संकलित रूप का कथानक अग्रलिखित शब्दों में इस प्रकार है राजा दुलसाही का राज्य रङीली बैराठ था, जिसका सुन्दर स्वर्ण रंजित महल था, दीवान, मंत्री तथा अनेक राज भक्त एवं निष्ठावान सभासद थे। महरूड़ी कोट, चमू बान, चाँदीखेत, लखनीपुर, तामाढौन आदि स्थान भी इसी के अधीनस्थ थे। अत्यन्त स्वरूपवान पत्नी धर्मा रनिवास की शोभा थी। कत्यूरों की एक विशाल सेना थी। राजा को आधी उम्र तक सन्तान का मुख देखने को नहीं मिला। सन्तान प्राप्ति के लिए दान-पुन्य, व्रत उपासना, स्नान आदि सभी निष्फल रहे। राजा-रानी पुत्र के अभाव से अत्यन्त दुःखित थे।

एक दिन राजा महल में सोया हुआ था तो उसे स्वप्न में रानीबाग (मायापुरी काठगोदाम के पास) की चित्रशिला देवी के दर्शन होते हैं, जो स्वप्न में राजा से कहती है कि 'हे राजा तू मेरे यहाँ आकर पूजा अर्चना कर मैं तुझे मनोवांछित फल दूँगी।' दूसरे दिन उसने प्रातःकाल होते ही भेकुवा मुनचौड़ी को बुलाकर सम्पूर्ण कत्यूरों को निमंत्रण भिजवाया कि वे मायापुरी चित्रशिला यात्रा के लिए तैयार रहें। राजा रानी स्वप्न से बहुत प्रसन्न थे। आठवें दिन सुन्दर स्वर्ण जटित डोले में धर्मावती तथा राजा कत्यूरी दल के साथ मायापुरी गये। उनके साथ कत्यूरों के गुरु रिर्णा-फिणीदास भी थे। झण्डियाँ तथा पताकाएँ फहरा रही थीं। तामा विजेसार अपनी गंभीर नाद में गर्जन कर रहा था। राजा के इस दल को देखकर मार्ग चलता पथिक भी आश्चर्यचकित रह जाता।

सौकाण (भोट प्रदेश) में सुनपति रहता था, जो ऊन, नमक आदि का व्यापार हूँणदेश से लेकर तराई भावर तक अपनी बकरियों पर लाद कर किया करता था। उसकी अनिंद्य सुन्दरी स्त्री का नाम गाऊँली था। सुनपति को भी सन्तान का मुख देखने को नहीं मिला था। वह भी पुत्र-प्राप्ति के

लिए गाऊँली को साथ लेकर मायापुरी को आ रहा था। अल्मोड़ा की नन्दादेवी के मन्दिर में उसकी मुलाकात राजा दुलसायी से हुई। साक्षात्कार होने पर दोनों अपने को समान दुखी समझकर नन्दादेवी से एक साथ मायापुरी को गये। मायापुरी पहुँचने पर गाऊँली तथा धर्मा रात भर जागरण करती हुई देवी की उपासना में लीन रहीं। प्रातःकाल गंगा स्नान करके धर्मा तथा गाऊँली ने यह तय किया कि हम भावी सन्तान की प्राप्ति पर आपस में सम्बन्ध स्थापित कर लेंगे। इस प्रकार भविष्य में अपत्य-सम्बन्ध का संकल्प कर एक दूसरे को अक्षत-रोली लगा उन्होंने आपस में धर्म बाँटा। प्रसन्नचित्त दुलसायी तथा सुनपति मन्दिर में अनेक प्रकार की भेंट व उपहार चढ़ाकर अपने-अपने स्थान को चले गये। देवी की असीम कृपा से धर्मा ने एक सुन्दर पुत्र (मालूशाह) को जन्म दिया। पुत्रोत्सव के समय सभी प्रकार की खुशियाँ मनायी गयीं। दिन-प्रतिदिन मालूशाह शुक्लपक्ष की चन्द्रमा की तरह बढ़ कर युवावस्था में प्रवेश करने लगा। कुछ वर्षों बाद दुलसायी स्वर्ग सिधारे और सम्पूर्ण राज्य का भार माता धर्मा के संरक्षण में मालूशाही ने संभाला।

सौकाण देश में गाऊँली के गर्भधारण करने के समय से ही सभी सिद्धियाँ सौकाण में आने लगीं। गाऊँली ने एक सुन्दर कन्या (राजुली) को जन्म दिया। सुनपति राजुली को गोद में लेकर जब अपने महल के आँगन में घुमाता और पुचकारता हुआ कहता कि तेरा विवाह रंगीली बैराठ करूँगा तो वह खिल-खिलाकर हँस पड़ती और जब वह कहता कि तेरा विवाह हूण देश करूँगा तो वह रोने लग जाती थी। समय बीतने पर बालिका राजुली ने यौवनावस्था में प्रवेश किया और वह अपनी सहेलियों के साथ जंगल में बकरियों को चराने जाने लगी तो अपने अद्भुत सौन्दर्य से वह सबको प्रभावित किये रहती थी।

मालूशाही युवावस्था में एकान्त प्रिय होता गया। एक दिन जब वह महल में सोया था तो वह स्वप्न में अनिंद्य सुन्दरी राजुली को देखता है। राजुली भी स्वप्न में ही मालूशाह को देखती है। स्वप्नावस्था से जागने पर एक दूसरे को देखने के लिए वे अत्यन्त उद्विग्न हो जाते हैं। मालूशाही की उद्विग्नता इतनी प्रखर हो जाती है कि वह राजुली का नाम स्मरण करता हुआ विलाप करने लगता है। उसके विलाप को सुनकर धर्मा कारण पूछने लगी। अखण्ड एवं बहुत आग्रह पर उसे स्वप्न की बात माता से कहनी पड़ती है, कि मैंने सौकाण के सुनपति की पुत्री राजुली को देखा, जो अत्यन्त

स्वरूपवती है। उसके साथ विवाह करके उसे किसी प्रकार भी बैराठ लाना है। धर्मा उसे सौकाण की विषमता से अवगत कराते हुए कहती है कि वह इलाका विष और जादू का भरा है। मैं तेरा विवाह यहीं कर दूँगी और उसी का नाम तू राजुली रख लेना। पुत्र की विरहजन्य अवस्था को देखकर बमौरी सोमनाथ के मेले का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न स्थानों की युवतियों को मेले में आने का निमंत्रण देकर कहा गया कि राजा मालू जिस युवती को पसन्द करेगा उसको माता-रानी बना दिया जायेगा। इस प्रकार मेले के दिन विभिन्न स्थानों से युवतियाँ सज-धज कर वहाँ आयीं। राजा मालूशाह मेले में गया। तीन दिन तक मालूशाह मेले में घूमता रहा, परन्तु कोई भी युवती उसे राजुली के रूप की नहीं दिखायी दी। अन्ततः निराश होकर सब अपने घरों को लौट गये।

मालूशाही की वेदना अधिक तीव्र होती गयी। वह राजुली का वियोगी होकर राजकार्य से भी उदासीन होगया। अन्ततः धर्मा ने मालूशाह को महल में बन्द करके रख दिया। उधर सौकाण में सुनपति को राजुली के विवाह की चिन्ता होने लगी। वह राजुली के लिए वर की खोज में कंकर देश (तिब्बत) चला गया। राजुली अपनी माँ से पूछती है—"इजा! देशों में कौन बड़ा है? दिशाओं में कौन श्रेष्ठ है? वृक्षों में कौन श्रेष्ठ है और राजाओं में कौन बड़ा है गाऊँली उसे बताती है कि पुत्री! देशों में बैराठ, वृक्षों में वृक्ष वर तथा पीपल, तथा राजाओं में राजा मालूशाह बड़ा है जो रंगीली बैराठ में रहता है। राजुला अपने कौतूहल को अपनी माँ से व्यक्त करती है। गाऊँली कहती है कि उसका पिता उसके लिए वर की खोज में गया है। वह इस प्रकार का दुराग्रह छोड़ दे, परन्तु पुत्री की जिद्द को देखकर वह मौन रही। राजुली दिन-प्रतिदिन मालू के वियोग में दुखी रहने लगी। राजा मालूशाही का आत्मा राजुली के लिए तड़फती हुयी एक दिन छुछुती पक्षी बनकर सौकाण जाती है। अनेक घनघोर और भयावह जंगलों को पार करता हुआ छुछुत राजुली के बगीचे में पहुँचा और उसने मानवी भाषा में अपनी सम्पूर्ण वेदना राजुली से कही। राजुली उसको अपने हृदय से लगाकर आँसू बहाती है, तब छुछुत बैराठ को लौट आता है और मालू की निद्रा भंग हो जाता है। राजुली की विरहजन्य अवस्था को देखकर उसकी माँ उससे पूछती है कि क्यों वह उदास रहती है? राजुली अपनी माँ से कहती है कि तू मुझे बैराठ जाने की अनुमति दे देगी तो मैं पिताजी के लौटने से पहले घर वापस

आ जाऊँगी। पुत्री के अखण्ड आग्रह के सम्मुख माँ का वात्सल्य उसे बैराठ जाने से नहीं रोक पाया। उसने राजुली को बैराठ जाने का मार्ग बताकर उसे विदा कर दिया।

राजुली ने शृंगार साधन जुटाये, अनेक प्रकार के तंत्र-मंत्र के साथ वह बैराठ चल दी। चौऊनियां धार में उसे बाइस परियाँ तथा घाङली उड्यार (गुफा) में सिदुवा-विदुवा रमौल मिले। उन्होंने उसे अकेले बैराठ जाने को मना किया परन्तु उसके अनन्य प्रेम को देख वे उसे रोक नहीं पाये। राजुली तल्ला भल्ला सुनस्यार, तेजम, भैंसखाल, तथा दानपुर के विभिन्न क्षेत्रों को पार करती हुई बागेश्वर पहुँची। आषाढ़ की वेगवती सरयू को पार करने हेतु वह त्रिजुगी पीपल के नीचे विश्राम करने लगी। वह सरयू नदी से कहती है कि हे बहिन ! हम दोनों एक ही देश की हैं, मैं अपने प्रेमी से मिलने बैराठ जा रही हूं तू मुझे उस पार जाने के लिए मार्ग दे। सरयूनदी राजुली की अनुनय पर उसे पार जाने के लिए मार्ग देती है। सरयू और गोमती के संगम में स्नान करके बागनाथ के मन्दिर में पूजा अर्चना करते समय व्यथित राजुली की आँखों से अश्रु प्रवाह हो रहा था जिसे देखकर बागनाथ की आँखों में आँसू आ गये। राजुली इसे अपना उपहास समझ बागनाथ को उपालम्भ देने लगी। बागनाथ ने तब उसे शाप दिया कि तेरी मुलाकात मालूशाह से न हो पाये। राजुली सम्पूर्ण देवताओं को झूठा बताकर केवल मालूशाह को सच्चा बताते हुए बैराठ की ओर चली गयी।

चौफुला (चौक) में आकर वह बैराठ का मार्ग भूल गयी और कत्यूर की ओर बढ़ी जब खोली स्थान पर पहुँची तो वहाँ पर बाईस भाई पटियारों ने राजुली को घेर लिया। राजुली ने तंत्रबल के प्रभाव से सुन्दर घुरड़ी (हिरनी) का रूप धारण किया। बाईस भाई ने लट्ठों सहित राजुली का पीछा किया परन्तु वह पटियारों के हाथ न लग पायी। वहाँ से वह द्वारिका छिन होती अपने वास्तविक रूप में गिरेछिन पहुंची जहां कुछ समय विश्राम लेने के बाद वह आगे बढ़ी। चौड़फाट में उसे नौ भाई गनाँ (कण्ठ ग्रन्थि-धारी) मिले जो राजुली को अपनाना चाहते थे। राजुली ने उनसे कहा कि जो सबसे पहले अपने कुरूप गान (कण्ठ-ग्रन्थि) को काटेगा मैं उसी के साथ रहूंगी। निदान जोश में आकर उन्होंने अपने गँनों को काट डाला और वे वहीं पर धराशायी होगये। राजुली हँसते हुए आगे बढ़ी और विशूँण छिन पहुंची जहाँ पर चार भाई बौरों की रोपाई कर रहे थे उन्होंने जब राजुली को देखा तो

वे अपनी कामासक्ति को रोक नहीं पाये। राजुली उनकी बदनीयती को समझ गयी अतः तंत्र बल से वह पुतयी (तितली) रूप में झुपुल चौंर पहुँची। जहाँ पर वह अपने कानों की झुपझुपी (वालियां) भूल गयी। वह स्थान आज भी इसी कारण झुपुल चौंर कहलाता है। झुपुल चौंर से वह कहैड़ी कोट पहुँची जहाँ हरुवा कहैड़ अपने सात लड़कों बहुओं तथा नाती-पोतों के साथ रहता था। एक दिन जब हरुवा ने लड़कों से कहा कि वे उसका विवाह कर दें। उसके लड़के लज्जित हुये और उसके कहने पर कि मैं अपना विवाह स्वय कर लूँगा तुम मुझे चौराहे पर रख दो, उसके लड़कों ने हरुवा को चौराहे पर रख दिया। बैराठ जाती हुई राजुली ने मार्ग में सोये हुए हरुवा को देखा और वह उसे मरा हुआ जानकर ज्यों ही आगे जाने लगी तो हरुवा ने राजुली का हाथ पकड़ लिया। राजुली ने जब अपना हाथ छुड़ाया तो हरुवा लुड़क पड़ा और उसका प्राणान्त होगया।

राजुली जब उखोलेख की चढ़ाई पार कर रही थी तो उसे 'फतुवा' भैंस पालक मिला। उसने राजुली से साली का रिश्ता जोड़ा और कहा कि तू अब मेरे यहाँ ही रह जा। राजुली ने उससे कहा कि मैंने सुना है तुम सुन्दर नृत्य करना जानते हो अतः एक बार नाच दिखा दो। जब फथुवा नाचने लगा तो राजुली ने कहा कि पाँवों के सहारे नहीं अब तुम सिर के बल नृत्य दिखाओ। कामासक्त फथुवा सिर के बल नाचने लगा। राजुली ने अपनी ओढ़नी को एक सूखे ठूँठ पर लटका दिया और स्वयं चलती बनी। नृत्य के बाद फथुवा ने जब राजुली को कहीं नहीं देखा तो वह अपनी असावधानी पर पाश्चाताप करने लगा। राजुली गिवाड़ होती हुयी प्रसन्न चित्त महरुड़ी कोट पहुंची जहाँ सात भाई महर चाँदी खेत में धूम धाम से रोपाई कर रहे थे। कुछ देर रोपाई देखने के पश्चात् वह नहाने को रहप नदी के किनारे गयी। नहाते समय उसके पाँव से पानी के गूल का एक बहुत बड़ा पत्थर रहप नदी में चला गया फलस्वरूप पानी गूल से टूट कर नदी में ही चला गया, जलाभाव से खेत में रोपाई का कार्य रुक गया। महरों के हलिये ने जब वहाँ राजुली को बैठे देखा तो उन्होंने महरों को खबर दी। सातों भाई महर स्त्री का नाम सुनते ही रहप नदी के किनारे गये और राजुली को डोली में बिठाकर महल में ले आये। वे ब्राह्मण द्वारा लग्न विचार करवाने लगे तो राजुली ने ब्राह्मण को हीरे की अँगूठी देकर किसी भी प्रकार विवाह रोक देने को कहा। ब्राह्मण ने महरों को बताया कि जो उससे विवाह

करेगा उसकी मौत आ जायेगी तब क्रोधित महरों ने राजुली को एक सन्दूक में बन्द करके नदी में बहा दिया। राजुली कत्यूरों की इष्ट देवी की कृपा से किनारे लग गयी और बैराठ के महल की ओर चली गयी। महल के समीप पहुँचने पर जब उसने वहाँ सख्त पहरा लगा देखा तो निर्नाई (निद्रा के सम्मोहन को फैलाने वाला एक तान्त्रिक उपकरण) का डिब्बा खोल दिया। अत: सारी बैराठ निद्रा में सोगयी। राजुली ने द्वार पर बँधे हाथी को केले के पत्ते देकर अपने वश में कर लिया अत: हाथी ने राजुली को अपनी सूँड से उठाकर मालूशाह के महल के उच्च झरोखे तक पहुँचा दिया। महल में मालूशाह गहन निद्रा में सोया हुआ था। राजुली ने मालूशाह को जगाने के लिए अनेक उपाय किये, परन्तु सब निरर्थक रहा। वह करुण विलाप करती, हुई अपनी अन्तर्व्यथा से व्यथित होकर पत्र लिखने लगी। उसने लिखा 'मुझे तुमसे मिलने की जिज्ञासा थी, अत: मैं यहां तक आयी हूँ। यदि तुमको भी मेरी चाह होगी तो योगी वेश में नौ लाख कत्यूरों, के साथ भोट प्रदेश मेरा वरण करने आओगे और सात भाई महरों तथा फथुवा द्वैराव को आने से पहले परास्त करोगे।' इस प्रकार अपने सिर को धुनती बार-बार मालूशाह के चरणों में लोट-पोट होती हुई राजुली सौकाण वापिस लौट गयी।

प्रात: जब मालू की निद्रा भंग हुई तो राजुली के पत्र को देखकर तथा उसके बैराठ आकर वापस चले जाने की घटना को सोचते हुए वह अत्यन्त दुखी होगया। उसकी विरह वेदना असह्य होगयी। धर्मा उसे समझाने लगी। परन्तु उसने सौकाण जाने के लिए दृढ़ संकल्प कर लिया। गुरु रिणी-फिणीदास के पास जाकर उसने सौकाण जाने की बात कही। पहले तो वे भी उसे सौकाण जाने से रोकते रहे, परन्तु राजा को हठात सौकाण जाता देखकर वे भी अपने तंत्र-मंत्रों के साथ सौकाण जाने को तैयार होगये। सभी कत्यूर मालूशाह के साथ सौकाण जाने की तैयारी करने लगे। कत्यूरों ने योगियों का वेश धारण किया। मालूशाही की बहिन भी अपनी ससुराल से भाई को समझाने के लिए आयी, परन्तु उसने किसी की नहीं मानी। कत्यूरों की सेना बैराठ से सौकाण को चल दी। सातों भाई महर तथा फथुवा द्वैराव भी राजा से हार मानकर सौकाण को चल दिये। कहैड़ी कोट, आदि स्थानों से होती हुई कत्यूरों की सेना बागेश्वर पहुँची। बागनाथ की पूजा अर्चना करके सेना आगे को बढ़ी। हूँमल्दुर पहुँचने पर राजा की सेना को वहाँ प्रकृति में व्याप्त विष लग गया। सब अचेत होकर गिर गये। मालूशाह को दुखी

देख उसके गुरु सभी कत्यूरों का विष नष्ट करने लगे। तब मालू अकेला ही योगी वेश में राजुली की खोज में निकल पड़ा। अलख जगाता हुआ वह मल्ली जोहार पहुँचा और भोटियाँ लड़कियों से कैलाश यात्रा का बहाना बनाकर आगे बढ़ता रहा। कई दिनों तक भूख तथा प्यास के कारण जब उसका शरीर जर्जर होगया तो वह सुनपति के महल के पास पहुँचा।

सुनपति के महल के पास पहुँचकर जब उसने अलख जगायी तो राजुली की एक सहेली भिक्षा लेकर आयी। मालू ने कहा कि वह केवल गृह-स्वामिनी से ही भिक्षा लेता है। अतः राजुली स्वयं भिक्षा लेकर आयी तो वे दोनों प्रेमी एक दूसरे को देखते ही रह गये और वे दोनों अपनी व्यथा व्यक्त करने लगे। राजुली ने मालूशाह से कुछ समय के लिए वहीं रुकने का अनुरोध किया वह अपने पिता के पास जाकर अनुनय करने लगी कि 'पिताजी, आपके आँगन में एक योगी आया है आप उसे अपने महल में कुछ दिनों के लिए स्थान दे दीजिए। शायद योगी की सेवा से आपको पुत्र की प्राप्ति हो जाये।' सुनपति ने स्वीकृति दे दी। मालूशाह को महल के बाहरी कमरे (लोठभाव) में रहने के लिए स्थान मिल गया। दिन में योगी इधर-उधर जाता और सन्ध्या को लौट आता था। राजुली का योगी के पास आना जाना बढ़ गया। सुनपति सौक को जब पता चला कि वह योगी मालू है तो उसने अपनी पुत्री से कहा 'तूने आज तक क्यों नहीं बताया कि वह मालू है। मैं तेरा विवाह उसके साथ करने को तैयार हूँ।' एक दिन जब राजुली मालूशाह के कपड़े धोने गयी तो सुनपति ने गाऊँली सौक्याण की बनाई खीर में मिलाकर मालू को विष खिला दिया जिससे मालू का शरीर अचेत होगया तब उसको हिमखण्ड में दबा दिया। राजुली जब वापस लौटी तो उससे कह दिया गया कि मालूशाह बैराठ लौट गया है जिससे वह सशंकित होगयी। जब उसे अपने पिता की कूटनीति का पता चला तो वह तड़फने लगी।

सुनपति ने हूँणदेश के रिखीपाल को सन्देश भेजा कि वह बारात लाकर राजुली को ब्याह ले जाये। अतः ककर देश से राजुली की बारात आयी। राजुली करुण विलाप करती हुई और मन ही मन अपने पिता को कोसती हुई हूँणदेश को जाने लगी। राजुली के विलाप को सुनकर पशु-पक्षी भी रोने लगे। उधर मालूशाही की आत्मा स्वप्न में अपनी सम्पूर्ण व्यथा धर्मा से कहता है तब धर्मा अपने भाई मृत्युसिंह को सन्देश भेजती है। मृत्युसिंह अपनी सेना सहित सौकाण जाता है। हूँमधुर में नौ लाख कत्यूरों के साथ

उसकी भेंट होती है। मृत्युसिंह एक कौवे के माध्यम से मालू के गाड़े जाने के स्थान पर पहुँचकर उसको निकालता है - तंत्र-मंत्र के बल से मालू के विष को झाड़ा जाता है और मालू जीवित हो उठता है। मृत्युसिंह उसे वापस लौटने को कहता है परन्तु मालूशाह बिना राजुली के लौटना नहीं चाहता है। अतः मंत्र बल के प्रभाव से दो जंत्रियाँ बनायी जाती हैं, एक राजुली के लिए दूसरी मालूशाही के लिए। शुक रूप में मालूशाह राजुली के लिए हूंणदेश की ओर उड़ जाता है।

राजुली ने हूंणदेश के पण्डित को अपनी अर्न्तव्था सुनाकर बारह साल तक आँचल रुकवा दिया था। चनरी त्रिखेपाल ने राजुली को महल में बन्द करके सख्त पहरे में रख दिया। राजुली मालूशाह का नाम लेते हुए रोती रहती थी। शुकरूप में मालूशाह हूंणदेश पहुँचता है तो कई दिन तक उसे राजुली के निश्चित निवास का पता ही नहीं चला। अन्त में वह राजुली को पाने में सफल होगया राजुली उस शुक से पूछती है कि क्या तूने मेरे मायके का देश देखा है ? क्या तूने कभी मालूशाह को भी देखा है ? सुवा राजुली की गोद में जा बैठा। सुवे के गले में राजुली ने एक डोरी बँधी देखी तो उसने उसे तोड़ दिया। मालूशाह अपने वास्तविक रूप में आगया। दोनों प्रेमियों का अपूर्व मिलन हुआ। तब उन्होंने वहाँ से निकल भागने की सोची। एक जंत्री राजुली के गले में बाँधी गई दूसरी मालू के और दोनों पक्षी रूप में रात्रि के समय वहाँ से उड़ गये। चनरी विखेपाल को जब राजुली के गायब होने की सूचना मिली तो उसे ज्ञात हुआ कि सुवा के रूप में मालू राजुली को उड़ा लेगया है तो वह भी बाज पक्षी बनकर उनका पीछा करता हुआ आसमान में उड़ने लगा। बाज ने दोनों के शरीर को क्षत विक्षत करना प्रारम्भ किया। बुरी तरह से घायल सुवा-सारंगी (राजुली-मालू) एक निर्जन जंगल में गिर गये। उधर-मृत्युसिंह को इस बात का पता लगा तो उसने जंगल में आकर उनके गले में बँधी डोरी को तोड़ दिया और जड़ी बूटियों से उनका उपचार किया। मालूशाह और राजुली स्वस्थ होगये। कत्यूरों की सेना प्रसन्न होगयी।

फथुवा द्वैराव तथा सुनपति में युद्ध होने लगा। दोनों मल्ल युद्ध करने लगे। अन्त में सातवें दिन सुनपति परास्त होगया। जब फथुवा सुनपति को मारने वाला ही था तो राजुली ने अनुनय की कि उसे न मारे। उसे अपने किये का फल मिल चुका है। सुनपति की भौंहें व मूँछें साफ करदी गई और

उसके चेहरे में दही और कालिख का मिश्रण लगाया गया। मालूशाह की फौज बैराठ जाने की तैयारी करने लगी। राजा की सेना राजुला को लेकर जब बागेश्वर पहुँची तो मालूशाह ने प्रसन्न चित्त हो विधि पूर्वक शिवजी की पूजा की। बैराठ को सन्देश भेज दिया गया कि वे सकुशल लौट आये हैं तो मामा धर्मा ने बारात की पूरी साज-सज्जा भेज दी। कत्यूर खुशी मनाते हुए, बैराठ को गये। फथुवा आगे २ नृत्य करता जा रहा था। बैराठ पहुँचने पर भोज की व्यवस्था हुई। भोजनोपरान्त नौ लाख कत्यूर अपने-अपने घरों को चले गये। राजा ने फथुवा को नल्ती-मल्लो [illegible] पुरस्कृत कर जागीर में दे दी। इस प्रकार मालूशाह आनन्दपूर्वक राज्य भोग करने लगा।

मालूसाही

(म्हालूशाही)

बहुचर्चित कुमाऊँनी लोक साहित्य

की प्रेम गाथा का मूल पाठ

मालूसाही

हरी, उरन्त कै दिन, भगवान, परन्त है गय,
पूरब को दिन, भगवान, पश्चिम है गय ।
हे देवा, धारों रे डुब दिन, राम, गाड़ों रे पड़ी छाया,
संझ्या झुली गेछ, धर्म-वर्म लोक ॥

●

हरी, तब राम, घोल पंछ्यूँ ले भगवान, घोल वास लिह् हालो ।
हरी, आज राम, बाटों का भायों ले भगवान, बाट बास लिह् हालो ।
तब राम, काँठा मृगों ले भगवान, काँठ वास लिह् हालो ।
देवी तब राम, गंगा की मछोया, भगवान मंङरों है गेछ ।
हरी, आप राम, बणसिंग राजों ले, भगवान आड़बन्द लिह् हालो ।
भगवान, तब राम, गोकुला की गायो, भगवान गोकुला है गेछ ।

●

हरी, दूदी का पोखाव भरोण भै गया । नौणी का विनैग चिड़िग भै गया । नन्दू गोकुला वार-पुङा गायों को गलबन्द है गयो । भगवानों की सौकाल को धूणी जागण भैगे । बेत भरी का छनण जागण भै ग्यान । पंचबाजा पंचभाजा वाजण भै ग्यान । धूप की सुगन्धा चलण भैगे । पंचनाम दबो न्यूंती कै बोलूंलो ।

आज संझ्या की बखत ॥

तै दिन में देवी लछिमी, संझ्या घुमण भै ग्यान । लछिमी कूंछी मि ठुली हुंल । संझ्या कौली मि हुंल ठुली । लड़नै-लड़नै वर्म-लोक न्है गया । चौमुखी बरमा तनर बिचार करण भै ग्यान । जैक घर स्वामी भकती नारी । पितरों की भक्ती । दान-धर्म होल । खेलूण बालक होल तैक घर लछिमो को बास । जैक घर में अन्याथी तिरिया कुबात

बुलांछी । रात-दिन झगड़ है रछ । तैक घर संझ्या को बास । बरमज्यू ले जगमाता लछिमी ठुली बतै हैछ ।

आज भगवान हरी नारायणा ॥

घर माता लछिमी बोटायूं कै रूप,
बटोई रुप ले माता जाणे मिरतु कै लोक ।
जगमाता लछिमी न्हैगे मिरतु कै लोक,
जत्ती-दत्ती नको अन्तपात लिह लो ॥
घरों-घरों नका देबी शबद सुणली,
देयी-देयी मोवों नका लछयण हेरली,
देबी, अन्तसमय माता, भगबानों द्वारिका,
द्वारिका देखींछ माता, हीरों कै उज्याव ॥

तै दैणी द्वारिका देखिछ हीरों कै उज्याव । बार-फूल फुलिया छन, बार-फल पाकिया छन, महला कूणों में दीपक जाग्यूं छ, माता रुकमणी चाँवल ढोलंछी । तै दैणी द्वारिका में पड़ लछिमी को बास । जौंया द्यू जागण भै ग्यान । घरां-घरों माता अतुल भनार थापिण भै ग्यान । मिरतु कै लोक नर-नारायण सभा घुसी गेछ ।

आज धनी नारायणा ॥

देबी, न्यूतण लगाया, खोयी कै गणेश ।
खोयी कै गणेश न्यूंता, मूली कै नरेण ।
चौमुखी बरमा न्यूंता मैंले, बेदों कै नारद ।
देब-मुनीं सुकदेब न्यूंता, बेदों कै नारद ।
उरीण सूरिज न्यूंता, रात कै चनरमा ।
नौ लाख तार न्यूंता, ओ राजा इनर ।
भोला महादेब न्यूंता, गौरा पारपती ।
हरी सतजुगी सीता न्यूंतछी, द्वापर दुरगा ।
त्रेत्ता की तुलसी न्यूंता, कलजुगी कालिका ।

कलजुगी काली । महाकाली, जलकाली, थलकाली, न्यूंतो कै बोलाछा । अन्याई, उज्याई, बैरागी, उल्का, चामुण्डा की माता आगरन्त है जाया ।

चौपाती की माता । नैनीताल की नन्दा देवी, सोर की भगवती, हाट की कालिका । कुमूं की मालिका, कसस्यारों की चण्डिका, भद्रकाली माता, स्याँकोट की माता । बतुन भनार जागरन्त है जाया । रिखी-वंश देवता न्यूंता । शिखर, मुवैंण ज्यू, सलगाड़ नौलिंगज्यू भनार बजैणज्यू, कोटेश्वर बागेश्वर, बाघनाथ ज्यू, दण्डी-भैरव, ढुकेश्वर, थानेश्वर ।

आज संझ्या बखत न्यूतण लगाया ।।

●

हा, भगवान दैंण जाया तुमी भूमीं का भूमियां,
दैण है जाया तुमी थावी का थत्याव,
जैकी होली भूमीं तैकी ह्वली रक्षा,
सुफल है जाया तुमी यो गौं का भूमियां ।।
पंचनाम देवातो तुमी सुफल है जाया,
नर-नारी की सभा बैठी रैछ ।
भगवान, जीगै तुमार गोदी को बालक,
गोदी को बालक जिरौ पान की रिस्यार ।।

●

हा राजा, खड्गसारी राजा,
खड्गसारी को च्यल भयै राजा दुलसायी,
दुलसायी मि खालै आप राजा,
तिपुर महल लगायो सुनूं का पाथर रे,
आब, सुनूं का किवाड़ त्यारा सुनूं का पाथर ।
राजा दुलसायी भय रङगीली बैराठ ।
राजा दुलसायी यस राज भयै हो ।।

महरुड़ी-कोट त्यर धन म्यारा बिध्वातो,
यो चमूंवान त्यर चांदी को खेत,
यो चाँदो खेत त्यर खीमा सारी हाट,
यो लखनीपुर तेरी, राजा दुलसायी।
यो तेरी रङीली बैराठ राजा हो ।
राजा दुलसायी यस राज हैरो हो ।।

●

हे भुली. राजा पृथ्वीपाल राजा विखेपाल,
आज भगवान भल छ राज हो ।
हे भुली,राणी को रण्यास ह्वल घोड़ी को तवेला
यो बाँकी बैराठ आज राज बणी ग्यहो ।

सोल सौ कत्यूर रु ंनी यो बाँकी बैराठ,
चारों तरफ कत्यूरों ले घ्यर करी राखो।
भुली, ववे कत्यूर रु ंनी आज चौरास की माव,
ववे कत्यूर रु ंनी पिङली-भुती माव ।।

❁

अन्न की कुठेरी तेरी धन की मजोई,
बार-हार की सभा तेरी नौ हार कछरी ।
दरी का दिवान त्यारा धु ंनी का बजीर,
राजा दुलसायी आप रंगीली बैराठ ।।

दरे दुलसायी यस राज पाट हैरो ।
राजा दुलसायी मैंकणी खैं द्यलैं रे ।।

रैती परजा तेरी नौ लाख कत्यूर,
चाल उर्यू ंनी नौ लाख कत्यूर ।
उनर राज-पाट हैयी भल ग्य,
सुनू ँ की सिगानी तेरी रुप की पयाँन ।
चार कूणों में त्यारा दीपक जगगियाँ,
चार कूणों में त्यारा चार रे पानसा ।।

झक-मक, झक-मक हैरो हो ।
मैं कँछिये नौंणी कस-विनैगा ।।

❁

यो रंग महल ह्वल राजा दुलसायी,
छत्तीस कुठेड़ राजा बत्तीस दरीज ।
धुनीं का दिवान त्यारा पिठी का बजीर
यो त्यार ह्वल राजा जागिया पानसा ।।

●

हाथी का ह्वाद त्यारा घोड़ी का तबेला,
सुनू ं की खोयी तेरी केसुवा पहरी ।

एक दरौज पर त्यारा भेकुवा पहरी,
केसुवा पहरी त्यारा भेकुवा पहरी ।।
नौ ताल धरती हिलूंछै हो ।
धतियै की धात सुणछै रे ।।
गुरु रे रिणीदास त्यारा गुरु फिणीदास,
गुरु रे मन्तरी त्यारा गुरु जन्तरी ।
महरुड़ी कोट त्यारा चाँदी को खेत,
हाथी को ह्वाद त्यारा गायी को गौसाल ।
भीतेर रूंछी तेरी जिया धर्मावती,
येसी सतवन्ती तेरी जिया धर्मावती ।
राजा दुलसायी येसी तेरी राणी छ हो ।
ऐसी धर्मावती सतवन्ती रे ।।
यस राज वणी रौंछै रङीली बैराठ,
घोल कस कफुवा नौणी को बिनैंग ।
अन्न की कुठेरी तेरी धन की मजोई,
हुनै-हुनै तेरी हैगे आदुक उमर ।
आदुक उमर ह्वैगे राजा दुलसायी हो,
राजा आँन-औलाद के नि भयो रे ।।
सिकणी रचै द्यलै राजा दुलसायी,
ववठ भरी ऊँछ त्यारा राजपाट देखी ।
के धान करनूं कुंछै के काव रचनूं,
के धान करनूं कुंछै च्यल नि जनम ।
राजा दुलसायी जिया धर्मावती राणी हो,
के कावा रचनूं आब रे ।।

●

यो त्यारा ह्वला लाल छाजा मोहरी,
राज को महल दुलसायी बैठी भल गँछ ।
राजा रे दुलसायी सोच पड़ी रया,
अन्न धन ह्वल रे अनुली मज्थायी ।।
धरमा तेरी राणी सोच पड़ी रया,
तैं बरवत राजा रे, सोच पड़ी रौछा ।

के धान करनू क्वे देव नि भया,
गंगा नाम तुमले गध्यार नै हाला ॥

दयावतो कँ नाम ले राजा कुड पुजी हाला,
हि राणी ठाकुर मन सुव हैं रया हो।
सुण रे म्यारा स्वामी कि धान करनू,
नदुक अन्न-धन हमार आग लागी जाल ॥

एक हुँन पुतुर हमी अपुत्री रै गया,
अपुत्री रै गयाँ हमी मण-मण नेतर।
क्या हुणी करँछै राणी इतण तू सोच,
हमार भाग पर राणी औलाद नि भयी ॥

मोत्त हैरो त्रिलाप यो बिरधकाल,
राजा दुलसायी रे यो बिरधकाल।
बिरध-काल हैगे यो चौथी उमर,
चौथी रे अवस्था आयी भल गेछ ॥

क्या बिदिया रचनू औलाद को कोप,
रात टूटी छ नींल राजा दिन टूटी भूख।
के धान करनू भगवान कि बिद्दी रचनू
हमुं हुणी भगवान क् देव नि भाया ॥

❁

दान करनूं आप दयावत पुजनूं,
औलाद नि भयी के बिद्दी रचनूं।
को देव आज हमन औलाद दयल,
पुजा करनूँ बिकी पाठ ले करनूं।

म्यार दुलसायी रे बिकी सेवा करनूं हो,
कस रथ लाग राजा दुलसायी रे ॥

राणी तेरी धर्मा कस रे बुलाँछी,
सुवा कसी खापड़ी मैंण जस बोल।
धन-धन राणी मैंण कस बोल,
धन-धन राणी कसी हैरे सूरत।

राजबंशी च्यल छियै राज कमाय हो,
राजा आन औलाद के नि भयी रे ॥

दुलसायी कूंछै क्वे क्यल नि भय,
थात खाणिया क्वे क्यल नि जनम ।
हमर निरंग हैगो कां लकी जानूं,
अन ले छ हमारा धन ले भय ।
यो अन-धन हमन लागी रय हो,
दुलसायी कसी हुणो हार हैगे हो ।।
आदुक धन त्वीले लगै भल हाल,
क्वाठा में त्यारा कुरेद भरियां ।
धर्मा राणी जदुक द्याबत् छी,पुजी हाला ।
जदुक तीरथ छिया नायी भल हाला,
गाड़ गध्यारा सबै नायी हाला ।
राजा दुलसायी छाती ले फोणछै हो ।
खोर फोणछै बिलाप लगूंछै रे ।।
राजा दुलसायी वार-हार की सभा तेरी,
घोल कस कफुवा भैछंछै,
नौणी कस बिनैग दुलुवा ।
यस हुंछ कोखी को कंकाल,
के धान करनूं आप के काव रचनूं,
अन-धन लगै हालो एक बात रैगे ।।
राजा पहाड़ा द्याबत सबै पुजी हाला,
आप रैगो मायापुरी दितर शिला ध्वाक ।।

सोल सौ कत्यूर आज यो त्यार दिवान,
आयी रे भल गया त्यार मुख तीर ।
अन-खावो पाणी राजा सोक छोड़ी दिया,
तुमार भाग पर राजा औलाद नि भयी ।।
राजा दुलसायी आप सोच रे बिचार,
यो रंग महल कणी छोड़ी भल दीनूं ।
जहर खायी बेर मिले मरी जानूं,
आज हमन हुणी क्वे देवा नि भया ।।
अधोराती माज राजा तिपुर महल,
सोच रे बिचार राजा दुलसायी ।

अधोराती माज सुकाल बणी रय,
राजा रे दुलसायी स्वैणी कै सोविन ।।

किया करँछै राजा संच रे विचार,
तू लकी आयी जायै मायापुरी माजा ।
मायापुरी आवै राजा चितर शिला देवी,
चितर शिला देवी स्वैणी कै सोविन ।।

जब तू आलै म्यार दरबार,
आज रे म्यारा राजा त्वेकणी दि द्यू ंल ।
त्वीकणी दि द्यू ंल मुख मांगी वर,
राजा दुलसायी मुख माँगी - वर ।।

अधोराती माज ठस्स टूटी नींन ।
सारी रात भरी नींन हैगे भंग ।
बावन तालम त्वीले गाढ़ण लगाया,
कस बाज बज्यालै उदेख वैराग ।।

बत्तीस बाज गाडैं छत्तीस तालम,
अधोराती माज नींन हेरै भंग ।
अधोराती माज सियौ धर्मावती राणी,
धर्मावती राणी ऐगे त्यार मुख तीर ।।

सुणो म्यारा स्वामी अधोराती माजा,
किलैकी बज्याला छत्तीस तालम ।
छत्तीस तालम बाजनी यो बावन टोड़,
किलैकी म्यारा स्वामी नींन हेरै भंग ।।

राजा दुलसायी तब उदास हैयी रया,
धर्मावती बैठी रैछ त्यार मुख तीर ।
सुण मेरी राणी अधोराती द्यख ल्वैणीकै सपन,
मायापुरी बटी आज भगवानों कै सपन ।।

सुण म्यारा राणी अधोराती माज,
आज बटी राणी अठां दिन-वार ।
अठां दिन बार राणी मायापुरी जानू ं,
मायापुरी माज राणी जगतों की माता ।।

अधोराती माज भै रयीं द्वि राणी ठाकुर,
द्वि राणी ठाकुर आप आचित है रया ।

धवल सूरी बार राजा राणी ह्यैगे रात,
बार भै अजीतों कै रथ लागी गया ।।

भेकुवा मुनचौड़ी ल्वीने बलूण लगाया,
जा र म्यारा भेकुवा खीमासारी हाट ।
ववे कत्यूर रूँनी भेकुवा चौरास की माव,
ववे कत्यूर रूँनी आप तली-मली माव ।।

चार जोलिया तुमों ले भेजण लगाया,
यो चार जोलिया दुलसायी भेजण लागी रौय ।
अठां दिन बार जानूं मि चितर शिल माज,
सोल सौ कत्यूर म्यर दगड़ करी दिया ।।

अठां दिन बार को न्यूंत पड़ी रय,
अठां दिन बार को न्यूंत आयी भल जाया ।
नयीं मिणें ल्हिया पुराणा ध्वे ल्हिया,
हमों ले जाण छ माया-पुरी माजा ।

चार-धतिया धात ले लगाला,
तै वखत माजा कत्यूरो अठां दिन बार ।
अठां दिन बार आज नजीक ऐ गोछ,
सभा तेरी सोल सौ जाम हैयी गेछ ।।

●

चार भै डोल्यार मँगाया खवाया पिवाया,
धर्मावती को डोल कासण लगाय ।
जिया धर्मावती तेरी तिपुरी महल,
छै गज की लटी तेरी नौ गज धपेली ।
स्यूँनी सिंगार त्यारा पुरुब झरोख ।

राजा दुलसायी येसी बात हैरे हो,
अन-की कुठेरी धन की मजोई रे ।।

बाट को सामव बट्यूण भै गय,
मायापुरी जाणें तै बाट को सामव ।
डोली का डोल्यार बटीण भै गया,
बाट को सामव त्यारा खाजा रेकल्यो ।

धर्मावती राणी, राजा बटीण भै गया,
राजा दुलसायी हवा-चुवा दल फौज रे ॥

तै बखत त्यारा नौ लाख कत्यूर,
नौ लाख कत्यूर चुवा दल फौज।
चितर शिला ध्वाक बटीण भै गया,
मायापरी ध्वाक लागी भल रय।

राजा दुलसायी रङीली वैराठ हो,
राजा बाट लागी रया रे।

दा, त्यार तमाढौन राजा महरुड़ी कोट,
खीमा सारी हाट तेरी चाँदी को खेत।
घोल कस कफुवा राजै की कोठी,
राजा वैराग लागी रय तेरी कोठी।

राजा दुलसायी बैराग लागी गय हो,
राजा उदासी पराणी तेरो रे ॥

वैं बखत कर दुलसायी इजा,
सोवन को ड्वल वट्यूण भै गया।
छत्तीस नेवर त्यार बत्तीस झम्फान
देवी की सूरत जिया धर्मावती राणी।

देवी कस ड्वल बाट लागी गय हो।
सोल सौ कत्यूर बाट लागा-हो ॥

●

राणी धर्मावती को ड्वल बाट लागी गय,
राजा दुलशाही बाट लागी गय।
सोल-सौ कत्यूर त्यारा बटीण भै गया,
गुरु रिणीदास बुलाया गुरु फिणीदास ॥

ताँमा बिजेसार भगवान बाजण भै गय,
यो लाल निशाण राजा ओढ़ीण भै गया।
मायापुरी हुणी जाँनो बावन हजार,
बावन रे हजार यो सोल सौ कत्यूर ॥

यो बाँकी बैराठ बटी बाट लागी गया,
बाट को बटाव राजा रुकी भलगय।
फौज रे फंकार तनरी चली भल रेछ,
सोल सौ कत्यूर ह्वला सुवा कसी चाल ॥

सुवा कसी चाल हैरे मल्या कस टोल,
अधिल को दल राजा पाणी ले पिणोछ।
पछिल को दल तनर हिल लाछ नै पौंन,
सोल सौ कत्यूर तनरा बाट लागी रया ॥

●

राजा दुलसायी रात - रात दिन - दिन,
मार - मार छाड़ - छाड़ बाट लागी रया।
सोवन का ह्वला त्यारा चली ले रया,
उदेख लागी गय मन में फिकर,
यो गैली गिवाड़ आय चौखुटिय भाज।
रौबास-तौबास कनैं ऐगो अल्मोड़ी हाट हो,
म्यारा दुलसायी पुजी भल गय - रे ॥

तै बरबत बिधातो नन्दादेवी दरौज,
सिरा दिनीं ढोक पयां लिन्ही लोट।
देवी सुफल है जाया हमन हुणी,
हमर परण देवी पुर करी दियै।
माता - परण पुर करि दियै हो,
राजा येसी हुणी - हार हैगे रे ॥

●

पूरब को राज छिय सुनपति सौक,
पश्चिम को राज भय राज दुलसायी।
एक्कै भाग छिय एक्कै रे करम,
धन - बिधातो तै बखत माजा।
धन रे कस भय हुन्यल हो,
कसी हुणी - हार आयी राजो रे ॥

त्यर फौज लसङर गैठी रौछियो,
त्यर जस राज आजी ले ऊणो।
कस भाग भय कस रे करम,
यो सेली सौकाण सुनपती सौक।

सुनपती सौक ले बाट लागी रौछ,
कस भाग हैरो रे ॥

★

राजा सुनपती व्यापार करे छै.
ध्वाड़ मुखी व्यापार एक हाथ राज।
एक आंखा का छिया एक ले खुटा का,
यास दगड़िया त्यार सोबत का भया।
तकदीर को हींन कसी ले भयी,
राजा कणी ऐसी बुढ़ी आयी,
सुनपती-सौक भैरो पुरब झरौख,
भैरे तेरी सौका गाऊँली सौक्याण।
पुन्यूं कसी चांन बैसाख कसी खाम,

कैरुवा कसी काँन भैरे गाऊँली सौक्याण।
सुनपती सौक आज सोच रे विचार ॥

गंग नाम त्वीले गधार नै हाला,
देबों का नाम ले दुङ पुजी हाला।
कै दिन रुँछै तली हटी माव,
कै दिन रुँछै मली रे सौकाण।
हिलू - तिलू लाखी करबछ ढाकर,

आदु उमर न्हैगे सन्तान नि भयी हो,
मायापुरी चित्राशिला ध्वाक रैग्यो रे।

गांऊंली सौक्याण ड्वल काछी बेर,
ऊंनै - ऊँनै बाट लागी रयै।
मार - मार छाड़ - छाड़ बाट लागी रयै,
हिंगाल - हिंगाल दुसार - हिंगाल।

तब से गयै सिरी दानपुरा हो,
पुजी भल गयै ऐठाण कपकोट रे ।।

यो पुजै सौ पुजै बागेश्वर भूमीं,
बागेश्वर में रुनी बूढ़ा बागनाथ ।
बूढ़ा बागनाथ पूजा करलै भेट,
सिर द्यलै ढोक पयां लिहलै लोह ।

बूढ़ा बागनाथ ज्यू सुफल है जाया हो ।
बागनाथ बटी अधिल कै बाटा रे ।।

सुनपति-सौक बाट लागी रयै,
देबी कस ड्वल त्यर बाट लागो रय ।
सुनू को आङण सुनू को झम्फान,
पुतलिया ठाँस बाट लागी रयै,
ऊनैं-ऊनैं पूजी गयै पालाड़ी का छिना ।
ताकुव-बसौई पूजै यो कपड़खान,
डाणापाणी सुनियाँ नौमाटी ग्योछियै ।

राजगद्दी अल्मोड़ी हाट पजी गयै हो ।
देबी थान बास पड़ी गय-रे ।।

द्वि राणी राजों को एक नस तकदीर,
एक कोखी जसा भया तुमी,
एक गंग नायी जसा भया
कस भाग तुमर राजो कसी हुणी हार

हियै राजों को बास अल्मोड़ी हाट पड़ी रय ।
आप सुनपती सौक राजा दुलसायी हो ।

राजा दुलसायी रङीली बैराठ,
रङीली बैराठ को छ कैबेर ।
सुनपती सोक खुशी बणी रयै
एक्कै कू का नाइयां जसा,

येसी थात बाँज रैगे राजो हो ।
ध्वाक लागी रो मायापुरी चितरशिला ।।

राणी रात द्यैगे इजू घाणी लागो घाम,
इमीं ले जाणरया मायापुरी चितरशिला।
द्वियै राजा आज भेट हैयी रेछ,
राजा दुलसायी सुनपती सौका।
द्वि राणियों को ज्वड़ हैरो द्वि राजों को ज्वड़,
द्वियै दल भगवान बाट लागी गया।
अघिल - अघिल राजा जाणया।
पछिल - पछिल राणियों कै ड्वाला।

बाज घाज बाजण लागी रया।
आप ऐ गया चितरशिला माजा॥

●

सपन को ड्वल चितरशिल भामा,
जिया धर्मा राणी चितरशिल माजा।
सुनपती सौक गांऊली सौक्याण,
पुजो भल गया चितरशिल माजा हो।

द्वि राज-राणियों को धिराट हैयी गैछ,
ठीकै जायी रया परबी को दिन हो,
तब द्वियै राणिथा भकती करला,
द्वियै राणियो देबी की भकती हो।

यौं पूस की रात आंखो में बितैछ,
चितर शिल माज येसी भकती है रेछ।
राणी रात व्यैगे घाणी लागौ घाम,
मां - पूस की रात आँखी में बितैछ।

राणी रात व्यैगे गंगा अस्नाण,
हाथ जोड़ी बेर देवी की भगती हो।
करी राणियों ले देबी की भगती,
तुमों कै दि हैछ पुतुरों कै बर हो॥

धन - धन दुलसाई धन त्यर भाग,
सुनपती सौका धन त्यर तकदीर।

ऐसी हुणी हार मरद है गयीं खुशी।
दिल को भैम बुझी भल गोछ।

आज आयी रया मय्या ज्यू कैं पास,
सुण मेरी माता ऐ, रयूं त्यार भूमीं पार।
सोल सौ कत्यूर तुमार बैठी भल रया,
सोल सौ कत्यूर देवी कैं मन्दिर॥

आज मेरी मायी दियै बोल को वचन,
यो मेरी नौराठ माता बाँजी पड़ी गेछ।
यो वचन को दान माता दियी भल हैछ,
तै बखत माज रे आज धर्मावती राणी॥

धर्मावती राणी कणी पुतुर को बर,
पुतुर को बर मिलो भल गोछ।
फिरी लेक गेछ गांऊली सौक्याण,
म्यार मैतुवा देव रे सुफल है जाया॥

यो मेरी सौकाण माता बांज पड़ी गेछ,
औलाद को कोप माता हैयी भल रौछ।
तै बखत देबी ले आज हरी नारायणा,
त्वीकणी दि हैछ कनियां को बर॥

दिल हैगो खुशी भैंम नसी गोछ,
तुमन मिली गय पुतुरों कैं बर।
दुलसायी राजा राणी धर्मावती,
धन तुमर भाग मायापुरी चितर शिला,
आदुक उमर में पुतुरों कैं बर।

राजा दुलसायी राणी धर्मावती खुसी है रैछ,
गाऊँली सौक्याण सुनपती सौक रे॥

गाऊँली सौक्याण राणी धर्मावती,
सोच करनी विचार एक बात रैंगे।
तू लकी आयी रैछै मिसे आयी रयूं,

राणियाँ भयां पूरबा पश्चिमा,
एक ख्वार का भया एक ले तकदीर,
कंसासुरी थाव पिठ्यां बाँटी लिन्हूं ।

ह्वियै वैणी बोल बचन वांटो लिन्हूं हो,
ह्वियै राणो कास है रयीं बात रे ।।

सुण वैणी तेरी जब होली चेली,
म्यर लकी ह्वल च्यल ।
मेरी ह्वली चेली त्यर ह्वल च्यल,
वोल - धरम सम्बन्ध करी ल्यूंलो ।

आप बैंणी यास रे बचन हो,
यस कौल - कबूल हैग्यो रे ।

पिठ्यां लागो बोल रे बचन,
रसम भया कसम ले भया ।
ह्वियै राणियाँ आप खुशी बणी गया,
कैकी छ औलाद भागी ।
सब च्याल एक वसै कै नि हुँना ।
सब चेली एकनसै नै हुँना ।

कुरेद - कंकाल निरभयी है गया हो ।
राजा दुलसायी सुनपती सौका हो ।।

मायापुरी चितरशिला बटी बाट लागी गया,
तीसार दिन राणी ब्यैगे रात घाणी लागो घाम ।
घाणी लागो घाम बाट लागी गया,
मन का तुमी खुशी बणी रया ।

मि खै दयाला मार - मार छाड़ - छाड़ हो,
बाट लागी रया हियै राजा हो ।।

म्यर दुलसायी राणी धर्मावती,
सुनपति सौक गाँऊँली सौक्याण हो।
ऊनैं ऐ गयीं सामखेत माजा,
ऊनैं ऊनै ऐ गयीं गागरा का धुरा हो॥

गागरा का धुरा बटी रामगाढ़ माजा,
ऊनैं ऊनै ऐ गयीं नाथखान माजा हो।
नाथखान बटी ब्यूड़ै छिन माजा,
ब्यूड़ी छिन बटी, लोदी कै छिन हो॥

घुरुड़ी उकाव काट अल्मोड़ी कै हाट,
द्वि राणी, राजों कै ड्यार रुकी गोछ हो।
गाँऊँली सौक्याण राजा सुनपती,
चार ले मुश्त ब्याव की बखत हो॥

●

ब्याव की बखत देवी कै मन्दिर,
आप सौका रात काटी लिन्हूं।
त्यर-म्यर आप बाट फाटी जाछ,
हमले जाण आब आपण मुलुक॥

मिन्है जूँल सौका रङीली बैराठ हो।
सुनपती तू जालै सौकाण रे॥

राणी रात ब्यैगे घाणी लागो घाम,
गाड़ी हाली कंसासुरी थाव।
कंसासुरी थाव गाड़ी रैंणी पिठ्या,
सकल मोत्यू धरती दिय ले जगूँनी।
आप राणियों शिर ढोक-दिनीं,
द्वियै राजा आप पैलाग-ज्यूजाग।

आज रे राजो पिठ्या लागी गो हो।
द्वियै राजन् पिठ्या बाँटी गय हो॥

राजन् को डबल आपण मुलुक,
बाट फाटी जाल बाट लागण बैठा।
सोबन कै डवाला बाट लागी गया,

राजा दुलसायी आपणी बौराठ।
यो गैली गिवाड़ रहप की गंगा,
चाँदी को खेत, महरुड़ी कोट।

त्यर ड्बल राजा आपण महल - हो।
त्यर ड्बल म्यैर पटाँगण - रे॥

दुलसायी सुनूं का किबाड़ पुरुब झरौख,
सुनूं की सिरानी तेरी रुपै की पयाँनी।
चार - कूण त्यारा पांनस जागिया,
चोल कस कफुवा खुशी बणी रयै।

हा राजा सुनहरी खाट भै रौछै हो।
राजा यस राज - पाट - हैरो - हो॥

सुनपती सौक ले बाट लागी गय,
सोबन को ड्बल पुज त्यर सेली कै सोकाण।
खुशी खुरम है गयीं तैं बखत माजा,
मायापुरी को ध्वाक पुर हैयी गय।

सुनिया मनैं मुराद पुर हैगे - हो।
कस खुशी - बणी रयै आपण सौकाण रे॥

●

आप, धर्मावती राणी मन खुशी है रैछ,
बाट बटी राणी फूल बौठी रया।
बौराठ जै बेर म्हैण है जाँछ,
गर्भपती भैछ राणी धर्मावती हो॥

क्वे कत्यूर न्है गयीं खीमासारी हाट,
क्वे कत्यूर गयीं भुला चौरास की माव।
धर्मावती राणी भै रेछ तिपुरी कैं छाजा,
तिपुरी महल बैठाक है रय हो॥

यो पेटों की आसा हैयी भल रैछ,
सुण मेरी माता त्वीले कस देछ वर।
एक मास कूंने आप द्वियै म्हैण लागा,
आप धर्मावती राणी म्हैण लागी रया॥

द्वियै चार मास भया पांच छैंया मास,
गरभ की आस भुला हैयी भल रैछ।
आज मेरी माता दियीं बौंयी कै वचन,
यो रे दुलसायी हगी रे नारायणा ।।

●

दुलसायी आप खुशी वणी रय,
पेट की आस हैयी भल रैछ।
राजा दुलसायी सोच है गयी बन्द,
राजा दुलसायी खुशी खुरम है रया ।।

हा राजा दुलसायी कसी हुणी-हार हो।

तेरी राणी कणी पांच मास लागा,
पंचौं मास आप पंचत्यारी बाव।
राजा छयों मास कूनें पंचत्यारी बाव,
राजा मालूशाही खुशी हैरे पैद ।।

राजा दुलसायी मैं कणी खै द्यलै हो।

छठों मास कूनैं आप सात म्हैंण लागा,
अठों म्हैंण लाग राणी धर्मावती।
अठो मास राजा खुशी हैयी रैछ,
कसी हुणी - हार हैरे राजा दुलसायी ।।

राजा दुलसायी मैं कणी खै द्यल बाव।

●

न्वो मास लाग आप दसों मास,
मुट्ठी भरी अन्न खायी नैं सकनी।
मन की मधुर राणी गाल की दुबयी,
नङछड़ को पाणी राणी पियी नैं सकनी ।।

दसों मास मुठी भरी अन्न खायी नैं सकनी ।।
हो राणी धर्मावती वे मैंकणी खै द्यली ।।

दसों मास पुर भय राणी धर्मावती,
गर्भ को बालक दस मास भया।

यो त्यर बालक आप राजा दुलसायी,
यो त्यर बालक पोथी धरती हुंछ पैद।।

आज राणी बालक है जां पैद हो।
राजा धन त्यर भाग मैं कणी खै द्यल।।

आज धर्मावती राणी बिधन है गेछ,
यो पीड़ लागी गेछ राणी धर्मावती।
चार रे सोलिया बलूण लगाया,
पंचनाम देवो तुमी ध्वाक लागी रया।।

नौ लाख कत्यूरों राजा ध्वाक लागी राहा।
राजा दुलसायी मैं कणी खै द्यल बाव।

सुण म्यारा विघातो रातिया बखत,
उरींन सुरिजा भिमैं छुटी गय।
तै बखत आप ब्याण तारा जस,
त्यर गरभ को बालक भिमैं छुटी गय।

म्हैं - म्हैं र्वैंण भैगो हो।
घुनीं का दिवान हाजिर हैं गयीं।।

घरों-घरों आप दुबयी हैंगो दुब,
उखली हैगो पिठ्यां राजा दुलसायी।
सार कत्यूरों कणी न्यूंत न्हैयी गय,
राजा का महल खुशी हैगे पैद।।

राजा घुनीं का दिवान पिठी का बजीर हो।
राजा दुलसायी मैं कणी खै द्यल बाव।।

काशी को पण्डित आप लगन बिचार,
बरम को च्यल आप बलूण लगायो।
सुणो बरमज्यू करो लगन बिचार,
यो म्यर बालक लगन बिचार।

बरमज्यू कसी घड़ी सैत हैरे हो।
राजा दुलसायी यस कूणो।।

आप बरमज्यू लगन बिचार ठ्यूंण लगायो,
एक हारे गाणछै एक हौर भेटंछै।

कसी हुणी हार आप धन म्यारा बिधातो,
के कूण में निं ऊँन राजा दुलसायी,
राजा दुलसायी आप चाइयें रै गया।
राजा दुलसायी मैं कणी खै द्यल।।

तै बखत आब हरी नारायण,
यो बिना टाक की होर ले निं ऊँनी।
सुनूँ टाका आप होर में धरछी,
तुमर च्यल राजा बड़ तपधारी।
यैक भाग पर राजा स्यैंणी जोग हो।
राजा दुलासायी येसी हुणी-हार हैरे।।

यैले जाण आप सेली कै सौकाण,
गैल हुणदेश राजा दुलसायी।
राजा दुलसायी सोच पड़ी रया,
एक दिन भय आप द्वियै चार दिन।
राणी धर्मावती पंचौव नै हैछ हो।
नौ लाख कत्यूर खुशी वणी रयीं।।

म्यारां दिन हुणी नामकरण ठ्रयाय,
चार दिशा गरख न्यूँत पड़ी गय।
सोल सौ कत्यूर त्यारा नौ लाख कन्तापुरी,
रैंदल - सैंदल त्यारा बावन हजार।
रैंदल-सैंदल राजा जाम है गयी।
राजा दुलसायी भै खै द्यल।।

●

दतिया दुब राजा हैयी भल रय,
यो बांकौ बैराठ राजा खुशी वणी रैंछ।
बरम को च्यल बैठी भल रय,
यो अजी को च्यल आयी भल रय।
अजी को च्यल भगवान्त बढ़ाई करल,
बरम को च्यल आप लगन विचार।

यो बालक को नाम पड़ी भल गय,
दुलसायी को च्यल मालसायी नाम ।।

●

दिन को हुछ हौर रात को हौर,
तै बखत मालू बढ़ग भै गय।
एक बरष बालक देखींछ पांच बरष जस,
एक रे बरध को पांच बरस जस ।।

सोह्नी हैरे सूरत माला देबी कसी मूरत,
नौंणी हैरो बदन माला केसरी हैरो रंग।
रतङयाली आँखी हैरे घुङर्यायी कानी,
यस बालक हैरो देवी कसी मूरत।।

मालसायी हैयी रौछ, सुनूं को डांकुल,
नौंणिया आड- विको-कमल आँखुल,
कमल जस फूल हैरो, उरीण सूरिज,
यस कुँवर जनम राजा दुलसायी ।।

●

माला सार राजपाट हैयी भल रय,
राजा रे दुलसायी तुमर सरग हैयी गय।
राजपाट को भार है गोछ त्यार ख्वार माजा,
राजपाट को भार मालू त्यार ख्वार माजा ।।

धुनीं का दिवान त्यारा पिठी का बजीर,
यो सार रे कत्यूर मालू त्यर हैग्यो राज।
अन्वाण-पन्वाण मालू तेरो हैयी गेछ,
चांदी बांन को खेत राजा त्यर हैयी गय ।।

गायी हैगो गोसाल राजा भैंसी को ठांस,
बुढ़िया रे भयेड़ी यो रंग रे महला,
सुनूं की सिरानी है गेछ रूप की पयांन,
गिलम गिनुबाँ है गयी माला तकिया जाजम ।।

●

वी दिन वी बार सेली कै सौकाण.
वी घड़ी वी सैत सैली कै सौकाण।
गाँऊंली भारी भैछ सुनिपां कै घर,
सुनपती सौका तेरी गाऊंली सौक्याण।
हियै झणै खुसी बणी रया हो।
खबर न्हैगे वी सेली सौकाण ॥

●

जै दिन जै घड़ी री, री, री, रि,
गाऊँली भारी आङा हयी रैछ।
वी दिन वी घड़ी बटी री. री,
सब सिधी सौकाण आयी गै।
हिमाल बादल फ़ाटो री री,
पंचाचुली चांदी जस चमकी रौ।
गोरी गंगा पाणी बड़ो री री, रि,
उज्याल चमकिल हयी रौ।
मिलमा का ऊँचा धुरा री री,
मासो गोकुला नैरो फूली रौ।
गैला रे पातलों री री री रि,
नीनौली बासण भै गैछ।
ऊँचा रे डानों री - री री रि,
सिङौड़ी बोलण लागी रै।
काँस जसी बुढ़ी गङा री - री रि,
कफुवा ससी फूली गै।
कण्ठकारी जसी गङा री रि,
सब दुख भूली गैछ ॥

●

हुणीहार बात राजा मेटी नै सकिनी,
एक - दिन बात तै बखत माजा हो।
यो सेली कै सौकाण गाँऊंली क्वाड बैठी गेछ।
यो सेली सौकाण भगवान चैली हैगे नैद।

●

दुतियां कसी जून हैरे, वी सेली सौकाण,
दिया कसी जोत हैरे वी सेली सौकाण।
येसी जनमी रैछै मूयै, ओ छोरी राजुली।
द्वियै दिन में ओ छोरी, चार दिन जसी।
नवान वखत हो छोरी, छै म्हैंण जसी।
महैंणन में हयी गेछ, बरसन कसी।
राजुला को रूप जाणा, सुनू डलो जसो।
भीं लोक में पड़ी रैछ, चलू बिन् जसो।

●

राजुलां देखीणे चौद बरस जसी,
बाँकुरी हेगली राजुली वी सेली सौकाण।
दिन - दिन जोभन राजुली ऊण लागी गय,
कफुवा वासनी दिगौ घुगुता छुपानी।
वी सेली सौकाण आप कपुरी लगूंनी।
हिरद वाटुयी लैनी कलज कांकुरो।

●

सुनपती सौक आप होलरी लगूँछ,
होली छ होलरी पोथा होलरी छ होली।
बलैहारी ल्यूँलो पोथी, होली छ होलरी,
त्वीकणी बिऊँल चेली, वी कंकरी देश।।

यो छोर्श राजुली आप बाँकि-बांकि अलांछि
डेंणीण भै गेछै मुय्यै धो थामण भैछै।
ट्याहुरी ट्याहुरी मुयै हीकुरी लगूँछं,
सुनपती सौक आब अन्त पात ल्यल।

होली छ होलरी व्वथा बलैहारी ल्यूँलो,
होली छ होलरी चेली होलरी छ होली।
त्वे कणी बेऊँल चेली रङीगी बैराठ,
ओ चेली राजुली आप खुशी हैयी जाँछी।।

खेल लागी बेर मुयै खिलकण लागी गेछै,
बैराठ को नाम सुणी हँसण भै गेछै।

सुनपती सौक आप मन समझण बैठ,
चार म्हैंण की चेली आग ऐसी बुधवान ।।

मेरी बरी आली मुयै मन कसी करूँलो,
त्वेकणी बेऊँलो छोरी वी कंकरी देश ।
यो छोरी राजुली मुयै ट्याहुरी ट्याहुरी,
गाँऊँली सौकिया आप काखी जै थामछी ।।

गोदी नें थमूँछै जब खिलकण भै गेछै,
होली छ होलरी चेली होलरी है जाँछी ।
त्वे कणी बेऊँल चैली रङीली बैराठ·
राजा दुलसायी होलो रङीली बैराठ ।।

वीको च्यल ह्वल पोथा राजा मालसायी,
रङीली मुलुक चेली होलरी है जानी ।
राजा मालसायी चेली भौतै रूपवान,
यो छोरी राजुली मुयै भौतै खुशी हुँछै ।।

●

राजा मालसायी हाथी को हवाद,
तमाढौन की थात राज पाट है रय,
बैरी न्हैंती डर चोर न्हैंती सकिया,
तै बखत रङीली बैराठ को राजा ।।

जाग-जाग त्यारा असामी धरियां,
दयी दाव खाँछै फयी चाँवो ।
साठी तितुर रत्तै खांछै राजा,
साठी खांछै ब्याव माला ।

यस राज भ्योछै राजा मालसाया हो ।
राज - पाट त्यर रंङीली बैराठ रे ।।

धर्मा मयेड़ी तेरी देखछी सुँणछी,
रैती छन परजा त्यारा दरी का दिवान ।
चार गुरु जन्तरी त्यारा चार मन्तरी,
गुरु रिणी दास त्यारा गुरु—फिणीदास ।
कैकी न्हैंती डर आप राजा मालसाया,

हाथी को हवाद त्यारा घोड़ी कै तवेला हो,
राजा मालसाया येसि बात हैरे........ ।।

चोर न्हैंती डर आप बैरी न्हैंती सकिया,
ऐसी हुणी हार हैरे रंगीली बैराठ।
नौ लाख कत्यूरों की सभा बैठी रैछ,
घोल कस कफुवा फुलारी कस सुवा,
राजा मालसाय नौंणी कस बिनैग हो,
मि खै दयलै येसी सभा भैरे ।।

मयर मालू खीमासारी हाट,
बैठाक लिह राखो तामासुरी कोट हो।
तामाढीन राजा बैठाक है रय,
भुली गयै मालू परन्त की बात।
धन-धन मालू ऐसी तेरी सभा,
म्यार मालूसायी निरभय है रयै हो।
गाड़ छन घटा त्यारा धुर ले खरक,
अघिल का उणिया पछिल जाणिया ।।

राजा कछरी बटी आप ठाड़ उठी गयै,
छाँटी-माँटी ज्यूनार लैस बणी रैछ।
छत्तीस ज्यूनार आप बत्तीस परकार
छाँटी माँटी ज्यूनार भोरजन है गय ।।
राजा मालूसाया आप सोच कर विचार।
त्रिपुरी महल आप सोच पड़ी रया।
मन में उदास रुंछै दिल को भैम,
राजा मालूसायी येसी हुणी-हार ।।

नौ लाख बगीच राजुली कंचन महल,
यो चार छोरिया राजुला त्यार रे दगाड़।
आज मेरी राजुली कैरु कसी कांता,
कैरु कसी कांता होली झिप कसी सिकड़ा ।।

त्यार रुप देखी राजुली मूरिज धुमैल,
देवतों को धनी राजुली पैगो की मुयी ।
छत्तीस दरौज द्वला बत्तीस क्वाठा का,
नौ लाख बगीच वण राखो कंचन महल ।।

●

कसी रूपवान भैछै, राजुली सौक्याण
रात लेक दिन हैगे, वी सेली सौकाण ।।
मुखड़ी चमकण लागी, पून्यूँ कसी जू्ँन ।
पालंग कसी आँठी जसी, पिरुवें यसी बूँन ।।
हिसालू कसी तोपी जसी, पयाँ जसी पौली ।
हंस की गरदन बिकी, वगुती चारि सेली ।।
दाँनवीका यसा छन, दाड़िमा भवौरी ।
वाल वीका यसा छन, पाँख कसतूरी ।।
नंगा वीका जाई फूल, कुरकोसी आंगुली ।
रात दिन वीको रुप, चै रुँछ गाऊँलो ।।
पूस की पालंग कसी, चैत की कैरुवा ।
हिया माज फूली रैछ, रुपौसो नैरुवा ।।

●

खुटी का पैंताव वीका, कस्यूरी कस फूल,
गद्यूड़ी को जोड़ो वीको, कुकड़ी का आना,
जांगन को जोड़ो मुयै, क्यावा कसो फांगो,
कमर देखींछ छोरी, कुरमाली को ठांसो ।

छाती में धरियां छन, जोंइया कलीस,
हाँस कसो गलो तेरो, ओ मुयै राजुली ।
दन्तपाटी होली मुयै, दाड़िम को चोपै,
नाक की डानी मुयै खाण कसी धार ।।

स्यूँनी होली तेरी कुमूँ जाणी धार,
लटी की धपेली छोरी, धुरा की चुऐंण ।
यस रुप त्यर मुयै, राजुली सौक्याण,
ऐसी हैयी रैछै छोरी, बी सेली सौकाण ।।

●

पूरब झरौख पूरब कठ्यौड़ा,
पश्चिम झरौख पश्चिम कठ्यौड़ा।
चार दिसों में त्यारा पानस जगिया,
चार कूणों में जागी ह्वल मणी को उज्याव।
मालसायी खवाय पिवाय साँस पड़ी रैछ।

राजा सुनहरी बांसुयी मोरछग विणायी हो।
हाथ में थमालें मोरछग विणायी हो॥

मालसायी हिय में वैराण लागो,
उदासी को बाज वज्यूण बैठ।
मोरछण विणायी तेरी कुरेद भरी रौछ
बावन बाँजों को तालम लागी रौय।
चार कूणों त्यारा पांनस जगिया,
नौणी कस विनैग घोल कस कफुवा।

सुनूँ की खाट म्यर मालू रुपै की पयाण हो,
धन - मालुवा येसी माया है रैछ हो॥

रुपसिया माला तैं बखत माजा,
आपण ड्यारा सुकाव हैयी रयै।
जिया धर्मा राणी तेरी अनुली मज्यायी।
खोयी दरौज त्यारा केसुवा पहरी।

दैण खोयी भैरो भेकुवा पहरी माला हो।
मालसायी नौ सेर नौंणिया पयाल॥

मुनूँ कस गेल मालू क्याबा कस गाब,
कातिक निमुँवा जस क्याबा कस खाम।
बात्रन रूप छोड़ी राखें सोबन कै खाट,
तेरी मयेड़ी भौतै खुशी है रैछ।

म्यर मालू जिया धर्मा भौतै खुशी है रैछ।
रुपसी माला देखी खुशी है रैछ - हो॥

राजा मालसायी येसी नींन पड़ी,
छै मसिया नींन सुकाव बणी रय।
सुनहरी खाट कस नींन आयी,
राजा मालसायी कि दास बिगड़ी।

राजा मालसायी सुनहरी खाट पड़ी रयै हो।
कस सपन द्यखण बैठ राजा मालुवा रे।।

❀

अधोराती बीच माला सोच-बाट बुलाल,
सोच बाट बुलाल सुकाल हैयी रय।
हँस पराण मालू उड़ण भै गय,
यो हंस न्हैयी गय त्यार रिगौली कोट।।

द्वि हँस हँसिणी भेट हैयी रैछ,
नौ लाख बगीच द्वि सुवा सारंगा।
काँक छै जानेर कदु टाड़ जाणछै,
विषैल मुलुक त्यर कि काम पड़।।

द्वि सुवा सारंगी बात लागी रया,
किलै आयी पड़छै हंसा विषैल मुलुक।
येसी रुपवन्ती मिले जनम नि देखी,
यो त्यार ध्वाक ले आयूं बाँकी बैराठ वती।

❀

दरे भद्यायी को खय,
लगुलिया लय,
अधोराती माजा माला सपन रथ भय।
सपन रथ भय हा।।

बणी ह्वालां खाट,
बणी हाली खाट
छोड़ण लगायो माला आपण राज पाट-हा।।
राज की पगड़ी,
राज की पगड़ी।
बोल बचन हुण भै गय राजुली दगड़ी।।

तितुरी का पाँजा,
निङायी का सांचा।
सपन हैयी रय माला अधोराती माजा-हा।।

काटनी कुमर,

काटनी कुमर,
गैन हुणदेश छोड़ी द्योल राजा त्यार उपर हा ।।

❁

मेरी वैराठ आनी खाली सेरी का कंवज,
सेरी का कवज खाली ठिनी का मुनया ।
दुणगिरी को दै खाली पण्यूँल काटण,
खानी राजुली महरुड़ी का तितुर ।।

पुणगिरी का रिखू खाली कुल्याड़ काटण,
रङीली वैराठ राजुली क्या रङीली जागा ।
रात रँगे ध्वाड़ सपन हैगो ठुल,
उड़ी गय हंस यो रङीली वैराठ ।।

अधोराती माज ठ्यारस टुटी नींन ।
ठ्यारस टुटी नींन खाट तोई भै गेछी,
उदासी विणायी राजुला गाढ़ण लगायी,
उदासी विणायी वे गाढ़ण लगायी ।।

विणायी को सोर न्है गो इजू कान माजा,
सुण मेरी पोथिला किलै टूटी नींन ।
अधोराती बीच इजू कैक हैगो वैराग,
सुण चेली राजुली कैक लाग वैराग ।।

राजुली सौक्याण मन सोच है गय,
मण मण नेतर राजुली छोणछी ।
किलै की राजुली नेतर ढोलंछी,
अधोराती माज चेली क्या नेतर छोणछै ।।

सुण मेरी राजुली इनों बातों को अन्त,
इनों बातों को अन्त बतै दे पोथला ।
इजू एक बात कूँल जब मानी जाली,
मि त्यर उदर जब अन्त बतै देलो ।।

❁

स्वैंणी कै रथ राजा मालूसायी,
आयी गय स्वैंणी रथ हंस ।

त्यर पराण हंस लागी भल रय,
कस हंस ह्वल राजा मालूसायी ॥
हा मालूसाया कस सपन देखो हो।
मालूसायी अधोराती बीच हो ॥

मालूसायी घोल कम कफुवा,
वार चाणो, पार चाणो, चुड़ुक उठल।
त्वील देखी राजा राजुली सौक्याण
स्वैंणी कै रथ राजुली सौक्याण ॥
राजुली त्वील बावन रूप छोड़ी राखा हो,
कस रूप त्यर मैं कणी रचै द्यल र ॥

स्वैंणी कै सोविन पुतयी रूप ले,
राजुली बावन रूप छोड़ी राखें।
दिल हैगो भैंम मन हैगो उदास,
त्यार क्वाठ राजा उदास हैयी रय।
यो उमर राजा यस सोवन कि द्यलो।
आप मालूसायी दिल हैगो उदास हो ॥

भटक चारी छाती मारणो,
मटक चारी ख्वर फोड़णो।
मण मण नेतर छोड़णो,
आज गाढ़ण भैगो बैरागो को बाज,
बज्यूण भै गोछ उदासी मुरुली।
कसी उदासी लगै राखी तिपुर महल,
कसी हुणी हार हैरे म्यर मालूसायी।
मालसायी बावन बाजों को एक तालम छोड़णो,
मोरछंग बिणायी बैराग बासुरी रे........ ॥

की भय हुन्यल की भैंम पड़,
मालूसायी अधोराती बीच माजा।
छमसिया नींन फोगी रे मन हैरो उदास,
के भण नींन टूटी उदेख फोगी राखो।
यो रङीली बैराठ कस उदेख भय,
उदेख मुरुली मोरछंग बिणायी।

यस उदेख सबद मयेड़ी का कान,
धर्मावती राणी कि भय हुन्यल कूण हो।
के काव भयी यो कस भय रे।।

धन-धन रे मालुवा जिया धर्मा देवी,
इजू मयेड़ी रे मयेड़ी को हिय हो।
रयी नैं सकनीं ओ इजू मयेड़ी,
अलबलानी उठी छुपुक भै गेछ हो।
कानसोर लगाली बैराग लागी रय,
बैराग को बाज उदासी है रौछ।
इजू मयेड़ी चुड़ुक उठली,
सिर की पिछौड़ी आङ को पाग हो।
पैरली ओ इजा चुड़ुक उठछी,
जिया धर्मावती खोयी के दरौंज।
खोयी कै दरौज यो छाजा झरौख,
इजू को हिय पाणि जस पतव।।
रयी नै सकनीं मयेड़ी को हिय,
इजू मयेड़ी छुपुक भै गेछ हो।
मालसायी खटुली बैठी भल गेछ,
के भय व्यथा किलै टूटी नींन हो।

किलै बज्यै मोरछंग बिणायी,
किलै बज्यै उदासी मुरुली,
किलै छोड़ बावन बाजों को ताल,
जैले इजा कलज कोरछ।
आज च्याला झुटो नैं बुलायैं,
खायी ह्वल च्याला दस धारी दूध।
ह्वलै च्याला राजबंशी च्यल माला।
मिकणी बतालै यों बात को अन्त।।
किलै भैछ नींन भंग, कि उदेख लागो,
रहय हैरे सुन्न च्याला पाणी ऐरे नींन।
कि असन आयी च्याला बतूण पड़लो,
च्याला मि तेरी मयेड़ी यो बात का अन्त।

ततणी कि असन आयी बतूण पड़ल ।।
मि नैं रै सकन च्याला बता धैं ।।

ओ इजा के धान करनू इजा,
मण-मण नेतर रंग कसा बूँद ।
द्वतण वैराग लागी भल रय,
यो रङीली बैराठ च्याला कस ले भय ।

आपण वातों को अन्त बतै दे च्याला ।
म्यर प्वथा मि तेरी मस्तारि हो ।।

म्यार कसम छन यो बात को अन्त.

ध्वाक रैगो च्याला वातों को अन्त ।
तसी बिणायी च्याला जनम नि सुणी ।।
कि भय हुन्यल राजबंशी च्याला ।
नौ लाख कत्यूर सग का सयाती,
म्यार च्याला कि बात बिगड़ी ।

म्यर माला जुदै लागी रौछ हो ।
मैं खै द्यलै माला रोत्यूणे रे ।।

●

इजू मयेड़ी मण - मण नेतर,
एकै नि माननी सुछैंण भै गेछ हो ।
इजू मयेड़ी द्विये नी माननी हो,
इजू मयेड़ी कि नक लागँछ हो ।।

त्वीथैं कूण की लजिया लागण रैछ,
नि पुछ - नि पुछ इजा यो बात को अन्त ।
त्वीकणी बतूण इजा लजिया लागणे,
धन रे मेरी इजू तू मस्तारी मि म्यल हो ।।

इजू मयेड़ी मैंण जस बुलाँछी,
सुनू कसी खापड़ी मैंण जस बुलांछी ।
इजू मयेड़ी कि धान करँछ,
भल समंजंछै बतै दे च्याला ।।

नि बतुनै जब जीभ बुड़ी मरुँलो.

स्वीकणी लगूँलो च्याला पितर हृतिया।
स्वीकणी बतूण पड़लो यो बात को अन्त,
यो म्याया माला यो सोच विचार हो।

आज भयै च्याला लजिया को धनीं,
मिथैं कूण की क्वे लजियाा निं भयी॥
तू च्यल मि मस्तारो क्वे लजिया न्हैती,
मिथैं कूण की के लजिया निं भयी॥

●

धर्मा मयेड़ी सुण म्यारा पोथी,
उदेख मुरुली बज्यै तब लकी आयूं।
अधोराती वली हैरे अधोराती पली,
पाणी कणीं नींन ऐरे क्वे लजिया न्हैती॥
दा धरमा मयेड़ी के बात निं भयी,
कसी हुणीहार च्याला बतै दे तू॥

कूण की निं छी बतूण पड़छ,
इजा सांची को कूँछै सपन को रथ।
गाँऊँली की चेली सुनियैं की चेली,
बावन रूप की राजुली सौक्याण॥
तोंणिया हृलद जसी पुन्यूं कसी चान।
जागिया पानस जसी राजुली सौक्याण इजा॥

बैसाख कसी खाम राजुली सौक्याण,
सुनियैं की चेली राजुली सौंक्याण।
राजुली नाम को उदेख लागी रय,
राजुली को रथ लागी भल रय॥
इजा राजुली ध्वाक लागी रो,
सुनिय की चेली राजुली सौक्याण॥

कि रथ बिगड़ च्याला कि उदेख लाग,
एक बात कूँल च्याला दिल नैं चमकूँन।
चौमूं को वान त्यर चांदी को खेत,
सब बाजै पड़ी जाल रङीली बैराठ।

हमार मुलुका एक चाड़-पोथील नि आ।
इजा यस विषैल मुलुक छ हो।

हिरण में बिष लागों खाण में बिष,
खाण में बिष लागों बुलाण में बिष।
रंगा - रंगा बिष च्याला वी सेली सौकाण,
भंग-भंगा विष च्याला विलोट है जाँछ।।

ऊ मुलुक नौं झन ल्हियै च्याला।
च्याला ध्वाक छोड़ी दियै सौकाण को।।

च्याला एक पूत पुत्यायी,
एक आँख उज्यायी,
बिरध काल की सन्तान तू छै,
सेली कै सौकाण बिषैल मुलुक।
कां रैंगे च्याला रङीली बैराठ,
कां रैगे व्वथा सेली सौकाण।

मि खै द्यलै व्वथा कस त्यर भाग।
माला मन में फिकर झन ल्हियै।।

वीक ड्बल लूंल इजा रङीली बैराठ,
तब छाजिनी होली रङीली बैराठ।
बावन रूप की राजुली सौक्याण,
बीक ड्वल लूंल इजा रङीली बैराठ।
तस जै छ जब त्यार भाग पार।
जिया धर्मावती राणी मैंण जस बुलांछी।

त्यर ब्या च्याला यैं करी द्यूंलो।
एक नै मानणय राजा मालासाया।।

च्याला अबूझ नगरी बिबूझ राज,
स्वैंण च्याला साँच नैं हुंना।
यो पूस की रात च्याला कस ले भय,
कास-कास स्वैण देखण में आला।
त्यर भाग बुलाणो च्याला फिकर नैं ल्है।
राजा धर मोत्यूं कि अकाव,

रोत्यूण बोत्यूण लगाय राजा मालूसाया ।
रूपसिया च्याला बैराग नै ल्हे हो ।
राज कुठ बोत्यूण भैगे....रे ।

हिय का खापिर आप कोठी खच्चर,
त्वे हुणी न'गछड़ बात भिसभान्त हुँ रय ।
आज बटी च्याला अठां दिन बार,
बमौरी सोमनाथ च्याला उर्यै भल दीनू ।
उर्यै दीनू च्याला बमौरी सोमनाथ हो ।
सोमनाथ कौतिक च्याला रे........ ।।

●

छांटी ज्यूनार आप बत्तीस परकार,
छत्तीस ज्यूनार आप बणूण लगाया ।
रैती पहरी आव बलूँण लगाया,
बमौरी कौतिक उर्यै भल हाल ।।
राजा पहरी आप चौ दिश घुमला,
बमौरी सोमनाथ न्यूंत पड़ी गय हो ।
त्यारा पहरी आप बाट लागी गया,
धन म्यारा भिका बाट लागी रयै ।।

सुण म्यारा जोइया पूरब पश्चिम,
त्वे जाण पढ़ल उत्तर दक्षिण,
न्यूंत करी आयै चार दिस माजा,
अठाँ दिन बार बमौरी सोमनाथा ।।

●

राजा अठां दिन बमौरी कौतिक,
चार दिस जायै चार कूण माजा ।
न्यूंत पड़ी गय बमौरी कौतिक ।
राजा को हुकुम लागी भल रय ।।
राजा मालसायी हुकुम छ बमौरी कौतिक ।
कौतिक आया सब झणी है बेर ।।
द्वियै पहरी गया चार कूण माजा,

कौतिक आयी गय अठां दिन बार।
नयाँ का छैलू मँगाया कड़ैरौ कुणकोली,
बरैरौ का छैलूवा कोस्यां की बान।
राजा माला म्याल उर्यै है।
राजा मालसायी कड़ैरौ कुणकोली ॥

●

न्यूँती कै बुलाया बमौरी कौतिका,
तैं दिन सबै आया बमौरी सोमनाथ।
नौ सिंणी ल्याया फाटीं धरी आया,
आज बटी आया बमौरी कौतिका ॥
आयी भल गया रङीली बैराठ,
धन - धन मालुवा चार दिसों कै राजा।
यो इजू धुमछ यो गैली नङरी।
मालसायी राज बटीण भै गय ॥

●

सोवन को ड्वल काछीण भै गय,
धर्मावती राणी बतीण भै गेछ।
सोर की सोर्यायी आयी कुंमूँ की कुमांयां,
चार दिसों का बान रङीली बैराठ।
जो भल देखियल च्याला बीक रथ काछी ल्यूंलो,
राजा मालूसायी कस कौतिक हैरो - हो ॥
राजा मालूसायी भौड़ी पटांगण,
सुनूं को झम्फान तैंयार है गय।
चार भैं डोल्यार मंगाया बटीण भै गया,
बमौरी सोमनाथ बटीण भै गया,
हाथी मजूंण लाया आमरी पामरी,
देवी कस ड्वल धर्मा बटीण भै गय।
डोली में लागी रया बतीस खांकर हो।
राजा मालसाया सोवन को ड्वल रे ॥
नौ लाख कत्यूर चुवा दल फौज़,

गैला रे नङारा त्यार कैला दमुंवा।
ऊँचा निसाण लाल फरहर,
मार-मार-छाड़ बाट लागी गया ॥

गो पुज सो पुज बमौरी सोमनाथ हो।
राजा मालसायी कौतिक न्है ग्यो रे॥

जाग - जाग आप घुणी लागी रैंछ,
रुपसी माला ऐरो बमौरी कौतिका।
बुढ़ा ज्वाँन आयी रया बमौरी कै म्याला,
कैक भाग कस सब देखी रया।

आप कैक भाग कस छ हो।
राजा मालसाया कै दगड़ी ब्या करंछ हो॥

म्याला हैयी रय बमौरी कौतिका,
धर्मा देवी ड्वल बाट लागी रय।
झलमल कार हैरो बमोरी सोमनाथ,
कस कौतिक हैयी रय राजा मालूसाया।

मीरंया मन ले बाट लागी रय माला॥
बमौरी सोमनाथ घुमणो राजा - रे॥

धर्मा देवी तेरी कसी कूँछ बात,
जै कणी देखलें च्याला राजुली रूप की।
विकणी राणी को रण्यांस सौंपी द्यूंलो।
ड्यार-ड्यार मयेड़ी - च्यल घुमण लागी रया,
राणी को रण्यांस वीकें सौंपी द्योंलो।

त्यार लिजी च्याला बमौरी सोमनाथ,
च्याला राजुली रुपै की जो देखलैं॥

मैंको सवाल राजवंशी च्यल,
भस्तारी हुकम मानी चल ल्हियै।
जस कूणयूं तस तू करियै,
धुणी - धुणी माला घुमण लागी रय।

जो ड्यार भें गयै क्वे मन नि आय।
राजा मालसायी मन नि आय हो॥

मालूसायी सुण प्यारा पोथिला,
बरँरौ छैलूवा कड़ँरौ कुणकुलो।
क्वे लकी लुनली च्याला राजुली रुपँ की।
कास-कास बान च्याला वमौरी कौतिका।

रंगीली बैराठ की राणी बणँ द्यूंलो।
राजा मालसायी भि खे द्यलै॥

तीन दिन है गयी तीन लकी रात,
घुमनै रँ गया द्वि मायी च्याला।
तीसार दिन आप कसी कूंछ बात,
घुमनैं फिरनैं आप आपण ड्यारा।

राजा मालसायी को मन नि आय।
कसो बात कूणो राजा मालुवा॥

इजा एक बात कूँलो जब मानी जाली,
त्यर हुकम मिले मन्जूर कुरछ इजा।
सवै देखी सुणी हाला क्वे मन नि आय,
उसी सुरत की इजा क्वे लकी नि भयी।
राजुली रुपँ की क्वे लकी नैं हाँती॥

उसी रुपसी इजा क्वे न्है यो कौतिक में हो।
कसी विद्रया भार राजुली सौक्याण॥

मेरी इजू आप कि कर कूणँछै,
कैक फाँगुण थसूं क्वे मन नि आय।
कैक फांगुण थसूं पाप लगि जाल,
कैकी बर्यात लि जानूं रंगीली बैराठ॥

कैकि बर्यात लि जा क्वे मन नि आय।
राजा मालसायी कसी कूणो बात हो।

दिल हैगो उदास इजा घर नसी जानूं,
अधिल इजू को ड्वल पछिल बाट लागी रय।
भिड़ी पटांगण त्यर ड्वल बिसैं हाल,
पूरब झरौख आप बैठाक है रय।

मयेड़ी मन इजा दुख हैयी गय माला,
राजा मालसायी दिल हैगो उदास रे ।।

●

च्याला मुख चाँछी मण-मण नेत्तर,
मिल मैंको निल काव मैंको काव ।
आप म्यारा माला वार हार सभा,
जाव रे कत्यूरो आपण घर जावो ।

आज बटी आप बमौं सैंण रै गय,
त्यार ख्वार सनेश्वर घुमणो हो ।
पुरब झरोख खोयी कै दरौज,
सुनू की सिरानी रूप की पयांन ।।

चार कूण माज पानस जागियाँ,
आपण ख्वर फोड़णो राजा मालूसायी,
सेली सौकाण रँगे राजुली सौक्याण,
बैराठ रै गय राजा मालूसायी ।।

राजा मालूसायी हथङ्यी पाणी छोड़णो,
उदेख ल्हिणो आप उदेख बैराग हो ।
बिना राजुली आप कैं मन नैं लागन,
दिन - दिन उदास राजा मालूसायी ।।

●

राजा मालूसायी आप उदेख लागी रय,
कसी कै लूँल कूँछै राजुली सौक्याण ।
एकै नैं मानन आब राजा मालूसायी,
ज्यू जरूर जूँल आब सेली सौकाण ।

राजा मालसायी एकै नै मानणय ।
तेरी बैराठ बांज रै जाली राजा रे ।

माता धर्मावती रौल्यूणे बोल्यूणे,
मानी जो च्याला आप बात मानी जालै ।
उदासी मुलुक च्याला तू कसिकै जालै,
मि मस्तारी भयूं आप मानी जालै ।।

मेरी वात प्वथा तू मानी ल्हियै ।।
राजा मान्लसायी येके नै मानन हो ।।

कसी कै नि मानै माला मयेड़ी की बात,
ज्यू जरूर जूंल कूँछै वी सेली सौकाण ।
तेरी अकल पड़ी गेछ छन दिनों भी रात,
मयेड़ी हुकम लागो मालू महल में वन्द ।
माता धर्मावती पहर धरणे ।
महल में राजा मालूसायी वन्द दणै हैछ ।

सात दरौज में धरा कुकुरा पहर....।
मालसायी पहर लगै हो....।।

चैत की कैरुवा जसी बढ़ण भै गेछ,
पूस की पालङा जसी ओ छोरी राजुली ।
राजन् की मुयी जनमी देबातों की धना,
ओ छोरी राजुली ऐसी जनमी रैछ ।।

आप जै ऐ गय भङाल जोभन,
सुनपती सौक मङजगी करंछ ।
वी कंकरी देश तेरी मङजगी है रैछ,
झिलमिल हुणियां वी कंकरी देश ।।

गाँऊँली सौक्याण का घुन भें भौ गेछ,
पुछण भै गेछ आप राजुली सौक्याण ।
बलैहारी ल्यूंलो आप मेरी इजू गाऊँली,
दिसन में दिस इजा को दिस ठुली ।।

धाम न में धाम इजा को धाम ठुलो,
नाज न में इजा को नाज रे बड़ो ।
तीरथ में तीरथ को तीरथ ठुलो,
राजन् में राजा को राजा ठुलो ।।

गाऊँली सौकिया कौली सुण मेरी राजुली,
दीसन में दिस इजा पूरीवा दीस ठुली ।
जयी दिसा बटी ऊँनी चेली सूरज भगवान,

फूलन में फूल चेली कमल को फूल ।
नाजन में नाज चेली जों तिल डुला,
धामन में धाम चेली गैली हरीद्वार ।
देसन में देस चेली रङीली बैराठ,
राजन में राजा राजा मालूसायी ।।

यो राजुली मुयै भौते खुशी है गेछ,
यो छोरी राजुली पुछण बैठी गेछ ।
जै दिन जांछी बौज्यू तली हरी माव,
कई बाटा जाँछियां तली हरी माव ।।

गाऊँली सौक्याण कूँछ सुण चेली राजुली,
बेरी माँगणी हैरे पोथी गैल हुणदेश ।
राजा बिखेपाल च्यल चनरी बिखेपाल,
त्यार ब्या का ढूँन ककरों के देस ।।

अती को मरण ह्वल ज्वानी को विनास,
बतै दे इजू मैंके बैराठ को बाट ।
मिले जायी ऊँल यो बाँकी बैराठ,
बैराठ को ध्वाक लागी भल रय ।।

आज जायी ऊँल बैराठ कै राज,
आज जूँल बैराठ भ्वल आयी जूँलो ।
सुण मेरी चेली बैराठ कै राज,
कसिकै तू जाली चेली रङीली बैराठ ।।

त्यार ले ह्वला चेली जाग-जाग बैरी,
त्यार ले ह्वला चेली जाग-जाग दुरामण ।
सुण हो भगवान अधोराती माजा,
यास है रयी बात हि मायी चेलिया ।।

सुण हो मेरी इजू बैराठ को बाट,
बैराठ को बाट गिरेछिन बाटा ।
कत्यूरों को बाट चेली मोरिया सिमव,
मोरिया सिमव कत्यूरों कै बाट ।।

अधोराती बीच न्हैगे नौं लाख वगीच,
चार छोरिया आया त्यार मुख तीर ।
स्वैंण न्हैंती साँचा राजुली बगड़ न्हैंती मांछा,
छोड़ी दे बौंणी तू इनों बातों को अन्त ।

त्यारा बोज्यू जै रयीं कंकर कै देश,
त्यार व्या का दू'न कंकर कै देस ।
यास राजा छन बाँजा कसा हाड़ा,
बाँज कसा हाड़ छन बाँज कस मु'न ॥

लम-खम हुणिया यो कंकरी कै देस,
देखी आली राजुली कंकरों कै देस ।
काम कास राजा छन कंकरों कै देस,
सुण मेरी राजुली मन नैं बुझींन ॥

सुणो मेरी बौंणियो तस कि बुलाँछा,
जस लेक ह्वल बैराठ कों राजा ।
देखी भल ऊंलो देवों कसी मूरत,
देवों कसी मूरत राजा मालूसायी ॥

चुड़ुक उठली इजू मुख तीर,
राजुली सौक्याण इजू मुख तीर ।
सुण मेरी चेली एकै नैं मानंनी,
चितर शिला धरम इजा ख्याल आयी गय ॥

सुनपती सौक जैरो चेली मञ्जगी,
आप पुजी रय बी कंकरी देस ।
क्वे बतूनी चेली खौटी क्वे वतूनी मैती,
जब भयी चेली खोटी तब आया एती ॥

या तौ होली डूनी कांणी या तौ होली कुकड़ी,
या तौ होली लाटी-टोली, या अरैल जीबड़ी ।
सब जागा बटी सौक निरास है गयो,
आखिरी बखत आप नगर कोट गयो ।

आप देखी हालो भागी हुणियां, रूद्वा,

रुप वीक यस बान, सड़ियाँ कदुवा ।
कन्या को मि बाब भयूं सुनपत कौलो,
मन - मन रुदू हुणी, पुरी जसो पाकलो ।।
गजिगानो खोर वीको, झुपुरी जसा बाल,
ग्वाँण कसी, छाला जैकी, भेलछ कपाल ।

ह्वाका जसो नाक जैको च्यौ कसा कान,
मुख छ उड्यार वीको बाँज रुखा आङ ।
कसी जसा नङा वीका, कलपरिया पेट ।
खुटा वीका सेरा छन, अस्याली को रेट ।
हाथ वीका यास छन, घटा का फितड़ा ।
आंखों माजी लागी छन, पोर्स खाता गिदाड़ा ।

पैंली हमीं मूंन देखूंला, फिरी ह्वली बात ।
छन आँखों कसी कनूँ, आपण घर रात ।
राजुला कैं देखी बेर, लागी गे रिङ-ाई ।
काँस भुड़ा जागी रैंछ, चैतिया निङाई ।।

□

बन्द हैगो मालू राजा, करंछ बिलाप ।
कसी कैं यो होलोहरी, राजुला मिलाप ।
तेरा देश पड़ो सुवा, धुंन भरी बरफ ।
पंछी हुन्यूं उड़ीं उन्यूं, मि तेरी तरफ ।
गंगा होली मिलैं देली, नती कूंलो रौड़ो ।
तू हयै हिसालू तोपी मैं उड़न्या चड़ो ।
चित्रशिला समझण करी, राजुला को ध्यान ।
पड़ी गेछ टोल आप, रयी ग्योछ म्यान ।
उड़ी गोछ हंस तब, बड़ो गे घुगुती ।
राजुली कारण आप, उड़ी गे घुगुती ।।

□

पंचरंगी घघुत, उड़ना बै गयो ।
हीमाल हीं उड़ान, भरण बै गयो ।
उड़ना उड़ना आयो, बिनसर हो ।
बिनसर हान माज, कफुवा फूलो ।

कफुवा को फूल, टीपण भैंगो ।
रङीली घुगुनी मुख, कफुवा फूलो ।
आफूँ नानो नानो पंछी, कफुवा ठुलो ।।

उना उना आयो पंछी, सतराली पुजो ।
आप देखी गोछ भागी, कत्यूरो सेरो ।
गोमती किनार आप, उड़ना बै गयो ।
रात दिन उड़ो पंछी, राजुला खोज ।
भूख ले आनड़ी सूखी, घुगुती सिपौ ।
उनौला ले आंखी झूमी, उड़नै भयो ।
जब देखूँ राजुला, तब होली भूख ।।

जंगल का बाट जालै, नि देखनै रुख ।
तिरबेणी में खुट ध्वैले सुणींयै शिब ।
जब देखूं राजुलता, पुजूंलो देब ।
बागनाथ मन्दिर में, चढ़ाल्वे फूल ।
तती वटी उड़ी गयो, कफुवा कोट ।
सौक्याड़ा में जायी बेर भी काफल खाले ।।

जाना-जाना पुजी गयो, काल मुनी डानो ।
इजू की बात मालू, एकै नी मानो ।।

●

काला मुंनी धुरा, बुरुंसी फुली रै ।
मैं कै हीं टीपूँ फूल मेरी राजू हरै गै ।
स्वीणा में मिली छ, भोट में बसी रै ।
पंछी बणी आयूँ, भतर लुकी रै ।
त्वे बिना राजुला, मेरि आंखी सुकी रै ।
त्वे देखणा आयूं, पराणी भुकी रै ।
ऊंचा धुरा नन्दा, धुङुटी पड़ी रै ।
उड़ना-उड़ना मेरी, तड़ी ले रयी गै ।

हिमाल की हवा, क्या मीठी लागी रै ।
कै धुरा हों राजू, तेरी डीठी लागी रै ।
राजू का शोर मा, हवा ले मिली रै ।
सौक्यूड़ा बगीचा, मेरी राजू खिली रै ।

मुनस्यारी का डाना, घुगुती पुजी गै ।
तौं देस में पूजी, तेरी प्यास बुझी गै ।।

●

राजुला कान घघुती बोली, रुमा झुमा ।
यो राजुला बोलण लागी, रुमा-झुमा ।
पारा भीड़ा यो घुघुती वासी, रुमा-झुमा ।
मेरो हिया भरी उँछ भागी, रुमा-झुमा ।
कसी कुरकुरी लगैंछ पोथी रुमा-झुमा ।
तेरी वाणी कसी मिठी लागी, रुमा-झुमा ।
तै डाना भैं कफू बाँसो, रुमा-झुमा ।
तई डाना सिङौड़ी बांसी, रुमा-झुमा ।
तै पातला निनौई बांसी, रुमा-झुमा ।
तई जागा हेल्सू लो बासो, रुमा-झुमा ।
हेलसु कै मेरा बाबू ले सुणो, रुमा-झुमा ।
ऊँले उसो कूण लाग्या भागी, रुमा-झुमा ।
तेरी-बाणी कल्जो खाँछी भागी, रुमा-झुमा ।
तसी बाणी कसो रुप होलो, रुमा-झुमा ।
मि दुखिया दुख पड़ी गया, रुमा-झुमा ।
तू वोलूँण कैकें ऐछै भागी, रुमा-झुमा ।
पाताल है नजीक ऐजा. रुमा-झुमा ।
मि खऊँल त्वेकै दई भात, रुमा-झुमा ।
म्यारा महल नजीक रौली, रुमा-झुमा ।
मि लगूंलो घण-बोट भागी, रुमा-झुमा ।
तू ले दुखी-मैले दुखिया, रुमा-झुमा ।
आपण दुख सुणूंला भागी, रुमा-झुमा ।
राजुला की बात सुणी हाली, रुमा-झुमा ।
डरै-डर आयो गों का बीच, रुमा-झुमा ।
ताड़ैं-रौंछ कुर कुरै लैंछ....रुमा-झुमा ।

●

एनी बासो घुगुती को रू-३म झूम ।
मेरी इजू सुणली हो रू-३म झूम ।

पारा द्यारा का बोटा मुणी,
कि चाने दी घघुती पगे३लो ।
तेरी दासा देखी लागी जांछ,
दुखी रैंछे घुगुती परा३णी ।
मेरी इजू सुणाली तेरा बाणी,
भारी देली त्वे दुखी परा३णी ।
ए नी बासो घुगुती........ ।

सबै चड़ी खानीं और उड़नी,
तू पगली सदा तसी रौं३छैं ।
म्यारा घर उड़ी आई जानी,
छाज साथी धर्‌यो चार खा३नीं ।
तू न फेर गौं का भैर-भैर,
कीलै तसी बणीछै परा३णी ।।
एनी बासो घुगती........ ।

मैंले पड़्या बाल काल दुख,
तैंले चाँछै बेलाइयां रू३ख ।
तेरो मेरो साथ हैयी जाल,
कैका ख्वारा टोटो को पुर्या३लो ।
तू पंछीं उड़ले संसारा,
मेरो साथी हुनलो कै द्वा३रा ।
ए नी बासो घुगुती........ ।

तू उदासी झन लगै दिये,
मेरो मालू काँछ तू बतै दि३यैं ।
काटी खाँछ भागी गाड़ को सुसाट
छेड़ी खाँछ भागी तेरी बाँ३णी ।
मेरो स्वामी कैं मुलुको ह्वोलो,
याँ पड़ी हूँ मैं वीकी परा३णी ।
ए नी बासो घुगुती रू३म झूम.
मेरी इजू सुणली रू३म झूम ।

राजुला की बात बैठी गैछ,
पंचरंगी घुघुती कलज मा।
यो घुघुती फाँख पसारी आयो,
राजुला का चुला का छाजा मा।
पंच रंगी घुघुती बैठी गो,
राजुला की दन्यारी ओट मा।
रङीली घुघुती देखी बेर,
राजुला को ध्यान घुघुती मा।

●

पंच रंगी घुघुती कसो ला,
चैल म्हैण भडेरी फूल जसो ला।
ततू भलो रूप-रंग तेरो,
कतु भलो मुलुक तेरो ला।
कतु रंगीलो छ गात,
हिमाली में राती को परभात।।

●

पंचरंगी घुघुत उड़ो, राजुला की गोद,
महल में बैठी रैछ, दिया कसी जोत।
घघुत बोलाण लागो, मनख की बोली।
तेरी मेरी जोड़ी राजू, कसी भली होली।
हियै झणी बात भयी, हंसी हैरे खुसी।
बात रे फसक भया, बोल रे करार।
न्है गयो घुघुत आब, बैराठ कैं देस।
मालू नींन टूटी गयी, कैंदी राजा भेस।।

●

सुण मेरी पोथिला, ल्यूंलो बलिहारी,
किलै की पुछछै चेली कि उदेख लागो।
मैंकैं बतै देली कि उदेख लागो।
मन को धौंकार मैंथे कई देली।।
सुण मेरी इजू कूंछ राजूली सौक्याण।
ल्यूंलो बलिहारी सुण हो मेरी इजू।

म्यारा बौज्यू इजू सुनपती सौक,
मिकणी बेबाला इजू वी कंकरी देस ।

कसा कै जू ल इजू वी कंकरी देस,
कसी कै रूलो इजू वी कंकरी देस,
झिलमिल हुणिया वी कंकरी देस,
उदासी लागली इजू वी कंकरी देस ।

ऊ उदासी मुलुक इजू जनम नै जान्यू,
इजा म्यर छ्वाक लागी रय बैराठ कै देस,
म्यर ब्या हैयी जाल कंकरी कै देस,
काँ बटी देखूंल इजू बैराठ को मूख ।।

मालसायी को छ्वाक इजा लागी भल रय,
मिकणी जाण देली इजू रङीली बैराठ ।
कां बटी देखूंल इजू मालसायी मूख,
म्यर ब्या ह्वैयी जाल कंकरी देस.

मिकणी बतैं देली इजू बैराठ को बाट,
मिले जायी ऊंलो रङीली बैराठ ।
राजुली सौक्याण भगवान मानण नै रयी,
बतूण पड़छ त्वीकैं बैराठ को बाट ।

सुण मेरी पोथी कूंछी गाँऊंली सौक्याण,
मि त्वीकें बतूं चेली बैराठ को बाट,
यां बटी को बाट चेलो मली मुनस्यार,
तती को बाट चेली तली मुनस्यारा ।।

तती बटी बाज तेजम-भैंभरवाल,
तती बटी बाट चेली थल बेणीनाग ।
तटी बटी को बाट कान कालसिण,
ताँ बटी को बाटा बागेसरा माजा ।

तती बटी पार बटी चेली रङीली बैराठ,
बागेसरा बटी चेली रङीली बैराठ ।
सुण मेरी इजू ल्यूंलो बलिहारी,
मिले जायी ऊँल रङीली बैराठ ।।

बैराठ को बाट जाँछ गिरेछिन बाटा,
जा मेरी चेली चिहेड़ी जतन ।
आज जायै बैराठ ध्वल आयौ जायै,
त्यर बौज्यू सुणल मिकणी मारी द्यल ।।

सुण मेरी चेली तू भलिकै जायै,
भलिकै जायै चेली आपण जतन ।
चड़ी भल जांछी आप सौकिया हठ,
यो सौकिया हठ राजुली सौक्याण ।।

●

हा दाथुल की धार,
दाथुल की धार,
मिहुणी झुटी झन ल्यायै भ्वल सूरी बार ।
हा तितुरी का पांजा,
निझायी का साँचा,
राजुलि सौक्याण न्हैगे यो तिपुरी कै छाजा
हा अलीगढ़ बाया,
ढिकुली का ढाया,
त्वीले कपाड़ आपण गात लगाया ।।

●

धन मेरी राजुली पैरण लगायो,
पैरण लगायो नौ सौ के जिवर ।
पैरण लगायो त्वीले आङ को घगिया,
हियन को हार बिंदियन को डावा ।।

●

राजुली सौक्याण बटीण भै गेछ,
लाहुर की जड़ी धरी काँकुर बिदिया ।
बोकसाड़ी बिदिया त्वीले गाढ़ण लगायी,
गाढ़ण लगायी त्वीले हौल सारी तुमड़ी ।

आज राजुलि सौक्याण बटीण भै गेछ हो ।
राजुली मुयेड़ी मि खै ढेली वे ।।

बावन बिदिया धरी राजुली सौक्याण,
इजू मुख तीर राजुली मुएड़ी ।
शिर देली ढोक आप पाया लिल्ही लोट,
मेरी इजू मयेड़ी तू भली है रयै,
मिले जायी ऊँल खीमासारी हाट
मिले जायी ऊँल रङीली बैराठ,

बैराठ ध्वाका इजू लागी भल रय ।
राजुली सौक्याण वटीण भैगे ।

वटीण भै गेछ राजुली सौक्याण.
ताँ बटी ऐ गेछ सेरी कै पयाँन ।
यो घरों की देवी, देबी बैराठ भेटायै ।
तेरी कुल की देवी बैराठ भेटायै ।
त्वीकणी चणूँल देवी सुनूं को छत्तर ।

आज माता वैराठ भेटायै हो ।
राजुली सौक्याण बाट लागी रे ।

घर की देबी नैं बखत माजा,
दरसन लुकाया राजुली सौक्याण ।
कसी हुणी हार हैरे राजुली सौक्याण,
सब जाँछिया तिरियाका हूँन,

तू ले जाणे छै राजुली मरदा हूँन हो ।
राजुली कि हुणी आप त्यर वे ॥

सुण मेरी राजुली स्याप कसी छड़,
बाट लागी रैछै राजुली सौक्यांण ।
ब्याण तारा जसी कैरुवा कसी कांला,
मार-मार छाड़ बाट लागी रैंछै.
पुजी भल गेछै राजुली हुणकिया डाना ।
ताँ बटी ऐ गेछै राजुली चौऊनिया धार ।

चौऊनियां धार राजुली आयी भल गेछ हो.
मैं खै देली राजुली बाट लागी गेछ वे ।

चोऊनियाँ धार छन वाइस बैंणी परी,
धौंस्याल लागी रया धम्मा धौंस्याल ।

नौ बैणी आंचरी छन बाइस बैणी परी,
चाइयै रै गया राजुली सौक्याण ।
एकली पराणी कां हुणी जाणेछै हो ।
तिरिया की जात राजुली कसीकै जाली हो ।

बैस बैणी परी आप रोत्यूनै बोत्यूनै
नि जा - नि जा बैणी यो बाँकी बैराठ ।
डोली की जानेर राजुली पाँया चली रैछ,
राजुली मुयेड़ो पाया चली रैछ हो ।
सुण मेरी राजुली त्यर सोबन को डवल,
सोवन जाणी डोली राजुली सौक्याण,
कस त्यर रूप राजुली कसी छ सुरत ।
बार भै अजीतों कैं ध्वाक लागी रया ।

खुटी पटै जाली हाथ पटै जाली,
सुण मेरी बैणा तू किलैकी जांछी ।
चाहे मरी जूंल मि जानूं बैराठ,
म्यार हाड़ जाला बैणा रङीली बैराठ,
मार मार छाड़ आप बाट लागी रैछ,
जा बैणी राजुली जियड़ी जतन ।
तांक ड्यार हैयी गय घाङुली उड़्यार,
घाङुली उड्यार वास पड़ी गय ।
घाङली उड्यार राजुली थौड़ बैठी रय,
बार-बीसी बाकरा छै बिसी ढाकर हो ।
द्वि भायीनक ज्वड़ ओ सायी सूरिजा,
सायी सूरिजा आप द्वि भायी रमौला ।
सुण मेरी राजुली यो तेरी पछ्याण,
सुनियैं होली चेली राजुली सौक्याण,
कां जाण लागी रैछै तू राजुली बैणी,
त्यर रूप राजुली कैंक सोद लागो ।
द्वि भायी रमौला आप राजुली पुछी लिन्हीं,

ओस की बखत राजुला कां जाण लागी ।
सुणो दाज्यू स्यारा बैराठ जाण रयूं ।
मालसायी कै द्वाका रङीली बैराठ ॥

भल भय राजुली नौल घर बार,
जसी नौली मिले भयूं रमौलों कै घर ।
सुण मेरी बैंणी मेरी कसी हैरे गत,
धार जानी बाकरा गैल जानी ढाकरा ।

मैंले हुल दोणी कृष्ण की बैणा,
दैवों की बैंणी रमौलां कै घर ।
न्है जा बैंणी न्है जा लौटी घर न्है जा,
यो सायी सूरिजा कस ले बुलाँछी ॥

सुण हो मेरी बैंणा जरूर है जूंल,
मालसायी कारण मरण है जाल ।
राजुली सौक्याण एकै नैं मानती,
ओ सायी सूरिजा नैं मानती राजुली ।

सुण मेरी राजुली पराय देस जाण,
पराय देस बैंणी क्वे नैं हुँन आपण,
स्वीकणी दि दिनूं बैणा लाहुर की जड़,
स्यार काम आली यो लाहुर की जड़ ॥

आपण जतन भलिकै करियै,
सारी रात काटी घाङुली उड्यार ।
भ्वल सूरी बार रथ लागी गोय,
स्याप कसी छड़ बाट लागी गैछ ॥

एसी ऐगे राजुली व्याण तारा जसी,
आप ऐगे राजुली मली मुनस्यार,
मली मुनस्यार ऐगे तेजम बजार,
तेजम बजार राजुली घुमण लागी रैछ ॥

बाल दुकान जाँछी पाल दुकान जाँछी,
कैकी होली चेली कैकी तू बौड़ी ।

एकली पराणी तेरी काँ हुणी जाणेछ,
त्यर रूप आज कै दिश लागल ।

●

द रे भद्रयायी को ख्यय,
तस रूप जनम नि भय,
तेजम बजार सौक्याणियों तान लागी रय ।
निमुली को पात,
परसी को खात,
चलण भै गयीं आप स्यैणियों के बात ।
द रे, पकै हाली खीर,
पकै हाली खीर ।
मुवा हुन्यू उड़ी उन्यू त्यार मुख तीर ।
द रे, बजौ हाली बीन,
बजै हाली बीन,
दिन टूटी भूख राजुली रात टूटी नींन ।

●

आज मेरी राजुली बाट लागी गेछ,
ऐसी राजुली सौक्याण रै बाट लै रैछ ।
ऐ गेछ राजुली ताल रे मुनस्यार,
तौ की चलक राजुली मली रे दानपुर ।
मली दानपुर ऐ गेछ तली दानपुर,
तली दानपुर बटी रै बास लागी गैछ ।
आप तेरी खुटी उल्हारी लागी गेछ,
सुण मेरी राजुली ह्वल अषाड़ म्हैंण ।।
अषाढ़ म्हैंण राजुली बाट लागी रैछ ।
सुण मेरी राजुली स्याप कसी छड़ ।
ऐ गेछ राजुली कान धारा माजा,
काना धार ह्वल काना को कासिण ।।
सुणो कासिण देवा बैराठ भेटाया,
सुण म्यार देवा म्यार मैतुवा देव ।
घर ऊँणी वखत चणूँल सुनूं को छत्तर,
ताँ बटी राजुली उल्हार लागी गैछ ।

आप ऐ गैछ राजुली स्यार का मुन्याव,
स्यार का मुन्याव राजुली म्रुटी थकी गेछ।
स्यार का मुन्याव राजुली बैठक है गय,
सुण मेरी राजुली चुड़क्क उठी गैछ।

लली सरू गंग सरग जै रैंछ,
सुणो म्यारा भगवान नि लागन तार।
वार की गंगा पार चड़ी रैंछ।
सुण मेरी राजुली सतजुगी पीपल।

सतजुगी पीपल राजुली बैठाक है रय,
पीपल जाड़ा माज बैठाक है गय।
सुण मेरी बैणा पैलाग-पैलाग,
सरू गंगा बैणी पैलांग-पैलाग।

सुण मेरी बैणा कथ लागो रैछै,
राजुली सौक्याण कथ लागी रैछे।
मैं लकी जाण रयूं रङीली बैराठ।
मालसायी का ध्वाक रङीली बैराठ।

कि हुणी जाण रैछै नौल घर बार।
हमरी सौकाण बैणी बदनाम हैयी जाली।
हमरी सौकाण बैणी नाक काटी जाली,
नैं जा बैणी तू आप रङीली बैराठ।

मिजूंल वैणी रङीली बैराठ,
ज्यूं जरुर जूंलो आप मालसायी कैं ध्वाक।
मिकणी दि दे बैणा पार जाण बाट,
म्यार हाड़ जाल मालसायी नजीक॥

तली की गंगा बैणी तली रुकी गेछ,
मली की गंगा राजुली मली रुकी गेछ।
बीच गंगा माज रिवाड़ पड़ी गय,
राजुली सौक्याण गंग तरी पार॥

●

राजुली ऐसी छाजी रे, फूलियां हजारी कसी हो।

रुडीन की दाड़िमा की फूल, सीमार में फूलियां कीलड़ी ।
भीड़ मा राजुला एसी, कानन में बिजौरी फूल कसी ।
भिया में निनूणी पाती, जंगल किरमड़ फूली हो ।
ऐसी राजुली सौक्याण, गंगा अस्नाण करली हो ।
छुप-छुप नाली राजुली, गंगज्यू कै ढीक हो ।

❁

तिरबेणी अस्नाण कर जल ले भरँछे,
बूड़ा बागनाथ आप जल ले चूंणूलो ।
पूजा की जुगुत धरी मनदीर ऐ गैछ,
बूड़ा बागनाथ आप बैठी भल ग्या ।

हाथ जोड़ी घुना टेकी राजू मुनधी टेकली,
छल-छल आंसू ढाई सौण की बनधार ।
रुँना-रुंना लागी गोछ सास ले एकारो,
इजा को मैतुवा होले म्यर मालकोटी ।।

जै भेख आयी रयूं मिलो जाओ उलै ।
रुंना रुंना आंख भरी आसाड़ी बादल,
जुनाली मुख फोगी गयो रुड़ीन को क्वीड़ो,
हाथन् ले छाती फाड़ी राजू टिपाली फोणछी ।।

कसी जाली राजुली रंगीली बैराठ,
राजुला कै देखी बेर सिब हियभरी आय ।
कूचा को झाड़नो आब राजू बयालो लौ गय,
राजुला तो दुखी भयी सिब तुमी किलै रुँछा ।।

सिव की सकती माज सौंण झुलो गय ।
बुदबुद पाणी उपजो राजू लिगा नजीक ।
तीन लोका स्वामी तुमी कैलासा का पती,
लट्ठा धारी छाल धारी कसी छ यो माया ।

राजुला की आँसु गाड़ रौल ले बगि ग्यो,
हुतरी-कतरी बेर रौल श्यार भाजो ।
राजुला की आँसु धार सिव तिरबेणी समान,
क्वे कूंनी सरसती लोप आज आयी श्यैर ।।

तती बीच शिव खैनी चौथ गंङा आयी,
पांच गंङा एक हैरें, पचसेरा थान।
पांच गंगा एक हैरें पिरिती की माया,
मन्दिरा भीतेर बटो आकास बाणी आयी।

सुण चेली इती जिद मैं लेक रुलायूं,
अलख धुणी जग्यूं छ्यूं जोगी बणी वेर।
मुण्डन की माया पैरी ढुमरू बज्यूं छ्यूं,
छार लगै बैठी रूछ्यूं वाग की छाला।।

एक खुटी नाच कर्छ्यूं तीसर आँख खोली,
तेरी जसी जिध करी खाक हैयी गय।
तिरिया हट ऐसी हुछी ज्यौड़ जसी पैंहुँ,
जली गयी पैंण रैंगे राजू जनमी हिमाल।।
मि पाणें तौ जंगल रयी सुकायो सरीर,
पात खाण ले छाड़ी दिया है गयीं अपत्या।
आँखिर में मिली गयूँ पीरित कारण,
त्यार वर म्यर सौरास हिय भरी आय।।

तू छै छोरी अकलौ की राजुली पिरीत पहाड़,
बाड़-बाड़ा मरी गया भेल छुटी वेर।
मुनयी ले हिरण ह्वल राजू नङ टेकी वेर,
मिलण तौ मिली जाल निभण कठिण।।

पिरीत जो साँची होली राजू मिललो जरूर,
बणीं ठणी नैं हिटण राजू छारो लगै हिट।
तमीं भया निठला जोगी मि किलै जोग्यूं छा,
छारो लगै तवै करँछा संसार को छारो।।

भाल हुना भतर रुँना तीरथाण में थापा,
पैंली मिछैं किलै कूँछीं आप कँछै हँसी।
मिलण को बर दियो भुगतला भौत,
म्यर छार की हंसी करछै छार चुपड़ी आल।।

सि ज्यू वचन सुणी फाटी आयो, हिया,
मुनेई टिपी देखण लागीं निमै गयो दिया।
हाहाकार मचैछ आब राजू को सुणलो तती,

बागनाथ बिखूड़ी गया कि करली आब ।।

झुटा सब देव छन सांचो मालसायी,
आप जाँछू मुलुका बीका राजा मालसायी।
बीका कारण भरी जू लो है जू लो अमर,
सिब की बात सुणी बेर कमर बादँछे ।।

●

बाट लागी गेछ आन राजुली सौक्याण,
बागनाथा थान बटी बाट लागी रैंछै।
चौफुली बजार पीपवा का पेड़,
याद करियै राजुली हाथ बदे फरक।
चौफुली बजार ओ ड़याँ निसाण जसी ।।

इजू कयियां राजुली बाट भुलिगे।
राजुली बाट भुलि गेछै बे ।।

बौं हाथ बाट बैराठ को बताय,
दैंण हाथ को बाट कत्यूरों कै बाट।
चौ दिस नजर भारी बाट भूली गेछ,
बैराठ को बाट भुली ज जाल उरी गय।

राजु ली रिङन पैंतोई तेरी खुटी बाट लागी हो।
आप माल कत्यूर बाट लागी हो ।।

राजु ली तै बखत माल कत्यूरा बाट,
चाल-चुकी गे आप राजु ली बाट भुली गे।
माल कत्यूरा बाट लागो द्याँगण चौंर,
खोई-भौंई रुँनी वाइस भै पर्‌यार।
उनार डर ले मनखा नाम ले पंछी निं ऊंछी,
भात घर खाँनी हाथ गाड़ धवैंनी,
दुदलिया पांम जोती राखो द्यांगण चौंर माजा,
कसी हुणी हार भयी राजु ली सौक्याण।

द्याँगण चौंर में बैस भै पट्यार भै रयीं हो।
जु द्धक् जु-पाँस जोती राखो ।।

राजु ली देवों की धनी राजों की बान,
देबों की मुरत राजु ली सौंस कसी कान।

द्यांगण चौंर आयी जसी छड़िया निसाण,
द्यखो दादा भुलियो बाट को बटोवा ।
तिरिया की जात वीक ठिक-ठाण,
द्यांगण चौंर राजुली ठाड़ बणी रैंछ।
नजर पुजी गे आप बाइस भै पट्यारो,
राजुली ऊण जाण ले बाट छेरी राखो।

राजुली बाट बन्द बणैं राखो हो ।
आप बाइस भायी पटियारों बीच राजुली ।।

एक झलक चायी क्वे तली क्वे मली,
राजुली रूप ले तली, मली छुटा ।
येसो तिरिया ददा भुली जनम नि देखी,
येसी ठांस की तिरिया क्वे लकी नि आय ।
तौंकि फाङुणि थमाव धरनूं खोयी भौंयी माजा,

हमरि पुरब झरौख छाजनि हैं जाली हो ।
खोयों भौंई लि जानूँ हो ।।

पट्यारों कै आप मनसुब लागला,
राजुली सौक्याण आप खुतुक आयी हंसी ।
बाइस भाई पट्यार मनसुब है रया,
मनसुब है रया राजुली उल्हरी गाड़ ।
ओ ददा भुलियो न्हैयी गेछ गाड़,
के धान करनूं के काबा रचनूं ।

ओ दादा भुलियो हमार हाथ है सुचि गैं ।
हिटो भुलियो सेरी का पयांन हो ।।

राजुली देखी हैछ वैस भायी पट्यार,
राजुली मुख गया बाइस भै पट्यार ।
अमरित धरी मुख आप मनिख रूप छ्वड़,
छुपकनैं भै गेछ राजुली चाइयैं रैं गया ।।

आप राजुली घुरड़ी बणी रैंछ हो ।
राजुली घुरड़ी रूप धरी है सेरी पयांन ।।

पटियारौं तुमन कणी कसी कुमुती आयी,

तुमरी येसी हुणी हार बैस भै पट्यार ।
घुरड़ी बणी रैछ सेरी घुमण रैछ,
खोई भौंई का सेरी फटक मारण रैछ,
चार खुटा धपैल आप कपाव विनैल,
कदु बुट्न दार आप ओ ददा भुलीयो ।
स्यार में घुरड़ ऐग्यो के धान करनू,
कसिकै मारनू आप वे ।।
बाइस जाँठ लुनू आप तैकणी मारनू.
तैकणी मारी बेर ब्याव को शिकार ।
छै म्हैण की साव-जमाव लगायी भलो राखी,
सिकारी अमल लागौ बैस भाई पट्यार ।।
राजुली ख्यात पड़ी गयो वैस भाई पट्यार,
राजुली घुरड़ी कसी रुपवान हैरे हो ।
चर फ्यारा तली गेछ चार फ्यारा मली,
चौ दिश घुमली आप घुरड़ी कै रुप ।
जाँठन की मारा-मार धाड़ा-धाड़,
सुवर जस बणाय आप साव रे जमाव ।
छोगै कसी प्योली सुवा कसी मुखड़ी ।
कस रुप हैरो त्यर राजुली सौकिया हो ।।
घुरड़ी को रुप जाप छोड़ी भल हाल,
घुरड़ी को रुप छ्वड़ मनिख कै रुप ।
हौल तुमड़ी फोड़ी हैछ राजुली सौक्याण ।
दोफरी हैयी रैछ स्योव कणी नींन ।।
खोयी पटियारो दिन में हैगे रात हे ।
राजुला कारण ख्वार फोड़ हैरे ।।
जांठन को स्योव हैरो सेरी बीच माजा,
ऐसी बिद्या की भार आप विष की भार ।
खोयी भोंई बटी मनिख कै रुप,
रिङनी पैंतोई खोयी भौंई बटी ।
अधोराती जसी हैरे आंखै नै देखीणय,
बाट लागी गेछ रैछम-तैछम ।।

सुण मेरी राजुली बाट लागी गेछ,
तां वटी से गेछ द्वारिका का छिना।
द्वारिका छिना वटी खड़ी का खुट्टुका,
बौराठ को बाट इजू खड़ी का खुट्टुका ।।

मली खुटी तेरी तली रड़ी जाँछी,
आप ऐगे राजुली गिरे छिन माजा।
गिरे छिना माज द्वार जसा खुली गया,
आप ऐगे राजुली आगरा का पाणी ।।

आगरा का पाणी राजू द्वार जसा खुली रया,
मट्टी को मरजण करण लगायो,
सिरों का बाच छटकूँण लगाया,
आगरा पाणी माज चनुंवा राङ।

त्यार बाबो ले राङ बादी गय,
धन वे राजुली बाट लागी गैछै।
मार-मार छाड़ आप बाट लागी गैछे,
त्यर सुर लागी रय रङीली बैराठ ।।

सुण मेरी राजुली आज आयी भल गेछै,
ब्याण तारा जसी राजुली बाट लागी रैछे।
कैरु कसी कांता होली झिप कसी सिकड़ा,
त्यार रूप देखी राजुली सुरज मद्यम ।।

देबों की धनी ह्वली पैगोंकी काव,
सोहनी सुरत वे राजुली देबी की मुरत।
गैला हुणदेश राजुली छोड़ी भल ऐछै।
विषैल मुलुक राजुली छोड़ी भल ऐछै ।।

तू लकी जाण रैछै राजुली सैंणी रे बैराठ,
बाट लागी रैछै वे रङीली बैराठ।
रैंणी सैंणी बैराठ आज हरी नारायण,
की बैराठ रुँनो रे सोल सौ कत्यूरा ।।

नौ लाख कन्तापुरी रुँनो सोल सौ कत्यूर,
सुण मेरी राजुली बे हिरदों की बात।

रात देखिछै हौर राजुली दिन देखिछै हौर,
यो बाँकी बैराठ राजुली ध्वाक लागी रय ।

आगरा पाणी राजुली बैठाक है रय,
आगरा पाणी बटी राजुली स्याप कसी छड़ ।
मैले जाणछ कूँछी रङीली बैराठ,
उरोण सूरिजा को रथ लागी गैछ ।।

ऊँनै ऊँनै ऐ गेछै राजुली चौड़फाट माजा,
चौड़-फाट माज राजुली पुजी भल रैछ ।
चौड़े-फाट माज ह्वला गुरु रे महादेबा,
गुरु रे महादेबा हो चौड़-फाट माजा ।।

जदुक मन्दीर छन हाथ ले जोणछै,
मिकणी देवातो बैराठ भेटाया ।
पुलतरी बार ऐगे राजुली सौक्याण,
घुल तरी बार कस देखण आय ।।

बैस भाई गनां राजुली बैठी भल रया,
बैस भाई गनां राजुली घाम ताप लागी रया ।
बैस भाई गनाँ त्वीले देखी भल-ह्वला,
के कूण नि ऊँन आप राजुली सौक्याण ।।

बेरेरौ में रुँनी आप मनस्यारी का गनां,
घाम ताप लागी रया हरी रे नारायणा ।
दूद कसी जूँन राजुली ठाड़ हैयी गेछ,
यो तेरी पराणी राजुली डरी भल गेछ ।।

बैस भाई गनावो ले राजुली देखी हैछ,
राजुली देखी बेर गान फौयूँण भै गया ।
बैस भाई गनाँवों ले थमायी फाङ्गुणी,
सुण वे रुपसी कथ जाण रैछै ।।

कमर तेरी राजुली लचक पड़ी गेछ ।।
कमर धसक वे पड़ी भल गेछ ।।
के धान करनूं आप के कात्र स्वनूं,
एक बात कूंल जब मानी जाला ।।

तुमरी सुरत आप विगड़ी भल रैंछ,
मुवा कसी खापड़ी मैंण जस बुलांछी।
कसी कूंछै बात के काव रचंछैं
राजुली सौक्याण आप मनमुव है रयर।

❁

बैंस भाई गनां आप झगड़ हैं गय,
एक कूणो मि एक कूणो मि,
बाइस भाई गनां क्वे मि क्वे मि,
राजुली सुणी रैंछ तनरी ले बाँणी।
राजुली सौक्याण कस बोल छोणछी,
एक अकल बतूंलों जब मानौ जाला।
तुमर झगड़ मिटी ले जाल,

महरों राजुली मुख तीर कान लगाला।
कौरे रुपसी आपण बयान कौ— ॥

तसी कै महरो झगड़ नि करो,
सेली सौकाण बटौ तुमार ले ध्वाक।
यसा च्याला भया ध्वाक लागो रय,
तुमी जैक कौला बीक घर जूंल,
तौ आपण गानन् जो पैलो काटल,
वीक घर आयी भल जूंल।
ओ ददा भुली भली कौछ बात,
बैस भाई गनां खुकुरी लै गया।

राजुली खुत-खुत हंसणे-हो,
गनां का लछ्यण देखणे वे।

राजुली सौक्याण खुत-खुत हंसणे,
अलबलानें मि जै अधिल हैयी रैंछ।
कारण लगाया तुमी ले आपण गांन,
बाइस भायों ले आपण गान काटी हाला।

साङुड़ी घाट यसी हुण-हार हैगे हो।
बैस भाई धरती पड़ी गया वे।

राजुली सौक्याण आप के कूण निऊँन,
रकतों की गंगा, लागी भल गेछ।
चुड़क उठछी राजुली रँछम तँछम,
बाट लागी रँछ रुपसी राजुली,

ओ राजुली न्हैं गेछ विधूण छिन माजा हो।
बिधूण छिन में बैठाक ल्हि हाल वे ॥

राजुली निर्भय है रँछ विधूण छिन माजा,
अचार अभार बोरे राजुली सौक्याण।
धाड़ लूट करनी अचार अभार बोरे,
भली तिरिया हिटण नैं दिन।
बाटा बटोबा हिरण नैं दिना,
झिल चिचनी लागण नैं दिना।

ओ बौरो सिरीखेत तुमरि रोपाई हैरे।
नट्‌वा हुणकी बाजणे वे ॥

अछिल हिरनी आप पछिल हिरनी,
बार-बीसी रोपार आप नौ बीसी तोपार।
छ यिया बल्द जोती रयीं सिरीखेत माजा,
एक घड़ी रोपै देखी बाट लागी गैछै।
विधूण छिन बटी देखी हैछ अचार बौरों ले,
ओ ददा भुलियों यो चाल जँ कि चमकी।
कस बटाब ऊणो बिधूण छिन बटी,
कि करनू आप रोपाई-तोपाई ले।

आग लागि जौ यो रोपाई हो।
चौबरी में ठाड़ है गया ॥

●

अचार मरद रे चौबरिया माजा,
ऐ गेछ राजुली घेरण भैं गेछा हो।
घ्यर हाली देछ, चौबरिया माजा,
बाट रोकी हैछ, ठाड़ बणी रया हो।

पुछन न्हैतिन पुछन न्हैतिन,
तैकणी लि जानू पुरब झरोख।
लैका बदन पर ददा तार जसा लागियाँ.
कस चमकण रय तैक रे आङ हो।

धन रे राजुला सौकिया सुणी रे रैछ,
बौरों के लच्छयण मनसुब लागी गया हो।
धन वे राजुला पकड़ण लगायी,
पकणूँल जैं कुँछिया रूप बदलेण हो।

रूप बदल त्वीले मनिख कै रूप,
धरण भँगेछ पुतयी कै रूप हो।
फुरुक उड़णि सरग उड़ी गयी,
फय्या कैं बौर सरग नजर हो।

तिरिया चरचर देखियै रै गया,
बौरी देखियैं रै गया राजुली न्है गेछ।
रिङनी पैंतोई न्हैयी भल गेछ,
जागिया पानस झुपुल चौर भै गेछ हो।

झुपुल चौर छोरी सिलड़ी कै स्योव,
सिलङी चौरड़ी बैठक है गय हो।
दोफरी को धाम लैरो जिलमिल धाम,
हिवाल की चड़ी झुपुल चौर माजा हो।

●

झुपुल चौर में नौ सौ जिवर खोलण लगायो,
पिठीनाक् इदारा खोला कानन का तङाल।
कानों कौ झुप-झुपी खोली हियन को हार,
हाव खाण लागी रैछ झुपुल चौर माजा।
व्याखुली बखत क्या हाव चली रैछ।
सिर को पयाँन पैरो पिठीनाक् इजारा।
व्याखुली बखत बाट लागी गैछ,
कानों की झुपझुपी भुली भल गेछ।

झुपझुपी झुपल चौर भुली गे हो।
तब तैं नागनाम झुपल चौर वे।।

●

राजुली सौक्याण आप बाट लागी गेछ,
मार-मार छाड़ बाट लागी रयी हो ।
दोफरी को घाम राजुली स्योव बैठी गेछ,
पाणी की तीसान हेरै भूक-झुकान ।
म्यर कस लागिया कस हैरो तकदीर,
आपण मन ले आयूं यो बाँकी बैराठ,
जाग-जाग हैयी रया म्यार लकी वैरी,
आजी कसी देखण मन में सोचं छै ।
कहैड़ी कै कोट राजुली पुजी भल गेछ,
हरुवा कहैड़ कहैड़ी कोट माजा ।
हरुवा कहैड़ा का सात छन च्याला ,
सात छन च्याला त्यार चौद ब्वारिया ।
सुण म्यारा च्यालो यो बिरध काल,
आंख्र छेड़ी बेर तू चुयी ले बादंछे ।
गालों का झटक नहर वादंछै,
पुठ पर ह्वल त्यारा सौ मण पट्यल ।।
दाड़िम को बुढ़ छिनौड़ी को छाल,
छाती में त्यारा मिरग दौड़ला ।
हरुवा कैड़ कूंछ म्यर ब्या करी द्याला,
सुण च्यालो म्यर ब्या करी दिया ।
सुणो बौज्यू तुमी यो बिरध काल,
जम-लोक को बाटो आयी भल रय ।
यो बिरध काल बोज्यू को द्यल चेली,
मणी अखत कसी बात कौला ।
हरुवा कैड़ आप हाथ नि सार्न,
हाथ नि सारन आप मुख नि बुलान ।
एक बात कूलो च्यालो जब मानी जाला,
मिकड़ी धरी दियो तुमी बीच बाट माजा ।
आपण ब्या च्यालो आफी करी ल्यूंलो,
सात च्यालों ले हरुवा साङ ले बादछ ।
जगणी करी बेर बांज कस हड़,
बांज कस हड़ हरुवा बाट लगै हैछ ।।

चौद व्वारिया जै रया दूणगिरी के डाणा,
दुणगिरी कै डाण जै रयी पालुरी कै घास ।
देखी भल रयी कहैड़ो कै कोट,
ओ दीदी बैणियो हमार सौर मरी गया ।
हिटो नसी जानू आप कहैड़ी कै कोट,
चौद व्वारिया डाड़ मारणें घर आया ।
भतर देखनें आप बूढ़ा का खातड़ा,
बुढ़ हरुवा तनों ले सुमरण लगाया ।।
तली बै भतर तनों ले धँनल लगायो,
गायों को गौत तनो ले छिड़कण लगायो ।
बुढ़ा का खातड़ा यो चौबटी माजा,
चौवटिया माज आग लगै हैछ हो ।
सुण स्यारा बुढ़ा व्वारियो नायी भल हैछ,
नायी धोयी वेर हिकुरी-हिकुरी ।
बुढ़ ठौर खाली हैरे डाड मारण लै रया,
सात स्याला हरुवा घर आयी गया ।
सुणो स्यौंणियो भतर कसै लिपछ,
सुणो सौरज्यू मरी गया तब लिय,
खातड़ बुढ़ा का आग लगै हाला.
सात च्याला हरुवा के कूण लि आय।
हमार वौज्यू राणियों क्या करण गया,
बीच बाट माज धरी हमी आया ।
हरुवा व्वारिया सोच पड़ी गया,
के कूण नि ऊँन कि भय यस ।।
आज पुजी रैंछ राजुली सौक्याण,
कहैड़ी कै कोट राजुली सौक्याण ।
बीच बाट भैरो हरुवा कहैड़,
त्यर भाग आज जन्जाल उरी रय ।।

●

दरे झुड़री को बोट,
झुड़री को बोट ।
राजुली जै रे आज कहैड़ी कोट ।।

बाकरी की बसी,
बाकरी की बसी,
कहैड़ी कोट राजुली ब्याण तारा जसी ॥
फोड़ी हाला गाटा ।
फोड़ी हाला गाटा ।
बटावो का बाट खाका घटावों क घटा ॥
भद्यायी को खय,
लागुलिया लय ।
बीच बाट हुरुवा लम्ब बणी रय ।
भद्यायी को खय, लगुलिया लय ।
राजुली सोक्याण शणी झसक है गय ।

●

कहैड़ी कोट माज हुरुवा कँड़,
बीच बाटा माटा माज लम्ब, हैयी रय ।
कँले खेड़ी दियै बीच बाट माजा,
मरी बेर सिपो बाट में खेड़ी दियै ।
झसक मारियाँ राजुली ठाड़ हैयी गेछ,
झसक कारण राजुली के कूण नि ऊँन ।
देखण लागी रयै आप ब्याण तारा जसो,
झिप कसी सिकड़ा कैरु कसी कांती ॥
आज आयी गोछ म्यर ज्वड़ लेक,
यो बिरध काल कस ज्वड़ है रय ।
मि यैक मन ऊँल जाली खुटाणी बाटा,
मि मन ऐ जूँल खुटन का बाटा ।
यो लकी बूड़ा त्यारा न्हांतिन च्याला,
बीच बाट क्यै खेड़ी दियै ।
तू लकी ह्वलै म्यार बौज्यू समान,
सिरान का बाट स्वीले छोड़ी हैछ ॥
खुटाणी का बाट न्हैयी भल गेछ,
चुड़क उठल ठाड़ हैयी गय ।
येसी मती आयी यो बिरधकाल,
यो हुरुवा आप चुड़क उठछ ॥

राजुली को हाथ रवीले थमूण लगायो,
सुण मेरी रूपसा यो त्यारा कारण ।
त्यार कारण पड़ी म्यू बीच बाट माजा,
आज आयी गेछै धन म्यर भाग ।।

आज मिली गेछ तेरी मेरी जोड़ी,
रवीकणी लि जांनू कहैड़ी कोट माजा ।
कहैड़ी कोट म्यारा सात छन च्याला,
चौद छन ब्वारिया नाती-प्वथा छन ।

तिपुरी महल म्यर गायी को गोठाण,
तिपुरी महल में पूरवी झरौख ।
तू लै भै रौली म्यारा तिपुरो झरौख-
मेरी महल कसो छाजनी है जाली ।।

राजुली सौक्याण आप के कूण नि ऊंन,
के धान करनू आप के काव रचनू ।
मन सोची बात मन में धर छी,
मन में सोचली आप के धान करु लो ।

बूढ़ा हरु कँड़ को हाथ छोपूण लगायो,
येसी मारी झटक हरुवा टोटिल है गय ।
टोटिल भय हरुवा घुरकीण भै गय,
हरुवा कँड़ भ्योव घुरी गय ।

सुण म्यारा हरुवा बैकुण्ठ निवास,
यो बिरथ काल भ्योव घुरी गय ।
जास हुँनी करम तसी बुद्दी ऊँछी,
हरुवा पराण उड़ी भल गया ।

स्याप कसीछड़ राजुली न्हैयी गेछ,
कसी रुपसा राजुली बैशाख कसी खाम ।
आप न्हैगे राजुली विन्ता स्यार माजा,
बिना स्यार न्हैगे राजुली सौक्याण ।।

विन्ता स्यार दुःख रोपाई है रेछ,
हथियों की हकाहाक हैयी भल रेछ ।
धन-धन राजुली फूला का चबूतरा,
फूलों कै चबूतर बैठाक है रय हो ।

जदुक रोपार-तोपार स्यार मुख तीर,
सुण वे हमरी वैणा कांकी छै जानेर ॥
स्याणा-तारा जसी कां बटो नू आछी,
धाम जस लागियां फूलों कै चबूतर ॥

सुवा कन्यो छापड़ी राजुली मैण जस बुलांछी,
सुनियै की चेली हुंल राजुली सौक्याण ।
जाण लागी रयूं रङीली बैराठ,
बैराठ को छ्वाका लागी भल रय ॥

राजा की राजधानी खेली लखनपुर,
सुण मेरी बौणियो मिले जाण रयूं ॥
सो साठी स्यैणियो पुछण लागी गेछ,
यो बांकी बैराठ कदुक रैयी गोछ ॥

आज बटी बौणा चौथ दिन पुजली,
रङीलो बैराठ चार दिन को बाट ।
पैलाग बौणियो पैलाग ज्यू-जाग,
बर ऊंणी बखत आजी मिली जूंलो ।

यो दौड़ी पैलाग कयी भल जूंल,
राजुली सौक्याण बाट लागी गेछ ।
छै गज छपैली नौ गजा का फूना,
कपाव लै राखो टीका स्यूंनी गाजव ॥

सिन्दूर गाजव पैरी भल राखो,
देखिछ राजुली मोर-पौंठ जसी ।
कमर देखींछ गुरमायी कस ठांस
हिटंछी राजुली धरती लाज लांगछी ॥

बिन्ता स्यार बटी न्है गेछ राजुली,
उल्हार की खुटी उकाव लागी गेछ ।
यो सैंण की खुटी उकाव लागी गेछ ॥
मली जाणे खुटी तली कै उणोछ ॥

अदम बाट न्हैगे खुटी पटै गेछ,
अदम बाट राजुली खुटी नैं सरनी ।
अदम बाट पुजी बैठाकल्हि हालो,
बांजा बोट स्योव बैठी भल गेछ ॥

लागी भल रय दोफरी को घाम,
चिलमिल घाम दोफरी को घाम ;
रयीं नैं सकनीं राजुली मुयेड़ी,
कि घान करुलो को मन बुझालो ;

गाड़ी त्वीले राजुली हुणदेश बिवायी,
हुणदेश बिणायी बज्यूण भै गैछ ।
गाड़ी छ राजुली उदासी बिणायी,
यो तेरो पराणी उदासी है रैंछ ।

पैली गाड़ो त्वीले हुणदेश शबद,
दूसरो शबद यो बाँकी बैराठ ।
मिले ऊण रयू यो त्यारा छ्वाक ले।
हिवाल को चड़ो पयांल ऐ गयू ।

झिटघड़ी राजुली दुख ले बिवाय,
फिरी चड़क्क उठी बाट लागी गैछ,
मुर-मुरी हावा राजुली हिटण लागी गैछ,
सिर की पिछौड़ी भी में छुटी जाँछो ।

राजुली तेरी खुटी न्हैयी भल गेछ,
आप न्है गे राजुला उखोलेख धार ।
उखोलेख पुजी देखण लागी रैछ,
यो चारों तरफ नजर क्या छोड़ली ।

सुण मेरी राजुली देखींछ हरी नारायण,
सैंणी द्वारहाट देखिण लागी रैछ ।
सुण मेरी राजुली हिय भरी ऊंछ,
ताल जस भरी जांछ, बैराठ नजर ।

सुण मेरी राजुली कसी हुणद्वार,
पथुवा हैराव बाट लागी रौछ ।
बौज्यू को सराद बाट लागी रय,
दै दूध का ठ्याका मह्ड़ी लगै राखा ।

भुनयी का बाव सबै काटी राखा,
पथुवा हैराव आयी भल गोछ ।

त्रोर जाड़ा माज बैठाक है रस,
सुण मेरी राजुली फथुवा द्वै राव ॥

●

दुर्याल गौं का धुरा फथुवा द्वै राव,
भैमी का खरक फचिया द्वै राव ।
कानी में धर्यों छ, दयी कै महङ्ग
भैंसिया ग्वाव थथुवा द्वै राव ।

बाटा माजतंकी पड़ी गे नजर,
कालिकिया जून हैरे बीच बाट माजा ॥
दिगौ सार्यो मेरी बलैहारी ल्यूंलो,
तेरी दिदी भयी मेरी घरवायी ।

त्वे हुँणा है पैली मि छाड़ी गेछ,
भरण बखत वीका यो बयान भया ।
हुँनी मेरी बैंणी तैयार है जानीं,
तुमरो जै साँचो होली मि दगड़ी पिरीत ॥

मेरी बैंणी होली आफी आया जाली,
सौरज्यू की तपस्या सुफल हैयी गेछ ॥
बीदी है मोहनी सार्यी अवतार धरी,
मि त्यरो भिना म्यार घर रौली ॥

राजुली सुणछी अनिति की बाणी,
बौलण भै गेछ राजुली सौक्याण ।
धन म्यर भाग भिना मि तुमरी सायी,
खुशी जै है रौछा भिना सुणो मेरी बात ॥

नाच देखैं दियो भिना मि तुमार रंलो,
दई का महङ्ग कानी में नचूंछो ।
हुणदेस कामव गाद वादो हैछ,
जांठी का सहार नाचण भै गोछ ॥

तसो नाच भिना सबै करी हाँनी,
खुटन का बल संसार नाँचछ ।
मुनीं टेकी बेर भिनाज्यू नाचला,
फचिया ले आप मुनी टेकी हाली ॥

सास वड़ी आयो मुसाट करंछ,
टिटिया का ताड़ा अकास लगथा ।
उलटो बणी बेर नाचण भै गयो,
राजुली सौक्याण कौली मुणो म्यार भिना ।।

जब हैग्यो कूलो तब जै छाड़ला,
आँखा बुनी बेर बुढ़ नाचण भै गय ।
यो राजुली छोरी अकल तितुरी,
आपणी पिछौड़ी फाड़ी घिडारू का भुड़ा ।।

बोट ढकी हालो ब्योली जै बणायो,
तती बटी न्हैगे भेसुल बणै बेर ।
भौते देर हैगे वस बस नि मुणी,
पथुवा द्वैराव आप कुपित है गय ।।

सुल्टो हैयी बेर बार-पार चाँछ,
नै उती लै सायी नै राजुली छोरी ।
घिडारु का भुड़ बणी रौछ ब्योली,
खोशे जै टोलछ पछताव लागी गय ।।

तिरिया नचायूं मिरग नचायूं,
बे अकली बूढ़ो येसा फल पायो ।
तिरिया का खूटा जां राणो हिटलो,
अवाटा हीटणियाँ भेल पड़ी जाल ।

●

आब राजुली चौखुटी गिवाड़ गेछी,
बावन रुप छोड़ी राखें सुरज रुंछ श्याम ।
ऐसी रुपवान विद्दी की भार,
कसी रुपवान भयी राजुली सौक्याण ।

रुपसी राजुली चौखुटी गिवाड़ हो ।
आब राजुली मार-मार छाड़ वे ।

राजुली सौक्याण पुतलिया ठास धरी राखो,
उड़ीया निसाण जांगिया पानस ।
रात-दिन मार-मार छाड़ बाट लागी रैछे,
पुजी रैछँ गैली गिबाड़ राजुली ।

आप छोकरी रङीली मुलुक,
भौतै खुशी है गेछ राजुली सौक्याण ।
रिङनी पैतोई जँ रैछ रहणा ठीक हो ।
राजुली रहण ठीक जेरे वे ।।
आप राजुली रहण ठीक सेरी का पर्यांन,
लखनीपुर चाँदी खेत नजर पुजी रैछ ।
राजा मालसायी चाँदीखेत खीमासारी हाट,
सात भैं महर रुँनी महरूड़ी कोट ।
चौमुँ बान महरूड़ी कोट सात भै महर ।
जाग-जाग मालसायी असामी हो ।।
सात भै महर साव लि जानी जमाव,
राजा मालसायी तैं बिङराणी तितुरा ।
अचारी-अभारी महरो महरूड़ी कोट,
राजुली आयी रैछ तुमार महरड़ी कोट ।।
ऊ दिन चांदी खेत रोपाइ हैरे हो ।
दे रे गैल नङार बाजण रया ।
बड़ाई बड़ाई हैरे सवाई रोपाई,
बार-बीसी रोपार नी बीसी तोपार ।
चांदो खेत महरो रोपाई हैरे,
हुणुक बाजी रय रैछम तैछम ।
राजुली सौकिया कौतिक देखी रैछ,
कौतिक हयी रय बाज छाजा बाजी रया ।
झिट घड़ी चाइयैं रै गेछै राजुली सौक्याण,
कस कौतिक भय चाइयैं रै गेछै ।
रिङनी पैतोई आप राजुली बाट लागी रैछ ।
राजुली रोपाई-सत्राई देखणे.... ।
कैरु कसी कांता राजुली दूँढ कसी जूँन,
ठुम-ठुम जाण रयी राजुली सौक्याण ।
चांदी खेत नजर मारँछी राजुली सौक्याण,
दोफरी को घाम मधुर किलै भय ।
रोपार तोपार सबनैं के कूण नि ऊँन ।
कि कारण भय ऋरिज मद्यम ।।

चौमूं बान माज राजुली भै गेछ,
देखी मल रैछ सवाई रोपाई,
धन राजुली सौकिया चौमूं बान माज,
कसी अकल छांटछी राजुली सौक्याण ।

चौमूं बान माज लिन्हु अस्नाण,
नायी धोयी लिन्हूं सोचण लागी रैछ ।
म्यार आङ बैठी रय भौतै दिन मैल,
राना का महल चाणे तिपुरी महल ।।

म्यार आङ बटी बुकड़ैन ऐ रैछ
गंगा अस्नाण लिन्हुं चौमूं बान माजा ।
छोरी जनजायी भाग त्यर जन्जाव उरी गय,
कै दिन पुजछी वै जै दिन रोपाई ।

राजुली रोपाई सवाई देखण लागी रैछ,
कि धान गेछ छोरी नाण चौमूं बान माजा
राजुली मरी गो लड़िया त्यर द्यार लगै बे
चौमूं बान की ढुङ रहण खेड़ी हैछ हो ।

बान टोड़ी हाल चांदी खेत बान,
पाणी टूटी गय गाड़ टूटी गय ।
पाणी सुकी गय ह्यांयया चाइयैं रै गय,
बार-बीसी रोपार ठाड़ हैयी गया ।।

चौमूं बान टूटी गाड़ न्हैयी गय,
पांङ नि बैठन चांदी खेत माज ।
यास हयिया छन कानों कै काल,
जीबड़ों कै लाटा रैं कानों कै काल ।

हयियो जावो धैं हमर बान कैले टोड़,
हमार बान मानिख नाम माख नैं ऊंछी ।
महर पूरब झरौख भै रयीं महरुड़ी कोट,
नजर खोड़नी आप महर चांदी खेत माजा ।।

●

आप राजुली, बार-बीसी रोपार-लोपार,
हयिया समकाया जाव रे हयियो ।
मार-मार छाड़-छाड़ चौमूं बान माजा,

चौमू' बान सबसीर ढुङ राजुली सौकिया ।
गाड़ खिती राखो सबसीर ढुङ,
नायी धोयी बेर घोग कसी प्योली राजुली ।
द्यो निङाव जसी पूस कसी पालङा ।।
नौ सौ जिवर खास मखमल,
जैका बदन तार जसा लागिया ।
सूरत देखनी मोरछण छुटनी
छै गज लटी राजुली नौ गज धपेली ।
हिय में हार पैरी राखो पिठी का ड्वारा,
बिन्दुली को टिक गाजब पैरी राखो ।
राजुली टोड़ियां हलद जसी धन त्यर रूप.... ।
त्यार रूप देखी पाणि ले खेल लागि गै ।।
आप हुयियो हाथ को सिकड़ हाथ रैग्यो,
क्वे ताल गाड़ छुटा क्वे माल गाड़ ।
यसी तपोधारी चेली जनम नि देखी,
त्यार रुप देखी हुयिया मोरछण हैयी गया ।
बार-बीसी रोपार तोपार मालूम न्हैंती,
के धान करनू' के कावा रचनू' ।
बार-बीसी रोपार तोपार ले न्है गयीं हो ।
राजुली खुत-खुत हँसणे-हो ।।
राजुली रूप देखी देखियें रै गया,
नि खाना महरो आप साब-जमाव ।
महरो नि खाना हंसराज बासमती,
तुमरी रिङौली कोट बांज रैगे ।
तुमार जाग को जुग शतुर आय,
बान टोड़ी बुजीणियें नैं हैंती ।
अरे रोपारो मरी छा ज्यूँन,
आब राजुली धात लगूणे हो ।
आप तुमी भिड़ी पराँगण आया,
कि भय कस भय कि बात भैछ।
तुमन कणो खबर न्हैती चौमू' बान टूटी गय,
क्वे दिन तुमार डर ले माख ले निऊँछी ।

जुग को सतुर कपायी को किल,
ओ ददा भुलिये कि कूण लागी रया ।
को बैरी आय कैक नि हुण आय ।
मार-मार छाड़-छाड़ बाट लागी रया ।।
बरमानों में आँख धरी राखें बार-बीसी म्हर,
आँखो में खून सरी रय हिटो दादा भुली ।
चौमूं बान ह्वल हमार जुग को सतुर,
सात भै महर आप मार-मार-छाड़-छाड़ ।
आप महरों बाट लागी रया हो,
राजुली त्यार बैरी आ गया हो ।
महरो आप-मार-मार छाड़-छाड़,
सुसान-सुभान चौमूं बान माजा ।
आँख टिपी राखा सात भै म्हर,
को आय आप हमार चौमूँ बान ।
चौमूं बान दादा भुलियो छाजन हैरे ।
राजुली येसी बिद्दी की भार हो ।
कैले तोड़ो चौमूँ बान ज्यांन मारी दिनूं,
मन में मनसुब यो काव है रै छ ।
राजुली देखी हैछ सात भै म्हर,
राजुली रूप देखी क्वे ताल भिड़ ।
क्वे माल भिड़ छुट धन रे महरो,
चौमू बान सात भै महर मोरछड़ है गया ।
राजुली खुल-खुल हँसणै छै हो ।
राजुली आप चाइयैं रैगे ।।
महरो तास च्याला मरी जै नि गया,
चौमूं बान कि दुयख तुमले ।
तुमार यौं तिरिया नै हुँना,
आग लागी जौ भड़ायी फुली जौ ।
महरो समव-समव बैठी भल गया ।
कूण लागा कि देखण रया ।।
मौणियाँ बदन घन त्यर रूप ।
तौ रूप हमन होकल छोकरी ।।

कान लगायी राख आप महरों उज्याणी,
ध्यान धरी राख राजा मालसायी ।
कि करनूं दादा भुलयो, तैकणी मारी वेर,
घड़ी कसी ज्याँन वयावा गोफू कसी ।
तदुक रूप की महरुड़ी कोट धरी दिनूं,
महरुड़ी कोट छाजन है जाली बे ।।
पुछल न्हैतिन गछन न्हैतिन,
येसी जबरदस्ती सात भै महर ।
कसी कै लि जानूँ तौ छोरी कणी,
महरों आप मनसुब छांटला ।
आप तैकी बर्यात लि जानूँ ।
गैल नङार बज्यैं बेर ।।
छड़ाई बड़ाई हैरे बाज-बाजी रया,
महरो दि्ठ भाई है जानूं डोलरे ।
द्वि भाई है जानूं छोलरे,
व्यत्तीस निवर लगुनूं पुरब झरौख ।
राजुली बर्यात लि जानूं लाल कठ्याण ।
ब्या सामान ऐग्यो राजुली हो कस त्यर भाग ।
सुनूँ झम्पान पैरनी राजुली सौक्याण ।
द्वि भायी है गयी छोलरे द्वि डोलरे,
रोपारो तोपारो आपण घर जावो ।
हमी यैक ड्वल लुनूं महरुड़ी कोट,
येकणी सौंणी दिनूं महरुड़ी कोट ।
आप राजुली ब्योली बणी महरों कान में भेगै ।
धन राखुली त्यर जन्जायी भाग बे ।
धन राजुली त्यर जन्जायी भाग,
तेरी बर्यात ठरी गे चौमूं बान बटी ।
जर जिवर के नि चैन ओ दादा भुलू,
सब चीज लायी रै आपण दगाड़ा ।
खाश मखमल लैरे रेशमी फ्याटा,
कसी तिरिया हमार भाग पर हो ।
सात भै महर भि खुटी नि धरन ।
राजुली जुलम हैग्यो सुणी रे बात ।

घोगै कसो प्योली डोली धरी हैछ,
महरुड़ी कोट लि जानी कान में धरनी ।
अछिल बटी महरों छ्वाला बगड़वाला,
गैला नगार बाजी रयीं बर्यात बाट लागी गे ।
बर्यात महरो महरुड़ी कोट न्हैगे ।
राजुली सोबन को इवल काछ्ो राखो ।।

♦

हा धन-धन राजुला कान में भै रैछ,
बाट लागी रैछै महरुड़ी कोट ।
कैकी छै तू वान कैकी होली चेली,
चौनू आन बटी महरों कै हाथ ।
सात भै महर त्वीकणी लि जानी,
महरुड़ी कोट पुरब झरौख हो ।
लाटा हयिया तुमार दगाड़ा हिटला,
कसी बर्यात सात भै गहगे ।।
राजुली बर्यात घर आयी गेछ,
भ्यैर पटांगण राजुली धरी हैछ ।
वामण बुलाय लगन बिचार,
राजुली सौक्याण मन में सोचली ।।
कि धान करूँ कि काव रचूँ,
मन-मन जयी गेछ मडुवा फामा जसी ।
धरी दिया देव मेरी लाज धर,
बूढ़ा बागनाथ ज्यू सुफल है जाय ।।
कसिकै मुचुँल कूँ छै राजुली सौक्याण,
राजुली तीलुरी आप मनसोच हैरया ।
आङुल में ख्याल आयो हीर की मुनड़ी,
न्हैयी भल गेछ बामणा नजीक राजुली ।।
सुणो पण्डितज्यू यो मुनड़ी तुमरी,
मिकणी बचैं द्याला यो दैतन बटी ।
लगन की घड़ी आयी सब साज धरी,
बामण ज्यू लगन करी गि सपड़ी बात ।।

●

बामण आप लगन विचार,
पाताड़ा देखण लागी गय ।
सुणो महरो एक बात कूलों जब भानी जाला,
यो तिरिया भयी करम की खोटी ।
अठों मंगल महरो राहु बलवान ।
यैक भाग महरो यस लै भय ।।
यो तिरिया बेवाला मरी मिटी जाला,
यैक भाग तुमर नाम हैयी जाल ।
यो छोरी तुमी मुख झन देखिया,
यैकणी तुमी जंगल छोड़ी दिया ।
यस कूण लाग कुहेड़ी कुखेड़ी ।
खुटै की ढुनि समझिया आँख की कणी हो ।
बामण ज्यू भलि सुणै गयै,
हमी बची गया दछिण लि जावो ।
मैकणी भायो बकस में बन्द,
बकस में बन्द बणै वेर गाड़ बगै दियो ।
मण - मण नेतर सिपौ छोड़ण भैगे,
राजुली तुमले बकस मे धरी गाड़ बगै देछ ।
राजुली सौक्याण गाड़ बगै हो ।
बूढ़ा बागनाथ ज्यू म्यर दगड़ करिया ।।
क्वे कत्यूरा देवा मि बचै दियै,
मेरी पिरीति होली राजा मालूसार्यो ।
मिकै बचै दिया कत्यूरा देबो,
कत्यूर की देबी सुफल है गेछ ।
घात लागी गे तै झन बगायै,
कत्यूरों की बान छ, तै झन बगायैं ।
राजुली सौक्याण गंगा ढीक लागी गे हो ।
सामुणी बोट मुणो गंगा ढीक राजुली ।।
गंगा ढीक आप ढाकण खुली गय,
बीका नजीक आप लुकुड़ धरियाँ ।
उती जायी राजुली खुशी बणी गेछ,
देवी की मेहर राजुली सौक्याण ।

धपेली है गाड़ी आप जादू की जुगुन,
झमझुमा लुकुड़ा छम-छम जिवर।

राजुली सौक्याण बैरण पैरण लगाय।
राजुली देखिणे हो सरग कसी पड़ी ॥

अधोराती ब्ली है रे अधोराती पली,
सुर लागी रय रङीली बैराठ।
मार-मार छाड़ बाट लागी गेछै,
आप पुजी गेछै महला नजीक।
एक दरौज रुँछ केसुवा पहरी,
केसुवा पहरी आप भेकुवा पहरी।

गोठमाव बादी ह्वल ऐरावत हाथी हो।
राजुली हाथी बाद्धी राखो वे ॥

हरियां घागरी तेरी हरियां पिछौड़ा,
सुवा कसी वणी रैछै राजुली सौक्याण।
न क सरग सबै भुगुती हाली
ऐसी हुणी हार आप म्यार भाग पार।

राजुली यां ऐ बेर राज दगाड़ी भेट।
रुपसी राजुली मि खै ढेली वे ॥

बैराठ देखी जान्यूं, नौ लाख कत्यूर,
खीमासारी हाट धैं कसी बैराठ।
लुड़ छुड़ पाया बाट लागी रैछे,
रैछम तैछम आप पालङा कसी आंठी।

नौणी कस विनैग न्हैगे रङीली बैराठ।
राजुली राजा महल न्हैगे वे ॥

के धान करनूँ बार चाँछी पार,
राजा मालसायी महल नजर पड़ी गेछ।
एक खम्ब पर केसुवा पहरी,
एक खम्ब पर भेकुवा पहरी।
निनौई डाव गाड़ नींन फोगी हैछ,
भेकुवा पहरी क्वीकें के खबर न्हैती।

तेरो बौराठ लखनीपुर निनौयी पड़ी गे ।
रङोली बौराठ कसी माया हैरे हो ।

आप राजुली पटाँगण ठाड़ भयी,
हाथी कणी नजर पड़ी गेछ ।
खुल-खुल हँसण लागी रय,
तीन ताला धरती हिलूणो नौ खण्ड मनम ।
मन कसी चोट खाण कसी गास,
हुबुक नेयी द्यूल त्वीकें धन म्यर भाग ।

खाण कसी गास काँ बटी ऐ गेछै हो ।
राजुला कसी बात कूणो वे ।।

राजुली चार पात क्याण का हाथी खाय खिता,
हाथी त्वीले प्वछ रे पलास,
म्यर मालसायी को हाथी,
जास राणी राजा उसी मिले भयूं ।

भ्वल सुरी बार जदु खालै तद्दु द्योंल ।
मिकणी जाण दे राजा महल हो ।।

हाथी मनाय जनाय राजुली सौक्याण,
छुयाँठ ले घास दिनीं धन म्यारा हाथी ।
पन्यात्र ले पाणी दिनीं, येसी हुणी हार,
तस हाथी त्वीले मनाय-जनाय ।
कसिकै जानूं राजा कै महल,
सात ताला भ्यैर सात ताल भतर ।
मालसायी ढगाड़ी कसी हुँछ भेट,
कसिकै जानूं आप पुरब झरौख ।।

रात रैगे भौत को समझलो दुख,
राजुली भण-मण नेतर छोड़णे वे ।

आप हाथी पुरब झरौख राजै की खाट,
कसिकै जानूं कैं बाट न्हैंतिन ।
आप हाथी राजक ध्वाक लागी रय,
हाथी ले ध्वागै कसी प्योली ठूँन में धरछी ।

फूल कसी समायी पुरब झरौख,
भीतेर गेछी राजुली सौक्याण ।

राजा मालसायी दी जस जागी रय हो।
सुनू कस गिनू पड़ी भख रय ।।

राजा मालसायी नींन पड़ी रयी,
राजुली घागरी परी सौकिया फ्याटा ।
नेतर पिछौड़ी रेशमी चद्दर,
सिर की पयांन सुनूं जाग सुनूं ।

राजुली कस रूप धरी राखो हो ।
आप राजा राजुली ऐरे वे ।।

●

धन मेरी राजुली ब्याखुली रात जसी
भै रैछै राजुली अधोरात पली ।
भीतेर जै रैछै बैरी-पैरी बेर,
जाणी देखिणे उड़िया निसाण ।

उड़िया निसाण जागिया पानस,
अधोराती छोड़ी राखें बावन रूप हो।
बावन रूप छोड़ा रूपसी राजुली,
जायी भल रैछै राजा कै महल ।।

●

सुनूं की पलंग देखी, सुनू को छतर ।
हीरा ले जड़्यां छन, मोती का पतर ।
मखमली गद्दा देखो, सिरानी पांखों की ।
रुना-रुना जैभै हैरे, मिसाणी आँखों की ।।
मालसायी पड़ी रौछ घोल को कफुवा ।
खाट माज पड़ी रौछ, सुनूं को डांकुवा ।
मालसायी पड़ी रौछ, आयी रै छ टोल ।
राजू आप कूण लागी, स्वामी आँख खोल ।
उठी जाओं स्वामी आप नि होबो उदास ।
तुमरी राजुला आयी, यो तुमरी पास ।

●

मालसायी नींन पड़ी, ऐसो टोल ऐछ,
कसिकै बिजूं आप, स्वामी मालसायी ।
तुमार कारण देव कसी ल भुगुती,
किलै कि नै बोलना राजा, कसी पड़ी टोल ।
बलटूँछी पलटूँछी पख ले हिलूँछी ।
तुमार कारण स्वामी, कों भूख कों नींन ।

काखी में धरलो खोरो, मुख ले मलास्यो ।
कस्तूरी की बास लंछै, नी उठनो मालू ।
हकोली ढकोली हैछ, क्यावा कस खाम ।
माला का कान आप, मालू गीत गंछ ।
नी बीजनो मालसायी, रुधन लगूंछै ।
खाट का खूटा ले आब, खोर लेटीलछै ।।

आपण आँसूं ले आव, स्वामी कैं नऊँछै,
भोट बटी एती आयूं, तुमार कारण ।
आपण इजा बौज्यू कणी, ज्यूनैं छोड़ी आयूँ ।
बैराठ में पड़ी गेछ, छन दिनों की रात ।
कदु दिन भुखी आयूँ, छोड़ी दिन रात ।
कभंड़ी टूटी जाली, मेरा स्वामी नींन ।।

भीतेर द्याख राम, मिति गया चाँवल
खीचड़ी बंणूछै राजू, झेल का भीतेर ।
मालसायी नींन पड़ी, हयी रौछ स्वैंण ।
जो बात सामणी हैरे, बिई बात स्वींणा ।
नी उठनो मालसायी, खीचड़ी पकै हैछ ।
हिलूंछै डोलूंछै आप, उठो स्वामी प्यारा ।।

नी उठनो मालसायी राजा, छाती ले पिरंछी ।
खाण नाम बास ले तौ, गव भरी आय ।
खीचड़ी ख्वार में धरी, स्वामी को परसाद ।
रङीली पिछोड़ी फाड़ी, आङुल-रगत स्याई ।
नथुली टुका ले राजू, चिट्ठी लेखी दिछै ।
तसबीर बनै दिछै, पिछौड़ी का चाला ।।

तसबीर येसो बणूछै, बोलाग वकाया।
सब जिवर छजै हैछ, स्यूँनी में सिन्दूरा।
आज तक कुवाँरी छयूं, तुमार कारण।
तुमार नाम ले स्वामी, भरी है सुहाग।
को जाणछ कब मरण, पुर्यै हाली तिरसणा।
वचन कारण आयु तुमार वैराठ।

लौटी गयूं घर हुणी, है बेर उदास।
तुमन देखण हुणी, कत्त देखीं भौत।
ज्यूँनी इजा च्याला होला, भोट ले सावला।
मरी इजा च्याला होला, बैराठ में रौला।
पीयूं होल इजा दूद, मि भेटण आला।
नौ लाख कत्यूर तुमी, होला बाबू च्याला।

आपण-आपण बाट, भोट कैं जीतला।
तिरिया की जात भयूँ, भोट वटी आयूं।
नौ लाख कत्यूर साथ, भोट हुणी लाया।
चिमाट बणाया तुमी, भदेली माँची बेर।
कुण्डल बणाया तुमी, तौली गलै बेर।
जोगी भेष धरी बेर, अलख जगाया।

जन्तरी मन्तरी गुरु, दगाड़ा में लाया।
सात भायी महरों, सादी बेर आया।
पथुवा द्वँराव धैंग, दगाड़ में लाया।
एसी चिट्ठी लेखी बेर, सौरान धरछी।
पल्टी गयी धर्ती माता, छन पन्यौली हाट।
झन होव दुसमण को, ससो निरभाग।

कलज में लागी रैछ, दुखिया की आय।
कलज को पाणी सुको, आंखों वटी भैर।
गल यसो भरी आय, भदौरिया ताल।

रुँनै रुँनै गलो बैठो, बाकरी की पाठी।
आँखों में फुटी गया, जौंब ले मुड़रो।
खोरो टीली टीली, हिकुरी लगू छै।

मरी जान्यू मैंले एती, स्वामी का खुटा मा।
मरी जान्यूं दैण हुनों, अमर सुहाग।
भाल रया स्वामी आब, मैंत नसी जानूँ।
मालसायी खुटा माज धरी हैछ खोशे।
नी बीजना स्वामी आप, मिले न्हेयी जानूं।
लौटी जाँछू स्वामी आप, रवेधान लगूँछ।

देखो हाँली स्वामी मैले, जनम सफल,
फूटी जाला आंख, म्यारा, नी देखन्यू और।
जनम जनम भयूँ, स्वामी का चरण।
हाथ जोड़ी बेर आप, सौकाण लौटी गेछ।

●

बौराठ या मालसायी, टूटी गेछ नींन आव।
स्वैंण जो देखछ मालू साँची हयी गेछ आब।
राजुला को ध्यान करी, रुधन मचैच तब।
सीरान में देखी हैछ, मीली गयी चिट्ठी जब।

थाली में खिचड़ी देखी, चिट्ठी सिरान माज।
तसबीर छाती में लैछै, प्राण बैठा गाल माजा।
सारी चिट्ठी पड़ी हैछ, रुधन मचूण लागो।
फूटी को कपाल मेरो, कलज में लागो आगो।

हाथ नटी मुचै देछ, सांन करी कसी बोलूं।
राजूलता आँखा बैठी, आब कसी आँखा खोलूं।
फोड़ण बैठ कपाल आब मुनली अनाड़ भया।
उड़नै पराण रुक्या आँखीन में रुकी गया।

तैंकी इजा सुणी लिछी, मालसायी खबर।
मालसायी बौली गोछ, गूड़ हैग्यो गुबर।
धर्मदेवी पूजी गैछ, आपण च्याला का पास।
बता च्याला कि छ बात, क्यै भयै उदास।

राजूलता एती ऐछ, चिट्ठी लेखो गैछ,
मितो छ्यूं बहोश इजू, बन्द मैंकैं देखी गैछ।
मेरी राजू काँ छ इजू, मि कसी देखूँल आब,
भोट हुणी जायी ऊँल, राजुला मेटूँल आब।

खेकणी कि भय च्याला, कैनै की खबाछ आज ।
मालसायी पागल भयो खाप बटी खित गाज ।
भोट बटी कसी आली, तिरिया की जात ।
किलै की वितूँछै च्याला, तू आपण गात ।

मैंत जूँल भोट इजा, नौ लाख कत्यूर साथ ।
मि जूँल जरूर इजा, चाहे पड़ौ दिन रात ।
भोट को मुलुक एसो, जादु को बिछायो जाल ।
किलै कि बोलूँ छै माला, आपण जिय को काव।

कसी कै वर्णछै माला बीतूणी दूदै की रौटी ।
सौक्यूड़ा का देश जायी, क्वे नि ऊँन लौटी ।
मानी जायँ स्याण च्याला, झन जायै भोट हुणी ।
राजुला है भला लूँलो, रुपवान बौहै दूणी ।

●

राजू नीछ, बान. राजू नीछ बान ।
छन आंखों की नि करन काणों जसी सान ।
घमण्डी को खोरो जसो पाणी कस गान,
टोला जसो किलै कछैं जब छन कान ।
बीना पाणी कांटछै तू खेत हुणी बान,
राजुला कारण आज किलै दिछै जान ।

मानी जायँ मालसायी, झन जायँ भोट ।
भोट भें पडंछ च्याला, बिन कसूर चोट ।
सुण स्यारा माला, नी कना गुमान ।
नि रयौ आज तक, कैक अभिमान ।
ईसरा रे दिदूँ राखी, द्वि औरबा द्वि कान ।
कब खीले सुणो च्याला, माछा हुनी डान ।

लंकापती रावण छी, कसो बलवान ।
तिर्या कारण मरी गयो, उलेक निधान ।
सुनूँ की छी लंका जिकी सुनूँ का महल ।
सर्ग परी करछीं जैकी, रोज ले टहल ।
कुम्भकर्ण भाई जैको, इनरजोत च्याला ।

फाटक में लागी रौंछी, हीरा मोती च्याला ।

सीताज्यू कारण माला, बिगड़ी गे बात ।
आफूं मर्यो बश डूब्या, पड़ो गयी रात ।
कछीक राकस छियो, जोधा बलवान ।
द्रुपती कारण गैछ, वीकी सारी जान ।
बिस्वामित्र महारिखी, तपस्या हों ग्यान ।
रात दिन लागी रौंछी, पूणा हूणा ध्यान ।

मैनका कारण जैको, भंग भयो ध्यान ।
तिरिया चारत च्याला, खुकुरी का म्यान ।
तिरियाक फन्दा में च्यला, जो लकी पड़लो ।
रोङूणियां ताल जसो, निहैत मरलो ।
स्यैणी का चलन च्यला, सीकारी को गति ।
पछाँ बटी गीत गालो, मुनी कंछ छीद ।

इतणो च राज तेरो, यैं बटी लूंलो राणी ।
नी जा माला भोट हुणी, बैराठ उजाड़ी ।
मानी जायै मालसायी, झन जायै भोट ।
भोट हुणी पड़ै च्याला, बिन कसूर चोट ।।

●

जैका रूप देखी बार भैं अजीत,
बार भैं अजीतों कै रथ रुकी जाला ।
जदु दिना पहर तदु रूप छन वीका,
उस राणी को ध्वाक पड़ी रय,
कसी कै लुनूं इजा रङीली बैराठ ।
कसी कै देखुंल इजा राजुली सौक्याण ।

राजुली उदेख बाणी रंगीली बैराठ ।
मि खै देली बैराग हैयी रय ।।

दिल हैग्यो उदास मन हैगो सोचन्त,
कै कणी लगुनूं परतीत नैं ऊंनी ।
आपण हाथ ले चार गुरु पुछनूं,
मालसायी हुणी नैं हुंणी जाणछियै ।

गुरु रिणीदास त्यारा गुरु फिणीदास,
अघिल कै जाणियाँ पछिल कै उणियाँ ।
बार बिद्दो का भार छन गुरु रिणीदास ।
नान ठुल देवों कणी पुछनैं नें हांतिन ।।

त्यार गुरु रिणीदास गुरु फिणीदास ।
राजा मालसायी मनमुख है रया हो ।

विपैल मुलुक जानूं राजुली कारण,
राजुली को ब्या करनूं बैराठ लुनूं ।
हुणी जाणछियै नै हुणी जाणछियै ।
जोइया नें लगुन्यूं आफी जायी ऊनूं ।
नौणिया गात त्यार सिमइया भुत ।
त्यार खवार में होली नौ सेर गुदी,

ओ इजा जोइया नै लगुन्यूं गुरु पास ।
राजा मालसायी आफी जाण पड़ो रे ।

छाटी ज्यूनार जेंवण भै गेछे,
आज त्वीकणी जोइया नैं चैंन ।
मार-मार-छाड़-छाड़ बाट लागी,
रुपसा माला आप खोयी कस खाम ।
द्योयी कस गिन, जागिया पानस,
आंखो में त्यारा खून सरी रय ।

रिङनी पैंतोई माला आप न्हैयी गोय ।
मार-मार-छाड़-छाड़ कर्नैं न्है ग्यो हो ।

स्यार मरदा बाट लागी गोयै,
गुरु का पास माला जाण लागी रयै ।
कै कणी पुछनैं न्हैंती राजा मालसायी ।
लुड़ छुड़ पाया बाट लागी गयै ।

न्है गयै माला खीमासारी हार ।
आपण गुरु रिणी-फिणी दास हो ।

●

रिङनी पैंतोई सेरी कै पयान,

रिणी-फिणी दास पुरब झरौख ।
ओ ददा भुली राजा ऊणोछ
और दिन जोइया आज आफी ऊणौछ ।

कमर ठसक हिय में धसक,
द्यखौ दादा मालसायी ऊणोछ ।
और दिन तैका जोइया ऊँछी,
धस्स पड़ी आफूँ किलै आछ ।

ऊनै-ऊनै म्यारा राजा भिड़ी पटांगण,
नजर छोड़लै राजा पुरब झरौख ।
रिणी-फिणी दास बैठाक है रय,
बिद्दी न् को भार खोली राखो छ ।

हरी जगदीश तैंक कि काम पड़छ,
पूरवा झरौख मालसायी न्है गोछ ।
राजा मालसायी जै देवा जै देवा,
पैलाग ज्यू-जाग आशीर्वाद है गेछ ।।

●

राजा मालसायी खुटी की सलाम,
तुमार ऊण में बड़ पड़ो भैंम ।
कमर टूटी गयी तुमार ऊण में,
क्वे दिन केसुवा ऊँछी भेकुवा पहरी ।
आज किलै आछै राजा मालसायी ।
कि काम पड़ दिल हैगो भैंम ।।

राजा मालसायी कि काम आयै कि काम पड़ो ।
मालसायी राजा वतूण भैंग्यो ।।

बिगर गुरु ज्ञान न्हैती बिगर गुरु ध्यान,
अघिल का उणिया तुमी पछिल का जाणियाँ ।
बिद्दया को भार छा काल को पितर,
हुणी नैं हुणी गुरु क्वे नि जाणन ।
आप मि जाणयूं गुरु ब्या करण ।
जल नर देश गुरु ब्या करण ।

जल नर देम सेली मौकाण हो ।
गाऊँली की चेली राजुली सौक्याण ।।

आप गुरु स्वैंणी रथ देखी राजुली सौक्याण ।।
चीक इवल लुनूँ गंगोली बैराठ ।
म्यर दगड़ करी दिया म्यार गुरु आब,
आज बटी तीसार दिन मेरी बर्‌यात जाली ।

मिले जाणछ मरियै ज्यूँन सेली सौकाण ।
मिकणी स्वै दुयलै मुख चाइयैं रै गया ।।

सोच्र करनी विचार अंगुठ दबूँनी,
बार सोद्‌यूण लागा गुरु रिणी-फिणी दास ।
क्वे बार नि मिलन सेली सौकाण की ।
रोल्यूँनैं बोल्यूनैं आप राजा मालसायी ।।

राजा मालसायी सोच रे विचार हो ।
राजा माला मानी जा बात ।।

द्‌यख आप बिषैल मुलुक बावन बिष को,
चलण में बिष लागों स्वाण में बिष ।
कि करछँ माला उ मुलुक जै बेर,
ध्वाक झन धरियै उ मुलुकों को राजा ।

झन जायै माला सेली सौकाण ।
राजा मालसायी एकै नैं मानच्रय ।।

तुमी नैं ऊँना जब मि जूंल जरूर,
मरियां ज्यूँन मिले जाणछ सौकाण ।
एकै नैं मानन राजा मालसायी,
जन सू न्हैयौं जांछै हमी कि करूँल ।
हमी न्कौ ऊंल सेली सौकाण,
हमी कि करूँल यो रङोली बैराठ ।

तुमी आया गुरु मेरी बैराठ हो ।
लि आया तामा विजेसार हो ।।

बज्यै है जादू को ढोल, जादू की बणी ताम्बुड़ी ।
ढोल को सबद सुणी, मुनी गया सब कत्यूरा ।
खानेरों ले गास छोड़ो, रिस्यार ले चुली छोड़ी ।
दिसाणो की नींन टोड़ी, दौड़ी गया सब काम छोड़ी ।
क्या विपत्ती आयी बैराठ, कि बाजण बैठ तामा बिजेसार ।
गुरु ले हुंकार मारी, डमरू डंकार छाड़ी ।
सुणो हो कत्यूरा पैगो, भोट हुणी जाणछ आन ।
छारो ले चुपड़ी आब, जोगी बणन होलो काज ।
भुली गया सब बात, भोट जूँला दिन रात ।
नौ लाख कत्यूरो आब, ओ मालू राजू कारण ।

●

बोलै है नऊवा आब बणो गया कुमिना ख्वारा ।
बोलै है खिमुँवा ल्वार, जोती है तती आँफर ।
भद्यालों को कुड़ो तैले, बणैं द्यै चिमाटा ।
झिमुवा टमट बोलैं, सबै तौली भाँची हाली ।
साँची में गलैं बेर, बणैं ह ली यो कुन्याली ।
गेरुवा की खाण लगै, ओ मालू राजू कारण ।
सारी बैराठ तुमाड़ा फोड़ी, बणाया खप्पर ।
चुपड़ी है सब छारा, बैराठा रूँना भ्या खाली ।
चौकोटा गद्यार बटी, काटी लाया तिमुरा जाँठा ।
हर-हर-बय-बमकौला, रङीली बैराठ माजा ।

●

नै जा च्याला बिषाणी मुलुक,
तिरिया दोछायूं इजा मिरग बाकायूँ ।
का मुख देखूंल
के धान करैछी ब्याखुली है गेछ ।
मण-मण नेतर इजू ढावण भै गेछ ।

बज्यूण है जाल औलाद को कोप,
बुढ़िया मायी तेरी बिलाप लगूँछै ॥

मि घर आयी जूँल, सौकाण बटी,

मै रुज्यायी बुझायी,

मयेड़ी कूणे— पोथी तेरी बौंणा बिजुला । सात लंक पार।
बिकणी भेटी जा। रुदरी काग लग्ूण भैगे।

रुदरी काग बाट लागो गोछ हो।
एक गंगा तरी दुसार गंग तरी,

यो रुक्टी काग न्हैगो सात समुन्दर पार।

रात ब्याणी बखत काग क्या बासँछ।
भ्यैर बटी छिय पद्म को पेड़।
सोबन खाट बटी भ्यैर ऊण रेछ।
रुदरी काग बासण लागी रौछ।

तुमर भै जाणो बौणी सेली सौकाण।
बिपैल मुलुक भै भेटी आबो।
बिजुला बाट लागो ऐगे रङीली बैराठ।

●

रुझूण बुझूण बैठी को मिकणी भेटल।
बौंणा मि लौटी ऊंलो सेली सौकाण बटी।
मि जानू, तिरिया दोछायूं मिरग बुकायूँ।
धर्मबती न्है मिरतु गढ़वाल पास।
दादू मिरतुवा मेरी खोरी रुखी गेछ।
तुमर भाणज सौकाण जाणो छ।
यैकणी तुमी रुझै बुझै दियो।
हिटी दियो तुमी रङीली बैराठ।
रुझै बुझै द्याला राजा माला।
बौणी का दगाड़ मिरतु गढ़वाल।
मिरतु लिह बेर आयी पुजी गेछ।

सात ब्या करुँलो राजुली नाम धरुँलो।
नें जा-नें जा भाणजा सेली सौकाण।
तै बखत गाड़ो कागज तलाक।
मिरतु गढ़वाल पढ़ण भै गय।
मेरी बौंणा यैकणी जाण दे तू।
आफी जायी ऊँछ सेली सौकाण।

लड्डू प्याड़ इजू खान मिठाई ।
खीर भोजन छत्तीस ज्यूनार माला ॥
बत्तीस परकार बणूण भै गेछ ।
एक हयी माटी ले सौ चुली लिपँछी ।
आपणी माल्हू हुणी ज्यूनार छाँटली ।
माल्हू जाणें ते ज्यूनार जेवाली ।
गोठ की गायी दिनीं डायी मैं को कावा ॥
पंच गरासी करनी ज्यूनार छांटनी ।
एक आंखी सौण लगै हाली ।
एक आंखी भदौ लगै हाली ।
घेरी में चाँवल लैगे लोटी में पाणी ।
अछ्यत परकण लागी भल गेछ ।
बैराठ को माल्हू सौकाण बाट लागो ॥
सुकी ठाङरी काव जै बासँछ ।
सकुन बिगड़ी जानी माल्हू जाण में ।
एकै नै मानन माल्हू बटीण में गोछ ।
आज छोड़ी गय साल्हू इजू की कोख ॥
आज छोड़ी गयै आपण देस ।
आज छोड़ी गयै आपण राज ।
बिराण मुलुक माल्हू बाट लागी गय ।
एक आँख इजू सौण लगै हैछ ।
एक आँख सिपौ भदौ लगै हैछ ।
बेर घर आयै बिषा मुलुक नटी ।
स्यर कोरबी को साल झट्ट आयै घर ॥

●

जिया धर्मावती कि धान करँछै,
स्यर माल्हू आप कै नै पुछन ।
नौ लाख कत्यूर न्यूँत पड़ो गय ।
यो गैल नङरी बटीण मै गेछ ।
गैला नङार करैल दमुँवा ।
फौज लसङर बटीण भै गोछ ।

रुवा चुवा दल फौज नि जानूं सौकाण हो।
भेकुवा पहरी न्यूंत करी आय वे।

लुकुड़ ध्वैनी नौ लाख कत्यूर,
रिणी-फिणीदास तामा विजेसार।
रंग पिऊँनी तामा विजेसार।
पसुपती सिंवाई धरी कसी हुणीहार।
विदियाँ को भार धरिया सेली सौकाण।
बाट को सामव धरिया यो ऊँचा निसाण।

मेरि वैराठ आया तामा विजेसार हो।
चुवा कसी फौज ऐगे हो।।

उदासी वैरागी बाज बज्यूण भै गया।
सहर बाजार को गेरुवा मँगायो।
भगुवा बस्तर मँगाया जोगिन की साज,
वैरी का मुलुक आप सेली कै सौकाण।

बैरी मुलुक जाय रय राजा मालसाया।
गायी गुवर खाग बणूणो हो।

भगिया साज बणूणो, भगिया कपाड़,
नौणियां गात में गायी को छार।
रुपसी पाया बभूती रमालै।
चार कूण बटी अलख जगूणो।

यो अलख धन मेरी राजुला हो।
राजा माला कस वैराग लाग हो।

कसी तेरी रङीली वैराठ कस उदेख लागो।
कसी भंग भंडी लग्ँछै राजा माला।
नौमती बाजँछी जब उदासी को बाज।
माता धर्मावती कंसासुरी थाव,
कंसासुरी थाव पिठटत छोऊँछ।
एक नि मानी जस हुण ह्वल।

माता धर्मावती राणी मण-मण नेतर।
कि भय च्याला कि अन्धेरे रे।

तै वखत बैराग बाज बाजण भैगो,
तेरी बैराठ राजा हिलण भैगे,
धरती धर धर फाटण भैगे।
धरती में राजा बिवंर पड़नी.
काच बोट बात करनी सुक बोट डुङरा।
कस बैराग हैयी रय रङीली बैराठ।

गोरू बल्दा पुठ में पुछड़ डौंरीण भै गयो।
राजा कि कर रवौल यस हो।

बार-बीसी घस्यार घा हुणी जाणया,
जाग-जाग धौंस्यान लागी रया।
तेरी बैराग वाणी कानों में आवाज।
हाथ में दाथुली रब्बार में ज्यौड़ी।

स्यौ दाथुली ज्यौड़ी नाचण भै गया।
आप मालसायी एकै नै मानणय।।

धुरा बटी घर लौटा स्यों दाथुली ज्यौड़ी,
आंखर बोल छुटण रया राजुली नाम का।
राजा मालसायी बटीण भै गय,
तू जाण रयै हमी लकी ऊनूँ।

म्यर मालसायी थाम कसी रुँ हो।
राजा मालसायी धन तेरी राजुला।।

मालसायी रे अधिलबटी गुरु रिणीदास।
पछिल बटी राजा मालूसायी।
नौ लाख कत्यूर आप बाट लागी रया।
गोठ की गायी थामी डाना डुङरा।
पशु पखाण सबै थामी हाला।
राजे की बर्‌यात बाट लागण बैठी।

पुरुब झरौख बटी अलख-अलख।
राजा मालसायी धन मेरो राजुला।।

●

सिपौ राम निश्दयी क्वठ त्यर,
राजा मालूसायी दरज नि लाग।

राजा हि्य छिय पथरी को हि्य ।
त्वीले एकै नि मानी बाट लागी गयै ।

सिपौ गुरु मुख गयै बिदिया को भार ।
बगल थमुनी बाट लागी गया हो ।
मार-मार छाड़ बाट लागी गया ।
चार गुरु छन त्यारा रङीली बैराठ ।

गुरु जन्तरी मन्तरी रंगीली बैराठ,
आप गुरु रिणीदास गुरु फिणीदास ।
तामा बिजेसार बिदिया को भार,
न्है गयीं राजा रङीली बैराठ हो ।

●

उदेख बैराग लागी रय तामाढौन माजा,
नौ लाख कत्यूर ऐ रयीं लखनी कैपुर ।
छड़ायी बड़ायी हैरे उदेख बैराग,
तामा बिजेसार को बाज उदेख बैराग ।
कसी बात हैरे आब रङीली बैराठ ॥

राजा मालसायी राजुली बैराग लागी रो ।
राजवंशी च्यल जोगी बणी रयै ॥

राजवंशी च्यल छियै राजा मालसायी,
राजुली कारण त्वीले जोग लिह राखो ।
अलख जगूणो छै यो लखनीपुर,
नौमती को बाज बैराग लागी रय,

तेरी बर्यात्त बाट लागण बैठी ॥
छोड़ण लगै त्वील रङीली बैराठ ।

●

मालसायी धर्मा मयेड़ी मण-मण नेतर,
डाना पखाँण बाट लागी रया हो ।
बैराठ को धुङ उड़ण भै गय,
जाण रौछ कै बेर हमर मालसायी ॥

उदेख लागी रौ कुरेड़ भरी रो,

नौ लाख कत्यूर रैदल-सैदल ।
कत्यूरा बाटै लागी रया हो ।
म्यर मालसायी कस उदेख हो ।

●

आप मालसायी रैदल-सैदल,
रुपसी माला नङार बाजनी ।
सोबन को ड्बल राजा मालसायी,
बाटै लागी रया नौ लाख कत्यूर ।

रैदल-सैदल राजा यो गैली गिवाड़ ।
म्यर राजा मालसायी राजुली छ्वाका ॥

हे राजा घाट-घाट छिन-छिन माजा,
अलख लगूणो धन मेरी राजुला ।
धन राजुला धन बिदासी मुलुका,
छार फोगी राखो आपण म्प्राङ ।
नौणियाँ बदन भगुवायी साज ।
गैली गिवाड़ बटो बाट लागी रयै ।

मि खालैं राजा मालसायी द्वारीहाट माजा ।
रैदल-सैदल चुवा दल फौज हो ॥

राजा मालूसायी द्वारहाट बटी रिङनी पैतोई,
अलख लगूनै बाटै लागी रय ।
नौ लाख कत्यूर बाट लागी रया,
राजुली बैरागी बाट लागी रय ।

मालसायी रे मार-मार छाड़ बाट लागी रो ।
द्वार हाट बटी अधि बाट लागा हो ॥

घरै मैं देखी हाला लछ्यण,
जी होलो भुगुती ल्यूँलो ।
कसी छोड़ों आपण परण ।
बाट लागी रयै बरीजोर ॥

चलणा कत्यूरा धन राजा माला ।
नौ खाब ह्लिण भै गया ।

रुड़ी कस क्वीर फोगी रय,
सरग कस बादल लागी रय ।
कानों में कुण्डल अलख-अलख,
नौ लाख कत्यूर बाट लागी रय ।

बाट लागी रया नौ लाख कत्यूरा ।
राजू कारण यो सारी बैराठ ॥

●

कत्यूरों की जमात पुजी, ओ कोट महर कीट ।
जमात ऐसी लागी छ, पालुरी तांज को बोट ॥
कत्यूरों का हिरण माज, ठड़ी रै छ धूल,
सात भाई महर आप, ध्वाड़म में सवार ।
घनघोर जुद्धा है गेछ, महर कत्यूरा बीच ।
महरों को खून बग्यो. ओ मालू राजुला कारण ।

●

यो दल कटक जाणय गैला हुणदेश,
राजुलो कै ध्वाक सैली कै सौकाण ।
बाटा का बटोबाँ चाइयै रै गया,
धन म्यारा माला किलै भैछै जोगी ॥

यो बाँकी बैराठ माला बाँजो करी गयै.
जोगी की अलख छुटी भल रै छ ।
एक च्यल्ल दुलसायी जोगी बणी रयै,
धन-धन रे मालुवा धन त्यर बैराग ॥

●

द रे तिलुरी का पाँजा,
निङायी का साँचा ।
राजा को दल ऐगो उखोलेख माँजा ।

काटनी क्वेराव,
काटनी क्वेराव,
उखोलेख बटी उणो पथुवा द्वै राव ।

कुख कौंहुल,

कुटव कौंहुल,
गै भैंसी आफी रौली मि दगाड़ ऊँलो।

भद्यायी को खय,
लगुलिया लय,
पथुवा ह्वै राव मालसायी दगाड़ न्है गय।

द रे तितुरी का पाँजा,
निडायी का मांचा,
आज ततर दल न्हैगो कहैड़ी कोट माजा।

द रे पितयी का ब्याला,
पितयी का ब्याला,
कहैड़ी कोट में रुँनी हरुवा का च्याला॥

●

मालू यो त्यार दगाड़ हमी ले ऊँला,
राजुली कारण हमार बौज्यू मरी गया।
सुण मालसायी यो त्यर दगड़
हमी लेक करुँलो सुण म्यार माला॥

सात भायी कैड़ों ले रंगसुवा छोड़ी,
रंगसुवा घोड़ी कासण लगायी।
कहैड़ी कोट बटी बाट लागी गया,
रैदल सैदल गागास ढीक माजा॥

देखी भल ऊँलो गैला हुणदेश,
जोगी की अलख लोद लेख माजा।
जोगी की अलख ताँ बटी ऐ गेछ,
जोगी की जमात ढौन गाड़ माजा॥

ढौन गाड़ बटी जोगी की जमात,
ऐ गेछ जमात झुपली चौंर माजा।
सुण मेरी राजुली झुपुल चौंर माजा,
भुली गैछ राजुली आपण झुप-झुपी॥

झुप-झुपी चौंर बटी बाट लागी गया,
रैदल-सैदल सोमेश्वर माजा।

सोमेश्वर माज वौर चनरी,
बैठी भल रय आपण महल ॥

धन-धन रे मालुवा बाट लागो गोछै,
यो पुजी ग्यौछै माल रे कत्यूर ।
भैला नङारा त्यारा खिणकन बाज,
बैराग को बाज तामा बिजेसार।

माल कत्यूर बटी तुमर कटक,
धन-धन मालुवा बाट लागी रय हो ।
मार-मार छाड़ रूपसिया माला,
पुजी गोछ माला बागेसरा माजा ॥

●

राजा मालसायी बागेश्वर माज,
बास पड़ी रय बूढ़ा बागनाथ ।
देवों का देव भया बूढ़ा बागनाथ,
राजा मालसायी सिर देलै ढोक ।
मालसायी तोरि फौज का जाणे,
मालू काँ हुणी जानो छै ।

मालसायी बलूण भै गोछै हो ।
बागनाथ सेली सौकाण राजुली ध्वाक ।

सुनियैं की चेली राजुली सौक्याण,
जदुक सुरज रूप तदु रूप छन ।
वीक ड्वल लुनूँ रङीली बैराठ,
स्वैंणी रथ देखी राजुली सौक्याण ।

राजा मालूसायी यसी बात कूणो ।
बागनाथ ज्यू घोल कस कफूवा ॥

घोल कस कफुवा नौणी कस बिनैग,
सुनूँ को गिनुवा वी सेली सौकाण ।
र्वोले भल नि कर राजा मालसायी,
बिसैल मुलुक हिंदण में बीस लागों ।
बैठण में बिस लागों उठण में बीस।

खाण में बिष लागों बुनाण में बीस।

नौ लाख कत्यूरों दगड़ी बाट लागी रयैं।
मालसायी नैराठ त्वील बांज करी है हो ।।

राजा मालसायी यस बुद्दीमान भयैं,
यस ले भयै खोपड़ी दार।
राजभंग करो त्वीले राजुली कारण,
जोगी तन लिह बेर बाट लागी रयै।

राजा मालसायी न्हैगो अछिल का बाटा हो।
सूर्यकुण्ड जै बेर गंगा अस्नाण हो ।।

●

धन-धन रे मालुवा करछ अस्नाण,
रूपसिया माला नायी धोयी बेर हो।
मालसायी नौ लाख कत्यूर रे,
बाट लागा सूर्यकुण्ड बटी हो।

धन प्यारा मालुवा रैंदल सैंदल,
चुरा दल फौज बाट लागी रय हो।
मार-मार छाड़-छाड़ बाट लागी रया,
आज न्है गया कपकोट माजा हो।

कपकोट माज त्यर लसङर गय,
धन-धन मालुवा रैंदल-सैंदल हो।
प्यर रूपसी माला मार-मार छाड़,
रात दिन हो बाट लागी रौछ हो ।।

●

वेदों को भार अठार छन पुराण,
गुरु रिणीदास गुरु फिणीदास।
निरभयी जाणोछ राजा मालसायीं,
चोर न्हैंती डर बैरी न्हैती सकिया।

रैंदल सैंदल त्यर दानपुर पुजी रो हो।
सिरी दानपुर पुजी रैछै माला ।।

रात-दिन बाट लागी रय,

सुर लागी रय सेली कै सौकाण ।
गैला नङार बाजण रया केरेला दमुंवा,
रैदल सैदल बाट लागी रय ।

आप न्है गोछै घिङराणी कोट हो ।
घिङराणी कोट जै बखत ग्योछै ।।

बुरुंस कस फूल हैरो राजा मालसायी,
गाड़ गाड़ छिन अलख जगूँ छै ।
धन धन राजुली कै जागा हुनेली,
कि उदेख लागो राजा मालसायी ।

धन वे राजुली कै जागा हुनेली ।
राजुली सौक्याण मिखै देली वे ।

रिङ्नी पैतोई बाट लागी रयै,
मार-मार छाड़ बाट लागी रयै ।
निङ्यली का छाम ग्योछै मैली पातल,
बाट लागी रयै अलख जगुनैं ।

आप न्है गोछै माला तली सौकाण हो ।
मालसायी सौकाण पुजणो छै ।।

●

धन धन मालुवा बाट लागी रयै,
बैराठ को राजा तली रे सौकाण ।
तली सौकाण गयै मली रे सौकाण,
न्है गोछ मालुवा रैदल सैदल ।।

म्यर मालुवा रैंदल सैंदल,
ये गोछ मालुवा बिदासी मुलुक ।
धन धन मालुवा बाट लागी गोयै,
न्है गोयै मालुवा हुँम धुर माजा ।।

कस जाग को रुणियां काँ आयी गोयै,
कस त्यर राज पाठ कस ले है रय ।
नौ लाख कत्यूर चुवा दल फौज,
रिणी फिणीदास हुम धुर माजा ।।

●

हाव चली रयी आप बिषैल मुलुक,
चोर गुरु छन रिण-फिणी दास।
बैराग को बाज बैराग लगुँनो,
ऊँचा हिवाल की हाव बिसैल मुलुक।
बावन किसम का बिस नौ लाख कत्यूर,
खापा बटी गयी बिस की हाव,
नाँक-सोर गयी बिस की लपट।

मालसायी जो जती छी उती रैं गय।
राजा मालसायी बिस लागण भैगो॥

आप मालसायी सोच कर विचार,
कवे बोला न्हैंती कवे न्हैती चोला।
कसी हुंणी हार आयी कस भय राजा,
हुंम धुर नौ लाख कत्यूरों कणी बिस लागी रय।

राजा नौ लाख कत्यूर बिस लागी रौ।
बावन बिसों की लपट लागी रे॥

●

धन धन मालुवा बिसैला मुलुक,
लागी भला रौछ नौ लाख कत्यूर।
फौज लसङर त्यारा बिस लागी रय,
रूण-रुणी बिस ठुण-ठुणी बीस॥

धन रे मालुवा विष कै मारीण,
के धान करँछ येसी बात हैरे हो।
आदु बाट रैं गयी नौ लाख कत्यूर,
बैठी रैं गया रिणी-फिणी दास हो।

राजा मालसायी कूँछ बात,
सुवैं कसी खापड़ी ऐसी बात कूँछ।
के बात है गेछ कसी जूँल छर,
धन प्यारा मालुवा यो सोच बिचार।

मरिया मन लै हिये भरी ऊँछ,
पुछण भै गोछ रिणी फिणी दास।

कसी जानूँ कूँ छै रङीली बैराठ,
कसी जानूँ आप सेली कैं सौकाण ।।

गुरु रिणीदास त्यारा गुरु फिणीदास,
सोबन लाखुड़ी बिदिया को भार ।
गरुड़ फाँख ले बिष झाड़ी दिया,
दास रे धरमी सोबन तालुड़ी ।।

नौ लाख कत्यूर त्यारा नींन है उठला,
चुवा दल फौज हाय नींन हाय नींन ।
रैंदल - सैदल त्यारा ड्यार रोकी हालो,
यो गुरु हितकारी मालू कैं दि दींनी ।।

बोकसाड़ी बिदिया थामी हनुमन्ती जाप,
अलख जगुनैं मालू राजुली कैं खोज ।
लागी भल रय माला सौकाण को देस,
कैं देस हुनेली आव राजुली सौकाण ।

एकली पराणी तेरी बाट लागी गेछ ।
अलग लगूनैं आप राजुली कैं खोज ।
जोगी की साज त्वीले पैरी भल राखो,
राजुली कैं जागी धन मेरी राजुला ।।

●

बैराठ बटी माला न्है गोछै सेली कैं सौकाण,
कानन कुण्डल पैरी पोथिया हाथ में ताबीजा ।
रुद्रांस की माला पैरी खेरुवा की झोली,
कपाव वभूत पैरी जोगी बणी रये माला ।।
यस ब भूत पैरी माला आसमान इनेरेंणी पड़ी रैछ ।।

नौला जसा आंख माला डग-डग करनो,
राजुली कारण गौछै हुंम धुरा बटी ।
आप पुजी गोछै माला तली मली ज्वार,
तै ज्वार माला त्वीले अलख जगैछ ।।

आब सौका सौक्याणियां चाइयैं रै गया,
जाणी देबों की मुरत मालू चौंरी को पीपव ।

जाणी भागीरथी गंगा लहर आयी रैछ,
आप भोटिया भोट्याणी चाइयैं रै गया ।।

कैक च्यल ह्वलैं कैक गरभ करो बाज,
किलै भैछै जोगी को दिस करो बाँज ।।
जनम को जोगी तू करम को भोगी,
भोटिया भोट्याणी पुछ्ँण भै गया ।।

तब मालसायी राजा आँख भरी आया ।
सिपौ मालसायी आप आंख भरी आया ।।
मिलौ हुंलो बौणियो करम को जोगी ।
म्यार भाग पर बौणियो यस लेखी राखो ।

आपणी इजा को कौल एक च्यल हुँल,
जै दिन पाच वरप को बोज्यू मरी गया ।
म्यार भाग पर भगवानो यस लेखी राखो,
म्यार भाग पर वैणियो यस लेखी राखो ।।

त्यार नौंणियां गात सिपौ चिर पड़ी जाल,
सोहनी सूरत जोगी तेरी फाटी जाली हो ।
घर घर कुड़ी जानैं रुँछै माला अलख जगैछ,
आप पुजी गेछै माला सेलौ रे सौकाण ।।

तैयी सौकाण माला उठण में बिस,
तैयी सौकाण माला बैठण में विस ।।
खासण में बिस लागों देखण में विस,
इजू ले मिथैं कय मिले क्यू' नि मान ।।

कयी दिन रुँछ मालू पोथी गंगा किनार,
धुप्पा धुप्पा आग जगैछ च्याला गगा किनार ।
कै दिन रौछै माला पोथी हिवाल डानन,
जे मुलुका माला हिंय गफी रय माला ।।

एक दिन की बात माला तीन दिन को भुख,
सुनूँ का कंकण छन हाथ में तावीज माला ।
मि तेरी चाकुरी है जूँल कि धान करुँलो,
करी राखो मेरी इजू ले सत्त भिकैं भोरजन मिली जाव ।।

सौकाण सौक्याणी ओ बाबा, बकरां कै ग्वाबा,
मालू कैं देखछ इजा निरण्डी जंगला ।
मुख थें भै वेर बाबा बुलाण भै गया,
सुण साधु सुण किलै रुंछै जंगल बाबा ।

म जंगल माजा इजा फल न्हैतिन फूल,
त्वीथैं तौली न्हैती पण्यूंल कहैं खांछै जोगी ।
तीन दिन है गयी बौणियों खाण लैं नि खाय,
तीन दिन है गयीं पाणी ले बिताय बैणियो ।

सौक्याणियों ले छाड़ी हाला बाकरा माला,
घर जायी वेर भोरजन लाछा सौक्याणियो ।
तुमले परदेशी मनख भोरजन जिवाछ,
ब्याल बखत सौक्याणी-आपण घर गया ।

हिटो बौणियो जानूं जोगी आयी रौछ,
यस जोगी मैंले जनम वि द्यख ।
जेक मुख देखी हिय भरी ऊंछ,
जैक मुख देखी के कूंण नि ऊंन ।।

●

हिट जानूं-जानूं हिटो जोगी देखी ऊंलो,
हिटो भुलू-भुलू हिटो जोगी देखी ऊंलो ।
कैलै दूद, थाम, कैले दूद पै थामो,
कैलै फूल थामो, मेरी बैणियो जगल न्हैं गया ।।

यो चारों तरफ बौणियो सौक्याणी बैठी गया,
जोगी की सामणी तिनोले दूध-दै धर ।
देखनीं बोली नै सकन माला आंसु भरी आला,
हिय आंखन में सौक्याणियो आंसू भरी लाला हो ।

साधू कुनूँ भुलू आप कै जाग जाँछै
मि जाण र्यूं माता उत्तर कैलास माता ।
बाट लागी गोछैं बी भली सौकाण माला,
भौते रे दिनन घुमन रैं गोछै माला ।

आदुक संसार आदुक मुनस्यार माला,

खुटन पड़ी गया त्यारा ककड़िया चिर ।
आङ में पैरी राखो त्वीले संकर बभूत,
घुमनै घुमनै पुजै माला राजुली बखायी ।।

घुमनै-घुमनै पुजै सुनपती महल माला,
सुनपती सौक को यस ले हुकम ।
मरद नाम को चेली सेल झन देखिये,
मधुर वाणी ले माला अलख जगैछ ।

दे माता भिचिया कूँछ फिरी जोगी न्है जाल भगवान ।

राजुली दगाड़ छै चार छोरिया,
दियो भिचिया फिरी न्हैयी जाल ।
मि जांछी भिचिया बौज्यू हुकम न्हैती,
कसी जांनू म्यैर बौज्यू मारी दुयाला ।।

दगाड़ की बैंणी न्हैगे जोगी की भिचिया,
श्यैर गेछ छोरी मालू डीठ पड़ी सौकिया ।
मालू चैरो छोरी कणी छारी चैरे माला,
मन-मन समझैंछी तू कैक च्यल ह्वलै ।।

थाम जोगी भिचिया तेरी जैबलै ल्यूँलो,
मालू राजा बुलाण बैठी गय माला ।
घर की घरीण तू छै मि भिचिया ल्यूँलो,
घर की घरीण न्हैंती झुटी झन लायै ।।

छोरी लौटी न्हैगे बाज्यू भतर न्है गेछ,
मधुर बाणी ले राजुली बुलाण भै गेछ ।
जाणी ब्याण तारा जस खाण कस गास,
जाणी देवी की मुरत जाणी चौरी को पीपव ।।

मि तेरी बलै ल्यूंलो राजुली देवी की मूरत,
सुनहरी थाव माज भिचिया धरी हैछ ।
बावन सौ को जिवर त्वीले पैरी राखो,
छम-छम हिटंछी भुलू एक खुटकणी ।

छम-छम हिटंछी बैंणा दुसरी खुटकणी,
छम-छम हिटंछी राजू तीसरी खुटकणी ।

पैदल हिटंछी त्वीके धरती लाज लागछी,
आँखन जाणी त्यारा गाजव भरी राखो ।

गाव को चर्‍यो पोथी जाणी हिय पड़ी रौछ,
हृदय को ज्वल जाणी कातिक निमुँरा।
कमर देखींछ जाणी कुम्माली कस ठाँस,
जाङ्न को ज्वव जाणी केयी कस खाम ।

फिनरी को ज्वव जाणी धोबी की मुङरा,
गठ्युड़ी देखींछ जाणी कुकुड़ी कस आना।
पैंतोई को ज्वव देखींछ जाणी कुकुर जीवड़ा,
जै बखत हसँली राजुली पार छैल पड़ी जाँछ ।।

ऐन कसी सूरत पार छैल पड़ी जाँछ,
ऊनैं-ऊनैं ऐ गेछै दैणी भीड़ी पटाँङण ।
माला चैरो राजुली कणी राजुली चैरे माला,
द्वियै झणी एक दुसार कणी चाइयै रै गया ।

इजा, जाणी हँसा हसिणी छन,
मैंना तोता छन ।
चन्द्रमा सूर्य छन, कृष्ण राधिका छन,
सूर्य चनरमा इजा मोहित पड़ी गया ।।

थाम जोगी भिचिया कूँछी मधुर वाणी ले राजुली,
रुपसा हाथों ले त्वीले झोली छोड़ी हैछ ।
रुपसो हाथों ले त्वीले भिचिया दि हैछ,
जब जोगी मुख लौटाय म्यार भूलियो आप राजुली बुलाणी ।

●

काँछ जनम भूमीं तेरी जोगी काँक छै रुनेर,
किलै भैछै आप जोगी मि तेरी बलै ल्यूँलो।
सुण बाजो तेरी बलै ल्यूँलो म्यर हाथ देखछै,
म्यर ब्या बाजी कै दिस होल बाजी ।।

रुपसा हाथों ले त्यर हाथ थामी हैछ माला,
देखण भै गोछै माला राजुली को हाथ ।
विगर नाम-रास को खायूँणी हाथ बिचार नैं हुँन,
कि छ त्यर नाम कैदे मिथैं छोकरी ।

सुनपत सौक की चेली राजुली म्यर नाम,
म्यार भाग पर यासा कि दुख लेखी राखा।
दनै दे जोगी म्यर भाग तकदीर,
माला सगर्जछ यो छ राजुला ।।

त्यर ब्या ह्वल राजुली ठुला राजा दगड़ी,
त्यर ब्या ह्वल राजुली पश्चिम को राजा।
मालू ले त्यर हाथ छोड़ी भल हाल,
राजुली पुछँण बैठी बाबा काँ तेरो जनम भूमीं।

किलै ओछै जोगी धनी नारायण,
कि कारण तास उमर में जोगी भयै।
तब मालू राजा बुलाण भै गय माला,
मेरी जनम भूमी होली बैराठ नगर।

दुलसायी को च्यल हुल धर्मावती माता,
मालसायी म्यर नाम मि बाकुरी है जूँलो।
बैराठ को राजा मिले जोगी भयूँ,
सुण छोरी राजुली या त्यार उपर हो ।।

बैराठ नगर छाड़ो बुढ़िया मसतारी,
घोड़ी का तबेला छोड़ा पिंजरी कै सुवा।
दरी का दिवान छोड़ीं हस्ती छाड़ी कुंजर,
यो त्यारा कारण राजुली देश छोड़ी हैंछ हो।

तब राजुली सौक्याण बुलाण भै गेछ,
झिट घड़ी भै जायै भिड़ी पटांगण हो।
पाल भतर न्हैगे बौज्यू-इजा तेरी बलै ल्यूँल,
म्यैर आयी रौछ, जोगी बड़ भारी जोगी हो।

एक चेली छ्यूँ मि बवे च्याला न्हैंतिन,
तैकणी भतर लुनूँ तुमार च्यल है जाल।
सुनपती सौक कौलो तेरी बात मानी जूँलो,
तुमरी बात को मि ध्यान धरूँलो ।।

सुनपती सौक न्है गोछ माला का सामणी,
सौका द्वि आंखन जाणी जादु पड़ी गोछ।

मालू कणी ग्वट मुणी त्यार दिवी हैछ,
हाथ जोगणो स्वामी तुमी हमार घर रौला ।।

मालू बाट-पन कूंछ जे सीताराम,
सीता राम कूंछ सौकाण मेरो लाज धरिया ।
मि कसिकै बचूंल यो सेली सौकाण,
मि कसिकै लि जूंल राजुली रङीली वैराठ ।।

सौका का छन काव सफेद कुकुरा,
सारी भुटान भुकण लागी रैंछ ।
किलै आय हुन्यल म्यर हँस सेला सौकाण,
मि कसिकै बचूँलो यो कुकुरा हाथ ।।

●

गाड़ छाड़ी छट मैंले, मिलौ छाड़ी तिपुर महला,
किलै छाड़ी हुन्यली इजा, पिंजरी कैं सुवा हो ।
वैराठ कैं समझैंछ मालू इजू को पिरेम ।
वैराठ में समजैंछ माला, दरी का दिबान ।
दिन जे भ्यैर रूंछ माला, रात भतर जाँछ ।
दस दिन है गयीं मालू, बीस दिन है गया ।
यो सारी सौकाण माला जाणी जगैछ बात ।
लै बखत माला सारी सौकाण, जाणी हैछ बात ।

क्या करँछै मालू गोठ रै बेर, जाणी गेछ बात ।
राजुली सौक्याण कूंछ हिय जै भरी बेर माला ।
यो त्यर वचण माला आप, हैग्यो कठिण रूपसा ।
क्या करंछै भ्यैर रै बेर माला, भीतेर रै जा ।
मालू को आसण राजुली, भोनेर है गोठ ।
रात भतर रूंछै माला दिन भतर रूंछ ।
बची रयै ओ रूपसा यो हुणी कवी नै टलनी ।
बीसा दिन आप सुनपती, क्या बैण बुलांछ ।।

●

सुनपती सौक गयो राजुली का पास,
राजुली थैं कूण लागो सुनपती सौक ।

सुण मेरी चेली त्वीले जाण होलो,
रङीली बैराठ मालू कै दगाड़ा ।

मालू की लुकुड़ मैल हयी गेछ,
तूलें सूजै लागै मालू की लुकुड़ो ॥
भोल हुणी जाली रङीली बैराठ,
बैराठ जाण हुणी तैयार है जायैं ।

राजा मालसायी जँबें हयी गया,
मालू की लुकुड़ी तू सूजं लायैं ।
यो सिदी राजुली सांची मामी गेछ,
मनैं मन आव खुशी हैंयी गेछ ॥

द्वार-माव लगाय मालू की लुकुड़ी,
मालू का लुकुड़ ध्वैंण की न्है गेछ ॥
गोरी गंगा किनार, लुकुड़ा लि गेछ,
सुजूण भैं गेछ राजू मलासी मलासी ॥

सुनपती सौक ले जाणी हैछ बात,
मेरी चेली न्है गेछ धोबी घाट माजा ।
आव न्हैगो सुनपती मालू मुख तीर,
तुमो म्यार जँवें मि तुमर सौर ॥

मेरी चेली लि जांछा माला रङीली बैराठ,
तुमी हुंछा जँवें कि लुकी रया तुमी ।
हिटो म्यारा भीतेर झिट घड़ी भं जानूँ,
धरम दि हैछ सौका मालू त्वी कणी ।

ठाड़ उठँछै माला आंख जै बलकँछ,
तै बखत भगवान यो हुणी कि ऐछ ।
सुनपती महल सिपौ राजा मालसायी,
जाणो सुनूँ को गिनुँवा माला बैठो रौछ ॥

जासी बैसाख सूरिजा बैठी भल रय,
म्यारा देवो छाजी रय सुनिया महल ।
गाऊँली सौक्याण तेरी डीब पड़ी गेछ,
मालू द्यख जब हिय भरी ललूँछी ॥

मालू का उपर सौका बिस मथी राखो,
मालू का उपर सौका बिस की खीर।
म्यारा जँवें तुमी भोरजन करी आवो।
ठाड़ उठ मालू हाथ खाय छवैंछ।

म्यॆर आछ माला डाली में भैरो काव।
काव ऐसी भाग बुलाल सुनपती सौक ले।
बिस खिती राखो माला त्यार भोरजन में,
मालू भीतेर जांछ हरी नारायणा॥

म्यैर नि ऐ सकनैं भितेर मरी जालै,
हाथ धोयी बेर भीतेर न्है जाल।
तेरी इजा थैं कई द्यौंलो माला मरी गय,
मालू बैठी गोछ रस्यो खण्ड माजा॥

माला जसै भीतेर गोछ अटाई में बैठाक,
गाऊँली सौकपाण थैं सुनपती कयी राख।
मालू थैं ज्ञन कयै तैंमैं बिस खिनी राखो,
तस कौली गाँऊँली त्वे कणी काटी मारी द्योंलो॥

●

तब गांऊली आप तेरी बलै ल्यूँलो,
लागी गे बुलाण।
गाँऊँली सौक्याण हाथ में थायी थामी बेर,
माला का मुख थैं ऐ गयी।
हासिपी हाथ रँगे थायी हरी देबताओ,
खीर खांछै आप माजा मरी तू जालै।
सुनपती सौका ले गाड़ी राखो अजीत को खान,
खीर दिछ दि नतीं मुनी काटी द्योंलो।
तब गांऊँली कूँछी सिपौ मरण तैं आछै म्यार चेली उपर।
सेली सौकाण मालू त्वीले नक करछ।
फिरी स्वामी मुख गयी गाऊँली स्वामी माला नै मार।
चेली ले यस कर तुमर कि बिगाय॥

●

तव हौ परभू-एकै नै मानन म्यारा हरी,
तै बखत माला खोर खाण भैगो।
आपण मन थैं कूणी हन्सा तू जायै म्यार इजा पास,
मि आपणि इजा को एक्कै हुँल च्यल।
हन्सा तू बैराठ जै दियै इजा॥

●

एक गास खाछिय मालू लटण पड़ी गोछ,
दुसर गास खाछिय मालू बेहोश हुण भगो।
तीसर गास खाछिय माला बैकुण्ठ है गोय,
रवा कस खात माला धरती पड़ी गोछ।

●

सुनपती सौक ले हुकम करी हैछ,
यो चार सौका बुलाया खितौ काल कभाड़।
यो चार सौकों ले थमाय मालूसाया।
हाय-सियौ राम मालसायी खितौ काल कभाड़॥

●

जैं घड़ी लागीछ मालू कैं जहर,
तैं घड़ी का बीच गौरी गंगा किनार।
मालू की लुकुड़ी पाणी में भिजायी,
मालू की लुकुड़ी खूँन सरी गोय।
बौ तरफ काव पछताण भैग्यो,
राजुली मुय्यै मन समझण बैठी।
मारी हाल हुन्यल म्यर स्वामी माला,
हुणी नैंहुणी गायी दिण लागी।

छाती जै तीलछै मुनीं जै फोणेछे,
बेला-बेला भरी का नेतर छोणेछे।
छोरी, जुलियाँ लकुड़ा छोड़ा ओ छोरी राजुली,
बाट लागी गेछै ओ छोरी राजुली॥
बौ काल कभाड़ माल खिती राखो,
यो छोरी राजुली पुछँण लागी गेछ।

हिंकुरी-हिंकुरी आँसू ढावण बैठी,
सुणो म्यारा बौज्यू का हुंणी गय माला ।।

सांची बतै दियो कां गयो मालसायी,
सुण मेरी चेली सुण मेरी बात ।
राजा माल सायी जाणा को न्हैगो ।।
रङीली बैराठ राजा मालसायी न्हैगो ।।

मन समझँछी राजू कि धान करछूँ,
मन की मधुर सिपौ गात की दुबई ।
दिन जानैं राया, राजुली सुकी गेछ,
झुरी-झारी सिपौ मछुई कसी काना ।

चौमासी बनाड़ सांस जसी बेलाणी,
रुड़ीन की फूल जसी वी सेली सौकाण ।
कतकतानो फूल मांझ डाल पड़ी गेछ,
जायी कसी फूल आनि पड़ी रैछ ।।

दीन काटी लिछै राजुली नेतर ढाई बेर,
रात काटी लींछे तारा गणी वेर,
मुखझौली बखत छाती फाटी जांछी ।
पुन्यू जूँन मांझ अमूसी पड़ी रैछ,
राजा मालसायी याद मस-मसी लागीछ ।

गू कीड़ा चार कलज कोरी दींछ,
कठकीड़ा की न्याती हिया छांणी हालो ।
स्वामी का दुखले रकत उभली गय,
रकत को पाणी सिपौ आँखन में झायो ।
कुइयाँ लाकड़ा जसी मन मन जगँछी ।।

●

यो त्यर मरण माला यों सौकाणी हुन्यल,
सुण हो देबताओ हरी नारायणा हो ।
तेरी जागा माला खाली हैयी रैछ,
देखँछी राजुली छाती फाटण लागी ।

तेरी जागा खाली है रैछ माला,

इथकैं जाँछी राजुली उथ, काँ गय हुन्यल ।
बौज्यू मुख जाणे सिपौ इजा मुख गेछ,
त्यर खायी राखो इजा मैंले दस धारी दूध.
काँ गय म्यर माला बतै दे मेरी इजा ।।

द्वियै आँखन गाऊँली आँसू भरो लूँछी,
यो त्यार कारण माला मरी गो पगला ।
धरम को च्यल एक्कै लें न्यल भय,
त्यार कारण चेली बिष खवै मारछ

चेली झुठि नै बुलान्यूँ ।

राजुली सौक्याण मोरछण आयी गेछ,
राजुलो सौक्याण सिपौ बेहोश हैयी गेछ ।

●

कतिक मालू खिती राखो, मेरी इजा मैंकणी बतै देली,
मालू का दगाड़ इजू, मि मरी जानूँ ।

मेरी चेली मरी जाली, मालू कैं नैं बतूँनी ।
राजुली सौक्याण सिपौं, पागल हैयी जाँछी ।
मिले बौज्यू क्या करछ, तुमर कि बिगाय ।
सात जुग जाणले बौज्यू, सन्तान नैं मिल ।
बिना कसूर त्वीले बौज्यू, माला मारी दिय ।

●

लेखछ कागज त्वीले सुनपती हुणदेश दि हैछ,
हुणदेश में छन रिखे-बिखेपाल हुणियाँ ।
रिखी-बिखी छन हुणदेश का राजा,
तुमी म्यर अन्ध कूँ भरी दिया राजुली लि जाया ।

रिखी बिखीपाल हुणीयाँ ध्वाड़ा बाकरा,
धन लादी लाया हुणदेस मुलुका ।
ऐ गयी हुणियां भूलू बी सेली सौकाण,
सौकाणी ऐ बेर हुणियों ले ड्यार बादी हैछ ।

आठ दिन है गयीं हुणियाँ ड्यार बादियैं रै गोछा,
सुनपती थैं बुलाण भै गयी सुण हो सुनियाँ ।

हमार ध्वाड़ झुप ऐ रयीं तू बतै दि हाल,
आपण अन्ध कूं तू राजा बतै दि हाल,
सुनपती सौक ले लन्ध कूप बताय।
लुणियों ले धन भरी हैछ ॥

●

सुण रे सुनपती तू हमन चेली दिखै दे।
तब तिपुर महल न्हैगो सुनपती सौका ॥
एक तरफ राजा मालसायी मारी राखो।
एक तरफ त्यार बौज्यू त्वे हुंण देश बिवाला,
धरती उलट पुलट है जाली कैथैं कुनूं दुखा हो।

●

तै बखत भाजा जसै ग्योछियै सुनपती राजुली मुख थै। ब्योली देखण तै द्वि हुणियाँ ऐ रया। पटाँगण में ऐ रया। बौज्यू कि काव है रैछ। चेली त्वे कणी देखण आया। भ्येर बटी ऐ रयीं। वर कस छना।

●

देखनी हुणियां, राजुली हुणिया देखंछी।
सुपा जसा कान, डाड़ जसा आँख।
लाल ज्वाला पैरी राखा हुणियाँ बाखुला।
के कूण नि ऊंन राजुली सौक्याण।

●

तब कूण लागी रैछ राजुली देखना कन मैकणी,
देखो बौज्यू कसीकै काँटुल आपण दिन हुणियों दगाड़।
तनार देस की बौज्यू मिकणी बोली नि ऊंनी भागा,
हाथ जोणूं तुमन हुणी, बौज्यू मिकणी हुणदेश नैं बिवाया ॥
सुनपती सौक एक्कै नै मानन हरी देवताओ,
तू मिले दि हैछैं चेली हुणदेस सुलुका।
बौज्यू तुमो लें नि रौला हुणियां नि रौल,
कब तक रौलो बौज्यू तौ हुणियों को धन ॥

आब देवताओ, ओ इजा, सुनपती एकै नैं मानन,
जब राजुली जाणछी बौज्यू एक्कै नैं मानन।
हिवाला का जोगी, मामा शंकर भगवान,
हर की कालिका पुण्यागिरी माता हो।

म्यर ब्या झन होब हुणियों दगड़ी,
जब ब्या ह्वल जब मौत हैयी जाव।
राजुली मुख थैं न्है गेछ ढल-ढल र्‍वैंछी,
खोरी फोड़ण बैठी इजू, बौज्यू समझै देली।

●

आब आयी गोछ ककरी को दिन,
कंकरी देस बटी बर्‍यात ऐ गेछ।
झिलमिल हुणियाँ आया सुनियाँ कै घर,
कदु छन ध्वाड़ गधा हजारों झुपा।

ज्यूनें जमदूता छन झिलमिल हुणियां,
आप आयी राजू हुणियों की बर्‍यात।
यो राजुली बर्‍यात सुनपती घर,
राजुली की बर्‍यात झिलमिल हुणियाँ।

राजुली सौंपी हाली हुणियाँ मुया,
मन त रयी गम राजा मालसायी।
माँसू ले जाण बैठी बर्याता दगाड़ा,
राजुली बटीणभैगे हुँणियों दगाड़ा।

●

तब हुँणियों की बर्‍यात मुयै बटीण भै गेछ,
तब राजुनी मुयै ढल-ढल र्‍वैछीं।
ह्रियां पिङाव लुकुड़ा राजुली तेरी बलै ल्यूं लो,
त बखत आब राजुली डोली में भै गेछ।

डोली में भै बेर मुयै आँसु ढावण लागी
दगाड़ का चेलिया त्यार दगाड़ है रयी ठाड़।
राजुली डोली में भ रैछ हो ॥
त्यार मुख तीर तेरी इजू ठाड़ी हयी रैछ,
मेरी इजा मि मरलो हणियों का मुलुका ॥

तू मरली मेरी इजू सौकाणी मुलुक,

आज बटी तेरी मेरी भेट कब लकी होली।
सुण हो दगाड़ा बैणियो हमी बाकरों के ग्वाव,
दगाड़ जाँछ्या ग्वाव आप कसिकें जूँल।
जतिकै हमि बैठी रुँछियाँ उतिकै बैठी जाया,
तब म्यारा बैणियों तुमी भुलिया झन।

●

ताल घरा का काक बुलै दिया, माल घर को काखी।
माल गौं का बुबू बुलै दिया, पार गौं की आमा हो।
काव स्याता लाखन इजा, तनन भ्यैर लायी दियो।
आप जाछुँ मेरी इजू हुण देस मुलुका हो।।
काव स्याता बाकश बैणी त्यार मुख तीर,
आमा काखी ठुबू बैणी दीदी लिह बेर ऐ गेछ।
सुणो म्यारा आमा बुबू बैणी तुमी भाल है रया,
काव स्याता बाकरा त्वीले हाथ फेरण लगायो हो।
सुणो म्यारा बैणियों मि मरूँल हुणियों मुलुका,
तुमी म्यारा बैणियों, तुमी माला है राया।
मधुर-मधुर सबद ले कुनूँ क्या न्योली बासछी,
म्वाटा म्वाटा सुर ले बैणी क्या कफुवा बासछी।
आप राजुली मेरी बैणी को डूबल उठै हैछ,
तब सौकाणी म्यारा भुलू परलय है गौछ।
म्यारा भगवानो म्यर मरण हुँणदेस में ह्वल,
आज बटी तुमन बैणियो कां बटो देखँलो हो।
सुण बौज्यू तू कभै झन देखियै औलाद को मूँख,
त्वीले म्यार उपर बोज्यू कि अन्धेर करछ।
हुणियों का बाकरा इजा बाटा लागण बैठा।
हुणियों ले कयी राख्न आंचव आपण घर।
राजुला की डूबल म्यारा भुली बाट लागी गय,
जंगला पंछी बैणी रुवैण लगी गया।
भेड़ बाकरा म्यारा बैणी डाड़ा ले मारला,
झुपा ग्वाड़ा ले म्यारा बैणी आंसू छाड़ी हाला।

●

न्है गेछ राजुली मुयेड़ी बाट अदबाट,
न्है गेछ राजुली को ड्वल वी आदुक हिवाल।
आदुक हिवाल जसै गेछी ल्यूँ चड़ी बासँछी,
सुण दुखारी बैंणा राजुली तेरी बलै ल्यूँलो।।

एक दुखारी तू छै बैंणी ल्यूँचड़ा एक दुखारी मि भयूँ,
एक दुखारी ह्वल भुली बैराठ को माला।
राजुली पंछी की बोली जाणछी सुण बैंणी ल्यूँचड़ी,
जबन-कबन बैंणी मालसायी आलो।।

जब मालसायी म्यार उपर आल,
म्यर जुबाब कै दियै बैंणी।
राजुली हाड़ हुणदेस न्है गयीं।।

●

आप देवताओ यस कै दिया बांकुरी है जूँल,
तब मेरी ल्यूँचड़ी न्योलूँ बासँछी हो।
बैंणी राजुली ठण्डा मुलुका न्हैगे अन्न नैं खानी पाणी,
देस सारी र्वैंणी कर गेछ सुण राजुली मुयेड़ी।
पंछी पराणी दुख भौछ त्वे कणी बेऊण में।
राजुली पुजी गेछ भगवान हुणियों का मुलुका।

देखनीं हुण्याणी मोरछिल है गाया,
कां बटी लाछा देवन की नारी काँकी लछिमो।

●

राजा मालसायी आप परेत की जून,
इजू का मुख थैं स्वैंण का सबन।
राजा मालसायी कूँछ ओ इजू मयेड़ी,
जहर ले मारी दियूँ सुनपली सौका।।

मि खीली राख्यूँ यो काली कभाड़,
यो सेली सौकाण इजू मि मरी गयूँ।
यो काली कभाड़ इजू मुर्द बणी रयूँ,
उपाय करली इजू लास मिली जालो।

●

मि मरी गयूँ कूँछ मेरी इजा सौकाण मुलुक,
दुख झन मानियै इजा त्वीथँणी बयान।

सुणो म्यारा दिवानो बैराठ इजू को दगड़,
मितौ मरी गयूँ भायो सोकाण मुलुका।

तै बखत भगवानो आदु रात सपन,
तै बखत भगवानो कस सपन दुयख।
सारी बैराठ में सिपौ झुलकाव पड़ी गोछ,
बैराठ नङर में माला पड़ो गो झुलकाव।

च्याला मरण तैं ग्योछै सौकाण मुलुका,
मरणै तै ग्यौछे व्वथा सेली सौकाण।
बैराठ कैं छाडौ गोछूँ च्याला दरी का दिवान,
गद्दी को बैठण छोड़ त्वीले राजुली कारण॥

म्यारा देवताओ कसी कावा है गेछ,
सारी बैराठ में सिपौ झुलकाव है रौछ।
रात ब्याणी उज्याव है गोछ घाणी लागो घाम,
खबर हैयो गेछ यो सारी बैराठ॥

यो दल कटक इजा कुनूँ बटीण भ गोछ,
त्यारा मामा छिया माला मिरतुवा गढ़वाल।
बोकसाड़ी बिदिया जाणछ चोबाट की धूल,
काँकुर की जड़ी जाणँछ गढ़वाल जादू॥

तब ऐग्यो गढ़वाली आप बैराठ नगरी,
म्यार भुलू तेरी बलै म्यर च्यल कसिकै बचल।
सुण मेरी बैंणी तू फिकर झन लिहयै,
बचायी लि ऊँलो बैंणी आपण भाणजा॥

मिरतुवा गढ़वाली आपा बटीण भै गोछ,
यो बारा गरख आपा बटीण भै गया।
म्यारा मालू भायो बचै घर लै दिया,
यो फौज कटक भगवानो बाट लागी गोछ।

●

तै बखत कटक बाट लागी गोछ,
तै बखत तनर कटक बागनाथ गोछ।

तै बखत कटक क्रपकोट ऐं ठाँण,
तै बखत कटक ल्वार खेत न्है गोछ ।
तै बखत कटक बिजुली दानपुर,
तै बखत कटक गोरो गंगा छाल ।
दल कटक न्है गोछ हुँम धुर माजा,
हुंम धुर में मिली गया नौ लाख कत्यूर ।
मिरतुबा गढ़वाल ले बिष भाड़ी हैछ,
तनर कटक सेली न्हैगो सौकाण ।

डाली मैं को काव इजा मैं खै द्यलो,
बोठ में भै रौछ कहा कहा करंछ ।
कहा-कहा करँछ माला मरी रौछ,
मालसायी जतिकै खिती राखो काव कहा-कहा करँछ ।

★

तब मिरतुवा गढ़वाल करण लागो उपाय,
दल कटक ले मालू कै गाड़ी भल हालो ।
हे राजा हमार देस बांज पाड़ी गयैं,
नील मैंकी निल राजा मालूसायी ।

यो मिरतु गढ़वाल आप रिणी-फिणी दास,
बिष जै झाड़नी आप अमीरत सीचनी ।
बुकसाड़ी बिदिया आप हनुमन्ती जाप,
हाय नींन-हाय नींन, नींन है उठलो ॥

तै बखत माला हिट न्है जायूँ बैराठ,
मधुर बाणी ले माला बोलाण भै गय ।
घर बटी बणी आयूँ राजुली को जोगी
कट्ठ दिन रयूँ यो काली कभाड़ ।

जावो तुमी म्यारा भायो मि राजुली खोज,
सौकाणी आयूँ मि राजुली कारण ।

माला त्वीले सुनपती ले ल्यू ँ खाती दवाय,
आपण चेली राजुली हुण देश बिदै हैछ ।

राजा मालसायी मन सोच है रया,
गुरु का सिर दिछैं ढोक पाया ल्हि छै लोट ।
गुरु घर जानू ँ आब कसिकै जानू ँ,
के धान करनू ँ के काब रचनू ँ ।।

राजा मालसायी कसी बात कूणी हो ।
राजा कि करंछै कां जाछै हो ।

गुरु कसिकै जानू ँ घर हुणी,
राजुला कारण जोग ल्हि राखो ।
राजुला को ध्वाक लागी रय,
ध्वाक रयी गय राजुली सौक्याण ।

मालसायी कसिकै जूँल कूँछै हो ।
मरियां ज्यूँन राजुली खबर हो ।

धन-धन म्यारा मालुवा कसी कूँछ बात,
एकै नैं मानन कसी कूँछ बात हो ।
अघिल कै देखिणो सुनपती महल,
राजुली की जागा खाली हयी रैछ ।

त्यारा गुरु गाड़ी बिदिया की भार,
गाड़ी हाली तुमों ले बिद्दी को पिटार ।
के धान करनू ँ आप के काव रचनू ँ,
कसिकै जालै तू राजुली कैं पास हो ।

बभूती को ग्वावा मंतरण लागाया,
बिद्दी को भार जन्तरी बणायी,
बभूता का तुका जन्तरी बणैंहाली ।
धन म्यारा मालुबा द्वि जन्तरी बणाया ।।

★

गुरु त्यारा माला समझूँण भै गया,
एक जन्तरी तेरी होली एक जन्तरी राजुली।
राजुली गाव ले बाढलं सारंगी बणी जालौ,
त्यार गाव ले बाढनूँ सुवा बणी जालै।

मालसायी गाव ले बाढ़ण लगायो हो।
मालसायी आपण रुप छोड़ि है हो।।

कस सुवा मालू बणन भै गयै,
सुनूँ को सुवा मालू बणन भै गयै।
सुनूँ को ठूँन, सुनूँ का फाँख,
त्यार रुप देखी को कौलो माला,

आप सुनूँ सुवा बटीण भै गोछै,
रुपसिया सुवा उड़ण भै गयै हो।

बावन बुट को सुवा बणी भल रयै,
कस त्यर ठूँन बणायो कस त्यर रुप।
अमृत की तुम्बी बिष की तुम्बी,
राजा मालसायी त्वीले एकै निमानो।

राजा मालसायी आसमान उड़णो हो।
त्वील करी बैराठ बाँज राजा।।

सुवा उड़ आब सुनियाँ महल,
धैं काँ मिलंछी राजुली सौक्याण।
फुर्‌क उड़द सुवा सेली सौकाण,
उड़ण भैं गयैं बीदिया को भार।

सुनियाँ महल द्यखण-लगाय।
रुपसिया सुवा न्हैगे तेरी राजुली।।

फुर्‌क उड़ायो आब रुपसिया सुवा,
मार-मार-छाड़ श्वाद लागी रयै,
आप न्हैयी गयै एक खुटिया राज,
राजुली का दूँन एक हथिया राज।
घुमनै फिरनै गयै एक कनियाँ राज,
रुपसिया सुवा आब एक आँखियाराज।

आप न्है गो रुपसिया सुवा हो।
हुणदेस निङ बाट लागी रो माला ॥

एक अँखिया राज वटी वार चापो पार,
वार-चाप पार यो गैलो पातल।
को कुड़ी हुन्यली आप राजुली सौक्याण,
को ल गय आब राजुली सौक्याण।

राजुली न्हैगे ध्वाड़ मुखी राज।
ध्वाड़ मुखी राज उड़ण भै ग्यो हो।

●

धन-धन मालुवा ध्वाड़ मुखी राज,
घुमनै रै ग्योछै ध्वाड़ मुखी राज।
ध्वाड़ मुखी राज बिदासी हुणियाँ,
धन म्यारा मालुवा घुमनै रै ग्यो छै॥

●

कास गुरु छन हुणदेस के राज,
गुरु रे छिया आप गुरु बिद्दीपाल।
बिददीपाल छिया गरु विरवेपाल।
अजेपाल स्यल भय चनरी बिरवेपाल॥

चनरी विरवेपाल कस राज है रय,
कछरी भै रुँछ राज क्या करँछ।
राजा भै रुँछ सुनूँ सिंहासण,
सुनूँ का अटांगण सुनूँ पटांगण॥

यास राज छिया तुमी राजा पृथ्वीपाल,
कस राज कमाय राजा अजेपाल।
नयीं राज है रय चनरी बिखेपाल,
चनरी बिरवेपाल राजुली को राजा हो।

तस राज छिया चनरी बिरवेपाल,
कँ दिन लि गया राजुली सौकिया।

जै दिन लि गयै हुणदेस माजा,
सोबन को ड्वल छ्वाड़ मुखी राज ।

●

राजा पृथवीपाल राजा अजीपाल,
तनर च्यल भय चनरी बिखेपाल ।।
तनर ब्यौपार छिय तली हरी माव,
बी दिन बटी तनर ब्यौपार चलो रय ।

तनर ब्यौपार ऊन लूण को हो ।
राजा चनरीपाल बिरखेपाल हो ।।

राजा पृथवीपाल आय सुनियाँ का घर,
ठ्याक करी लि गयै राजुली सौक्याण ।
आँचब को ब्या ठ्याक करी लायै,
सात ब्वाज रुपैं राजुली सौकिया ।

राजा खुसी बणी रयै चनरी बिरखेपाल ।
चोरै न्हैती डर बैरी न्हैती सकिया ।।

हमार मुलुक कृ आयी नैं सकन,
बार-बीसी बर्यात सुनियाँ कै घर ।
हुणदेस को राज बर्यात लि गय
राजुली को ड्वल ल्वीले आपण घर ।

राजुली ब्या करी लाया हुणदेस हो ।
राजुली कणी छ्वाड़ मुखी राज ।

जदुक हुण्याणियां जदुक हुणियां,
राजुलो ऐ बेर खुसी बणी रया ।
चनरी बिखेपाल सोच करनी विचार,
घोगैं कसी प्योली राजुली चुवा कसी बाल,
निङाऊ कसी खाम राजुली पुन्यूँ कसी चान ।

पृथवीपाल बिबैं लाया बाज धाज बजै बेर ।
बार-बीसी बर्यात तुमरी हो ।

चनरी बिखेपाल सोच करणो बिचार,
कसिकै लि जानूँ आब राणी को रण्यास ।
पुरब झरौख आप लाल कठ्यावा,
बिवै घर लाथा राजुली सौक्याण ।

खबै पिवै बेरे बरेती घर न्है गया ।
चनरी बिखेपाल सोच कर बिचार ॥

आप बरम को च्यल वलूँण लगायो,
छै गज की खड़ी नौ गज पानड़ी ।
गुरुज्यू ब्या करी घर लाया आँचव करी लिन्हूँ,
राजुली को आंचव करी लिन्हूँ ।

नौ फ्याश मानौं रिङनूँ राजुली हो ।
राणी रण्यांस बाज पड़ी रे हो ॥

आप चनरी बिरवेपाल गाज्यो कस लुट,
भालु कस घ्यट भैस कस आङ ।
ध्वड़ कस मूँख त्यर बरमान में आँखा,
कस रुप भय त्यर चनरी बिखेपाल ।
बाभण बुलाय ल्आय खड़ी पातड़ी,
आंचव को दिन सोद्यूण लगायो ।
राजुली न्हैगे बामणा का मुख ॥

आप यो म्यर राजा है जां कि धान करूँ ।
राजुली मण-मण नेतर छोपछै वे ॥

वी बखत आप कसी हैरे बात,
राजुली सौक्याण आंसूँ ढावणेछी ।
बामण का मुख देखी मण-मण नेतर,
चनरी बिखेपाल खुसी बणी रयै,
टुरुक-टुरुक राजुली बामणा का मुख ।
चनरी बिखेपाल कसी माया है रैछ ।

राजुली कैठाक हैरो रंग-रंगा नेतर ही ।
वैक मूख चाण में के कूण चि ऊँन ॥

पापी सौक को नरक हैयी जाल,
हाड़ वेची दिया म्यारा खू ँन सोसो दिय ।
बामण ले राजुली मुख चाणो,
सोच रे बिचार ब्रामण को च्यल,
राजुली मुख चाँछ के कूण निऊ ँन,
दुणियाँ का मुख चाय के कूण निआय ।

नौ फ्यारा मानों खण्डित बणू ँण पड़ि ग्यो हो
ज्वेशी त्वीकें झुटि बुलाण पड़ि ग्यो ।।

होर गाड़नी मेटी दिनीं पोळी,
आप ज्वेशी ज्यू सोच करनी बिचार ।
ज्वेशी का तू मुख चाइयै रै गयै,
चनरी बिखेपाल के कूण निऊ ँन ।

राजुली त्यर बिचार हुणो वामणज्यू ।।
मण-मण नेतरों को बिचार ।।

चनरी बिखेपाल गुस्स भरी गय,
उरियां दिन उछांण भै गय ।
ठाड़ बणी गय गुस्सा का मारियां,
कदु होर गाड़ी कूण के नि रयै ।

ओ बामणा कभी बात हैरे हो ।
जस हैरो कूण के नि रयं ।।

आप चनरी बिखेपाल सुणी ल्हे बात,
जसी कै बिवै लाया राजुली सौकिया ।
यां मि जुल्म देखण लागी रयूँ,
जस देखछाँ तस बतै दिया ।
नाड़ी-बेदन खट-बेदन बतै भल दिया,
कस हैयी रय साँचि बतै दियो ।

बतै दिनूँ सांची बिखेपाल''''।
चनरी बिखेपाल सुणी रयै हो ।

राजा तुमी नक मानो भल,
तनर संजोग कस हयी रय ।

अघिल वटी चनरी बिखेपाल मुस बणी बेर।
पछिल वटी राजुली जेरै बिराउ बणी बेर।

बार बरष तक इनर लगन नें सुनन।
बारी बरष इनर लगन हैयी जाल हो।

मेरी पातड़ी येसी कूणे साँची मानो झूठी,
बारा बरस तुमार नौ फ्यारा मानो।
चनरी बिखेपाल चर-चर बर-बर,
मिकणी के फिकर नि भयी बरमण्यू ॥

बार वरस दिन चार दिन जसा हो।
चनरी बिखेपाल ठाड़ बणी गय।

●

आँचव को सामन भीतेर समाव,
अविल कै करौ राजुली कै सामव।
राजा चनरीपाल लुवा कै महल,
लुवा कै महल पुरबिया छाजा।

लुवा का महल राजुली बणै है बन्द,
बार-बरस जाण लेक राजुली बणै बन्द।
बन्द बणै हैछ राजुली पुरव झरौख,
सुनूँ की सिरानी हो रूप की पयाँन हो।

सुनूँ की सिरानी लगै रूप की पयांन,
चार कूण में चार रे पानस हो।
सौ-साठी हुण्याँणी बैठी रे ग्याया,
राजुली चौकीदार सौ साठी हुण्याणीं।

राजुली खटुली क्वे मुर रे माखा।
बैठण नि चैंन पुरब झरौख।
राजुली कै ग्वाबा बार बरस लेक,
राजा को हुकुम लागी भल रय हो।

सुनूँ की हपक पाणी की छपक,

लुवा कै महल बन्द बणै हैछ ।
चार चाकर हुणियाँ बैठी भल गया,
बीच में लै रैछ राजुली की खाट हो ।

सितीया झन तँकणी चै राया,
बैठाक लिहू राखो चार कूणो पानस ।
राजुली खटुली गिलम-गिनुवाँ,
धन वे राजुली कस देखण भैछ ।।

●

राजुली का पहर सौ साठी हुण्यांणी,
खबरदार तुमी क्वे लकी नै सितिया ।
क्वे लकी सितला आरी हाली चिरूँल,
राजुली कणी दुख आल कोल हाली पेऊँल ।
कसी माया हैरे ब्वाड़ मुखी राज ।

सात ताला भ्यैर सात-ताला भीतेर ।
राजुली बन्द बणै हैछ हो ।।

●

निल मैकी निल है रैछै काव मैं की काव,
मन की मधुर हैरे गात की दुबयी ।
हथडयी को पाणी नि पिनी रुपसी राजुली,
उदेख लागी रय बैराग लागो रय,
हुणियां का महल बन्द बणै राखी ।
दिन छूटी मास लागा बरस लागण बैठो ।

राजुली तुमलि कसि भुगुति है ।।
धन तुमर भाग हो माला राजुली ।।

कां गय हमर सत्त ले धरम,
कां गय तुमर बोल रे बचन ।
राजा मालसायी घुमण लागी रयै ।

सुवा रुप ले माला घुमण लागी रयै ।

राजा मालसायी अन्न नि खाय पावी रे ।
कसी हुणी हार हैरे ध्वाड़ मुखी राज ।।

●

धन-धन रे मालुवा बरस है गया,
धन रे मालुवा सुनूं को सुवा हो ।
रात दिन कनैं हुणदेस पुजी रयै,
ध्वाड़ मुखी राजा सरग रैं गोछैं ।।

तारा मण्डल घुमैं सूरज मण्डल,
घुमनै रैं गोछैं माला गगन मण्डल ।
गगन मण्डल रैं गोछैं बादल मण्डल,
के धान करलैं कि काव रचलैं ।

र्वैण लागी रय बैराठ को राजा,
त्वीकणी हुनली राजुली दूद की सोज्यूंन ।
खटुली हुनली पुन्यूँ कसी चान,
कसी कै देखूंलो तो तेरी सूरत ।

घुमनै फिरनै यो नङर ऐ गोछ ।
ध्वाड़ मुखी कैं राज घुमनै रैं गोछ ।
कुड़ी-कुड़ी मौव हेरण लागी रौछ,
राजुली की सूरत कती कै देखींछ ।।

●

मालसायी धुर चाणो गद्यार,
तारा मण्डल हेर लायो सूरजा मण्डल ।
रात-दिन मालू चाण लागी रयैं,
मन सरबण राजुली का लागा,
कां हुनली राजुली का मिलली आब,
कां मिल्ली राजुली के धान करूँलो ।

अधोराती बीच माला घ्वाड़ मुख राज ।
राजुली दुनँण रौछै माला ।।

सब महल द्याखा ध्वाड़ मुखी राज,
सब महल लुवा महल डीठ ।
रंग आयी रय राजुली हुंन्यली,
अघिल चाणो पछिल चाणो माला ।
ऊ महल कै बाट न्हांती माला भीतेर,
सात ताला भ्यैर छन सात ताला
अनुली मज्यायी होली राजुली सौक्याण ।
सुवा माला भुर्र कन उड़ी भल गयै ।

राजा मालसायी धुरी में भै गोछ हो ।
धुरी में भै ग्योछै सुवा ।।

धुरी बटी नजर मारी कें बाट नैं हांती,
कं बाट जानूँ पुरबा झरोख ।
चानैं चानैं आँख टिपी गया,
चानैं चानैं जावा बैठी गयै ।
जावा बटी न्हैयी गयै राजुली महल ।
देखी हाली स्वीले राजुली सौक्याण ।

राजुली मन सोच मालुसाया हो,
सुवा उड़ो आप नारिङ उज्याणी ।।

ठुस ठुस ठोसँछ मालू नारिङा का दाणा,
राजुली सौक्याण सुवा बुलांण भै गेछ ।
नैं खायै सुवा, सुवा तू नारिङा का दाणा,
राजुली सौक्याण सुवा बुलाण भेगे हो ।

नै खायै सुवा, सुवा तू नारिङा दाणा,

मिले धरी राखीं नारिङा मालभायी उपर।
कै दिन द्यख हुन्यल सुवा इजू कैदेस,
कै दिन द्यख हुन्यल त्वीले मेरो इजू मूख ।।
(मेरि इजू ले देखि हुनली)

कै दिन द्याखा त्वीले म्यार लाख बाकरा,
कबै द्यख त्वीले बैराठ को माला ।
द्यख त्वीले सुवा म्यर मैती कै देस,
यो म्यार कारण मालू मारी देछ सीक ।।
(म्यार बौज्यू ले मारो देछ)

द्वियै आंखन में राजुली आंसू भरी आया,
द्वियै आंखन में राजुली आंसू भरी आया, (ओ सुवा)
नारिङ का दाणा छोड़ी सुवा उड़ी गोछै,
सुवा उड़ो भै गय राजुली कै गोद ।।

●

आप राजुली सुवा पोछण बैठी,
कै पापी ले बादो दिय येक गाव डोर ।
(कै पापी ले बाद हुन्यल)

इ्वर जस टोड़ इजा मालू बणी गय,
इ्वर टोड़ राजुला मालू बणी गय ।
राजुली चैरे माला माला चैरो राजुली,
मालू चैरो राजुली हिय भरी ऊँछ ।
(माला कसिकै बची गयै....)

यो द्वियै झड़ी धनी नारायण हो ।
द्वियैं हन्सा हंसिणी कस दुख ऐ रौछ हो ।
भौते हैगे ढील चाइयें रै गया ।
बोली नें सकन्त बाकु रौ है जूल ।।
(इजा चाइयैं रै ग्याय)

दीन बणौ सुवा मालू रात बणो माला,
रत्तै गाव जन्तरी वादी रात घड़ी खोल ।
दिन घुमछै बगींच माज नारिङ की भाड़ो,
रात रुँछै राजुला दगड़ो कैले नि जाणी,
(इजा भै खै द्याला)

तीन चार दिन माला भतर रै गौछै,
तब ओ राजुली मुय्यै बुलाण भै गेछै ।
सुण प्यारा माला यो छ जादुकी मुलुका,

एक जन्तरी लि जै रौछी अपाण दगाड़,
एक जड़ दि राखो राजुली कारण ।
सात दिन है गयो इजा भतर रै गयी,
सता दिन हुणी भुलू उरी गो मसोद ।

एक जड़ बादो राजुली सोक्याणी,
तब मेरी राजुली सारंगी बणी गेछ ।
मालसायी ले बादो सुवा बणी गय ।
जू घरों का बास म्यैर आयी गया ।

बावन बुट राजुली सुवा सारंगी,
यो सुवा सारंगी फुरुक उड़ला हो ।
पूरब उड़ायीं न्है गयी बादल मण्डल ।
बादल मण्डल घुमनै रै गया हो ।

राणी रात व्यैगे घाणी लागौ घाम,
चनरी बिखेपाल ठाड़ उठी गय ।
चूड़क उठलराजा क्वाठ छ भैंम,
लुवा कै महल नजर मारलै हो ।

लुवा को महल निर किलै भय,
अलबलोनें न्हैगी टोड़ण भैगो द्वार ।
लुवा का ताव खोलण लगाया,

भीतेर न्है गय चनरी बिखेपाल।
सुनहरी खाट तेरी खाली हैयी रैछ,
बार-बरस को सामव धरियैं रै गोछ।
हुण्याँणी द्याखा छै मसिया नींन,
लात ले मारछै तनारा नाक में हाँणछै।

सौ साठी हुण्याणी खाड़ उठी गया,
राजुली सौक्याण काँ हुणी गेछ हो।
हमूँ ले नि देखी पड़ियैं रै गया,
राजुली सौक्याण हमूँ ले नि देखी॥

●

लुवा का मितेर मांख ले नि ऐ सकँछी,
राजुली सौक्याण तुमों ले मारी हैछ खायी।
खायी हैछ तुमों ले राजुली सौकिया,
तुमी कि चँछा आरी हाली चीरु।
रिखी कावा दि दिनूँ तुमन कणी।
राजुजी तुमों ले खायी मारी हैछ॥
धन म्यर भाग काँ गे राजुली॥

★

कां गेछ राजुली धन म्यारा बिधातो,
बाल क्वाड़ चाणो पाल क्वाड़ चाणो।
राजा बिखेपाल छाती भटक,
कि बात है गेछ कि काव करनूँ।

रीसा भारी ले बार चाणो पार,
राणी भौछ रात धाणी लागो घाय।
बार भै अजीतों कें रथ चली रया,
चनरी बिखेपाल बरमान में आंख।

राजुला पलंग टटकुण लागो,
बाल क्वाड़ चाणो पाल क्वाड़ चाणो।
यथ चाँछ आब उथ ले चांछ,

जू घर में देखी ह्वाला सुवा टूटी फांख ।।

गगन मण्डल नजर मारण बैठ,
कि धान करनूँ द्वि पंछी देखणां ।
आप चनरी बिखेपाल बादल मण्डल,
एसा पंछी मिले जनम नि द्याखा ।।

●

आप चनरी बिखेपाल ध्वाक रयी गय,
बावन बुटा का चाड़ा भैंम आयी गय ।
आपण बौज्यू मुख थैं न्है गय,
राजुली न्है मे जो आय हुन्यल ।

राजुली खटुली खाली हैरे हो ।।
आपण बौज्यू थैं पुछणो हो ।।

आप बौज्यू द्यखों वी काली बादल,
घुमण लागी रया द्वि पोथिला ।
बावन किसमा का बुटा जनम नि द्याखा,
कसी जँल आप कसिकै होली भेट ।

सुवा सारंगी दगड़ी कसिकै भेट ।
आप बौज्यू कसिकै जानूँ हो ।।

●

तै बखत बीच राजा चनरी बिखेपाल,
आपण गुरु थैं हुकुम मांगछा हो ।
कसिकै जानूँ गुरु बादल मण्डल,
एसा रुपी देखिनी यो काव बादला हो ।

जसिकै बाँ जायीं मि बुददी बतावो,
हाड़ को हड़याठ जुगा का रातुर ।
आप त्यारा गुरु कसी बात बुलाला,
जांछू कूँछै जब बादल मण्डल हो ।

म्यारा गुरुज्यू कसी बात कौल,
गाड़ी द्वालो तुमले जादु को भार।
जादु को भार चलूंण भै गया।
राजा चनरी पाल चलूंण लगाय॥

मानिख को रूप छवड़ धरण भै गोछ,
कसी के जायीं छ यो कायी रे बादली।
धन रे राजुली बैरी ऊन भै गोछ,
तुभर दुसमण बरीण भै गय हो।

धरण भै गोछ चनरो बिखेपाल,
मनिख रूप छवड़ बाज रूप धर।
बाज रूप धरछी उड़व भै गय,
रीसा का मारियाँ बरीण भै गय॥

आप मालसाशी तुमर सतुर पैद हैग्यो,
सुसार भूभाट बाट लागीरय।
गौराट भुभाट हैरो फुरुक उड़ाणो,
ह्योड़ी भाँरछ ड्योड़ी सरग नजर।
बैरी बाज उड़ण भैगौ बादल मण्डल॥
सरग छ नजर सुसाट-भुभाट-हो।

सुवा सारंगी पीछ उड़ण भै गय,
कस सुसाट हैयी रय चनरी बिखेपाल।
तनार पछिल जाण रय ह्वाड़ मुखी राज,
जौ सुवा सारंगी वैं जाण रय।

चनरी बिखेपाल न्हैग्यो बादल मण्डल,
राजा मालसायी बैरी ऐग्यो „ ॥

सुवा सारंगी आप दगाड़ जाणया,
पछिल बै न्है गोय चनरी बिखेपाल।
ख्याद पड़ी रौछ गगन मण्डल,
ख्याद पड़ी रय सुसाट भुभाट॥

धन वे राजुली बाज आयी गय।
सामण भै गय आप सुवा की पूँछ।
सुवा सारंगी द्विया पुछड़ चुनल,
उथकै रिङण्छ फिरी ख्यात ले पर्णौंछ हो।

गाँख वीणा उसी कै चुनी खाया,
माँमू खाण लागी रय हड्ड खाँछ फोड़ी ।
आप राजुली धन म्यारा विधातो
बाज ले हमारा पुछाड़ चुनी खाया ॥
माँसू खाँछ लूछी खून खाँछ चूसी,
चाड़ों की ज्यान बाज हाथ लागी ।
के धान करनूँ कि बत करनूँ ।
कसिकै बचुनूँ आपणी ज्याँन ॥
राजुली मालसायो पिछ तौ बाज पड़,
फांख लूछी खाछी बाजा राजुली छुरा गेछ।
भगवती जै कणी बचूँछ माना लीला अपार,
बागनाथ ज्यू देणह्या मेरि जान बचाया ॥
राजुली का हाड़ जंगला नजीक,
माल। का फाख तैले उचेड़ी खाना ।
माल ले छुरी गय सियौ राजुली दगाड़ा,
निरण्डी जंगल माला राजुली छुरी रया ॥
विदासी मिरतु जाणी हालो बात,
स्वींणा का सपन स। जाणी हाल ।
लागी गया बाट आप त्रि निरण्डा जंगल ।
रिणी-फिणी दाल विदीया को भार ॥
कि बैंठछा ओ भुल मंले देखी शखा'
माल राजुली का हाड़ जंगल पड़ी श्या ।
निरण्डी जंगल ग्याछी मालू देखी हैछ,
मालू का बों तरफ राजुली छुरी रैछ ॥
बिदासी गढ़वाल ले भाणज गोदी में धरछ हो ।
राजुली सौक्याणी ले त्वीले गोदी धरी हैछ हो ।
कर जादु त्वीले म्यार भलू यो ड्वर टोड़ी हैछ।
माल राजुली को मिरतुवा ड्वर टोड़ी हैछ हो।
राजुली मालुवा मनीरव है गया हो ।
तब म्यार भगवान हिंवाला बन्सापतो हो ।
माला राजुली आङ ले लगाय पीड़ दूर करी,
मालसायी राजुलो भगवान भाल ले हैं गया हो।

मालसायी राजुली को दल खुशी बड़ी रया,
राजा को दल बार लागो म्यारा भगवान हो।
हिर जानूँ म्यार भुलू बैराठ नगर हो,
ऊनैं आयी गया सेली कैं सौकाण हो।
फथुवा द्वै राव आप लागी गो बुलाण,
जाणी बरवत आप भायो सौक दगड़ी जुद्ध हो।
तब कूछैं माला नैं करन झगड़,
पथुवा द्वै राव आप एक बात नैं मानन हो।
हमार राज कणी ध्वाक करी बेर,
तैंले मारो अ प धनी नारायणा।
सुनपती सोक कणी खबर दि हैछ,
आपण दल लिहि बेर सैंण मैदान हो॥
सुनपती सौक ऐग्यो आप गिरीरवेत माजा,
फथुवा द्वै राव बुढ़ है गय तैयार हो।
चार सो बरष की बुढ़ पथुवा तैयार है गय,
गण पथुवा फूली बेर घुरी कस ववेराव॥
आँखन का चिमा पथी त्यार गालन ऐ रयी,
हाथन का नङ म्यारा खण् कुटयाव है रयीं।
जुङन को भणक पड त्यार रववार द्वुङ लौरी रया।
बुदव की धोती वे पथुवा कमर में पट्यल हो।
मिले कैं ऐ रयूँ त्याल थैं मरि गयूँ सौकाण,
मेरी किरीया करी दिया म्यारा च्याला हो।
बचीं गयूँ जब मि नाम कभैं लूँलो।
दैण हाथ दबीलै फथी सौका दगड़ी मिलाछ हो।
वौं हाथ दगड़ी फथुवा थीं हाथ मिलाछ,
तब कूणो धतिया धरम की लड़ै हमरो जीत।
झूठी बेमानी में हमरी हार होली हो,
लि गयाँ तेरि चेली ध्वाक करी मरी जूँलो हो,
सो हो मायी मदी च्याला,
तं बरवत फथुवा कमर अङाव हाली हो।
द रे मरदो, पूरब जानी पच्छिम जानी,
उत्तर जानी दच्छिड़ जानी।

लड़नै-लड़नै धरती हिलण भैगे हो
यारो धन-धन पैगा ज्यू हो ।।

धन रे फथु बुड़ियाँकावे उमर तेरी ।
धन त्यारा वंश हीं।

बन्दूक की गोली,
सौकाण में लड़ी गोछे जीत तेरी होली ।
यारो धन-धन पैंगाज्यू ।

सौका आसमान रवेण छै, फिरी ले खुट टेंकछी,
धरती में पसाँरछै फिरी ले खुट टेंकछी ।
लड़नै लड़नै फथी द्वि दिन है गया ।
यारो धन-धन पैगाज्यू ।

अरे फथुवा द्वारहाट द्वैराव छै,
धरती माता थैं कूण लागै ।
चितर शिला धरती कूण लागै. ।
बागनाथ ज्यू सुफल हया ।
मेरी राजै की जीत होली
अन्धेर अन्याय में लड़ण रयूँ ।
सौका तेरी जीत होली ।।

तगड़ी को पाल
चौथ दिन हुणी सुनपती मुणी खेड़ी हाल ।
यारो धन-धन पैगा ज्यू ।।

मर्दा, राजुली सौक्याणी ले त्यार खुट गामी,
बौज्यू ले स्यारा जस धरम करो पाप ।
फथोसिंह मि माफी माँगू ।

दाथुल की धार,
तेरी वलै यूँलो बौज्यू नै मार ।
यारो धन-धन पैगाज्यू हो ।

मर्दा सौक खुटन पड़ी रयो ।
फ़थी अङाल छाड़ी हैछ ।
हे राजुली तुमी हमरी राणी,
तुमर बचन मानूँ लो ।
यदुक काम करनूँ आज ।

सुनपती सौका का भौ जुड़ खौरी हाला ।
मुख लै दै-मोस चुपड़ी घर खेती हाल
यारो धन-धन पैगा ज्यू ।।
यो हो, तै बरवत भगवान मालसायी दल कटक
बाट लागी गोछ गोरी गंगा बही ।
गोरी को पाणी कदु आनन्द है रे ।
माला को दल ऐगो बिजुली दानपुर ।
यारो धन-धन म्यारा पैंगाज्यू ।।
तब देवताओं ऊनै-ऊनें कपकोट ऐठाण,
तब आयी पुजी गया बागनाथा थाना ।
राजुली सौक्याणी न्हैगे गंगा किनार,
गोमती सरयू राजुली अस्नाण करँछी ।
बागनाथ ज्यू सुफल है जाया ।

दैंण आङुल में तेरी हरियाँ मुनड़ी,
हरियाँ मुनड़ी राजुली सरजू चढ़ै हैछ ।
बौं हाथ मुनड़ी राजुली सरयू चढ़ै हैछ,
दुणदेस बरी आयूँ गंगा माता बागनाथ भूमी हो ।
तटी बटी गैछे राजुली त्रिजुगी पीपल,
पीपला एक हाड़ जैरो पुरब पच्छिम ।
एक हाड़ जै रौछ उतर दच्छिण ।
राजुली—मुमेड़ी पीपव जल चढ़ै हैछ हो ।
पीपव कणी त्वीले पिठ्या लगै हैछ.
अछ्यत चढ़ाया त्वीले पीपला का जाड़ा ।
द्वियै हाथ जोड़ी बेर भेट-चढ़ै हैछ,
बिणती करी त्वीले राजुली त्रिजुगी पीपव ।।
(हे भगवान सुफल हया)
सौकिया पागड़ त्वीले कमर बादी राखो'
मुड्न की माव गाऊक जै रैछ हो ।
लटी को घम्यल त्यर कमर जै रैछ,
हाथ जोड़ी न्है गेछै बागनाथा मन्दिर ।।

मन्दिर गेछी राजुली फलों की बखेर,

छोलो दरौज शिवज्यू कैं जल ।
पारपती माता कैं नवाय भैरब मन्दिर,
गाऊँन की माव बैंगी पारपती चढ़ैछ ।।
फूलों की बरवेर बिणती करॅछी,
राजुली सौक्याण सिर दलो ढोक ।
म्यार स्वामी माता की धरिया लाज,
बूढ़ा बागनाथ सुफल है जाया ।।
मालू ले भेज जोइया बैराठ नगरी,
मेरी माता भि कुशल ऐ गयूँ ।
मेरी इजू भेजी दियै बार गरख कणी, ।
ढोल नङारा दूरी तूफार रणसिंग ।
डोली को डोल्यार भेजी दियै सूर्य बंशी हवाड़ा ।
म्यार सुवन का पिंजार इजा भेजी दियै ।
त्यार आसीरबाद ले बागनाथ ऐ गयूँ ।
राजुली लिहू बेर बागनाथ पुजी गयूँ ।।
बैराठ बटी बाजी गो नङारा हो,
बार गरदवदान चार दिसों कै हो ।
दस हजार बरयात बाट लागी गेछ,
मालसायी बरयात बाट लागी गेछ ।।
दुसार दिन हुणी बूढ़ा बागनाथा,
माला की बरयात गंगा चाइयै ठै गेछ ।
रात हुणी नवाय पिय आनन्द है रय,
बावन घाँट बाजा बागनाथ कै भोग ।
बागनाथ मन्दिर भगवान आरती हैछ,
पूरब उज्याव हुण बैठ न्योली पंछी बासण भै गैछ ।
मधुर-मधुर सबद ले न्योली को सबद ।
राजुली सौक्याण को डबल काछी हैछ हो ।
मालसायी कै रव्वार में सुनूँ को छत्तर
राजुली बैठी डोली में मालसायी बैठ हवाड़ा ।
बामण लोग आप वेद ले पढ़नी,
बागनाथ बटी बरयात बाट लागी गेछ ।।

बर्यात न्है गेछ बरेशै नजीक,
बर्यात न्है गेछ कडेरौ की गाड़ ।
कडेरौ का गौं मली गोल्ल मन्दिर,
पाँच फ्यारा परिकर्मा मन्दिर करीछ ॥

बरयात बाट लागी द्वारहाट माजा ।
द्वारहाट बटी फथुवा नजीक ऐ गौछ ।
नाचनैं फथुवा चौरवुटी गिवाड,
बर्यात मालू की बैराठ पुजी गैछ ॥

मालसायी वर मैं मंगल हयी रया,
चारों तरफ बटी फूल धरी राखा ।

धर्मावती माता अछ्यत परखॅण वैठो ।
राजुली मालसायी जाणी हंसा हसिणी ।

बैराठ आज बैकुण्ठ है रछ,
फथुवा द्वैराव नाचण लागी रौछ ।
धमविती राँणी खुसी बणी रयी,
खुशी ले आँसू दावणेछी ॥

जौंया निसाण धर्मा परखण भै गेछ ।
दैंण बौं तरफ खितँली सुनूँ का गिनुवाँ ।
द्वियै मस्तारी च्याला जाणी सौण भदौ बरख ।
जांणी चौमास की गाड़ द्वि मायी च्याला ।

क्वारी का गाऊँन अडाव खितछी ।
आप भतर न्है गयीं तुमी बची रया ।
लै बरवत पंच लगन में घर पैट,
हुँण लागी गय राजुली घर पैट ॥

बरेतियों कँणी खाण खवाय,
आपण बरेतियों रवै चूठी ज्यूनार,
आपण पिठ्या लागो क्वे बैराठ द्वारहाट,
आपण घर जानी खोल सौ कत्यूरा ॥

नडार बज्यै-बज्यै बेर आपण हार जानी ।
आप मौब थैं रै गय एकलै फथुवा द्वैराव ।
फथी तेरा बलै ल्यूँलो जि माँगछै माँग,
खली मली द्वारहाट रवीकै जगरात मिली गेछ ॥

राजा ले दियी हैछ तली मली द्वारहाट।
छत्तीस सवार फथु द्वारहाट ऐ गोछ
घर आयी बेर खुसी बणी रया,
आनन्द ले रया मालू योभ्यर आसीरबाद।

एक की इकैस हैजो पाँच की पचास।
गानेर सुणनेर तुमी जि जागी रै जाया।
च्याल बालों को च्याल जोरों नटुवैं की ज्याँन।
चुल की रिस्यार जिरौ पान की पन्यार।

जिया जागी रया तुमो पंचपुरी सभा,
अमर रै जाया तुमी धरती को चार।
भूमी का भूमियाँ सुफल हैं जाया,
मि गैंल नाचूँलो दि जूँलो असीस।
जि जागी रया तुमी गानेर सुणनेर,
हिवार-भगार तुमी जि जागी रैं जाया।
यो दिन यों मास तुमी भटैनै रैं जाया।
दुब कसी जड़ है जो पाती कसी पौव।
अमर है जाया तुमी यो गौं का लोगो।
यो गौं का देवा तुमी सुफल है जाया।

❋ इति ❋

पाद-टिप्पणियाँ

विवेच्य गाथा 'मालूशाही' में आए कुछ विशिष्ट शब्द तथा वाक्य जो भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, जो भावों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप को एक ही शब्द द्वारा अभिव्यक्ति करने में सक्षम हैं, और उनका अर्थ अभिधा द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। वे लक्षणा तथा व्यंजना की अभूतपूर्व सृष्टि करते हैं, इनका लोक सांस्कृतिक महत्व भी अन्यतम है। गाथा के अर्थबोध को सुगम बनाने के लिए इनकी व्याख्या प्रस्तुत है—

(पृष्ठ-1) **उरन्त**-उदयाचल, (पूर्व) **परन्त**-अस्ताचल (पश्चिम) **धर्म-दम-लोक** धर्मलोक-मर्त्य लोक, ब्रह्म लोक, देव लोक, स्वर्ग **कांठ**-दुर्गम चट्टान या पर्वत **मछोया** मछर्ना मङरों है **गेछ**-जलधारा में लिप्त होगई, **वर्णसिंग राजों ले** वनराज सिंह ने **आड़बन्द**—आड़ लेना अपने शिकार के लिए घात लगाकर तैयार रहना, **दूदी का पौखाव** - दूध की मटकियां या कठिये, **नौणो का विनेग**–मक्खन को रखने के बर्तन, या नवनीत का मक्का, **बार-पुड़ गायों को गल बन्द है ग्यो**—बारह प्रकार का गायों के गले में बँधन डालकर उन्हें गौशाला में बांध दिया गया है। **सौकाल-सुकाल** - यज्ञ-पूजा इत्यादि प्रायः इसका प्रयोग शयन काल के लिए भी हुआ है। **इनण**-ईंधन प्रासांगिक रूप में समिधाऐं **बटोई**—पथिक, **जत्ती-दत्ती**—यती तथा गृहस्थ-दाती, **अन्तधात**—भेद, रहस्य।

(पृष्ठ-२) **खोई को गणेस** घर के मुख्य द्वार का देवता गणेश। पहले के मकानों में 'खोल'- बड़े आकार का प्रवेश द्वार जिसकी नक्काशीदार चौखट में गणेश की मूर्ति खुदी रहती थी, ताकि गणेश जी के चरणों के नीचे से गृहस्वामी प्रवेश करें जिससे उनके सम्पूर्ण कार्य निर्विघ्नतया सम्पन्न हों। **मूली को नरैण** मूलनारायण देवता (अल्मोड़ा तथा पिथौरागढ़ जनपदों के नाकुरी तथा पुङराऊँ पट्टी के मध्य उच्च शिखर में स्थापित) **देवमुनी सुकदेव न्यूँता** देवतागण, मुनिगण, तथा शुक्र आदि नवग्रह, निमंत्रित किए गये। **अन्यायी-उज्यायी** कुमाऊँ में प्रायः देवी तथा शिव की पूजा अधिक होती है। शिव द्वार के बाहर मन्दिरों में स्थापित किया जाने वाला देवता है और देवी घर के अन्दर की अधिष्ठात्री है। उसके भी दो रूप हैं— अन्धेरी तथा

प्रकाशित। अँधेरी देवी के उपासक महाष्टमी की रात को घर के सभी द्वार बन्द करके अपने पारिवारिक जनों के मध्य देवी की पूजा करते हैं। उजाली के उपासक दिन रहते यह कार्य सम्पन्न करते हैं। **मूवैंणज्यू** मूलनारायण (देवता) जी, **वनजैंण ज्यू** मूलनारायण देवता का बड़ा पुत्र, जिसका मन्दिर विचला दानपुर के भनार नामक स्थान में स्थित है।

(पृष्ठ-३) **पान की रिस्यार** तिमजिले मकानों की तीसरी मंजिल में रसोई होती है। **गाव की मज्याल** अर्थात् दूसरी मंजिल में भण्डार तथा अन्य कीमती वस्तुऐं रखी जाती थीं।

(पृष्ठ ४) **तुमसायो मि खाले आप राजा-मि खाले** मुझे खायेगा, अर्थात् अतीव भाव-विभोरता की स्थिति में राजा के प्रति स्नेहाधिक्य के भाव को प्रदर्शित करता है, आप राजा धन सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली राजा। **छत्तीस कुठेड़ राजा बत्तीस दरौज** धन-दौलत से छत्तीस प्रकोष्ठ भरे हुए थे, किन्तु अहंकार बिल्कुल भी नहीं था। तुम्हारे द्वार तक आतुर एवं दुखी प्रजा के पहुँचने के लिए बत्तीस द्वार थे, अर्थात् प्रजा की राजा तक पहुँच बहुत सरल थी। **घुनी का दीवान स्यार, पीठि का वजीर** नीति निर्धारण करने में सहायक एवं घनिष्ठ मित्र के रूप में सदा तेरे पास रहने वाले परामर्शदाता दीवान थे तथा तुम्हें विपत्ति में सहायता तथा टेक देने वाले वजीर थे। दीवान तथा वजीर शब्दों का प्रयोग मंत्री आमात्य सचिव इत्यादि अर्थों में हुआ होगा क्योंकि तब तक मुसलमानों का राजसत्ता में आगमन हो चुका था। **नौताल धरती** यद्यपि पृथ्वी के अतल, वितल, सुतल इत्यादि सात तल माने गये हैं, इनमें जल एवं पर्वतीय भाग दो तल और जोड़कर नौतल माना गया है। कहीं कहीं पर इसका अर्थ नौ खण्ड वाली पृथ्वी भी माना गया है। **धतियै की धात सुणछै रे** दुखी प्रजा जनों की आर्त्त पुकार सहर्ष मन से सुनने को सदा उद्यत रहते हो।

(पृष्ठ ५) **धौल** कस **कफुवा** घौंसले में बैठे कफुवा पक्षी सा सुन्दर जो सभी की करुणा एवं सहानुभूति का पात्र बन जाता है। **जिया-धर्मावती** धर्मा दुलशाही की पत्नी का नाम था, जो मालूशाही की माता थी। 'जिया' कत्यूरी वंश में एक पतिव्रता नारी थी, जिसके अपहरण होने पर कत्यूरियों ने अफगानों के चंगुल से मुक्त किया। तभी से 'जिया' आदर सूचक शब्द बन गया था। **क्वठ भरी ऊँछ त्यारा राजपाट देखी** एक ओर तुम्हारे विशाल राज्य वैभव को देखकर और दूसरी ओर तुम्हारी निःसन्तानावस्था देखकर हृदय दया से भर जाता है।

(पृष्ठ ६) **सुवा कसी खापड़ी मैंण कस बोल** तोते के समान सुन्दर रक्ताभ मुख-विवर से निकलने वाले मधुर एवं मादक शब्द। जैसे मैंण नामक औषधि के प्रभाव में मछलियां मोहित हो जाती हैं, उसी प्रकार उसकी वाणी से श्रोता वशीभूत हो जाता है। मैंण से तात्पर्य 'मैंना' पक्षी से भी है।

(पृष्ठ ७) **क्वाठ में त्यारा कुरेद भरियाँ** तेरा हृदय प्रकोष्ठ व्यथाओं से परिपूर्ण हैं। **कोरवी को कंकाल** कोरव का रिक्त होना अर्थात् निःसन्तान, **सुनाव बणी रय** सोये हुए थे। **स्वैणी का सोविन** सुन्दर शोभनीय स्वप्नावस्था।

(पृष्ठ ८) **ठस्स टूटी नींन** सहसा निद्रा भंग हुई, **भेकुवा मुनबौड़ी** भेकुवा नामक सदेश वाहक,

(पृष्ठ ६) **डोली कासण लगाधी** पालकी सुसज्जित की जाने लगी। **रुवा चुवादल फौज** विशाल सेना जो रुई के समान सघन और रामदाने के समान असंख्य।

(पृष्ठ १०) **छत्तीस नेवर त्यारा बत्तीस झम्पान** छत्तीस प्रकार के नुपूर तथा बत्तीस प्रकार के पर्दे। **बाँकी बैराठ** बैराट के राज्य को जीतना अती। कठिन था, अतः वह-बाँकी-टेढ़ी सी कही गयी है। **तामा-बिजेसार** तांबे का बना एक प्रकार का तांत्रिक मृदंग, जो राजा की शुभयात्रा, मगल उत्सवों में ही बजाया जाता था। **सुवा कसी चाल हेरे मल्या कस टोल** तोतों के झुण्ड समान तीव्रगामी तथा मल्या पक्षी के समान पंक्ति वद्ध चल रहे थे। **मार-मार-छाड़-छाड़ बाट लागो रया** निरन्तर गति से राजा की सवारी हेतु 'मार्ग छोड़ो' 'खाली करो' इत्यादि उद्घोषों के साथ आगे बढ़ने लगे।

(पृष्ठ ११) **रौबास-तौब स कर्न** जिस किसी भी प्रकार से; मार्ग में चलते तथा विश्राम करते हुए **तेरी फौज लङर बैंठी गौछियो** तेरी फौजें पड़ाव डालकर विश्राम करने लगी, **ब्वाड़मुखी ब्य.पार एक हाथ राज** गन्धर्व एवं किन्नरों के देश तिब्बत एवं हूँण देश की ओर तेरा व्यापार चलता था।

(पृष्ठ १२) **वैशाख कसी खाम** बैशाख के सूर्य की भाँति कान्ति पूर्ण, **हिंगाल हिंगाल, डुसार हिंगाल** एक पर्वत शिखर के बाद घाटी में फिर दूसरी पर्वत को पार कर आगे बढ़े। **पुतलिया ठाँस** पतला रेशम, मलमल तथा चीनी रेशम के बहुमूल्य वस्त्र।

(पृष्ठ १४) **यां पूस की रात आंखों में बितेछ** पौष महिने की रात जागते हुए व्यतीत कर दी, **राणी रात ब्यंगे घाणी लागो घाम** रात्रि रानी ने प्रसव द्वारा दिन को जन्म दे दिया है और सघन धूप लगने लगी है। यह

ुमाऊँनी साहित्य में सर्वथा मौलिक उद्‌भावना है।

(पृष्ठ १५) **कांसा सुरीथाव, पिठ्या बांटीं लीनू** परस्पर जीवन र घनिष्ठ मित्रता करने के लिए काँसे की थाली में रोली और अक्षत ‍ाकर एक दूसरे को तिलक करने की परम्परा रही है। **कुरेद कंकाल नरभयी है गय।** निःसन्तान होने के कलंक से निडर होगये।

(पृष्ठ १७) **बाट-बटी राणी फूल बैठीं रया** मार्ग से ही रानी ‍जस्वला होगई। रजस्वला हेतु 'फूल बैठना' का प्रयोग कुमाऊँनी साहित्य ं यत्र-तत्र हुआ है। ऐसा प्रसंग प्रायः तब आता है जब रजोदर्शन के बाद र्भ धारण किया जाय। अर्थात् फूल के बाद फल की क्रिया स्वाभाविक सी गती है।

(पृष्ठ १८) **नङछड़ को पाणी राणी पियी नैं सकतीं** गर्भ के भरपूर ासों के कारण आसन्न प्रसवा रानी, अंगुली के नोक से एकत्रित अत्यल्प ल भी नहीं पी सकती और मुट्ठी भर अनाज भी नहीं खा सकती है। **चार ‍े सोलिया बलूण लगाया** चार प्रकार की दाइयाँ बुलायी जाने लगीं। **नौ नाख कत्यूरों राजा ध्वाक लागी रौछा** कत्यूरी राज्य की नौ लाख प्रजा उस गर्भ में अपने भावी राजा की आशा में लगी थी।

(पृष्ठ २०) **रंदल-संदल त्यारा बावन हजार** रैयत दल तथा सैयद ल दोनों प्रकार की सेना में बावन हजार सिपाही थे। **बरम को च्यल** ब्राह्मण ा पुत्र, पण्डित-पुरोहित, **औजी को च्यल** औजी का पुत्र, बाजा बजाने वाला, **त्तङली आँख। हैरे छुङरयायी कानी** घुघुँची के समान छोटी रक्ताभ ‍ुन्दर नयन तथा घुङराले बालों की लटें, जो कन्धों पर खेल रही हैं।

(पृ २१) **कमल आंखुल** कमल नाल की तरह चिकने बदन वाला, जिसमें उसका मुख रूपी कमल खिला हो। **उरीठा सूरिज** उदयकालीन सूर्य ी भाँति सुन्दर, **अन्वाण-पन्वाण** सभी प्रकार के राजकीय वैभव एवं अन्य ासकीय दायित्व, **गिलम गिनुँवा है गयीं माला तकिया जाजम** एक ओर मनोरंजन क्रीड़ा तथा वैभव की सारी सामग्री तेरे पास है तो दूसरी ओर तकिया चैन का नहीं है पिता की मृत्यु के बाद राज्य का उत्तरदायित्व तेरे सिर पर आगया है।

(पृष्ठ २२) **सिङौड़ी बोलाण लागीं रे** सिङौड़ी पक्षी का बोलना मंगल कारक माना जाता है क्योंकि यह पक्षी सगुन का प्रतीक है। **बाकुरी हेरली-बाँकुरी हेरली थोड़ा,** सा उच्चारण भेद से अर्थ भेद हो जाता है, बाकुरी हेरली का अर्थ है कि वह इतनी बड़ी हो गयी है कि बकरियों की

दखल करने लगी है। बाँकुरी हेरलो का तात्पर्य है चढ़ते यौवन के कारण उसकी नजरों के बाण अपनी भाव-भंगिमा दिखाने लगे थे। **कफुवा बोसनो दिगौ** कलम काँकुरी उस पर्वतीय भोट प्रदेश मे कफुवा तथा घुघुत पक्षी अपने मधुर गीत गाने लगे और नई ऋतु तथा नए प्रेमी के आने का सन्देश सुनाकर मन में एक अनूठी मादकता का सन्देश देने लगे हैं।

(पृष्ठ २५) **कैरु कसी काँती होलो, झिप कसी सिकड़ा** चैत्रमास में उगने वाली कैरु लता की कली के समान सुन्दर' कोमल तथा द्रुतगति से वृद्धि पाने वाली राजुला अपनी सखियों के मध्य वैसे ही ऊँची उठी रहती है जैसे झाड़ी या गुल्म के मध्य चाबुक बनाने योग्य सुन्दर नई कली या शाखा उभरी होती है। **त्यार रूप देखी राजुली सूरिज धूमैल** तेरे रूप को देखकर सूरज भी धूमिल पड़ गया है। व्यतिरेक अलकार की छवि दृष्टव्य है। **देवताओं की धनी राजुली बंगों की मुखी** देवता लोग अनिंद्य सुन्दरी राजुली को अपनी धरोहर समझते थे। पहलवानों एव सुभटों के मृत्यु का वह कारण थी, क्योंकि ऐसी अनिंद्य सुन्दर नारी को पाने के लिए सुभट अपनी जान की बाजी लगा देते थे।

(पृष्ठ २६) **कुरमाली को ठाँस** घरगुली कीट की तरह अतीव पतला एव सुन्दर। **दाड़िम की चौंप** दाड़िम की कलियों की भाँति लाल मसूड़े जिसमेंसुन्दर एवं निर्मल दताँवली सुशोभित है। **कुमूँ जाणी धार कुमूँ** देवी धुरा के पर्वत को जाने वाले मार्ग की भाँति सीधा, दुर्गम-मार्ग जिसमें दोनों ओर सघन द्रुमावली सुशोभित है। **धुरा को चुवैंण** पर्वत शिखर की काली नागिन, यों तो अधिकतर सर्प मैदानी भागों एवं गर्म घाटियों में अधिक होते हैं, किन्तु सिर की नेमि का उपमान पर्वत शिखर की काली नागिन से करना लोक गायक की अपनी मौलिक सूझ है। **मोरछंग बिणायी** मोर के आकार की बनी वीणा।

(पृष्ठ ३२) **उदेख** विरह, उदास, **बिलोद** बेहोश, अचेत, मोहित, मूर्छित, **एक आँख उज्याई** एक आँख का प्रकाश अत्यन्त प्रिय, **रोत्यूण-बोल्यूण** कई प्रकार से मनुहार करना, सान्त्वना, आशा एवं धैर्य इत्यादि से मन बहलाना।

(पृष्ठ ३५) **आमरी-पामरी** हाथियों के ऊपर बिछायी जाने वाली गद्दी।

(पृष्ठ ३६) **बेरेरी छवलुवा, कड़ैरो कुणकोली** बेरेरी क्षेत्र की सुन्दर चितवन एवं भाव भंगिमा वाली कामिनियाँ और कड़ैरी क्षेत्र की सुकुमारियाँ।

(पृष्ठ ३८) भङार जोबन जगली भाँग के फूलों के समान अस्थायी यौवन। जिस प्रकार जंगली भांग द्रुत गति से बढ़कर अपने फूलों से चारों ओर मादकता फैलाती है और उसका सेवन करने वाले मोहित हो जाते हैं, उसी प्रकार राजुली का यौवन भी द्रुत गति से बढ़ता हुआ अन्य लोगों को अपनी मादकता से मोहित कर रहा था। **कँकरो देश** पत्थर, चट्टान, एवं पर्वतों वाला पठारयुक्त तिब्बत का प्रदेश, **झिल मिल हुँणियाँ** विचित्र पोशाक एवं रहन सहन वाले हूंण तथा लामा लोग।

(पृ. ३६) **अती को मरण होज, ज्वानी को विनास** गायक की उक्ति है कि अति सर्वं वर्जयेत्, अति करने वाले का अन्त निश्चित है और यौवन का भी विनाश निश्चित है।

(पृ. ४१) **लमखम हुँड़ियाँ** लम्बे और खम्बों के समान स्थूलकाय हूंण। **कुकड़ी** कमर में कूबड़ वाली कुब्जा या लूली। **अरंस जीबड़ी** कटु भाषिणी, कड़ुवे बचन वाली, **मनं मन रुहुहूँणी, पुरि जस पाकलो** रुहहूंण मन ही मन फूला नहीं समाय **ह्वाका जसो नाक जँको च्यों जसा कान**..... ....**पीसं खाता गिदाड़** उसका नाक मिट्टी के बने हुक्के (चिलम) की तरह था, कर्णपटल कुकुरमुत्ता की तरह थे, मुख कन्दरा के विवर सा था, शरीर का चर्म बौंज के पेड़ की खाल के समान, नाखून चौड़े, मुख कुदाल के समान, पेट विशाल आकार की नैपाली कढ़ाई के समान था, पैर ऐसे लम्बे तथा पतले थे, जैसे अस्याली मछली की रीढ़ की हड्डी हो, उसके हाथ पन चक्की के पंखदार चक्र के सामने थे और उसके आंखों में गोबर की खाद के। समान मैल का ढेर जमा हुआ था। **कौसं भुड़ जामीं रौछ चैतिया निङाथी** जैसे कुश और काँस की बीहड़ तथा अन्य झाड़ी के बच चैत मास के रिङ ालि की कली पैदा हुई हो, अर्थात् इस बीरिन भोट प्रदेश में ऐसी सुन्दर दिव्य रूपा कन्या का जन्म हुआ था।

(पृ०४४) **नतई जागा हेलसू ले बाँसो रूमा-झुमा**........ **ऊँले उमोकूण लाग्या मागो** रुमा-झुमा-इसी स्थान पर हेलसू पक्षी भी बोला। उसके गीत को सुनपति ने सुना और वे भी वैसा ही कहने लगे। कहा जाता है कि हेल्सू पक्षी पहले जन्म में एक सुन्दर कन्या का पिता था, परन्तु वह निर्धनता-वश उस कन्या को अपने हाथों से सुन्दर दुल्हा के साथ नहीं ब्याह सका, और निरन्तर कहता था-मेरी पुत्री को कोई सम्भ्रान्त कुल का वर शादी करके ले जाय अन्यथा में किसी कुलहीन व्यक्ति यानि कौवा या कुत्ता जो भी मिलेगा उसके साथ दे दूँगा फिर मुझ पर जाति भ्रष्ट होने का दोष नहीं रहना

चाहिए। राजुली कहती है कि उस प्रकार की धारणा मेरे विवाह के लिए मेरे पिताजी की भी बन रही है। **कुरकुरे लैंछ** करुणा भरी आवाज या मर्मस्पर्शी अथवा कसक भरी वाणी मे कहता है।

(पृ०४८) **कैका रव्वारा टोटो को पुर्यालो** किसके भाग्य की विडम्बना को कौन पूरा कर सकता है? इस मर्त्यलोक मे हर प्राणी को अपने-अपने दुर्भाग्य को स्वयं ही झेलना पडता है। भाग्य की रेखा अमिट है, फिर भी यदि सच्चा एवं अच्छा जीवन साथी मिल जाय तो दुर्भाग्य का बोझ हल्का प्रतीत होता है। **कतू रडील गात, हिंमाल में राती को प्रभात**-(हे घुघुत पक्षी।) तेरा बदन कितना मनोहर और आभामय है जैसे कि हिमालय में रात ही में प्रातः काल का उदय हो गया हो। **लाहुर की जड़ी**"""हौल सारी तुमडी-ऐन्द्रजालिक एवं तांत्रिक अभिचार के उपकरण।

(पृ०४९) **व्याण तारा जसी** उदय कालीन तारे की भाँति सुन्दर। **धौंस्याला लागो रआ** धौंस्याला एक उन्मुक्त प्रणय को व्यक्त करने वाला सामूहिक लोकनृत्य है जिसमें बाँह पकड़कर उछल-कूद के साथ गोल घेरे में नृत्य होता है उसमें जो व्यक्ति गिर जाता है उसे दुबारा उस नृत्य में सम्मलित नहीं किया जाता है। यह प्रायः स्त्रियो द्वारा, जंगलों में घास आदि लेने जाते समय किया जाता है।

(पृ०५५) **जुनाली मुख फोगीगयो रडीन को क्वीड** चन्द्रमा के समान सुन्दर बदन में गर्मी के दिनों की धूल व्यास हो गयी अर्थात् उसके मुख का लावण्य मलिन पड़ गया **कूचा को झाड़न आब राजू, बयालो लैं गय** झाड़ से जिसे साफ करना था उसे हवा स्वतःही उड़ा ले गयी। अर्थात दुखी राजुली को देखकर शिवजी स्वतः द्रवीभूत एवं संवेदनशील हो गये।

(पृ० ६०) **ऊरोण सूरिज को रथ लागो रौछ** बैराठ जाती हुई राजुली ऐसी शोभा पा रही थी मानो उदयकालीन सूर्य का रथ आगे बढ़ रहा हो।

(पृ० ६६) **चुडुक उठछी राजुली रैछम-तैछम** राजुली उस स्थान से सहसा उठीं और बड़ी प्रसन्नता, उत्सुकता और शालीनता से आगे जाने लगीं, **अनार अभार** बड़े अत्याचारी तथा अनाचारी **तैका बदन पर दावा तार जसा ल गियाँ** उसके बदन से सुन्दर तथा दिव्य कान्ति व्याप्त हो रही थी। **रिङ्गनी पैलोलो** आगे को चलते हुए पैर का तलुवा अर्थात् उसके चंचल चरण, **चिलमिल घाम** दोपहर की प्रचण्ड धूप, **हिंवाल की चड़ी** हिमालय की बिहग बालिका राजुली।

(पृ० ७०) **मोर पौंठ जसी** मयूर पंखों के गुच्छों के समान सुन्दर। **छिन्छी राजुली धरती लाज लाँगछी** यद्यपि धरती ने अपने सुन्दरतम रूप को प्रस्तुत कर रखा था, फिर भी राजुली का अनिद्य सौन्दर्य इतना अधिक निखरा हुआ था कि उसके चरण धरती पर पड़ते ही वह लज्जित हो जाती थी, **हिंवाल की चड़ी पयौंअ ऐ गयूँ** जैसे हिमालय का पक्षी किसी नये जंगल में आकर फँस जाता है, उसी प्रकार मैं भी भोट प्रदेश से आकर इस अजनबी स्थान में फँस गयी हूं, पयाँल का प्रयोग जंगल विशेष के लिए हुआ है।

(पृ० ७३) **टीटिया का ताड़ अकास लगाया** टीटिया (टिटीहरी) लम्बे और पतले पैरों वाला एक पक्षी है। वह आकाश की ओर पैर करके सोता है, क्योंकि वह सोचता है कि यदि आकाश गिरेगा तो वह अपने पैरों से आकाश को रोक कर सुरक्षित बच जायेगा। **अकल तीतुरी** बटेर या तीतर बड़ा चतुर पक्षी है। यह शिकारी को धोखा देने के लिए किसी एक झाड़ी में बोलता है और तत्काल दूसरी झाड़ी में चला जाता है। **भेसुल** लकड़ियों को कपड़े पहनाकर खड़े हुए मनुष्य के आकार का पुतला खेतों में गाड़ दिया जाता है। इसको देखकर जंगली जानवर, भाग जाते हैं और फसल नहीं खा पाते हैं।

(पृ. ७४) **दूद कसी जूँन** दूध के समान उज्ज्वल चन्द्रमा यहाँ निष्कलंक मयंक को स्पष्ट करने के लिए दूध के विशेषण का प्रयोग हुआ है। **बूरड़न** भेड़ या बकरियों की दुर्गन्ध विशेष। चूँकि राजुली कई दिन से निरन्तर चल रही थी, पसीने के कारण उसे अपने शरीर से यह गंध-विशेष मालूम हो रही थी. **राजुली मरी गो लड़िया त्यर ट्यार लगै बेर, चौमूँ बान को दुङ रहप खेड़ी हैछ** गायक की उक्ति है कि हे राजुली, तेरे शत्रु मर जावें, तू पानी में बैठी मस्ती से नहा रही है कि गूल के किनारे का पत्थर सहसा नीचे रहप नदी में गिर गया और गूल का पानी गंगाजी में गिरने लगा, किन्तु तुझे इस सबका ध्यान नहीं रहा, क्योंकि तू तो अपने प्रेमी मालू के ध्यान में थी।

(पृ० ७६) **त्यारा रूप देखी पाणी ले खेल लागी रौ** हे राजुली, तेरे रूप की छवि को देखकर रहप का पानी भी अपनी गति को भूल बैठा है और विमुग्ध होकर वहीं पर क्रीड़ा कर रहा है। कल्पना द्रष्टव्य है। **जुग को शतुर कपायी को किल** पुराने शत्रु से हमेशा खतरा रहता है। जिस प्रकार माथे में गढ़ी हुई कील, को निकाल कर फैंकना भी बड़ा कष्टदायक होता है।

(पृ. ७८) **सुसाट भुभाट** शीघ्रतापूर्वक और क्रोध तथा उतावले पन से युक्त होना, **भि खुटी नि धरन** प्रसन्नता एवं उतावली के कारण जमीन में पैर भी नहीं रखना।

(पृ. ७६) **मन-मन जगी गेछ मडुवा फामा जसी** कोदो की भूसी बहुत मन्द है और धुवाँ भी नहीं होता है। ऊपर से यह प्रतीत नहीं होता है कि वह जल रही है। वैसे ही राजुली का मर्म प्रछन्न रूपेण भस्मसात् हो रहा था। **अटों मंगल मह्रो राहु बलवान** कन्या के अष्टम स्थान का मगल होना तथा राहु का बलवान स्थिति में होना पति के जीवन के लिए खतरनाक समझा जाता है।

(पृ. ८४) **खुल-खुल हँसण लागी रथ..........धन म्यारा भाग** राजुली जब मालूशाह के महल के पास पहुंची तो राजा के द्वार में बँधे हुए हाथी पर उसकी दृष्टि पड़ी जो राजुली को अपना आहार समझ कर अत्यन्त पुलकायमान हो रहा था। **घुयाँठ ले घास दिनीं** लम्बी लकड़ी से हाथी को घास डाली। **पन्याव ले पाणी दिनीं** पन्याव से हाथी को पानी दिया।

(पृ. ८६) **पल्टी गयी धर्ती माता, छन पन्योली बात** राजुली सोचती है कि पृथ्वी माता का क्रम उलट गया है या इसकी मर्यादा भंग होगई कि मेरे सामने मेरे प्रियतम (मालू) होते हुए भी मेरा मिलन नहीं हो पा रहा है।

(पृ. ८९) **अघिल कँ जाणियाँ पछिल कँ उणियाँ** वे इतने अधिक शिष्य-वत्सल थे कि शिष्य के अनुरोध एवं आवश्यकता पर सभी कार्यों के लिए तैयार थे। **नौणिया गात त्यार सिमड़्या थुल** तुम्हारे नवनीत के समान कोमल शरीर में रोमांचित एवं पुलकित होने के कारण शामल के नवीन पादप के काँटों के समान रोम-रोम खड़े होगये, **त्यार ख्वार में होली नौ सेर गुदी** तेरे सिर में नौ सेर मज्जा है अर्थात् तू बड़ा साहसी और शक्तिशाली है **खोई कस खाम** मकान की शोभा मुख्य द्वार से होती है। उसके एक भी खम्बा गिर जाने से द्वार ढह जाता है जिससे भवन की पूरी शोभा जाती रहती है। उसी प्रकार मालू के चले जाने पर यद्यपि बैराठ का राज्य तथा राजधानी ज्यों की त्यों बनी रही, परन्तु उसकी शोभा जाती रही।

(पृ. ९०) **कमर ठसक हिय में धसक** स्वयं राजा मालू के पास जाने पर गुरु की मनो तथा शारीरिक दशा का चित्रण किया है। गुरु सहसा विस्मय-विमुग्ध होकर घबरा उठते हैं, शरीर रोमांचित एवं स्तम्भित हो जाता है तथा मन से भीत तथा आशंकित होकर चकित से रहते हैं। **विद्या को भार छा, काल को पितर** अर्थात् हे गुरू ! आप विद्या के इतने धनी हैं कि मृत्यु को महाकाल अथवा समय को भी आप वश में कर लेते हैं। अतः विद्या के धनी होने के कारण आप काल के भी पितर हैं।

(पृ. ९३) **मूनीं गया** मोहित हो गये, वशीभूत होगये। **कुमिन ख्वारा**

मुण्डन करने के बाद कुष्माण्ड (पेठा) के समान केश रहित सिर होगया। **कुन्याली** रिंगाल के बने बर्तनों के शीर्ष परिधि में जो लकड़ी (वन्य लता विशेष) का छल्ला होता है उसी के समान विशाल कानों के कुण्डल **रुदरी काग** राज-दरबार से संदेशवाहक के रूप में भेजे जाने वाला प्रशिक्षित काग सात समुंदर पार बहुत दूर जिसका पता न हो **खोरी रखी गेछ** भाग्य फूटने जा रहा है, **कागज तलाक** कुमाऊँनी लोक साहित्य में 'पत्र' के लिए सर्वत्र 'तलाक' शब्द का प्रयोग हुआ है।

(पृ. ६५) **ज्यूनार जेवाली, ज्यूनार छाँटली** विविध प्रकार के भोजन के लिए 'ज्यूनार' शब्द और खाना, खिलाना, तथा पकाना तीनों के लिए छाँटली, जेवाली शब्दों का प्रयोग हुआ है। **एक औखी सौण लगैं, हाली, एक औखी भदौ, लगैं हाली** बहुत दुखी होते हुए दोनों आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित करने लगी, **सुकी ठाङरी काव जै वासँछ** कौआ सूखी डाली पर बैठकर बोल रहा है अतः वह यात्रा के लिए अमंगल सूचक है। **म्यर कोखी को साल** मेरे आँख के तारे मालू, तेरी अनुपस्थिति मेरे अंक को काँटे के समान कष्ट देगी अतः तू शीघ्र लौट आना, **बीसा मुलुक** भोट प्रदेश को जादू अभिचार एवं तंत्र-मंत्र विद्या से पूर्ण एवं कपटी माना जाता था। साथ ही वहाँ कुछ स्थलों पर शंखिया विष भी नए यात्रियों को लग जाता था जिससे वह मूछित हो जाता था, **पशुपति सिंवाई** अभिचार मंत्रों के प्रभाव को कम करने वाली एक गुल्म विशेष जिसकी टहनी से तंत्र-मंत्र से घायल शरीर को झाड़ने के प्रयोग में लाते हैं, **रूपसी पाया वभूती रमालै** अपने सुन्दर एवं कोमल पैरों में राख मलने लगा, **नौमती बाजँछी** ढोल में देवताओं को आवाहन करने की विशेष वाद्य-ध्वनि।

(पृ. ६७) **धरती में राजा विवर पड़नी** वाद्य यंत्रों की सामूहिक ध्वनि की गर्जना से धरती का हृदय भी फटने लगा, उसमें विवर पड़ने लगे, **काच बोट बात करनी सुख बोट हुङुरा** मालू के सन्यासी होकर भोट प्रदेश जाने की बात सुनकर, हरे-भरे वृक्ष भी बातें करने लगे और सूखे वृक्ष उनकी बात का प्रत्युतर देने लगे। **गोरू बल्दा पुठ में पुछड़ डौरीण भै गया** गाय-बैल भी अपनी पूँछ को मोड़कर रम्भाते हुए विस्मित हो इधर-उधर दौड़ने लगे। **कवठ हृदय** मर्म स्थल, **दरज** दर्द, पीड़ा, अर्थात् हे मालू, तेरा हृदय पत्थर से भी कठोर है; तभी तो ममता मयी माता और स्नेहमयी प्रजा के स्नेह को ठुकरा कर तूने सन्यासी बनकर भोट जाने का निश्चय किया।

(पृ. ११३) **बौं तरफ काव पछताण भैगो** 'दैण काग, बौं नाग'

अर्थात् सर्प का बाईं ओर से दाईं ओर रास्ता काटना और कौए का मार्ग में बांईं ओर बोलना अमंगल सूचक हैं।

(पृ. ११८) **मधुर-मधुर सबद ले.........कफुवा बासँछी** राजुली रोती हुई, अपनी सहेलियों, चाची, ताई और दादी से विदा ले रही थी।

(पृ. १२७) **उरियां दिन उर्छांण भ गय** कार्य, सिद्धि लाभदायक एवं आशापूर्ण एवं चिरप्रतीक्षित दिन का सहसा निरर्थक एवं हानिकारक हो जाना। **दूद की सोज्यूल** दूध के समान उज्ज्वल एवं निर्मल।

(पृ. १३५) **हाड़ को हड़्याठ ज्रश को शत्रुर** हड्डी का रोग जिस प्रकार असाध्य है उसी प्रकार पुश्तैनी शत्रुता भी निराकरण रहित होती है।

(पृ. १३८) **हिंवार वनस्पति** हिमालय की जड़ी-बूटी **कुछ अति-विशिष्ट सौन्दर्ययुक्त स्थल** मालूशाही में, कथात्मक भावात्मक एवं कल्पनात्मक सौन्दर्य से युक्त विशिष्ट पद, स्थल यत्र-तत्र कई हैं जो अपनी विवेचना एवं समीक्षा की अपेक्षा रखते हैं। अतः नीचे कुछ ऐसे स्थल उद्धरण स्वरूप दिये जाते हैं।

१. **नौंणीं कस डिलेंग** शरीर की कोमलता के लिए नवनीत के ढेर के समान तुलना।
२. **घोल कस कफुवा** शय्यासीन या सिंहासनासीन सुन्दर व्यक्तित्व के लिए घोंसले में बैठे कफुवे के साथ उपमा।
३. **कुरेद** निरन्तर सालने वाली वेदना।
४. **फूल बैंठी रया** ऐसा रजोदर्शन जिसके बाद सन्तान उत्पत्ति की आशा बढ़ जाय।
५. **कफुवा बासनी कफुरी लगूनी** कफुवा बोलते हैं तो कफुरी लगाते हैं। कफुरी भाव में एक मीठी वेदना, अतीत की स्मृतियों का पुनर्जागरण, विरह कसमसा हट इत्यादि सभी भाव एक साथ सन्निहित हैं।
६. **इजू का हिय पाणि जस पतव** माता का हृदय वात्सल्य एवं ममता से परिपूर्ण एवं निश्छल होता है, वह सन्तान के प्रति तत्काल द्रवित होकर जल की भाँति द्रवीभूत होकर बहने लगता है।
७. **हतरी-कतरी** शीघ्रतापूर्वक, घबराहट, हड़बड़ाहट विस्मय एवं किंचित् भय के साथ।
८. **चाल चुकी गे, बाट भूली गे** किंचित् चूक या परिवर्तन मात्र से ही दिशान्तरण होना, आकाश में बिजली कौंधने से आँखों में कुछ क्षण को अँधेरा होता है, इतने मात्र से ही राजुली अपने गन्तव्य मार्ग को भूल गयी।

९. **दाड़ि को बुड़, घिनौड़ी को घोल,**
छाती में स्यारा, मिरग दौड़ला ।
हे बूढ़े ! तेरी दाड़ी इतनी बढ़ी हुई थी कि उसमें गौरियों के घोंसले बने हुए थे। सीने में बाल भी इतने अधिक घने एवं बढ़े हुए थे कि लगता था उसमें हिरन घनघोर जंगल समझकर विचरण करते हैं। अतिशयोक्ति अलंकार की छवि द्रष्टव्य है।

१०. **एक आँखा सौण झुली रय एक आँख' भदौ** एक आँख में सावन झूल रहा है तो दूसरे में भादों। निरन्तर रोने के लिए नये उपमानों का चयन द्रष्टव्य है।

११. **रुड़ी कस ध्वौड़** सूखी गर्मी के समान व्याप्त वातावरण की धूल। यह उपमान विरह, दुख, असफलता एवं निराशाजन्य चेहरे की उदासीनता के लिए प्रयुक्त हुआ है।

१२. **ब्याण तारा जस** सुन्दरता का उपमान उदयकालीन तारा।

१३. **छम-छम हिटंडी धरती त्यौकें लाज लागंछी** राजुली के चलने से धरती भी लज्जित होती है।

१४. **झुरि-झुरि माछुई का कान** इतना दुबला हो जाना जैसे मछली की हड्डी (काँटा)।

१५. **चौमासी बनाड़, साँस जसी बेलाणी,**
जायी कसी फूल आनी पड़ी रैछ।

बनाड़ एक बरसाती पौधा जिसमें पतली, लम्बी फलियाँ लगती है। उसकी पत्तियाँ सूर्यास्त होते ही एक-जुट होकर बन्द हो जाती है। सूर्यास्त का अनुमान बनाड़ की पत्तियों को ही देखकर किया जाता है। उसी प्रकार अपने प्रियतम मालू के अस्त होने पर राजुली कुम्हला गयी।

जिस प्रकार हल्की हवा के झौंके से जई फूल की लता के सभी फूल झड़ जाते हैं उसी प्रकार राजुली के जीवन में मालू के मरने से आँधी आगई। विशिष्ट उपमान द्रष्टव्य है।

(इति)